सब जगत् में आप नित्यही प्राप्त हो ऋतम्वदिष्यामि। आपकी जो यथार्थ आज्ञा है उसी को मैं कहूंगा और उसी कोही मैं करूंगा सत्यम्वदिष्यामि। और सत्यही कहूंगा और करूंगा तो तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। ऐसा जो मैं आपकी आज्ञा को ने वाला और करने वाला मेरी आप रक्षा करें ज्ञा से मेरी बुद्धि विरुद्ध न होय। उसी आज्ञा ने वाला उसी आज्ञा से मैं विरुद्ध कभी न करूं ।
। की आज्ञा है धर्म रूपीही है जो उससे विरुद्ध सो
उसी आज्ञा को कहूं और करूं भी वैसी आप कृपा करें जब उस आज्ञा को यथावत कहूंगा और करूंगा भी तब उस मुख्य फल यही है कि आप की प्राप्ति का होना अवतुमाम-
वक्तारम्। यह फिर जो दूसरी बार पाठ है मन्त्र में वह दर के वास्ते है जैसे कि किसी ने किसी से कहा त्वंग्रामङ्-
गच्छ। यह कहने से क्या जाना जाता है कि तूं ग्राम को घ्रही जा वैसेही दूसरी बार पाठ से आप मेरी अवश्यही रक्षा करें और (ॐशान्तिश्शान्तिश्शान्तिः) यह जो तीन बार पाठ है सका अभिप्राय यह है कि अध्यात्मताप जो शरीर में रोगा-
कों से होता है दूसरा शत्रु व्याघ्र और सर्पादिकों से जो होता उसका नाम आधि भौतिक है तीसरा ताप वह है कि वृष्टि । अत्यन्त होना और कुछ भी वृष्टि का न होना अति शीत उष्णता का होना उसका नाम आधि दैविक ताप है हम लोगों की यह प्रार्थना है कि जगत के तीनों तापों की निवृत्ति आप की कृपा से होजाय भवान्शन्नोभवतु। आप हम लोगों के र्थात सब संसार के कल्याण करने वाले हो आप से भिन्न ई भी कल्याण कारक अथवा कल्याण स्वरूप नहीं है इससे आप सेही प्रार्थना है कि सब जीवों के हृदय में आपही प्र-
काशित होवैं इस मन्त्र का संक्षेप से अर्थ पूर्ण होगया और

रस्यरंतज्जलम् ।(जो अव्यक्त से व्यक्त को और एक परमाणु से दूसरे परमाणु को अन्योन्य संयोग और वियोग के वास्ते जो हनन और प्रतिहनन करने वाला होय उसका नाम जल है इससे परमेश्वर का नाम जल है हनन नाम एक से एक को मिलाना प्रतिहनन नाम दूसरे से तीसरे को मिलाना तीसरे को चौथे से मिलाना जगत की उत्पत्ति समय में सभों का संयोग करने वाला और प्रलय समय में वियोग का करनेवाला ऐसा परमेश्वरही है दूसरा कोई भी नहीं)॥ जनीप्रादुर्भावे । लाआदाने इन धातुओं से भी जल शब्द सिद्ध होता है जनयति नाम उत्पादयतिसर्वञ्जगत् तज्जम् लातिगृह्णाति नाम आदत्ते चराचरञ्जगत्तल्लम् जञ्चतल्लञ्चतज्जलम् ॥ अत्र ज शब्द से सभों का जनक और ल शब्द से सभों का धारण करने वाला उसका नाम जल, जल नाम परमेश्वर का है काशृदीप्तौ । इससे आकाश शब्द सिद्ध होता है ॥ आसमन्तात् सर्वतः सर्वञ्जगत्प्रकाशतेसआकाशः । जो परमेश्वर सब जगह से और सब प्रकार से सभों को प्रकाशता है इससे परमेश्वर का नाम आकाश है ॥ अदभक्षणे । इससे अन्न शब्द सिद्ध होता है ॥ अत्तिभक्षयतिचराचरञ्जगत्तदन्नम् । जो चराचर जगत् का भक्षक है और काल को भी खाके पचा लेता है उसका नाम अन्न है इसमें प्रमाण है ॥ अद्यतेऽत्तिचभूतानि तस्मादन्नन्तदुच्यते । यह तैत्तिरीयोपनिषद का वचन है ॥ अहमन्नमहमन्नमहमन्नम् अहमन्नादोऽहमन्नादोऽहमन्नादः । यह भी उसी उपनिषद में है ॥ अन्नमत्तीत्यन्नादः । अन्न शब्दसे चराचर जगत् का जो ग्राहक उसका नाम अन्नाद है यह वचन परमेश्वरही का है क्योंकि मैं अन्न हूं मैंही अन्नाद हूं तीन बार इस श्रुति में पाठ आदर के वास्ते है जैसे कि त्वंग्रामङ्गच्छगच्छगच्छ । इससे क्या लिया जाता है कि शीघ्रही तूं ग्राम को जा और कहीं भी ठहरना

नहीं इस प्रकार के व्यवहारों में जो बहुत बार का कहना है सो जैसे अनर्थक नहीं वैसे इसमें भी अनर्थक नहीं इस विषय में व्यासजी का सूत्र भी प्रमाण है ॥ अत्ताचराचरग्रहणात् । अत्ता नाम खाने वाले का है उसी का नाम अन्नाद है चराचर नाम जड़ और चेतन सब जगत उसके ग्रहण करने से परमेश्वर का नाम अत्ता और अन्नाद है जैसे कि गूलर के फल में क्रमि उत्पन्न होके उसी में रहते हैं और उसी में नाश हो जाते हैं इससे परमेश्वर का नाम अत्ता अन्न और अन्नाद है वसनिवासे इस धातु से वसु शब्द सिद्ध होता है ॥ वसन्तिसर्वाणिभूतानि यस्मिन्सवसुः । अथवा सर्वेषुभूतेषुयोवसतिसवसुः । सब आकाशादिक भूत जिसमें रहते हैं उसका नाम वसु है अथवा सब भूतों में जो बास कर्ता है उसका नाम वसु है इससे वसु परमेश्वर का नाम है ॥ रुदिर्अश्रुविमोचने । रुदेर्णिलोपश्च इस धातु से और इस सूत्र से रुद्र शब्द सिद्ध होता है ॥ रोदयत्यन्यायकारिणोजनान्सरुद्रः । रोवाता है दुष्ट कर्म करने वाले जीवों को जो उसका नाम रुद्र है इसमें यह श्रुति का भी प्रमाण है ॥ यन्मनसाध्यायति तद्वाचावदति यद्वाचावदति तत्कर्मणाकरोति यत्कर्मणाकरोति तदभिसम्पद्यते । यह यजुर्वेद के ब्राह्मण की श्रुति है इसका यह अर्थ है कि जो जीव मन से विचारता है वही बचन से कहता है उसी को कर्त्ता है और जिसको कर्ता है उसी कोही प्राप्त होता है ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है कि जो जैसा कर्म करै सो वैसाही फल पावै इस आज्ञा को कहने वाला परमेश्वर है उसकी आज्ञा सत्यही है इससे जो जैसा कर्ता है सो वैसाही प्राप्त होता है इससे क्या आया कि दुष्ट कर्मकारी जितने पुरुष हैं वे सब दुष्ट कर्मों के फल प्राप्त होके रोदनहीं कर्ते हैं इस कारण से परमेश्वर का नाम रुद्र है नारायण भी नाम परमेश्वर का है ॥ आपोनाराइतिप्रो

का आपोवैनरसूनवः। तायदस्यायनंपूर्वं तेननारायणःस्मृतः ॥ यह श्लोक मनुस्मृति का है आप नाम जल का है और नारसंज्ञा भी जलकी है और वे प्राण जलसंज्ञक हैं वे सब प्राण जिसका अयन नाम निवासस्थान है इससे परमेश्वर का नाम नारायण है सूर्य का अर्थ तो कर दिया है ॥ चदिआल्हादे। इस धातु से चन्द्र शब्द सिद्ध होता है ॥ चन्दतिसोयञ्चन्द्रः। जो आल्हाद नाम आनन्द स्वरूप होय और जो मुक्त पुरुष जिसको प्राप्त हो के सदा आनन्द स्वरूपही रहै उसको दुःखका लेश कभी न होय इससे परमेश्वर का नाम चन्द्र है ॥ मगिधातुर्गत्यर्थः। मङ्गेरलच् इससे मङ्गल शब्द सिद्ध हुआ ॥ मङ्गतिसोयंमङ्गलः। जो आपतो मङ्गल स्वरूपही हैं और सब जीवों के मङ्गल का वही कारण है इससे परमेश्वर का नाम मङ्गल है ॥ बुधअवगमने। इस धातु से बुध शब्द सिद्ध होता है ॥ बुध्यतेसोयंबुधः। जो आप तो बोध स्वरूप होय और सब जीवों के बोधों का कारण होय इससे परमेश्वर का नाम बुध है बृहस्पति का अर्थ प्रथम कर दिया है ॥ ईशुचिरपूतीभावे। इस धातु से शुक्र शब्द सिद्ध होता है शुचिर्नाम। अत्यन्त पवित्र का जो आप तो अत्यन्त पवित्र होय औरों के पवित्रता का कारण होय इससे परमेश्वर का नाम शुक्र है चरगतिभक्षणयोः। इस धातु से शनैस् अव्यय पूर्व पदसे शनैश्चर शब्द सिद्ध होता है जो अत्यन्त धैर्यवान् होय और सब संसार के धैर्य का कारण होय इससे परमेश्वर का नाम शनैश्चर है रहत्यागे। इस धातु से राहु शब्द सिद्ध होता है जो सब से एकान्त स्वरूप होय जिसमें कोई भी मिला न होय और सब त्यागियों के त्याग का हेतु होय इससे परमेश्वर का नाम राहु है ॥ कित निवासेरोगापनयनेच। इससे केतु शब्द सिद्ध होता है जो सब जगत् का निवासस्थान होय और सब रोगोंसे रहित होय मुमुक्षुओं के जन्म मरणादिक रोगों के नाशका हेतु होय

इस्से परमेश्वर का नाम केतु है ॥ यजदेवपूजासङ्गतिकरणदानेषु, इस धातु से यज्ञ शब्द सिद्ध होता है ॥ इज्यतेसर्वैर्ब्रह्मादिभिर्जनैस्सयज्ञः । सब ब्रह्मादिक जिसकी पूजा करते हैं उसका नाम यज्ञ है ॥ यज्ञोवैविष्णुरितिश्रुतेः । यज्ञ का नाम विष्णु है और विष्णु नाम है व्यापक का इस श्रुति से भी परमेश्वर का नाम यज्ञ है ॥ हुदानादनयोः । इस धातु से होम शब्द सिद्ध होता है ॥ हूयतेसोयंहोमः । जो दान नाम देने के योग्य है और अदन नाम ग्रहण करने के योग्य है उसका नाम होम है सब दानों से परमेश्वर का जो दान नाम उपदेश का करना और सब ग्रहणों से जो परमेश्वर का ग्रहण नाम परमेश्वर में दृढ़ निश्चय का करना इस दान से वा ग्रहण से कोई भी उत्तमदान वा ग्रहण नहीं है इस्से परमेश्वर का नाम होम है ॥ बन्धबन्धने इस धातु से बन्धु शब्द सिद्ध होता है जिसने सब लोक लोकांतर अपने २ स्थान में प्रबन्ध करके यथावत् रक्खे हैं और अपने २ परिधि के ऊपर सब लोक भ्रमण करैं इस प्रबन्ध के करने से किसी से किसी का मिलना न होय जैसे कि बन्धु बन्धु का सहायकारी होता है वैसे ही सब पृथिव्यादिकों का धारण करना और सब पदार्थों का रचन करना इस्से परमेश्वर का नाम बन्धु है पा पाने पारक्षणे । इन दो धातुओं से पिता शब्द सिद्ध होता है जैसे कि पिता अपनी प्रजा के ऊपर कृपा और प्रीति को कर्त्ताही है तैसे परमेश्वर भी सब जगत के ऊपर कृपा और प्रीति कर्त्ता है इस्से परमेश्वर का नाम सब जगत् का पिता है पितॄणांपितापितामहः । जितने जगत में पिता लोग हैं उन सभों के पिता होने से परमेश्वर का नाम पितामह है ॥ पितामहानांपिता प्रपितामहः । जगत में जितने पिताओं के पिता हैं उन सभों के पिता के होने से परमेश्वर का नाम प्रपितामह है ॥ मा माने माङ्माने शब्देच । इन दो धातुओं से माता शब्द

सिद्ध होता है जैसे कि माता अपनी प्रजाका मान कर्ती है और लाड़न कर्ती है तैसेही सब जगत का मान और लाड़न अत्यन्त कृपा और प्रीति करने से परमेश्वर का नाम माता है ॥ श्रोत्रस्यश्रोत्रंमनसोमनो यद्वाचोहवाचंसउप्राणस्यप्राणः। चक्षुसश्चक्षुरतिमुच्यधोराः प्रेत्याऽस्माल्लोकादमृताभवन्ति॥ यह केनोपनिषद का बचन है इसका यह अभिप्राय है कि जैसे श्रोत्रादिक अपने २ बिषय को ग्रहण कर्ते हैं तथा सब श्रोत्रादिकों का और श्रोत्रादिक बिषयों को उनकी क्रिया को भी यथावत् जानता है इस्से परमेश्वर का नाम श्रोत्रका श्रोत्र है तथा मन का मन बाणी को वाणी प्राण का प्राण और चक्षु का चक्षु इस्से परमेश्वर के नाम श्रोत्र मन वाणीप्राण और चक्षु ये सब हैं बोधयन् बुद्धिर्भवति चेतयन्चित्तम्भवति। नाम सब का चेताने वाले हैं इस्से परमेश्वर का नाम चित्त और बुद्धि है ॥ अहङ्कुर्वन्नहङ्कारोभवति। नाम अहङ्करोतीत्यहङ्कारः जो अव्याकृतादिक सब जगत् को मैंही कर्ता हूं ऐसा जो ज्ञान का होना इस्से परमेश्वर का नाम अहङ्कार है ॥ जीवप्राणधारणे। इस धातुसे जीव शब्द सिद्ध होता है ॥ जीवयतिसर्वान्प्राणिनःसजीवः। जो सब जीव और प्राणों का जीवन् धारण करने वाला है इस्से परमेश्वर का नाम जीव है ॥ आप्लृव्याप्तौ। इस धातु से अप् शब्द सिद्ध होता है सब जगत में व्यापक होने से परमेश्वर का नाम आप है ॥(जनीप्रादुर्भावे इस्से अज शब्द सिद्ध होता है ॥ नजायतइत्यजः। जिसका जन्म कभी न हुआ न है और न होगा इस्से परमेश्वर का नाम अज है॥ सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्म। यह तैत्तिरीयोपनिषद का बचन है ॥ अस्तीतिसत् सतेहितंसत्यम्। जो सब दिन रहे जिसका नाश कभी न होय॥ इस्से परमेश्वर का नाम सत्य स्वरूप है और ज्ञान स्वरूप होने से परमेश्वर का नाम ज्ञान है(जिसका अन्त नाम सीमा कभी नहीं अर्थात

देश काल और वस्तु का परिच्छेद नहीं जैसे कि मध्यदेश में दक्षिण देश नहीं दक्षिण देश में मध्यदेश नहीं भूतकाल में भविष्यत्काल नहीं और दोनों में वर्तमान काल नहीं तैसेही पृथिवी आकाश नहीं और आकाश पृथिवी नहीं ऐसा भेद परमेश्वर में नहीं है ऐसा ब्रह्मही है किन्तु सब देशों सब कालों और सब वस्तुओं में अखण्ड एक रस के होने से और कोई भी जिसका अन्त न लेसके इस्से परमेश्वर का नाम अनन्त है टुनदिसमृद्धौ। इस्से आनन्द शब्द सिद्ध होता है जो सब समृद्धिमान् सदा आनन्द स्वरूप और मुमुक्षु मुक्तों को जिस की प्राप्ति से सब समृद्धि और नित्यानन्द के होने से परमेश्वर का नाम आनन्द है॥ सत् शब्द का अर्थ सत्य शब्द के व्याख्यान में जान लेना और ज्ञान शब्द के व्याख्यान मे चित् शब्द का अर्थ जान लेना इस्से परमेश्वर को सच्चिदानन्द स्वरूप कहते हैं॥ शुन्धशुद्धौ। इस्से शुद्ध शब्द सिद्ध होता है जो आप तो शुद्ध होय जिसको कुछ मलीनता के संयोग का लेश कभी न होय और सब शुद्धियों के हेतु के होने से परमेश्वर का नाम शुद्ध है बुध अवगमने। इस धातु से बुद्ध शब्द सिद्ध होता है जो सब बोधों का परमावधि नाम परम सीमा के होने से परमेश्वर का नाम बुद्ध है॥(मुच्लृमोचने। इस धातु से मुक्त शब्द सिद्ध होता है जो आप तो सदा मुक्त स्वरूप होय और सब मुक्त होने वालों के मुक्ति के साक्षात् हेतु होने से परमेश्वर का नाम मुक्त है)॥ सदकारणवन्नित्यम्। जो सत् स्वरूप होय और कारण जिसका कोई भी नहीं इस्से परमेश्वर का नाम नित्य है ये सब मिलके ऐसा एक नाम हो जायगा॥ नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावः। जो स्वभावही से नित्य शुद्ध बुद्ध और मुक्त के होने से परमेश्वर का नाम नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव है॥ डुकृञ्करणे। इस धातु से निराकार शब्द सिद्ध होता है॥ (निर्गतः आकारोयस्मात्स-

निराकारः । जिसका आकार कोई भी नहीं इससे परमेश्वर का नाम निराकार है ॥ अञ्जनं मायाऽविद्ययोर्नाम निर्गतमञ्जनं यस्मात् स निरञ्जनः । माया नाम छल और कपट का है क्योंकि यह पुरुष मायावी है इससे क्या जाना जाता है कि यह छली और कपटी है अविद्या अज्ञान का नाम है जिसको माया और अविद्या का लेश मात्र सम्बन्ध कभी न हुआ न है और न होगा इससे परमेश्वर का नाम निरञ्जन है ॥ गण संख्याने । इस धातु से गण शब्द सिद्ध होता है इसके आगे ईश शब्द रखने से गणेश शब्द सिद्ध होता है ॥ गणानांसमूहानांजगतामीशस्स गणेशः । जो सब गणों का नाम संघातों का अर्थात सब जगतों का ईश नाम स्वामी होने से परमेश्वर का नाम गणेश है ॥ विश्वस्येश्वरःविश्वेश्वरः । विश्व नाम सब जगत का ईश्वर होने से परमेश्वर का नाम विश्वेश्वर है ॥ कूटेतिष्ठतीतिकूटस्थः । जिसमें सब व्यवहार होय आप सब व्यवहारों में व्याप्त होय और सब व्यवहार का आधार भी होय परन्तु जिसके स्वरूप में व्यवहार का लेश मात्र भी विकार न होनेसे परमेश्वर का नाम कूटस्थ है जितने देव शब्द के अर्थ लिखे हैं वही अर्थ देवी शब्द के जान लेना चाहिये ॥ शक्लृशक्तौ शक्नोतियया साशक्तिः । जो सब पदार्थों को रचने का सामर्थ्य जिसमें है इससे परमेश्वर का नाम शक्ति है ॥ लक्षदर्शनाङ्कनयोः । इससे लक्ष्मी शब्द सिद्ध होता है लक्षयति नाम दर्शयति चराचरञ्जगत् सालक्ष्मीः जो सब जगत् को उत्पन्न करके देखावै उसका नाम लक्ष्मी है ॥ अङ्कयति चिन्हयति वा चराचरञ्जगत्सालक्ष्मीः । जो सब जगत के चिन्हों को अर्थात नेत्र नासिकादिक और पुष्प पत्र मूलादिक एक से एक विलक्षण जितने चिन्ह हैं उनके रचने और प्रकाशक के होने से परमेश्वर का नाम लक्ष्मी है ॥ लक्ष्यतेवेदादिभिश्शास्त्रैर्ज्ञानिभिश्चसापिलक्ष्मीः । वेदादिक शास्त्र और ज्ञानियों

का लक्ष्यनाम दर्शन के योग्य होने से परमेश्वर का नाम लक्ष्मी है ॥ सरगती । इस से सरस् शब्द से मतुप् और ङीप् प्रत्यय के करने से सरस्वती शब्द सिद्ध होता है सरोनाम विज्ञानम् विज्ञानंनाम विविधंयत्ज्ञानम् तत्विज्ञानम् सरस् शब्द विज्ञान का वाचक है विविधनाम नानाप्रकार शब्द शब्दों का प्रयोग और शब्दार्थ सबन्धों का यथावत् जो ज्ञान उस्का नाम विज्ञान है ॥ सरोनाम विज्ञानंविद्यतेयस्याः सासरस्वती । सर नाम विज्ञान सो अखण्डित विद्यमान है जिसको उसका नाम सरस्वती है वैसा परमेश्वरही है इस से सरस्वती नाम परमेश्वर का है ॥(सर्वाःशक्तयोविद्यन्तेयस्यससर्वशक्तिमान् । जिसको सब शक्ति नाम सब सामर्थ्य विद्यमान होय उसका नाम सर्व शक्तिमान् है अर्थात जो किसी का लेशमात्र सामर्थ्य का आश्रय न लेवे और सब जगत उसका आश्रय कर्ता है इस से परमेश्वरका नाम सर्व शक्तिमान् है)धर्म न्याय और पक्षपात का त्याग ये तीन नाम एक अर्थ के वाचक हैं ।(प्रमाणैरर्थपरीक्षणंन्यायः । यह न्यायशास्त्र सूत्रों के ऊपर वात्स्यायन मुनिकृत भाष्य का बचन है जो प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से सत्य सत्य सिद्ध होय उस्का नाम न्याय है ॥ न्यायङ्कर्तुंशीलमस्यसोऽयंन्यायकारी । जिसका न्याय करनेही का स्वभाव होय और अन्याय करने का लेशमात्र सम्बन्ध कभी न होय ऐसा परमेश्वरही है इस से परमेश्वर का नाम न्यायकारी है)॥ दय दान गति रक्षण हिंसादानेषु । इस धातु से दया शब्द सिद्ध होता है ॥ दय्यतेयासादया । दान नाम अभय का देना गतिनाम यथावत् गुण दोषों का विज्ञान रक्षण नाम है सब जगत को रक्षा का करना हिंसा नाम दुष्ट कर्मकारियों को दण्ड का होना आदान नाम सब जगत के ऊपर वात्सल्य से कृपा का करना इसका नाम दया है)॥ दयाविद्यतेयस्यसदयालुः । उस दया के नित्य विद्यमान होने से

परमेश्वर का नाम [illegible] है ॥(सदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवा द्वितीयम् । यह छांन्दोग्योपनिषद् का वचन है इस्का अभिप्राय यह है कि हे सोम्य हे श्वेतकेतो श्वेतकेतु के जो पिता उद्दालक व उस्से कहते हैं अग्रे नाम सृष्टि जब उत्पन्न नहीं भई थी तब एक अद्वितीय ब्रह्म परमेश्वरही था और कोई भी नहीं था वैसा कोई परमेश्वर से भिन्न न हुआ न है और न होगा सदेव नाम जिस्का नाश किसी काल में कभी न होय ॥ इस्से श्रुति में सदेव यह बचन का पाठ है)॥ एकम् एव और अद्वितीयम् ये तीनों शब्दों से यह अर्थ जाना जाता है कि ॥ सजातीयविजातीयस्वगतभेदशून्यंब्रह्मास्तीति । सजातीय भेद यह है कि मनुष्यसे भिन्न दूसरे मनुष्यों का होना विजातीय भेद यह है कि मनुष्य से भिन्न विजातीय पाषाण और स्वगत भेद यह है कि जैसे मनुष्य में नाक कान सिर पांव एक से एक भिन्न अवयव हैं तैसेही परमेश्वर में तीन प्रकार के भेद नहीं जब सजातीय परमेश्वर से भिन्न कोई दूसरा वैसाही परमेश्वर होय तब तो सजातीय भेद होय ऐसा दूसरा कोई परमेश्वर नहीं है इस्से परमेश्वर में सजातीय भेद नहीं है जैसे परमेश्वर का न्यायकारित्वादि गुण स्वाभाविक हैं तैसाही परमेश्वर से भिन्न अन्यायकारित्वादि विशिष्ट गुणवान् दूसरा विरुद्ध स्वभाव परमेश्वर होय तब तो परमेश्वर में विजातीय भेद आसकै जैसा कि खुदा के विरुद्ध शैतान ऐसा कभी नहीं इस्से परमेश्वर में विजातीय परिच्छेद नहीं(परमेश्वर निराकार और निरवयव है) वैसेही कोई प्रकार का भेद नहीं है इस्से परमेश्वर में स्वगत परिच्छेद नहीं इस्से परमेश्वर का नाम अद्वितीय है यही अद्वैत शब्द का अर्थ है ॥ द्वयोर्भावोद्विताद्वितैवद्वैतम् नविद्यतेद्वैतंयस्मिन्यस्यवातदद्वैतम् । दोनों विद्यमान ईश्वरों का जो होना उस्का नाम द्विता है द्विता जिसको कहते हैं उसी का नाम द्वैत है

नहीं है विद्यमान द्वैत जिसमें जिसको वा उसका नाम अद्वैत है, अद्वितीय और अद्वैत परमेश्वरही का नाम है ॥ निर्गताः जन्मादयः अविद्यादयः सत्वादयः गुणाः यस्मात् सनिर्गुणः परमेश्वरः। जगत् के जन्मादिक अविद्यादिक और सत्वादिक गुणों से भिन्न हैं अर्थात जगत के जितने गुण हैं वे परमेश्वर में लेश मात्र सम्बन्ध से भी नहीं रहते इसे परमेश्वर का नाम निर्गुण है सच्चिदानन्दादिगुणैः सहवर्त्तमानत्वात्सगुणः अपने नित्य स्वाभाविक सच्चिदानन्दादिक गुणों से सदा सहवर्तमान होनेसे परमेश्वर का नाम सगुण है कोई भी संसार में ऐसी वस्तु नहीं है जो कि केवल निर्गुण अथवा सगुण होय जैसे कि पृथिवी में गन्धादिक गुणों के योग होने से सगुण है और वही पृथिवी चेतन और आकाशादिकों के गुणों से रहित होने से निर्गुण भी है वैसेही अपने सर्वज्ञादिक गुणों से सदा सहित होनेसे परमेश्वर का नाम सगुण है और उत्पत्ति स्थिति नाश जड़त्वादिक जगत के गुणों से रहित होने से परमेश्वर निर्गुण भी है वैसे सब जगहों में विचार कर लेना ॥(सर्वजगतोन्तर्यन्तुं शीलमस्यसो ऽन्तर्यामी। जो सब जगत के भीतर बाहर और मध्य में सर्वत्र व्याप्त होके सब को जानते हैं और सब जगत को नियम में रखने से परमेश्वर का नाम अन्तर्यामी है)न्यायकारी नाम के अर्थ में धर्म शब्द की व्याख्या कर दी है उस्से जानलेना धर्मेण राजते सधर्मराजः अथवाधर्मराजयतिप्रकाशयति सधर्मराजः। धर्म न्याय का और न्याय पक्षपात के त्याग का नाम है तिस धर्म से सदा प्रकाशमान होय अथवा सदा धर्म का प्रकाशकरने से परमेश्वरका नाम धर्मराज है ॥(सर्वञ्जगत्करोतीतिसर्वजगत् कर्त्ता सो सब जगत् का करने वाला होने से परमेश्वर का नाम सर्व जगत् कर्त्ता है)॥ निर्गतंभयंयस्मात्सनिर्भयः)। जिसको किसी से किसी प्रकार का भय नहीं होता है इस्से परमेश्वर का नाम

निर्भय है ॥ (नविद्यतेआदि:कारणंयस्यस:अनादि: । जिसका कारण कोई भी नहीं और आपने तो सब जगत का आदि कारण है इससे परमेश्वर का नाम अनादि है)॥(अणोरणीयान्महतोमहीयान्। यह कठोपनिषद का वचन है)जो सब सूक्ष्म पदार्थों से अत्यन्त सूक्ष्म के होने से परमेश्वर का नाम सूक्ष्म है)और जो सब बड़ों में अत्यन्त बड़ा है इससे परमेश्वर का नाम महान् है सब कल्याण गुणों से सदा युक्त रहने से परमेश्वर का नाम शिव है ॥(भगोविद्यतेयस्यसभगवान। जो अनन्त ज्ञान अनन्त वैराग्यादिक नित्य गुणों से युक्त होने से परमेश्वर का नाम भगवान् है)॥(मानयतिचराचरञ्जगत्। अथवा सर्वैर्वेदादिभिश्शास्त्रै: शिष्टैश्चमन्यतेय: समनु: । जो सब जगत का मान करै अथवा सब वेदादिक शास्त्र और शिष्टलोक जिसको अत्यन्त मानैं इससे परमेश्वर का नाम मनु है)॥ चिन्तितुंयोग्यश्चित्य:नचिन्त्योऽचिन्त्य:। जो विषयासक्त पुरुषों से चिन्तने में नाम सम्यक् जानने में नहीं आते इससे परमेश्वर का नाम अचिन्त्य है परन्तु ऐसा ज्ञान ज्ञानियों को होता है कि सर्वव्यापक जो परमेश्वर सो हृदय देश में भी है उस हृदयस्थ व्यापक परमेश्वर को जानने से सब अनन्त जो परमेश्वर उसका ज्ञान निश्चित होता है जैसा मेरे हृदय में परमेश्वर है वैसाही सर्वत्र है जैसे कि समुद्र के जल का एक बिन्दु जीभ के ऊपर रखने से उसके स्वादादिक गुणों के जानने से सब समुद्र के जल का ज्ञान हो जाता है वैसेही परमेश्वर का दृढ़ ज्ञान ज्ञानियों को हो जाता है ॥(प्रमातुंयोग्य: प्रमेय: नप्रमेय: अप्रमेय: । जो परिमाणों में जिसका परिमाण तौलन नहीं होता इतनाहीं परमेश्वर में सामर्थ्य है ऐसा कोई भी नहीं कह सका और न जान सका है इससे परमेश्वर का नाम अप्रमेय है)॥ प्रमदितुंनाम उन्मदितुंशीलमस्यसप्रमादी नप्रमादी अप्रमादी। जिसका प्रमाद नाम उन्मत्तता

के लेशमात्र का भी सम्बन्ध नहीं है इस्से परमेश्वर का नाम अकामी है॥ विश्वंबिभर्तीतिविश्वम्भरः। जो विश्व का धारण और पोषण का कारण होने से परमेश्वर का नाम विश्वम्भर है कलसंख्याने। इस धातु से काल शब्द सिद्ध होता है॥ कलयतिसर्वञ्जगत् सकालः जो सब जगत की संख्या और परिमाण को आदि अन्त मध्य को यथावत् जानने से परमेश्वर का नाम काल है उसका काल कोई भी नहीं है और वह काल का भी काल है)॥ प्रीञ्तर्पणेकान्तौच। इस धातु से प्रिय शब्द सिद्ध होता है॥ प्रीणातिसर्वान्धर्मात्मनः। अथवा प्रीयतेधर्मात्मभिःसप्रियः। जो सब शिष्टों को और मुमुक्षुओं को अपने आनन्द से प्रसन्न करदे अथवा जिस्को प्राप्त होके सब जीव प्रसन्न हो जांय इस्से परमेश्वर का नाम प्रिय है) शिव नाम कल्याण का है जो आप तो कल्याण स्वरूप होय और जिस्को प्राप्त होके जीव भी कल्याण स्वरूप होय इस्से परमेश्वर का नाम शिवशङ्कर)है इतने सौ १०० नाम परमेश्वर के विषय में लिख दिये परन्तु इन से भिन्न भी बहुत अनन्त नाम हैं उन का इसी प्रकार से सज्जन लोक विचार कर लेवें कुछ थोड़ा सा परमेश्वर के विषय में मैंने लिखा है किन्तु वेदादिक शास्त्रों में परमेश्वर के विषय में जितना ज्ञान लिखा है उसके आगे मेरा लिखना ऐसा है कि समुद्र के आगे एक बिन्दु भी नहीं और जो यह लिखा है सो केवल उन वेदादिक शास्त्रों के पढ़ने पढ़ाने की प्रवृत्ति के लिये लिखा है जब सब लोक उन शास्त्रों के पठन पाठन में प्रवृत्त होंगे और जब उन शास्त्रों को ऋषि मुनियों के व्याख्यान की रीति से पढ़के विचारेंगे तब सब लोगों को परमेश्वर और अन्य पदार्थों का भी यथावत् ज्ञान होगा अन्यथा नहीं इस प्रकरण का नाम मङ्गलाचरण है ऐसा कोई कहे कि मङ्गलाचरण आदि मध्य और अन्तमें किया जाता है ऐसा आप

भी करेंगे वा नहीं ऐसा हमको करना योग्य नहीं क्योंकि वह बात मिथ्या है आदि मध्य और अन्तमें जो मङ्गल करेगा तो आदि और मध्यके बीचमें अन्त और मध्य के बीच में अमङ्गल ही को लिखेगा इस्से यह बात मिथ्या है किन्तु शिष्टों को तो सदा मङ्गलही का आचरण करना चाहिये और अमङ्गल का कभी नहीं इसमें कपिल ऋषि का प्रमाण भी है ॥(मङ्गलाचरणंशिष्टाचारात् फलदर्शनाच्छ्रुतितश्चेति । इस सूत्र का यह अभिप्राय है कि मङ्गलनाम सत्य सत्य धर्म जो ईश्वर की आज्ञा उसका यथावत् आचरण उसका नाम मङ्गलाचरण है उस मङ्गलाचरण के करने वाले उनका नाम शिष्ट है उस शिष्टाचार के हेतु से मङ्गलही का आचरण करना चाहिये और जो मङ्गल को आचरण करने वाले हैं उन को मङ्गल रूपही फल होता है अमङ्गल कभी नहीं और श्रुति से भी यही आता है कि मङ्गलही का आचरण करना चाहिये)॥ यान्यनवद्यानिकर्माणि तानिसेवितव्यानिनोइतराणीति । इसका यह अभिप्राय है कि अनवद्य नाम श्रेष्ठहीका है धर्मरूपही मङ्गलकर्म करना चाहिये अधर्म रूप अमङ्गल कर्म कभी न करना चाहिये इस्से क्या आया कि आदि अन्त और मध्यहीं में मङ्गलाचरण करना चाहिये यह बात मिथ्या जानी गई कि सदा मङ्गलाचरणही करना चाहिये अमङ्गल का कभी नहीं और आज काल के पण्डित लोक जो कि मिथ्या ग्रन्थ रचते हैं सत्यशास्त्रों के ऊपर मिथ्या टीका रचते हैं उन के आदि में जो श्रीगणेशायनमः शिवायनमः सीतारामाभ्यान्नमः दुर्गायैनमः राधाकृष्णाभ्यांनमः बटुकायनमः श्रीगुरुचरणारविन्दाभ्यान्नमः हनुमतेनमः । भैरवायनमः ॥ इत्यादिक लेख देखने में आते हैं इनको बुद्धिमान् मिथ्याही जान लेवै क्योंकि वेदों में और ऋषि मुनियों के किये ग्रन्थों में किसी स्थान में भी ऐसे लेख देखने में नहीं आते हैं

ऋषि लोक अथ शब्द का और ॐकार शब्द का पाठ आदि में कर्ते हैं सो अधिकारार्थ अधिकारार्थ नाम इतनी विद्या होने से इस शास्त्र पढ़ने का अधिकारी होता है वा आनन्तर्यार्थ आनन्तर्यार्थ नाम एक शास्त्र को करके उसके पीछे दूसरे का जो रचना अथवा एक कर्म करके दूसरे कर्म को करना इस वास्ते ॐकार और अथ शब्द का पाठ ऋषि मुनि लोग कर्ते हैं ॐकारंवेदेषु अथकारंभाष्येषु यह कात्यायन मुनिकृत प्रातिशाख्य का बचन है वैसेही मैं दिखाता हूं अथशब्दानुशासनम् अथेत्ययंशब्दोऽधिकारार्थः प्रयुज्यते यह व्याकरण महाभाष्य के प्रारम्भ का बचन है॥ अथातोधर्मजिज्ञासा। यह भी मीमांसा शास्त्र के आरम्भ का बचन है॥ अथातोधर्मंव्याख्यास्यामः। यह वैशेषिक दर्शन शास्त्र का प्रथम सूत्र है॥ प्रमाणप्रमेयेत्यादि॥ यह न्यायदर्शन शास्त्र के आरम्भ का बचन है॥ अथयोगानुशासनम् यह पातञ्जलदर्शन के प्रारम्भ का बचन है॥ अथत्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः। यह साङ्ख्यदर्शन शास्त्र के आरम्भ का बचन है॥ अथातोब्रह्मजिज्ञासा। यह वेदान्तशास्त्र के प्रारंभ का बचन है॥ ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत। यह छान्दोग्य उपनिषद के प्रारम्भ का बचन है॥ ओमित्येतदक्षरमिदंसर्वन्तस्योपव्याख्यानम्। यह माण्डूक्यउपनिषद का बचन है इत्यादिक और भी जानलेने, देखना चाहिए कि ऋषि लोगोंने और बेदों मेंभी अथ और ॐकार अग्न्यादिक भी चारों बेदों के आरम्भ में अग्नि तथा इट् और शम् ये शब्द देखने में आते हैं परन्तु श्रीगणेशायनमः इत्यादिक बचन किसी बेद में और ऋषियों के ग्रन्थों में भी नहीं देखने में आते हैं इससे क्या जाना जाता है कि बेदादिक शास्त्रों से और ऋषि मुनियों के किये ग्रन्थों से भी यह नवीन लोगों का प्रमादही है ऐसाही शिष्ट लोगों को जानना चाहिये और वैदिक लोक हरिःओम् इस

शब्द का पठन पाठन के आरम्भ में उच्चारण करते हैं वह सत्य है वा नहीं । यह भी मिथ्याही है क्योंकि ओंकार का तो ऋषि ग्रन्थों के प्रारम्भ में पाठ देखने में आता है परन्तु हरिः शब्द का पाठ कहीं देखने में नहीं आता है इससे हरिः शब्द का पाठ तो मिथ्याही है पूर्वोक्त प्रातिशाख्य के प्रमाण से ओंकार तो उचितही है यह प्रकरण तो पूर्ण होगया इससे आगे शिक्षा के विषय में लिखा जायगा ॥ इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते प्रथमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ १ ॥ ओ३म्

अथशिक्षांवक्ष्यामः । मातृमान्पितृमानाचार्यवान्पुरुषोवेद इतिश्रुतिः । प्रथम तो सब जनों को माता से शिक्षा होनी उ-चितहै जन्म से लेके तीनबर्ष अथवा पांचबर्ष पर्यन्त अपने संतानों को सुशिक्षा अवश्य करै प्रथम तो सुश्रुत और चरक जो वैद्यक शास्त्र ग्रन्थ हैं उनकी रीति से शरीर के स्वभाव के अनुकूल दुग्धादिकों में ओषधों को मिला के वा संस्कार करके पुत्रों को और कन्याओं को पिलावे अथवा जो स्त्री उनको अपना दूध पिलावै सोई स्त्री उन श्रेष्ठ पदार्थों का भोजन करै जिस्से कि उसीके दूध में उनका अंश आजायगा जिस्से बालकों के भी शरीर की पुष्टि बल और बुद्धि वृद्धि होय और शुद्ध स्थान में उनको रखना चाहिये शुद्ध सुगन्ध देश में बालकों को भ्रमण कराना चाहिये जब उनका जन्म होय उसी दिन अथवा दूसरे तीसरे दिन धनाढ्य लोग और राजा लोग दासी वा अन्य स्त्री की परीक्षा करके कि उसके शरीर में रोग न होय और दूध में भी रोग न होय उसके पास बालक को रख देवैं और वही स्त्री उनका पालन करै परन्तु माता उस स्त्री के और बालकों के भी शिक्षा के ऊपर दृष्टि रक्खै और जो असमर्थ लोग हैं जिनको दासी वा अन्यस्त्री रखने का सामर्थ्य न होय तो छेरी

अथवा गाय वा भैंसी के दूध से बालकों का पोषण करें जहां छेरी आदिकों का अभाव होय वहां जैसा होसके वैसा करें और अञ्जनादिकों से नेत्रादिकों कोभी युक्तिसे रोग निवारणार्थ करें परन्तु बालकों की जो माता है सो उन्हों को दूध कभी न देवै स्त्रीके दूध देने से स्त्रीका शरीर निर्बल और क्षीण होजायगा जो स्त्री प्रसूत हुई वह भी अपाने शरीर की रक्षा के लिये श्रेष्ठ भोजनादिक करै जो कि औषधवत् होय जिस्से फिर भी युवावस्था की नाईं उसका शरीर होजाय और दूध के रक्षा के वास्ते उक्त वैद्यकशास्त्र में जैसा वह औषध सो यथावत संपादन करके स्तन के ऊपर लेपन करके उस मार्ग को रोकदेवे जिस्से कि दूध न निकल जाय इस्से स्त्रीका शरीर फिरभी पूर्ण बलवान् होजाय जैसे कि युवती का शरीर उसके तुल्य उसका भी शरीर होजायगा इस्से जो सन्तान होगा सो वैसाही फिर बलवान् और निरोग होगा जो उक्त वैद्यकशास्त्र में जैसी कि रीति लिखी है उसी प्रकार के लेपन से योनि का संकोच और योनि का शोधन भी स्त्री लोग करैं इस्से अपने पति का भी बल क्षीण न होगा जब कुछ बालक लोग समर्थ होंय तब उनको चलने बैठने मलमूत्र के त्याग और शौच नाम पवित्रता की शिक्षा करैं और हस्त पाद मुख नेत्रादिकों की सुचेष्टा की शिक्षा करैं जिस्से कि किसी अङ्ग से वे बालक लोग कुचेष्टा न करैं और खाने पीने की भी यथावत् शिक्षा करैं बालक की जिह्वा का शोधन करावैं क्योंकि कोमल जिह्वा के होने से अक्षरों का उच्चारण स्पष्ट होगा औषधों से और दन्तधावन से फिर बालक को बोलने की शिक्षा करैं तब माता श्रेष्ठ वाणी से स्थान और प्रयत्न के साथ भाषण करैं जैसे कि प इसका ओष्ठ तो स्थान है और दोनों ओष्ठों का मिलाना सो स्पर्श प्रयत्न है ओष्ठ स्थान के और स्पर्श प्रयत्न के विना पकार का शुद्ध उच्चारण कभी न होगा

ऐसेही सब वर्णों का स्थान और प्रयत्न ह्रस्व और दीर्घ विचार के माता उच्चारण करै वैसाही बालकों को करावै जिस्से कि वे बालक शुद्ध उच्चारण करैं गमन, आसन, सोना, बैठना, इस्की भी शिक्षा माता करै जिस्से कि सब कर्म युक्त युक्तही करैं और यह भी उपदेश उनको माता करै कि माता पिता तथा ज्येष्ठ बन्ध्वादिक मान्य लोगों को नमस्कार बालक लोग करैं रोदन हास्य और क्रीड़ासक्तभी वे न होवैं बहुत हर्ष शोक भी न करैं उपस्थ इन्द्रिय को हस्तसे नेत्र नासिकादिकों के बिना प्रयोजन से मर्द्दन अथवा स्पर्श न करैं क्योंकि निमित्त से बिना उपस्थेन्द्रिय का मर्द्दन और बारम्बार स्पर्श के करने से बीर्य की क्षीणता होगी और हस्त दुर्गन्ध युक्त भी होगा इस्से व्यर्थ कर्म करना न चाहिये इतनी शिक्षा बालकों को पांचवर्ष तक करना चाहिये उसके पीछे माता और पिता अक्षर लिखने की और पढ़ने की शिक्षा करैं देवनागराक्षर और अन्यदेशों के भाषाक्षरों का लिखने पढ़ने का अभ्यास ठीक २ करावें स्पष्ट लिखने पढ़ने का अभ्यास होजाय इस्से यह भी अवश्य शिक्षा करना चाहिये और भूत प्रेतादिक हैं ऐसा विश्वास बालक लोग कभी न करैं क्योंकि यह बात मिथ्याही है जब भूत प्रेतादिकों की बात सुनके उनके हृदय में मिथ्या भय होजाता है तब किसी समय में अन्धकार होनेसे शृगालादिक पशु पक्षि और मूषक मार्जारादिक अथवा चोर वा अपने शरीर की छाया देखने से शृगालादिकों के भागने का शब्द सुनके उनके हृदय में पूर्व सुनने के संस्कार के होने से अत्यन्त भूत प्रेतादिकों का विश्वास होने से भयभीत होके कम्प और ज्वरादिक होते हैं इस्से बहुत दुःख से पीड़ित होते हैं इस्से यह शङ्का का बहुत रीति से निवारण करना चाहिये जिस्से कि उनको कभी भूत प्रेतादिकों के होने में निश्चय न होय वैद्यक शास्त्र में बहुत से मानस

रोग लिखे हैं वे जब होते हैं तब उन्मत्त होके अन्यथा चेष्टा मनुष्य कर्ता है तब निर्बुद्धि लोग जानते हैं और कहते हैं कि इसके शरीर में भूत वा प्रेत आगया है फिर वे मिलके बहुत से पाखण्ड कर्ते हैं कि मैं मन्त्र से झाड़ झूड़ के पांच रुपैया मुझको दे तो अभी निकाल देऊं फिर उनके सम्बन्धी लोग उन पाखण्डियों से कहते हैं कि हम पांच रुपैया देंगे परन्तु इसके भूत को जल्दी आप लोग निकाल देवें फिर वे मिल के मृदङ्ग झांझ इत्यादिकों को लेके उसके पास आके बजाते गाते हैं फिर एक कोई पाखण्ड से उन्मत्त होके नांचता कूदता है कि इसके शरीर में बड़ा भूत प्रविष्ट हुआ है वह भूत कहता है कि मैं न निकलूंगा इसका प्राण लेही के निकलूंगा वह नांचने कूदने वाला कहता है कि मैं देवी वा भैरव हूं मुझ को एक बकरा और मिठाई, वस्त्र देओ तो मैं इस भूत को निकाल देऊं तब उनके सम्बन्धी कहते हैं कि जो तुम चाहो सो लेलो परन्तु इस भूत को आप निकाल देवें सब लोग उस उन्मत्त के गोड़ पैं गिर पड़ते हैं तब तो उन्मत्त बहुत नांचता कूदता है परन्तु कोई बुद्धिमान् उसको एक थपेड़ा वा एक जूता मार देवै तब शीघही उसको देवी वा भैरव भाग जाते हैं क्योंकि वह केवल धूर्त धनादिक हरण करने के लिये पाखण्ड कर्ता है जो नाममात्र तो पण्डित हैं ज्योतिश्शास्त्र का अभिमान करके कहते हैं कि सूर्यादि ग्रह क्रूर इनके ऊपर आये हैं इससे यह पुरुष पीड़ित है परन्तु इसके ग्रहों को शान्ति के लिये दान पाठ और पूजा जो करावै तो ग्रहों को शान्ति होजाय अन्यथा शान्ति न होगी उनको बहुत पीड़ा होगी और इनका मरण होजाय तो आश्चर्य नहीं इनसे कोई पूंछे कि सूर्यादिक ग्रह सब आकाश में रहते हैं वे सब लोक हैं जैसा कि पृथिवी लोक है कैसे वे पीड़ा कर सकते हैं और जो तापादिक उनके तेज हैं सब के ऊपर

समानही प्रकाश है कैसे एक के ऊपर क्रूर होके दुःख दे और दूसरे को शान्त होके सुख दे यह बात कभी नहीं हो सक्ती है जितने धनाढ्य और राजा लोग हैं उनके ऊपर सब मिलके आपके ऊपर क्रूर ग्रह आये हैं ऐसा कहते हैं क्योंकि दरिद्रों से तो इतना धन नहीं मिल सकता है इससे उन धनाढ्यों के पास जाके बारम्बार ग्रहों की कथा से भय देखा के बहुत धन को हरण कर लेते हैं जो कोई बुद्धिमान् उनसे ऐसा कहे कि आप पण्डित लोग अपने घरमें ग्रहों की शान्ति के लिये पूजा पाठ दान वा पुण्य क्यों नहीं कराते हैं तब वे सब पुरोहित पण्डितादिक मिलके कहते हैं कि तू नास्तिक होगया इस रीति से भय देखाके उनको उपदेशादिक बहुत प्रकार कहके उसी मार्ग में लेआते हैं परन्तु कोई बुद्धिमान् होता है सो उनके जाल में नहीं आता है वैसेही मुहूर्त विषय अथवा यात्रा में जाल रचते हैं धन लेने के लिये तथा जन्मपत्र का जो रचन होता है सो भी मिथ्या है वह जन्मपत्र नहीं है किन्तु शोकपत्र है ऐसा जानना चाहिये क्योंकि जन्मपत्र रचके पण्डित उसका फल उनके पास आके कहते हैं इस बालक का १० वां वर्ष अथवा ३० वां वर्ष जब आवेगा तब इसके ऊपर बहुत से क्रूर ग्रह आवेंगे यह बहुत सी पीड़ा पावेगा यह मरजावे तो भी आश्चर्य नहीं इस बात को सुनके बालक के माता अथवा पितादिक शोकातुर हो जाते हैं इससे इस पत्र का नाम शोक पत्रही रखना चाहिये कभी इसके ऊपर विश्वास न करना चाहिये इसको बुद्धिमान् मिथ्याही जानैं रोग निवृत्ति के लिये औषधादिक अवश्य करैं इस रीति से बालकों का प्रथमही माता वा पिता को शिक्षा का निश्चय करना वा कराना उचित है मारण मोहन उच्चाटन वशीकरणादिक विषय में सत्यत्व प्रतिपादन करते हैं सो भी मिथ्या जानना चाहिये और तांबे का सोना करते हैं

पारे को चांदी बनाता है यह भी बात मिथ्या जानना चाहिए फिर उन बालकों को हृदय में अच्छी रीति से यह बात निश्चय कराना चाहिये कि वीर्य की रक्षा करने में निश्चित बुद्धि होय क्योंकि वीर्य की रक्षा से बुद्धि बल पराक्रम और धैर्यादिक गुण अत्यन्त बढ़ते हैं इससे बालकों को बहुत सुख की प्राप्ति होती है इसमें यह उपाय है कि विषयों की कथा और विषयी लोगों का सङ्ग विषयों का ध्यान कभी न करैं श्रेष्ठ लोगों का सङ्ग विद्या का ध्यान और विद्या ग्रहण में प्रीति सदा होने से विषयादिकों में कभी प्रवृत्त न होंगे जब तक ब्रह्मचर्य की पूर्ति और विवाह का समय न होय तब तक उन बालकों का माता पितादिक सर्वथा रक्षा करैं और ऐसा यत्न करैं कि जिसमें अपने बालक मूर्ख न रहैं किसी प्रकार से भ्रष्ट भी न होंय ऐसे ७ सात वर्ष वा ८ आठवर्ष तक माता पिता यत्न करैं प्रथम जो श्रुति लिखी थी कि मातृमान् नाम मात्रा शिक्षितः प्रथम माता से उक्त प्रकार से अवश्य शिक्षा होनी चाहिये पितृमान् नाम पिता से भी शिक्षा होनी चाहिये आचार्यवान् नाम पांचवर्ष के पीछे वा ८ आठवर्ष के पीछे आचार्य की शिक्षा होनी चाहिये जब तीनों से यथावत् शिक्षित पुत्र वा कन्या होंगे तब शिष्ट होंगे अन्यथा पशुवत् होंगे मनुष्य गुण जो हैं विद्यादिक वे कभी न आवेंगे और विद्या रूप धन की सन्तान को प्राप्ति कराना यही माता पिता और आचार्य का मुख्य फल है कि उनका लाड़न कभी न करना कराना चाहिये क्योंकि लाड़न में बहुत से दोष हैं और ताड़न में बहुत से गुण हैं इसमें व्याकरण महाभाष्य की कारिका का प्रमाण है ॥ सामृतैःपाणिभिर्घ्नन्ति गुरवोनविषोक्षितैः । लाड़नाश्रयिणोदोषा स्ताड़नाश्रयिणोगुणाः ॥ इसका यह अर्थ है कि सामृतैः नाम अमृत के तुल्य ताड़न है जैसा कि हाथ से किसी को कोई अमृत देवै वैसाही बालकों का ताड़न

है क्योंकि जो वे ताड़न से श्रेष्ठ शिक्षा को और सद्विद्या को ग्रहण करेंगे तब उनको प्रतिष्ठा सुख और मान सर्वत्र प्राप्त होगा उस्से धन और आजीविका भी उनको सर्वत्र होगी वे बहुत सुखी होंगे साम्हतैः पाणिभिर्घ्नन्ति नाम सदा गुरु लोक ताड़ना कर्ते हैं न विषोक्षितैः नाम विष से युक्त जो हाथ उस्से जो स्पर्श वह दुःखही का हेतु होता है वैसा अभिप्राय उनका नहीं है किन्तु हृदय में तो कृपा परन्तु केवल गुण ग्रहण कराने के लिये माता पिता तथा गुर्वादिक ताड़न कर्ते हैं क्योंकि लाड़ना श्रयिणोदोषाः नाम जो अपने सन्तानों का लाड़न करेंगे तो वे मूर्ख रहजांयगे पीछे जो कुछ उनके अधिकार में धन वा राज्य रहेगा उसका वे न पालन करेंगे न अधिक वृद्धि होगी उन पदार्थों का नाशही करदेंगे फिर वे अत्यन्त दुःखी होजांयगे और दूसरे के आधीन रहेंगे यह दोष माता पिता तथा गुर्वादिकों का गिना जायगा इस्से क्या आया कि उनका लाड़न क्या किया किन्तु उनको मारही डाला ताड़ना श्रयि-णोगुणाः नाम अवश्य सन्तानों को गुण ग्रहण कराने के लिए सदा ताड़नहीं कराना चाहिये क्योंकि ताड़न के बिना वे श्रेष्ठ स्वभाव और श्रेष्ठ गुणों को कभी ग्रहण न करेंगे इस्से वैसाही करना चाहिये जिस्से अपने सन्तान उत्तम होंय उनको विद्या और श्रेष्ठ गुणों काही आभूषण धारण कराना चाहिये और सुवर्णादिकों का कभी नहीं क्योंकि विद्यादिक गुण का जो आ-भूषण धारना है सोई आभूषण उत्तम है और सुवर्णादिकों का आभूषण का जो धारण है उसमें गुण तो नहीं है किन्तु दोषही बहुत से हैं क्योंकि चौरादिक भी उनको मारके आभू-षणों को लेजाते हैं और आभूषणों को धारण करने वाले को बहुत अभिमान रहता है जो कोई उसके सामने विद्यावान् भी पुरुष होय तो भी वह तृण के बराबर उसकी गणना करेगा

और अभिमान से गुण ग्रहण भी न करैगा और जब वे सोते हैं तब चोर आके उनको मार डालते हैं अथवा अङ्ग भङ्ग करके आभूषण लेजाते हैं इस्से सुवर्णादिकों का आभूषण धारना उचित नहीं और कभी चोरी न करैं किसी का पदार्थ उसकी आज्ञा के बिना एक तृण वा पुष्प भी ग्रहण न करैं क्योंकि जो तृण की चोरी करेगा सो सब की चोरी करेगा फिर उसको राजगृह में दण्ड होगा अप्रतिष्ठा भी होगी और निन्दा होगी उसका विश्वास कोई भी न करेगा इस्से मनसे भी कभी चोरी करने की इच्छा न करनी चाहिये और मिथ्या भाषण भी करना न चाहिये क्योंकि मिथ्या भाषण जो करेगा सो सब पाप कर्मों को भी करेगा और उसका विश्वास कोई भी न करेगा प्रतिज्ञा भी मिथ्या न करनी चाहिये प्रथम तो विचार करके प्रतिज्ञा करनी चाहिये जब प्रतिज्ञा की तब उसका पालन यथावत् करना चाहिये प्रतिज्ञा क्या होती है कि नियम से जो कहना उस वक्त मैं आपके पास आऊंगा वा आप मेरे पास आवैं इस पदार्थ को मैं देऊंगा वा लेऊंगा सो जैसा कहै वैसा हो प्रतिज्ञा पालन करै अन्यथा कभी न करै प्रतिज्ञा की जो हानि है सो मनुष्य का महादोष है इस्से प्रतिज्ञा की हानि कभी न करनी चाहिये अभिमान कभी न करना चाहिये अभिमान नाम अहङ्कार का है मैं बड़ा हूं मेरे सामने कोई कुछ भी नहीं इस्से क्या होगा कि कभी वह गुण ग्रहण तो न करेगा परन्तु मूर्खही रहजायगा छल कपट वा कृतघ्नता कभी न करनी चाहिये क्यों कि छल, कपट, और कृतघ्नता से, अपनाही हृदय दुःखित होता है तो दूसरे की क्या कथा और उसका उपकार कोई भी न करेगा छल कपट और कृतघ्न तो उसको कहते हैं कि हृदय में तो और बात बाहर और बात कृतघ्नता नाम कोई उपकार करै उस उपकार को न मानना सो कृतघ्नता कहाती है क्रोध

भी कभी न करना क्रोध से अपने अपनीही हानि करदेवै और
को भी हानि करले इससे क्रोध भी न करना चाहिये किसी से
कटुक वचन न कहै किन्तु मधुर वचनही सदा कहै विना बोलाये
किसी से बोले नहीं और बहुत बकवाद कभी न करै जितना
कहना चाहिये इतनाही कहै जिससे कहना वा सुनना सो
नता सेही करै अभिमान से कभी नहीं किसी से बाद विवाद
न करै नेत्र नासिकादिकों से चपलता कभी न करै जहां किसी
के पास जाय वहां उसको पहिलेही नमस्कार करै और नीच
आसन में बैठे न किसी को आड़ होय न किसी को दुःख होय
न कोई उसको उठावै जिससे गुण ग्रहण करै उसको पूर्व नम-
स्कार करै उससे बिरोध कभी न करै उसको प्रसन्न करके जैसे
गुण मिले वैसाही करै पीछे भी मरण तक उसके गुण को माने
जिस गुण को ग्रहण करै उस गुण को आच्छादन कभी न करै
किन्तु उस गुण का प्रकाशही करना उचित है किसी पाखण्डी
का विश्वास कभी न करै सदा सज्जनों का सङ्ग करै दुष्टों का
कभी नहीं अपने माता और पिता वा आचार्य की आज्ञा पालन
सदा करै परन्तु जो आज्ञा सत्यधर्म सम्बन्धी होय तो करै और
जो धर्म बिरुद्ध आज्ञा होय तो कभी न करै परन्तु सेवा के लिये
जो माता पिता और आचार्य आज्ञा देवैं उसको अपने सामर्थ्य
के योग्य जरूर करै और माता पिता धर्म सम्बन्धी श्लोकों को
अथवा निघंटु वा अष्टाध्यायी को कण्ठस्थ करा देवैं परन्तु सत्य
सत्य धर्म के बिषय में और परमेश्वर के बिषय में दृढ़ निश्चय
करा देवैं जैसे कि पहिले प्रकरण में परमेश्वर के बिषय में
लिखा है वैसा उसी को उपासना में दृढ़ निश्चय करा देवैं और
वस्त्र धारने की यथावत् शिक्षा कर देवैं जैसा कि धारना चाहिये
भोजन की भी जितनी क्षुधा होय इससे कुछ न्यून भोजन करैं
जिससे कि उनके शरीर में रोग न होय गहरे जल में कभी

स्नान के लिये प्रवेश न करैं क्योंकि जो गम्भीर जल होगा और तरना न जानेगा तो डूब के मर जायगा अथवा जलजन्तु होगा तो खालेगा वा काटलेगा इस्से दुःखही होगा सुख कभी न होगा, इसमें मनुस्मृती का प्रमाण भी है ॥ नाविज्ञातेजलाशये। इस्का यह अभिप्राय है कि जिस जल को परीक्षा यथावत् जो न जानै सो स्नान के लिये उसमें प्रवेश कभी न करै किन्तु जल के तट पै बैठ के स्नान करै और बहुत कूदना फांदना न करै जिस्से कि हाथ पैर टूट जाय ऐसा न करै और मार्ग में जब चले तब नीचे दृष्टि करके चलैं क्योंकि कांटा और नीचा ऊंचा जीवजंतु देखके चलै जल को छान के पिये और बचन को बिचार के सत्यही बोले जो कुछ कर्म करै उसको पहिले बिचारही के आरंभ करै इस्से क्या सुख वा दुःख हानि वा लाभ होगा किस रीति से इसको करना चाहिये कि जिस रीति से परिश्रम तो न्यून होय और उसकी सिद्धि अवश्य होय इस रीति से बिचार करके कर्म का आरम्भ करना चाहिये इसमें मनुस्मृति के बचन का प्रमाण भी है ॥ दृष्टिपूतंन्यसेत्पादं वस्त्रपूतंजलंपिबेत्। सत्यपूतांवदेद्वाचं मनःपूतंसमाचरेत् ॥ दृष्टिपूतं नाम आंख से देख देख के आगे चले, वस्त्रपूतं नाम वस्त्र से छान के जल को पीवै क्योंकि जल में कश अथवा तृण वा जीव रहते हैं छानने से शुद्ध होजाता है इस्से जल छानही के पीना चाहिये, सत्यपूतांवदेद्वाचम् नाम सत्य से दृढ़ निश्चय करके यही कहना सत्य है तब बिचार करके मुख से निकालना चाहिये क्योंकि बचन निकाला जो गया सो जो मिथ्या होजायगा तब बुद्धिमान् लोग उसको जान लेंगे कि यह बिचारशून्य पुरुष है इस्से बिचार करके सत्यही कहना चाहिये, मनःपूतंसमाचरेत् नाम मनसे बिचार करके कर्म का आरम्भ करना चाहिये कि भविष्यत्काल में इसका फल क्या होगा ऐसा जो बिचार करके कर्म न करेगा

उसको पश्चात्तापही होगा और सुख न होगा इस से जो कुछ करना चाहिये सो विचार के करना चाहिये इस रीति से आठ वर्षतक बालकों को शिक्षा होनी चाहिये जो कुछ और शिक्षा लिखी है सत्य भाषणादिक सो तो सब को करना उचित है जिन के सन्तान सुशिक्षित होंगे वेही सुख पावेंगे और जिनके सन्तान सुशिक्षित न होंगे वे कभी सुख न पावेंगे यह बाल शिक्षा तो कुछ कुछ शास्त्रों के आशयों से लिख दी परन्तु सब शिक्षा का ज्ञान जब वेदादिक सत्य शास्त्रों को पढ़ेंगे और विचारेंगे तब होगा इसके आगे ब्रह्मचर्याश्रम और गुरु शिष्य को शिक्षा लिखी जायगी उसी के भीतर पढ़ने पढ़ाने की शिक्षा भी लिखी जायगी ॥ इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषाविरचिते द्वितीयःसमुल्लासः सम्पूर्णः ॥ २ ॥

अथाध्ययनाध्यापानविधिंव्याख्यास्यामः । आठ वर्ष का पुत्र और कन्याओं को पाठशाला में पढ़ने के लिये आचार्य के पास भेज देवें अथवा पांचवे वर्ष भेजदेवें घरमें कभी न रक्खें परंतु ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य इनके बालकों का यज्ञोपवीत घरमें होना चाहिये पिता यथावत् यज्ञोपवीत करै पिताही उनको गायत्री मन्त्र का उपदेश करै गायत्री मन्त्र का अर्थ भी यथावत् जना देवै गायत्री मन्त्र में जो प्रथम ओंकार है उसका अर्थ प्रथम समुल्लास में लिखा है वैसाही जान लेना ॥ भूरितिवैप्राणः भुवरित्यपानः स्वरितिव्यानः । यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है ॥ प्राणयतिचराचरञ्जगत्सप्राणः । जो सब जगत् के प्राणों का जीवन कराता है और प्राण से भी जो प्रिय है इस्से परमेश्वर का नाम प्राण है सो भूः शब्द प्राण का वाचक है और भुवः शब्द से अपान अर्थ लिया जाता है ॥ अपानयति सर्वंदुःखंसोपानः । जो मुमुक्षुओं को और मुक्तों को सब दुःखसे छोड़ा के आनन्द स्वरूप रक्खै इस्से परमेश्वर का नाम अपान

है सो अपान भुवः शब्द का अर्थ है व्यानयतिसव्यानः। जो सब जगत् के विविध सुख का हेतु और विविध चेष्टा का भी आधार इस्से परमेश्वर का नाम व्यान है सो व्यान अर्थ स्वः शब्द का जानना तत् यह द्वितीया का एक बचन है सवितुः षष्ठी का एक बचन है वरेण्यं द्वितीया का एक बचन है॥ भर्गः २ का एक बचन है॥ देवस्य ६ का एक बचन है धीमहि क्रिया पद है धियः द्वितीया का बहुबचन है यः प्रथमा का एक बचन है नः षष्ठी का बहु बचन है, प्रचोदयात् क्रिया पद है, सविता शब्द का और देव शब्द का अर्थ प्रथम समुल्लास में कह दिया है वहीं देख लेना॥ वर्तुमर्हंवरेण्यं। नाम अति श्रेष्ठम् भर्गो नाम तेजः तेजोनाम प्रकाशः प्रकाशोनाम विज्ञानम् वर्तुनाम स्वीकार करने को जो अत्यन्त योग्य उसका नाम वरेण्य है और अत्यन्त श्रेष्ठ भी वह है धी नाम बुद्धि का है नः नाम हमलोगों की प्रचोदयात् नाम प्रेरयेत् हे परमेश्वर हेसच्चिदानन्दानन्त स्वरूप हेनित्य शुद्धबुद्ध मुक्त स्वभाव हेकृपानिधे हेन्यायकारिन् हेअज हे निर्विकार हेनिरञ्जन हेसर्वान्तर्यामिन् हेसर्वाधार हेसर्वजगत्पितः हेसर्वजगदुत्पादक हेअनादे हेविश्वम्भर सवितुर्देवस्य तवयद्वरेण्यं भर्गः तद्वयंधीमहि तस्य धारणं वयं कुर्वीमहि हेभगवन् यः सविता देवः परमेश्वरः सभवान् अस्माकंधियः प्रचोदयादित्यन्वयः हे परमेश्वर आप का जो शुद्ध स्वरूप ग्रहण करने के योग्य जो विज्ञान स्वरूप उसको हम लोग सब धारण करैं उसका धारण ध्यान उसके ऊपर विश्वास और दृढ़ निश्चय हम-लोग करैं ऐसी कृपा आप हम लोगों पर करैं जिस्से कि आप के ध्यान में और आप की उपासना में हम लोग समर्थ होंय और अत्यन्त श्रद्धालु भी होंय जो आप सविता और देवादिक अनेक नामों के वाच्य अर्थात अनन्त नामों के अद्वितीय जो आप अर्थ हैं नाम सर्वशक्तिमान् सो आप हमलोगों की बुद्धियों

को धर्म विद्या मुक्ति और आप की प्राप्ति में आपही प्रेरणा करैं कि बुद्धि सहित हम लोग उसी उक्त अर्थ में तत्पर और अत्यन्त पुरुषार्थ करने वाले होंय इस प्रकार की हम लोगों की प्रार्थना आप से है सो आप इस प्रार्थना को अङ्गीकार करैं यह संक्षेप से गायत्री मन्त्र का अर्थ लिख दिया परन्तु उस गायत्री मन्त्र का वेद में इस प्रकार का पाठ है ॥ ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् । इस मन्त्र को पुत्रों को और कन्याओं को भी कण्ठस्थ करा देवें और इसका अर्थ भी हृदयस्थ करा देवें परंतु कन्या लोगों को यज्ञोपवीत कभी न कराना चाहिये और संस्कार तो सब करना चाहिये योगशास्त्र की रीति से प्राणों के और इन्द्रियों के जीतने के लिये उपाय का उपदेश करैं सो यह योगशास्त्र का सूत्र है ॥ प्रच्छर्द्दनविधारणाभ्यांवाप्राणस्य । इसका यह अर्थ है कि छर्द्दन नाम वमन का है जैसे कि मक्खी वा और कुछ पदार्थ खाने से उदर से मुख द्वारा अन्न बाहर निकल जाता है और प्रकृष्टञ्च तच्छर्द्दनञ्च प्रच्छर्द्दनम् अत्यन्त जो बल से वमन का होना उसका नाम प्रच्छर्द्दन है ॥ विधारणं नाम विरुद्धञ्च तद्धारणञ्च विधारणम् । जैसे कि उस अन्न का धारण पृथिवी में होता है उसको देख के घृणा होती है तो ग्रहण की इच्छा कैसे होगी कभी न होगी यह दृष्टान्त हुआ परन्तु दृष्टान्त इसका यह है कि नाभि के नीचे से अर्थात मूलेन्द्रिय से लेके धैर्य से अपान वायु को नाभि में ले आना नाभि से अपान को और समान को हृदय में ले आना हृदय में दोनों वे और तीसरा प्राण इन तीनों को बल से नासिका द्वार से बाहर आकाश में फेंक देना अर्थात जो वायु कुछ नासिका से निकलता है और भीतर जाता है उन सब का नाम प्राण है उसको मूलेन्द्रिय नाभि और उदर को ऊपर उठाले तब तक वायु न निकले पीछे हृदय में इकट्ठा करके

जैसे कि वमन में अन्न बाहर फेंका जाता है वैसे सब भीतर के वायु को बाहर फेंक दे फिर उसको ग्रहण न करै जितना सामर्थ्य होय तब तक बाहरही वायु को रोक रक्खे जब चित्त में कुछ क्लेश होय तब बाहर से वायु को धीरे धीरे भीतर लेजाय फिर उसको वैसाही बारम्बार २० बार भी करेगा तो उसका प्राण वायु स्थिर होजायगा और उसके साथ चित्त भी स्थिर होगा बुद्धि और ज्ञान बढ़ेगा बुद्धि इस प्रकार की तीव्र होगी कि बहुत कठिन विषय को भी शीघ्र जान लेगी शरीर में भी बल पराक्रम होगा और वीर्य भी स्थिर होगा तथा जितेन्द्रियता होगी सब शास्त्रों को बहुत थोड़े काल में पढ़लेगा इससे यह दोनों उपदेशों को यथावत् अपने सन्तानों को करदे फिर उसको आचमन का उपदेश करै हाथ में जल लेके गायत्री मन्त्र मन से पढ़के तीनबार आचमन करै ॥ अंगुष्ठमूलस्यतले ब्राह्मन्तीर्थं प्रचक्षते । कायमङ्गुलिमूलेऽग्रे दैवं पित्र्यं तयोरधः ॥ अंगुष्ठ मूल के नीचे तले नाम अंगुली का जो मध्य है उस्का नाम ब्राह्मतीर्थ है कनिष्ठिका के मूल में जो रखा है उसका नाम प्राजापत्य तीर्थ है अंगुलियों का जो अग्रभाग है उसका नाम देव तीर्थ है तर्जनी और अंगुष्ठ इन दोनों के मूल जो बीच है उसका नाम पितृतीर्थ है आचमन समय में ब्राह्मतीर्थ से आचमन करै इतने जल से आचमन करै कि हृदय के नीचे पर्यन्त वह जल जाय उससे क्या होता है कि कण्ठ में कफ और पित्त कुछ शान्त होगा फिर गायत्री मन्त्र को तो पढ़ता जाय और अंगुली से जल का छींटा शिर और नेत्रादिकों के ऊपर देवे इससे क्या होगा कि निद्रा और आलस्य न आवेगा जैसे कि कोई पुरुष को निद्रा और आलस्य आता होय तो जलके छींटा से निवृत्त हो जाता है तैसे यहां भी होगा पीछे गायत्री मन्त्र से उपस्थान करै उपस्थान नाम परमेश्वर की प्रार्थना और अघमर्षण करै

अघमर्षण उसका नाम है कि पाप करने की इच्छा भी न करना चाहिये संक्षेप से संध्योपासन कह दिया परन्तु यह दोनों बात एकान्त में जाके करना चाहिये क्योंकि एकान्त में चित्त की एकाग्रता होती हैं और परमेश्वर की उपासना भी यथावत् होती है इसमें मनुस्मृति का प्रमाण भी है ॥ अपांसमीपेनियतो नैत्यकंविधिमास्थित: । सावित्रीमप्यधीयीत गत्वाऽरण्यंसमाहित: ॥ इसका यह अभिप्राय है कि जल के समीप जाके और जितनी आचमन प्राणायामादिक क्रिया उनको करके वनके शून्य देश में बैठके गायत्री को मनसे यथावदुच्चारण करके एक एक पद का अर्थ चिन्तन करके और प्राणायाम से प्राण चित्त और इन्द्रियों की स्थिरता करके परमेश्वर की प्रार्थना और स्वरूप विचार से उक्त रीति से उसमें मग्न होजाय नाम समाधिस्थ होजाय ऐसेही नित्य दो बार द्विज लोक प्रात:काल और सायङ्काल करैं एक घण्टा तक तो अवश्यही करै इससे बहुत सा सुख और लाभ भी होगा फिर वह पुत्रों को अग्निहोत्र का आचार सिखावै एक चतुष्कोण मिट्टी की वा तांबे की बेदि रच ले ☐ ऊपर चौड़ी नीचे छोटी ऊपर तो १२ अंगुल नीचे चार ४ अंगुल रहै ऐसी रचके चन्दन वा पलाश आम्रादिक श्रेष्ठ काष्ठों को लेके उस बेदि के परिमाण से खण्ड खण्ड कर लेवै वेदी अच्छी शुद्ध करके उस वेदी में काष्ठों को यथावत् रक्खै उसके बीच मे अग्नि रखदे उसके ऊपर फिर काष्ठ रख दे रख कर अग्नि प्रदीप्त करै और एक चमसा रचले हाथ की कोणी से कनिष्ठिका के अग्रपर्यन्त परिमाण से और इस प्रकार की प्रोक्षणीपात्र रचले⊂⊃ । उससे डेढ़ा प्रणीता पात्र रचले—[] एक घृत पात्र रचले ० प्रणीता में तो जल रक्खै पीछे उसमें से जब जब कार्य होय तब तब प्रोक्षणी में प्रणीता से जल लेके चमसा को और घृत के पात्र को नित्य शुद्ध करै

और कुशा को भी रखले जब जब होम करने का समय आवे तब सब पात्र को शुद्ध करके घृतपात्र में घृत को लेके अङ्गारों के ऊपर तपावे फिर उतार के आंख से देखके उसमें कुछ केश वा और जीव पड़े होंय तो उनको कुशाग्र से निकाल देवे पीछे अग्नि को प्रदीप्त करके चमसा में घृत को लेके ओं भूरग्नयेस्वाहा इदमग्नये इदन्नमम । इस मन्त्र से जो काष्ठ अग्नि से प्रदीप्त होय उसके बीच में एक आहुति देवे ॥ ओं भुववायवेस्वाहा इदं वायवे इदन्नमम । इस्से दूसरी आहुति देवे । ओं स्वरादित्याय स्वाहा इदमादित्याय इदन्नमम । इस्से तीसरी आहुति देवे ॥ ओं भूर्भुवः स्वः अग्निवाय्वादित्येभ्यःस्वाहा इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्नमम । इस्से चौथी आहुति देनी ॥ ओं सर्ववैपूर्णंस्वाहा । इस्से पांचवी आहुति देवे ॥ और जो अधिक होम करना होय तो गायत्री मन्त्र से करदे ऐसेही संध्योपासन के पीछे नित्य दो बार अग्निहोत्र सब करें ओंकार भू आदिक और अग्न्यादिक जितने इन मन्त्रों में नाम हैं वे सब परमेश्वरही के हैं उनका अर्थ प्रथम प्रकरण में कह दिया है वहां जान लेना चाहिये और जो इसमें तीन बार पाठ है सो प्रथम जो अग्नयेस्वाहा इसका यह अर्थ है कि जो कुछ करना सो परमेश्वर के उद्देशही से करना इदमग्नये दूसरा जो पाठ है उसका यह अभिप्राय है कि सब जगत् परमेश्वर के जनाने के लिये है क्योंकि कार्य जो होता है सो कारणही वाला होता है इदन्नमम यह जो तीसरा पाठ है सो इस अभिप्राय से है कि यह जो जगत है सो मेरा नहीं है किन्तु परमेश्वरही का रचा है किस लिये कि हम लोगों के सुख के लिये परमेश्वर ने कृपा करके सब पदार्थ बनाये हैं हम लोग तो भृत्यवत् हैं परमेश्वरही इस जगत् का स्वामी है क्योंकि जो जिसका पदार्थ होता है उसका वही स्वामी होता है और जो इन मन्त्रों में स्वाहा शब्द है

इसका यह अर्थ है स्वम् आह सा स्वाहा अथवा स्वा नाम स्वकीया वाक् आह सा स्वाहा स्वम् नाम अपना जो हृदय सो सत्यही है जैसा जो कर्त्ता है वैसाही सो जानता है आह नाम कहने का है जैसा कि हृदय में होय वैसाही वाणी से कहै ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है संध्योपासन अग्निहोत्र तर्पण बलि वैश्व देव और अतिथि सेवा पंच महा यज्ञों के प्रयोजन पीछे लिखेंगे अग्निहोत्र के आगे तर्पण करैं ॥ नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्याद्देवर्षिपितृतर्पणम्। यह मनुस्मृति का बचन है ॥ अथदेवतर्पणम् ओं ब्रह्मादयोदेवास्तृप्यन्ताम् १ ओं ब्रह्मादिदेवपत्न्यस्तृप्यन्ताम् ॥ १ ॥ ओं ब्रह्मादिदेवसुतास्तृप्यन्ताम् १ ओं ब्रह्मादिदेवगणास्तृप्यन्ताम् १ इतिदेवतर्पणम्) (अथर्षितर्पणम्) ओं मरीच्यादयऋषयस्तृप्यन्ताम् २ ओं मरीच्याद्यृषिपत्न्यस्तृप्यन्ताम् २ ओं मरीच्याद्यृषिसुतास्तृप्यन्ताम् २ ओं मरीच्याद्यृषिगणास्तृप्यन्ताम् २ (इत्यृषितर्पणम्) अथ पितृतर्पणम्। ओं सोमसदः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ओं अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ओं बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ओं सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ओं हविर्भुजः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ओं आज्यपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ओं सुकालिनः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ओं यमादिभ्योनमः यमादींस्तर्पयामि ३ ओं पित्रे स्वधानमः पितरन्तर्पयामि ३ ओं पितामहायस्वधानमः पितामहन्तर्पयामि ३ ओं प्रपितामहायस्वधानमः प्रपितामहन्तर्पयामि ३ ओं मात्रे स्वधानमः मातरंतर्पयामि ३ ओं पितामह्यैस्वधानमः पितामहींस्तर्पयामि ३ ओं प्रपितामह्यै स्वधानमः प्रपितामहींस्तर्पयामि३ ओं अस्मत्पत्न्यै स्वधानमः अस्मत्पत्नींस्तर्पयामि ३ ओं सम्बन्धिभ्योमृतेभ्यः स्वधानमः सम्बन्धीमृतांस्तर्पयामि ३ ओं सगोत्रेभ्योमृतेभ्यः स्वधानमः सगोत्रान्मृतांस्तर्पयामि ३ इतितर्पणविधिः।(पित्रादिकों में जो कोई जीता होय उसका तर्पण न करै और जितने मरगये हों उनका तो अवश्य करै)॥ उद्धृतेदक्षिणेपाणा वुपवीत्युच्यते-

द्विजः। सव्येप्राचीनआवीति निवीतिःकण्ठसज्जने॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अर्थ है कि जैसे वामस्कन्ध के ऊपर यज्ञोपवीत सदा रहताही है परन्तु उस यज्ञोपवीत को दहिने हांथ के अंगुठा में लगाले इस क्रिया के करने से द्विजों का नाम उपवीती होता है सो सब देव कर्मों को उपवीती होके करें पूर्वाभिमुख होके देवतर्पण करे और देवतीर्थ से कण्ठ में जब यज्ञोपवीत रक्खै और दोनों हाथ के अंगुष्ठा मे यज्ञोपवीत को लगाने से द्विजों की निवीति संज्ञा होती है ब्राह्मतीर्थ से उत्तराभिमुख होके ऋषि तर्पण करना चाहिये और दक्षिण-स्कन्ध में यज्ञोपवीत रक्खै और वाम अंगुष्ठ में यज्ञोपवीत लगाने से द्विजों का नाम प्राचीनावीती होता है दक्षिणाभिमुख प्राचीनावीति और पितृतीर्थ से पितृकर्म तर्पण और श्राद्धकरना चाहिये देवतर्पण में एक बार मन्त्र पढ़के एक अंजलि देवें ऋषि तर्पण में दोबार मन्त्र पढ़के दो अंजलि देवें दूसरी बार मन्त्र पढ़के दूसरी अंजलि देवै और पितृतर्पण में एक बार मन्त्र पढ़के एक अंजलि देवै दूसरी बार मन्त्र पढ़के दूसरी अंजलि देवै और तीसरी बार मन्त्र पढ़के तीसरी अंजलि देवै॥ अथबलिवैश्वदेवम्। वैश्वदेवस्यसिद्धस्य गृह्येऽग्नौविधिपूर्वकम्। आभ्यःकुर्याद्देवताभ्यो ब्राह्मणोहोममन्वहम्॥ ॐ अग्नयेस्वाहा ॐ सोमायस्वाहा ॐ अग्नीषोमाभ्यांस्वाहा ॐ विश्वेभ्योदेवेभ्यःस्वाहा ॐ धन्वन्तरयेस्वाहा ॐ कुह्वैस्वाहा। ॐ अनुमत्यैस्वाहा ॐ प्रजापतयेस्वाहा ॐ सहद्यावापृथिवीभ्योस्वाहा। कृत्तिका की चतुष्कोण वेदी वा तांबे की रचके लवणान्न को छोड़के जो कि भोजन के लिये पदार्थ बना होय उसमे उसमें दशाहुति देवें [ ] पीछे इस प्रकार की रेखाओं से कोष्ठ रचके यथा क्रमसे उस २ दिशाओं में भागों को रखदे अपनी २ जगह से ॐ सानुगायेन्द्रायनमः इस्से पूर्वदिशा में भागदेना ॐ सानुगाययमायनमः। दक्षिण

दिशा में भाग रक्खै ओं सानुगायवरुणायनमः। इस मन्त्र से पश्चिम दिशा में भाग रक्खै ओं सानुगायसोमायनमः। इस मन्त्र से उत्तर दिशा में भाग रक्खै ओं मरुद्भ्योनमः। इस मन्त्र से द्वार में भाग रक्खै ओं अद्भ्योनमः। इस मन्त्र से वायव्यकोण में भाग रक्खै ओं वनस्पतिभ्योनमः। इस मन्त्र से अग्निकोण में भाग रक्खै ओं श्रियैनमः। इस मन्त्र से ऐशान्यकोण में भाग रक्खै ओं भद्रकाल्यैनमः। इस मन्त्र से नैर्ऋत्यकोण में भाग रक्खै ओं ब्रह्मपतयेनमः। ओं वास्तुपतयेनमः॥ इन दो मन्त्रों से कोठा के बीच में भाग रक्खै ओं विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः। ओं दिवाचरेभ्योभूतेभ्योनमः। ओं नक्तंचारिभ्योभूतेभ्योनमः। इन मन्त्रों से ऊपर हाथ करके कोष्ठ के बीच में तीनों भाग रख देवे ओं सर्वात्मभूतयेनमः। इस मन्त्र से कोष्ठ के पीछे भाग रक्खै अपसव्य करके ओं पितृभ्यःस्वधानमः इस मन्त्रसे कोष्ठ के भीतर दक्षिणदिशा में भाग रक्खै इन सोलहों भागों को इकट्ठा करके अग्नि में रखदे श्वभ्योनमः पतितेभ्योनमः श्वपगभ्योनमः पापरोगिभ्योनमः वायसेभ्योनमः कृमिभ्योनमः। इन छः मन्त्रों से शाक दाल इत्यादिक सब अन्न मिला के भूमि में छः भाग को रखके कुत्ता वा मनुष्यादिकों को देवै॥ इति बलिवैश्वदेवम्।
इसके पीछे अतिथि की सेवा करनी चाहिये अतिथि दो प्रकार के हैं एक तो विद्याभ्यास करने वाले दूसरे पूर्ण विद्यावाले नाम त्यागी लोग जो कि पूर्ण विद्यावाले पूर्ण वैराग्य और पूर्णज्ञान सत्यवादी जितेन्द्रिय भोजन के समय प्राप्त जो होय उनका सत्कार अन्न जल और आसनादिकों से करै पीछे गृहस्थ लोग भोजन करैं वा साथ में भोजन करावें अथवा भोजन के पीछे भी आवें तो भी सत्कार करना चाहिये नित्य पंच महायज्ञ करना चाहिये इनके करने में क्या प्रयोजन है इसका यह उत्तर है कि जिस्से इनको करना चाहिये प्रथम तो जिसका

नाम संध्योपासन है सो ब्रह्मयज्ञ है उसके दो भेद हैं पढ़ना पढ़ाना जप परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना यह सब मिलके ब्रह्मयज्ञ कहाता है इसका फल तो बहुत लोग जानते हैं और कुछ लिख भी दिया है अब लिखना आवश्यक नहीं इसके आगे दूसरा अग्निहोत्र है और अग्निहोत्र का करना अवश्य है अग्निहोत्र से किस की पूजा होती है उत्तर परमेश्वर की पूजा होती है और संसार का उपकार होता है अग्निहोत्र में जितने मन्त्र हैं वे तो परमेश्वर के स्वरूप स्तुति प्रार्थना और उपासना के वाचक हैं इससे परमेश्वर की उपासना आती है और संसार का इससे क्या उपकार है कि वेद ब्राह्मण और सूत्र पुस्तकों में चार प्रकार के पदार्थ होम के लिखे हैं एक तो जिसमें सुगन्ध गुण होय जैसे कि कस्तूरी केशरादिक और दूसरा जिसमें मिष्ट गुण होय जैसे कि मिश्री शर्करादिक और तीसरा जिसमें पुष्टिकारक गुण होय जैसा कि दूध घी और मांसादिक और चौथा जिसमें रोग निवृत्तिकारक गुण होय जैसा कि वैद्यकशास्त्र की रीति से सोमलतादिक औषधियां लिखी हैं उन चारों का यथावत् शोधन उनका परस्पर संयोग और संस्कार करके होम करै सायं और प्रातः क्योंकि संध्याकाल और प्रातःकाल में मलमूत्र त्याग सब लोग प्रायः कर्त्ते हैं उसका दुर्गन्ध आकाश और वायु में मिलके वायु को दुष्ट करदेता है दुष्ट वायु के स्पर्श से अवश्य मनुष्यों को रोग होता है जैसे कि जहां २ मेला होता है जिस जिस स्थान में दुर्गन्ध अधिक है उस २ स्थान में रोग अधिक देखने में आता है और दुर्गन्ध और दुष्ट वायुसे जिसको रोग होता है वही पुरुष उस स्थान को छोड़ के जहां सुगन्ध वायु होय उस स्थान में जाने से रोग की निवृत्ति देखने में आती है इससे क्या निश्चित जाना जाता है कि दुर्गन्ध युक्त वायु से बहुत से रोग होते हैं

र्व लोगों के मलसे जितना दुर्गन्ध होगा जब सब लोग उक्त सुगन्धादिक द्रव्यों का अग्नि में होम करैंगे उस दुर्गन्ध को निवृत्त करके वायु को शुद्ध करदेगा उससे मनुष्यों का बहुत उपकार होगा रोगों के न होने से फिर वे सुगन्धादिकों के परमाणु मेघमण्डल और जलमें जाके मिलेंगे उनके मिलने से सबको शुद्ध करदेंगे जोकि सूर्य की उष्णता का सुगन्ध दुर्गन्ध जल तथा रस के संयोग होने से सब अवयवों को भिन्न २ कर देता है जब अवयव भिन्न २ होते हैं तब लघु होजाते हैं लघु होने से वायु के साथ ऊपर चढ़ जाते हैं जहां पृथ्वी से ऊपर ५० क्रोश तक वायु अधिक है इससे ऊपर वायु थोड़ा है उन दोनों के सन्धि में वे सब परमाणु रहते हैं उससे नीचे भी कुछ रहते हैं जब की सुगन्ध दुर्गन्ध जल को वा रस को हमलोग मिलाते हैं तब वह पदार्थ मध्यस्थ होता है वैसाही वह जल मध्यस्थ होता है जब सुगन्धादिक गुण युक्त जो धूम है उसके परमाणु में अधिक तो जल है तथा अग्नि कुछ पृथ्वी वायु और ये चार मिले हैं परन्तु वेभी वैसे सुगन्धादिक गुण युक्त हैं वे जब मध्यस्थ जल के परमाणु में जाके मिलते हैं तब उनको सुगन्धादिक गुणयुक्त कर देते हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं और जो कोई इस विषय में ऐसी शंका करै कि वह जल तो बहुत है होम के परमाणु थोड़े हैं कैसे उस सब जल को वे शुद्ध करेंगे उसका यह उत्तर है कि जैसे बहुत से शाक में अथवा बहुत सी दाल में थोड़ी सी सुगन्धित इलायची इत्यादिक और थोड़ा सा घी करछुल में वा पात्र में रखके अग्नि में तपाने से जब वह जलता है तब धूम उठता है फिर उसको दाल के पात्र में मिला के मुख बन्द करदे और छौंक देदे वह सब धूम जल होके सब अंशों में मिल जाता है फिर वह सुगन्ध और स्वादयुक्त होता है वैसेही थोड़े भी होम के परमाणु सब मध्यस्थ जल के पर-

माणु को शुद्ध करदेंगे फिर जब उसी जल की दृष्टि होगी और वही जल भूमि पर आवैगा उस जल के पीने से वा स्नान करने से रोग की निवृत्ति होजायगी और बुद्धि बल पराक्रम नैरोग्य बढ़ेंगे वैसेही उसी जल से अन्न घास वृक्ष और फल दूध घी इत्यादिक जितने पदार्थ होंगे वे सब उत्तमही होंगे उनके सेवने से भी जितने जीव हैं वे सब अत्यन्त सुखी होंगे और जो होम करने वाले हैं वे भी अत्यन्त सुख पावेंगे इस लोक में अथवा परलोक में क्योंकि अग्नियुक्त सुगन्ध के परमाणु को नासिका द्वार से जब भीतर मनुष्य ग्रहण करता है मल मूत्र त्याग समय में दुर्गन्ध युक्त जितने परमाणु मस्तक में प्राप्त हुये थे उनको निकाल देंगे वा सुगन्धित करदेंगे तब उस मनुष्य के शरीर में सर्दी और आलस्य न होंगे उससे फूर्त्ति और पुरुषार्थ बढ़ेंगे पुष्प वा अतर के सुगन्ध से यह फल न होगा क्योंकि इस सुगन्ध में अग्नि के परमाणु मिले नहीं वे सब जगत् के उपकारक हैं इससे उनको भी अवश्य सुख रूप उपकार होगा उस पुण्य से और जब अश्वमेधादिक यज्ञ होय तब तो असंख्य सब जीवों को सुख होय इससे सब राजा धनाढ्य और विद्वान् लोग इसका आचरण अवश्य करें। तर्पण और श्राद्ध में क्या फल होगा इसका यह समाधान है कि ॥ तृप प्रीणने प्रीणनं तृप्तिः। तर्पण किसका नाम है कि तृप्ति का और श्राद्ध किसका नाम है जो श्रद्धा से किया जाता है (मरे भये पित्रादिकों का तर्पण और श्राद्ध करता है) उससे क्या आता है कि जीते भये को अन्न और जलादिकों से सेवा अवश्य करनी चाहिये यह जाना गया दूसरा गुण जिनके ऊपर प्रीति है उनका नाम लेके तर्पण और श्राद्ध करेगा तब उसके चित्तमें ज्ञान का संभव है कि जैसे वे मरगये वैसे मुझको भी मरना है मरण के स्मरण से अधर्म करने में भय होगा धर्म करने में प्रीति होगी

दूसरा गुण यह है कि दायभाग बांटने में सन्देह न होगा क्योंकि इसका यह पिता है इसका यह पितामह है इसका यह प्रपितामह है ऐसेही छः पीढ़ी तक सभों का नाम कण्ठस्थ रहैगा वैसेही इसका यह पुत्र है इसका यह पौत्र है इसका यह प्रपौत्र है इसे दायभाग में कभी भ्रम न होगा चौथा गुण यह है कि विद्वानों का श्रेष्ठ धर्मात्माओं होको निमन्त्रण भोजन दान देना चाहिये मूर्खों को कभी नहीं इसे क्या आता है कि विद्वान् लोग आजीविका के बिना कभी दुःखी न होंगे निश्चिन्त होके सब शास्त्रों को पढ़ावेंगे और बिचारेंगे सत्य २ उपदेश करेंगे और मूर्खों का अपमान होने से मूर्खों को भी विद्या के पढ़ने में और गुण ग्रहण में प्रीति होगी पांचवां गुण यह है कि देवऋषि पितृ संज्ञा श्रेष्ठों की है देवसंज्ञा दिव्य कर्म करने वालों की है पठन पाठन करने वालों को तो ऋषि संज्ञा है और यथार्थ ज्ञानियों को पितृ संज्ञा है उनको निमन्त्रण देगा तब उनसे बात भी सुनेगा प्रश्न भी करेगा उसे उनको ज्ञान का लाभ होगा छठवां प्रयोजन यह है कि श्राद्ध तर्पण सब कर्मों में वेदों के मन्त्रों को कर्म करने के लिये कण्ठस्थ रक्खेंगे इसे उस पुस्तक का नाश कभी न होगा फिर कोई उस विद्या का बिचार करेगा तब पदार्थ विद्या प्रगट होगी उसे मनुष्यों को बहुत लाभ होगा सातवां प्रयोजन यह है कि ॥ वसून्वदन्तिवैपितॄन् रुद्रांश्चैवपितामहान्। प्रपितामहांश्चादित्यान् श्रुतिरेषासनातनी ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि वसू जो है सोई पिता है जो रुद्र है सोई पितामह है जो आदित्य है सोई प्रपितामह है ये तीनों नाम परमेश्वरही के हैं इसे परमेश्वर होकी उपासना तर्पण से और श्राद्ध से आई पितृ कर्म में स्वधा जो शब्द है उसका यह अर्थ है कि स्वन्दधातीति स्वधा अपने जनों को ज्ञानादिकों से धारण करै अथवा पोषण करै उसका

नाम है स्वधा स्वधा नाम है परमेश्वर का किन्तु अपने ही पदार्थ को धारण करना चाहिये औरों के पदार्थ का धारण न करना चाहिये अन्याय से अथवा अपनेहीं पदार्थ से प्रसन्नता करनी चाहिये छल कपट वा परपदार्थ मे पुष्टि की इच्छा न करनी चाहिये इस प्रकार का स्वाहा और स्वधा का अर्थ शतपथ ब्राह्मण पुस्तक में लिखा है इतने सात प्रयोजन तो कह दिये और भी बहुत से प्रयोजन हैं बुद्धिमान् लोग विचार से जान लेवें और बलि वैश्व देव का प्रयोजन तो होम के नाईं जान लेना फिर यह भी प्रयोजन है कि भोजन के समय बलि वैश्व देव करैंगे वेभी सुगन्ध से प्रसन्न हो जांयगे और वह स्थान सुगन्ध युक्त होने से मक्खी मच्छरादिक जीव सब निकल जांयगे उस्से मनुष्यों को बहुत सुख होगा यह प्रयोजन अग्निहोत्रादिक होम का भी जान लेना और अतिथि सेवा से बहुत गुणों की प्राप्ति होगी इत्यादिक बहुत से प्रयोजन हैं इस्से अपने पुत्रों को पिता सब उपदेश करदे उपदेश करके आचार्य के पास अपने सन्तानों को भेजदे कन्याओं की पाठशाला में पढ़ाने वाली और नौकर चाकर सब स्त्रीही लोग रहैं पांचवर्ष का बालक भी वहां न जाय वैसेही पुत्रों की पाठशाला में सब पुरुषही रहैं पुरुष की पाठशाला में पांचवर्ष की कन्या भी न जाय वे कन्या और पुत्र इनका परस्पर मेलभी न होय ॥ ब्राह्मणस्त्रयाणांवर्णानामुपनयनङ्कर्त्तुमर्हति । राजन्योद्वयस्यवैश्यो वैश्यस्यैवेतिशूद्रमपि कुलगुणसम्पन्नं मन्त्रवर्जमनुपनीत मध्यापयेदित्येके ॥ यह सुश्रुत के सूत्र स्थान के द्वितीयाध्याय का वचन है ब्राह्मण का अधिकार तीन वर्णों के बालकों को यज्ञोपवीत कराने का है क्षत्रिय को क्षत्रिय और वैश्य इन दो वर्णों के बालकों को यज्ञोपवीत कराने का अधिकार है और वैश्य को वैश्यवर्णही का यज्ञोपवीत कराने का अधिकार है और शूद्र

लोगों की कन्या भी कन्याओं के पाठशाला में पढ़ें शूद्रों के बालक यज्ञोपवीत के बिना सब शास्त्रों को पढ़ें परन्तु वेद की संहिता को छोड़के उनके जे आचार्य हैं वे प्रतिज्ञा पूर्वक नियम बांधें प्रथम तो काल का नियम करें॥ षट्त्रिंशदाब्दिकंचर्य्यं गुरौत्रैवे-दिकंव्रतम्। तदर्द्धिकंपादिकंवा ग्रहणान्तिकमेववा॥ ब्रह्मचर्या-श्रम का नियम २५।३०।४०।४४।४८ वर्ष तक है अथवा उसका अर्द्ध १८ अथवा ९ नववर्ष अथवा जबतक पूर्ण विद्या न होय तब तक यह मनुस्मृति का श्लोक है पूर्वोक्त सुश्रुत में शरीर की अवस्था धातुओं के नियम से ४ प्रकार की लिखो है॥ वृद्धिर्यौवनंसंपूर्णता किञ्चित्परिहाणिश्चेति। षोडश वर्ष से २५ वर्ष तक धातुओं की वृद्धि होती है और २५ वर्ष से आगे युवाऽवस्था का प्रारम्भ होता है अर्थात सब धातु क्रमसे बलको ग्रहण करते हैं उनके बल की अवधि ४० वें वर्ष सम्पूर्ण होती है उत्तम पुरुष के ब्रह्मचर्य्य का नियम ४० वर्ष तक होता है और छान्दोग्य उप-निषद में ४४ वा ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य्य जो कर्त्ता है वह पुरुष विद्या पराक्रम और सब श्रेष्ठ गुणों में उत्तमों में भी उत्तम होगा और ३० से ३६ वर्ष तक मध्यम ब्रह्मचर्य्य का नियम है और २५ से ३० वर्ष तक न्यून से न्यून ब्रह्मचर्य्य का नियम है इससे न्यून ब्रह्मचर्य्य का नियम कभी न होना चाहिये जो कोई इससे न्यून ब्रह्मचर्याश्रम करेगा अथवा कुछ भी न करेगा उस को धैर्यादिक श्रेष्ठ गुण कभी न होंगे सदा रोगी, भ्रष्टबुद्धि, विद्या-हीन, कुत्सित, कर्मकारीही होगा क्योंकि जिसके धातुओं की क्षीणता और विषमता शरीर में होगी उस मनुष्य को किसी रीति से सुख न होगा और कन्याओं का २० से २४ वर्ष तक उत्तम ब्रह्मचर्याश्रम है १६ वर्ष से आगे २० वर्ष तक मध्यम ब्रह्मचर्याश्रम का काल है १६ वें वर्ष से १७ वा १८ वर्ष तक अधम ब्रह्मचर्य्य का काल है १६ वर्ष से न्यून कन्याओं का ब्रह्म-

चर्य कभी न होना चाहिये जो कोई कन्या १६ वर्ष से न्यून ब्र-ह्मचर्याश्रम को करेगी वह विद्या, बुद्धि, बल, पराक्रम, धैर्या-दिक गुणों से रहित और रोगादिक दोषों से युक्त होगी सदा दुःखीही रहेगी इस्से ब्रह्मचर्याश्रम पुरुषों को वा कन्याओं को न्यून कभी न करना चाहिये ॥ पञ्चविंशेततोवर्षे पुमान्नारीतु षोड़शे समत्वागतवीर्य्यौतौ जानीयात्कुशलोभिषक् ॥ यह सुश्रुत का बचन है इसका यह अर्थ है कि १६ वर्ष से न्यून कन्या का बिवाह कभी न करना चाहिये और २५ वर्ष से न्यून पुरुषों का भी न करना चाहिये और जो कोई इस बात का व्यतिक्रम करै कि १६ वर्ष से पहिले कन्याओं का बिवाह करै और २५ वर्ष से पहिले पुत्रों का बिवाह करै उसको राजा दंड दे उनके माता पिता को भी और जो कोई अपने सन्तानों को पाठशाला में पढ़ने के लिये न भेजै उसको भी राजा दण्ड देवै क्योंकि सब लोगों का सत्य व्यवहार और धर्म व्यवहार की व्यवस्था राजा ही के अधीन है जिस देश का जो राजा होय उसी को इस व्यवस्था को प्रीति से पालन करना चाहिये सो गुरु जो आचार्य यह प्रथम तो उक्त नियम को करावे आगे और नियमों को भी ॠतंचस्वाध्याय प्रवचनेच सत्यञ्चस्वाध्याय प्रवचनेच तपश्चस्वा-ध्याय प्रवचनेच दमश्चस्वाध्याय प्रवचनेच शमश्चस्वाध्याय प्रवचने-च अग्नयश्चस्वाध्याय प्रवचनेच अग्निहोत्रञ्च स्वाध्याय प्रवचनेच अतिथयश्च स्वाध्याय प्रवचनेच मानुषञ्च स्वाध्याय प्रवचनेच प्रजाचस्वाध्याय प्रवचनेच प्रजनश्चस्वाध्याय प्रवचनेच प्रजातिश्च स्वाध्याय प्रवचनेच ॥ यह तैत्तिरीयोपनिषद का बचन है ॠत नाम है यथार्थ और सत्य २ ज्ञान का ब्रह्मचारी लोग और अध्यापक लोग सत्य २ बात की प्रतिज्ञा करैं कि सत्य २ ही को मानैंगे मिथ्या को कभी नहीं और कभी असत्य को न सुनेंगे न कहेंगे स्वाध्याय नाम पढ़ना प्रवचन नाम पढ़ाना सत्य २ पढ़ें

और सत्य २ पढ़ावेंगे सत्यही कर्म करेंगे और करावेंगे तप नाम धर्मानुष्ठान का है सदा धर्मही करेंगे और अधर्म कभी नहीं हम लोग जितेन्द्रिय होंगे किसी इन्द्रिय से कभी परपदार्थ और पर स्त्री ग्रहण न करेंगे इसका नाम दम है शम नाम अधर्म की मनसे इच्छा भी न करनी अग्नयश्च नाम अग्नि में जगत् के उपकार के लिये सदा हम लोग होम करेंगे अग्नि-होत्रञ्च नाम अग्निहोत्र का नियम सब दिन पालेंगे अतिथियों की सेवा सब दिन करेंगे मानुषञ्च नाम मनुष्यों में जैसा जिस्से व्यवहार करना चाहिये वैसाही करेंगे बड़ा छोटा और तुल्य इनको जैसा मानना चाहिये वैसा उसको मानेंगे और जिस रीति से प्रजा की उत्पत्ति करनी चाहिये प्रजा का व्यवहार और पालन जैसा करना चाहिये धर्म से वैसाही करेंगे प्रजनश्च नाम वीर्यप्रदान जो करेंगे सो धर्मही से करेंगे प्रजातिश्च नाम जैसा कि गर्भ का पालन करना चाहिये और जन्म के पीछे भी जैसा पालन करना चाहिये वैसाही पालन उसका करेंगे परन्तु ऋतादि करेंगे स्वाध्याय प्रवचन का त्याग कभी नहीं करेंगे स्वाध्याय पढ़ना प्रवचन नाम पढ़ाना ऋतादिकों का ग्रहणही पूर्वक स्वाध्याय और प्रवचन को सदा करना चाहिये इसका विचार सब दिन करेंगे इसके छोड़ने से संसार की बहुत सी हानि होजाती है इस प्रकार से शिष्यों के प्रति पुरुष कन्याओं को स्त्री और पुरुषों को पुरुष शिक्षा करैं। वेदमनूच्याचार्योन्ते-वासिनमनुशास्ति सत्यम्वदधर्मञ्चर स्वाध्यायान्माप्रमदः आचा-र्याय प्रियंधनमाहृत्य प्रजातन्तुम्माव्यवच्छेत्सीः सत्यान्नप्रमदित-व्यम् धर्मान्नप्रमदितव्यम् कुशलान्नप्रमदितव्यम् स्वाध्यायप्रवचना भ्यांनप्रमदितव्यम् १ देवपितृकार्याभ्यांनप्रमदितव्यम् मातृदेवो-भव पितृदेवोभव आचार्यदेवोभव अतिथिदेवोभव यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नोइतराणि यान्यस्माकंसुचरितानि

तानित्वयोपास्यानि नोइतराणि येकेचास्मच्छ्रेयांसोब्राह्मणास्तेषांत्वयासनेन प्रश्वसितव्यम् श्रद्धयादेयम् अश्रद्धयादेयम् श्रियादेयम् ह्रियादेयम् भियादेयम् संविदादेयम् अथयदिते कर्म विचिकित्सा वा वृत्त विचिकित्सावास्यात् ३ ये तत्रब्राह्मणाः सम्मदर्शिनः युक्ता अयुक्ताः अलुक्षाधर्मकामाः स्युः यथातेतत्रवर्तेरन् तथातत्रवर्त्तेथाः एषआदेश एषउपदेश एषावेदोपनिषत् एतदनुशासनम् एवमुपासितव्यम् एवमुचैतदुपास्यम् ११ यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है इसी प्रकार से गुरु लोग शिष्यों को उपदेश करें हे शिष्य तूं सब दिन सत्यही बोल और धर्मही को कर स्वाध्याय नाम पढ़ने में जैसे तुमको विद्या आवै वैसेही कर जब तक विद्या तुमको पूर्ण न होय तब तक ब्रह्मचर्य का त्याग न करना फिर जब विद्या और ब्रह्मचर्य भी पूर्ण होजाय तब जैसा तुमारा सामर्थ्य होय वैसा उत्तम पदार्थ आचार्य को दे के प्रसन्न करना चाहिये और आचार्य भी उनको शीघ्र विद्या होय वैसाही करै केवल अपनी सेवा के लिये सब दिन उनमें न रक्खैं कृपा करके विद्या पढ़ावैं छल कपट आचार्य लोग कभी न करैं क्योंकि सत्यगुणों का प्रकाशही करना उचित है सब शिष्ट लोगोंको जब ब्रह्मचर्य और पूर्ण विद्या भी हो जाय तब उनको विवाह करना उचित है प्रजा का छेदन करना उचित नहीं और सत्य से प्रमाद न करना चाहिये अर्थात सत्य को छोड़ के असत्य से कोई व्यवहार न करना चाहिये धर्मही से सब व्यवहारों को करना चाहिये धर्म से विरुद्ध कोई कर्म न करना चाहिये कुशलता को सब दिन ग्रहण करना चाहिये और दुराग्रह अभिमान को कभी न करना चाहिये नम्रता शरलता से सदा गुण ग्रहण करना चाहिये भूति नाम सिद्धि इनकी प्राप्ति में पुरुषार्थ सदा करना चाहिये और पढ़ने पढ़ाने से रहित कभी न होना चाहिये सब दिन पढ़ने पढ़ाने का पुरु-

चाय हीं करना चाहिये देवकार्य नाम अग्निहोत्रादिक पितृकार्य नाम श्राद्ध तर्पणादिक उसको कभी न छोड़ना चाहिये माता पिता अतिथि और आचार्य इनकी सेवा कभी न छोड़नी चाहिये क्योंकि उनों ने जो पालन किया है वा विद्या दी है अथवा सत्य जो उपदेश करते हैं इस उपकार को कभी न भूलना चाहिये इनको अवश्य मानना चाहिये और जितने धर्मयुक्त कर्म हैं उनको करना चाहिये और पाप कर्मों को कभी न करना चाहिये माता पिता आचार्य और अतिथि भी शास्त्र प्रमाण से धर्म विरुद्ध जो उपदेश करैं अथवा पाप कर्म करावें उनको कभी न करना चाहिये और उनके जो सुकर्म हैं उनको तो अवश्य करना चाहिये उनके जो दुष्टकर्म हैं उनको कभी न करना चाहिये वैसेही मातादिक उपदेश करैं कि हमलोग जो सुकर्म करैं उनको तो तुम लोगों को अवश्य करना चाहिये हमलोग जो दुष्टकर्म करैं उनको कभी न करना चाहिये जो मनुष्य लोगों के बीचमें विद्या वाले धर्मात्मा और सत्यवादी होंय उनका सब दिन सङ्ग करना चाहिये उनसे गुणग्रहण करना चाहिये उनके बचन में और उनमें अत्यन्त श्रद्धा करनी चाहिये शिष्य लोग जब सुपात्र और धर्मात्मा मिलें तब श्रद्धा से उनको जो प्रियपदार्थ हो उसको देवें अथवा अश्रद्धा से भी देना चाहिये श्री नाम लक्ष्मी से देवें दारिद्र्य होवे तो भी दान की इच्छा न छोड़नी चाहिये लज्जा और प्रतिज्ञा से भी देना चाहिये अर्थात् किसी प्रकार से देना चाहिये दान का बंधक भी न करना चाहिये परन्तु श्रेष्ठ सुपात्रों को देना चाहिये कुपात्रों को कभी नहीं किसी को अन्याय से दुःख न देना चाहिये सब लोगों को बन्धुवत् जानना चाहिये और सब लोगों से प्रीति करनी चाहिये किसी से विवाद न करना चाहिये सत्य का खण्डन कभी न करना चाहिये और जो तुमको किसी विषय

वा किसी पदार्थ विद्या में सन्देह होय तब तुम लोग ब्रह्मवित् पुरुषों के पास जाओ वे कैसे होंय कि सर्वशास्त्रवित् निर्वैर पक्षपात कभी न करें वे युक्त अर्थात् योगी अथवा तपस्वी होंय रूक्ष नाम कठोर स्वभाव न होंय और धर्म काम में सम्पन्न होंय उनसे पूछ के संदेह निवृत्ति कर लेना वे जिस प्रकार से धर्म में वर्तमान करैं वैसाही तुमको धर्म में वर्त्तमान होना चाहिये यही आदेश है आदेश नाम परमेश्वर की आज्ञा है यही उपदेश है उपदेश नाम इसी का उपदेश कहना योग्य है यही वेदोपनिषत् है नाम वेदों का सिद्धान्त है और यही अनुशासन है अनुशासन नाम सुनियम और शिष्टाचार है ऐसेही धर्म की उपासना करनी चाहिये इसी प्रकार जानना भी चाहिये इसी प्रकार कहना भी चाहिये गुरु शिष्य को परस्पर ऐसा वर्त्तमान करना चाहिये ओं सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै तेजस्विना वधीतमस्तु मा विद्विषावहै ओं शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः सहनाम परस्पर रक्षा करैं गुरु तो शिष्यों की कुकर्मों से रक्षा करैं और शिष्य लोग गुरु की आज्ञा पालन और गुरु की सेवा से रक्षा करैं सहैव परस्पर भोग करैं अर्थात जो शिष्य लोग कोई उत्तम अन्न पान वस्त्रादिकों को प्राप्त होंय सो पहिले गुरु को निवेदन करके शिष्य लोग भोजनादिक करैं सहनाम परस्पर वीर्य को करैं वीर्य नाम पराक्रम नाम सत्य २ जो विद्या उसको बढ़ावैं जब गुरु यथावत् परिश्रम से विद्या दान करैंगे तब उनको भी विद्या तीव्र होगी शिष्य लोग यथावत् परिश्रम से और सुविचार से विद्या ग्रहण करैंगे तब उनको भी सत्य २ विद्या तीव्र होगी ऐसे सब गुरु शिष्य विचार करैं कि हम लोगों का पढ़ना पढ़ाना तेजस्वी नाम प्रकाशित होय जिसका शिष्य विद्यावान् नहीं होता उसका जो गुरु है उसी की निन्दा होती है बहुत से एक गुरु के पास पढ़ते हैं उनमें

से कितने तो विद्यावान् होते हैं और कितने नहीं गुरु तो यथावत् पढ़ावेंगे और कोई शिष्य यथावत् विद्या को ग्रहण न करेगा तब तो उस शिष्य की निन्दा होगी इससे इस प्रकार का पढ़ना पढ़ाना करना चाहिये कि सत्य२ विद्या का प्रकाश होय और अविद्या जो अन्धकार उसका नाश होय॥ कामात्मता न प्रशस्ता नचैवेहास्त्यकामता। काम्योहि वेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः॥ मनुष्यों को विषयों में जो कामात्मता नाम अत्यन्त कामना सो श्रेष्ठ नहीं और अकामता नाम कोई पदार्थ की इच्छा भी न करनी वह भी श्रेष्ठ नहीं क्योंकि विद्या का जो होना सो इच्छाही से है धर्म विद्या और परमेश्वर की उपासना की तो कामना अवश्यही करना चाहिये क्योंकि॥ काम्योहि वेदाऽधिगमः। वेद विद्या की जो प्राप्ति है सो कामनाऽधीनही है और वैदिक कर्म जितने हैं वेभी कामनाऽधीनही हैं इससे श्रेष्ठ पदार्थों की कामना सदा करनी चाहिये और अश्रेष्ठ पदार्थों की कामना कभी नहीं॥ सङ्कल्पमूलः कामोवैयज्ञाः सङ्कल्पसम्भवाः व्रतानियमधर्माश्चसर्वे सङ्कल्पजाः स्मृताः काम का मूल सङ्कल्प है अर्थात सङ्कल्पही से काम की उत्पत्ति होती है हृदय से बाह्य पदार्थ की प्राप्ति की सूक्ष्म जो इच्छा उसको सङ्कल्प कहते हैं ब्रह्मचर्यादिक जितने व्रत हैं वे भी कामही से सिद्ध होते हैं पांच प्रकार के यम होते हैं अहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्या परिग्रहायमाः। यह योगशास्त्र का सूत्र है इसका यह अर्थ है कि अहिंसा नाम कोई से कभी वैर न करना सत्य जैसा हृदयमें है वैसाही वचन कहना अस्तेय नाम चोरी का त्याग विना आज्ञा से किसी का पदार्थ न ग्रहण करनाब्रह्मचर्य नाम विद्या बल बुद्धि पराक्रम को यथावत् प्राप्ति करनी अपरिग्रह नाम अभिमान कभी न करना धर्म नाम न्याय का न्याय नाम पक्षपात का त्याग करना जैसे कि अपना प्रिय पुत्र भी दुष्ट कर्म के

करने से मारा जाता होय तोभी मिथ्या भाषण न करै ॥ अकामस्यक्रियाकाचि दृश्यतेनेहकर्हिचित् । यद्यद्धिकुरुतेकिञ्चि-त्तत्तत्कामस्यचेष्टितम्॥ जिस पुरुष को कामना न होय तो उसको नेत्रादिकों की कुछ चेष्टा भी न होय इसे जो २ शरीर में कुछ भी चेष्टा होती है सो २ कामही से होती है ऐसाही निश्चय जानना इसे क्या आया कि काम के बिना कोई भी शरीर धारण नही करसक्ता और खाना पीना भी नहीं कर सक्ता इसलिये श्रेष्ठ पदार्थों की कामना सब दिन करनीही चाहिये दुष्ट पदार्थों की कभी नहीं और जो पुरुषार्थ को छोड़ेगा सो तो पाषाण और काष्ठ को नांई होगा इसे आलस्य कभी न करना चाहिये और पुरुषार्थ को छोड़ना भी नहीं ॥ आचारःपरमोधर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त्त एवच । तस्मादस्मिन्सदायुक्तो नित्यंस्यादात्मवान्द्विजः ॥ शास्त्र को पढ़के सत्य धर्मों का आचरण जो न करै उसका पढ़ना व्यर्थही है सोई परम धर्म है परन्तु वह आचार वेदादिक सत्य शास्त्रोक्त और मनुस्मृत्युक्तही लेना तिस हेतु से इस आचरण नाम धर्माचरण में द्विज लोग अर्थात सब मनुष्य लोग युक्त होंय ॥ आचाराद्विच्युतोविप्रो नवेदफलमश्नुते । आचारेणतुसं-युक्तः संपूर्णफलभाग्भवेत् ॥ जो पुरुष वेदोक्त आचार को नहीं करता उसका जो विद्या का पढ़ना है उसका फल वह नहीं पाता और जो वेदादिकों को पढ़के यथोक्त आचार करता है उसको संपूर्ण सुख रूप फल होता है ॥ योऽवमन्येततेमूले हेतु शास्त्राश्रयात्द्विजः । ससाधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिकोवेदनिन्दकः ॥ कुतर्क से जो कोई मनुष्य श्रुति नाम वेद स्मृति नाम धर्मशास्त्र ये दोनों धर्म के प्रकाशक हैं और धर्म के मूल हैं इनको जो न मानै उसको सज्जन लोग सब अधिकारों से बाहर कर देवैं क्योंकि वह नास्तिक है जो वेद नाम विद्या को निन्दा करता है सोई पुरुष नास्तिक होता है॥ वेदःस्मृतिःसदाचारः स्वस्यचप्रि-

यमात्मनः। एतच्चतुर्विधम्प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्॥ श्रुति स्मृति सत्पुरुषों का आचार और अपने हृदय की प्रसन्नता नाम जितने पाप कर्म हैं उनकी इच्छा जब पुरुषों को होती है तब उसी समय भय, शङ्का और लज्जा से हृदय में अप्रसन्नता होती है और जितने पुण्य कर्म हैं उनमें नहीं होती इससे जिस २ कर्म में हृदय का अन्तर्यामी प्रसन्न होय वही धर्म है और जिसमें अप्रसन्न होय वही अधर्म जानना इसके उदाहरण चौर्य्यजारादिक हैं इसको साक्षाद्धर्म का ४ प्रकार का लक्षण कहते हैं॥ अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानंविधीयते। धर्मंजिज्ञासमानानां प्रमाणम्परमंश्रुतिः॥ जो मनुष्य अर्थोंमें नाम धनादिकों में आसक्त नाम लोभ नहीं कर्त्ते हैं और कामनाम विषयासक्ति में जो आसक्त नहीं नाम फसे नहीं हैं उन्हीं को धर्म का ज्ञान होता है अन्य को कभी नहीं परन्तु जिनको धर्म जानने की इच्छा होय वे वेदादिक शास्त्र पढ़ें और विचारें उनको बिना पढ़ने से धर्म का यथार्थ ज्ञान न होगा॥ वेदास्त्यागश्चयज्ञाश्च नियमाश्चतपांसिच। नविप्रदुष्टभावस्य सिद्धिङ्गच्छन्तिकर्हिचित्॥ वेद, विद्या, त्याग, यज्ञ, नियम और तप इतने विप्र दुष्ट नाम अजितेन्द्रिय पुरुष को कभी सिद्ध नहीं होते। इससे जितेन्द्रियता का होना सब मनुष्यों को आवश्यक है जितेन्द्रिय का लक्षण क्या है कि॥ श्रुत्वास्पृष्ट्वाचदृष्ट्वाच भुक्त्वाघ्रात्वाचयोनरः। नहृष्यतिग्लायतिवा सविज्ञेयोजितेन्द्रियः॥ जिस पुरुष को अपनी निंदा सुनके शोक न होय और अपनी स्तुति सुनके हर्ष न होय तथा दुष्टस्पर्श, दुष्टरूप, दुष्टरस और दुष्टगन्ध को पाके शोक न होय और श्रेष्ठस्पर्श, श्रेष्ठरूप, श्रेष्ठरस और श्रेष्ठगन्ध को प्राप्त होके जिसको हर्ष नहीं होता उसको जितेन्द्रिय कहते हैं अर्थात सब मनुष्यों को यही योग्यता है कि न हर्ष करना चाहिये न शोक किन्तु न शोक में गिरै न हर्ष के मध्यही में सदा बुद्धि को रक्खै

वही सुखका स्थान है ॥ ब्रह्माऽरम्भेऽवसानेच पादौग्राह्यौगुरोः सदा। संहत्यहस्तावध्येयं सहिब्रह्माञ्जलिःस्मृतः ॥ जब शिष्य गुरु के पास पढ़ने का नित्य आरम्भ करैं तब आदि और अन्त में गुरु को नमस्कार और पादस्पर्श करैं जब तक पढ़ैं तथा गुरु के सन्मुख रहैं तब तक हाथही जोड़ के रहैं इसी का नाम ब्रह्माञ्जलि है जब गुरु उठै तब आपही पहिले उठै जो आप बैठा होय और गुरु आवैं तब अपने उठके सन्मुख जाके गुरु को शीघ्रही नमस्कार करै और उत्तम आसन पर बैठावै आप नीचे आसन पर बैठे और नम्र होके पूछे अथवा सुनै ॥ नापृष्टःकस्यचिद्ब्रूया न्नचान्यायेनपृच्छतः। जानन्नपिहिमेधावी जडवल्लोकआचरेत् ॥ जब तक कोई न पूंछे तब तक कुछ न कहै और जो कोई हठ, छल और कपट से पूंछे उससे कभी न कहै जाने तो भी मूर्खों के सामने मौनही रहना ठीक है क्योंकि शठ लोग कभी न मानेंगे इससे उनसे कहना व्यर्थही है ॥ अधर्मेणचयःप्राह यश्चाधर्मेणपृच्छति। तयोरन्यतरःप्रैति विद्वेषम्वाधिगच्छति ॥ जो कोई अधर्म से कहता और जो अधर्म से पूंछता है नाम छल, कपट, दोनों का विरोध होने से किसी का मरण अथवा विद्वेष होजाय तो अवश्य होगा इससे गुरु शिष्य अथवा कोई मनुष्य जो इस शिक्षा को मानेगा और यथावत् करेगा उसको बड़ा सुख होगा ॥ आचार्यपुत्रःशुश्रूषु र्ज्ञानदोधार्मिकःशुचिः। आप्तःशक्तोऽर्थदःसाधुः स्वोध्याप्यादशधर्मतः ॥ आचार्य का पुत्र शुश्रूषु नाम सेवा का करने वाला तथा ज्ञान का देने वाला वा धार्मिक शुचि नाम पवित्र आप्त नाम पूर्णकाम और शक्त नाम समर्थ अर्थद नाम अर्थ का देनेवाला साधु नाम सत्य मार्ग में चलने वाला और सत्य का उपदेश करने वाला इन दश पुरुषों को विद्वान् धर्म और परिश्रम से पढ़ावै जिस्से कि वे विद्यावान् होंय क्योंकि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र

और उन सभों की सो वे सब जब तक विद्या वाले न होंगे तब तक यथावत् बुद्धि, बल, पराक्रम, नैरोग्य और धर्म की उन्नति कभी न होगी आर्यावर्त्त देश की उन्नति तभी होगी जब विद्या का यथावत् प्रचार होगा और जब तक उक्त आचार में प्रवृत्त न होंगे तब तक सुख के दिन कभी न आवैंगे क्योंकि ब्राह्मण और सम्प्रदायिक लोग पढ़के यथावत् धर्म में निश्चित तो नहीं होते किन्तु अपनी २ आजीविका और अपना २ सम्प्रदाय जो वेद विरुद्ध पाखण्ड उनही को बढ़ावेंगे और जीविका के लोभ से सब दिन छल कपटही में रहेंगे कभी धर्म में चित्त न देंगे न धर्म को जानेंगे क्योंकि उनको पाखण्डही से सुख मिलता है इस्से पाखण्डही को पढ़ावेंगे धर्म को कभी नहीं जब क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र पढ़ेंगे उनको आजीविका नाश का भय तो नहीं है इस्से कभी छल कपट से असत्य न कहेंगे इस्से सत्यही सत्य प्रवृत्ति होगी और वे क्षत्रियादिक जब तक न पढ़ेंगे तब तक आर्यावर्त्त देश वासियों के मिथ्याचार और पाखण्डों का नाश कभी न होगा जो राजा और जितने धनाढ्य लोग हैं उनको तो अवश्य सब शास्त्रों को पढ़ना चाहिये क्योंकि उनके पढ़े बिना कोई प्रकार से भी विद्या का प्रचार धर्म की व्यवस्था और आर्यावर्त्त देश की उन्नति कभी न होगी उनकी बहुतसी हानि भी होगी क्योंकि उनके अधिकार में राज्य धन और बहुत से पुरुष रहते हैं जब वे विद्यावान्, बुद्धिमान्, जितेन्द्रिय और धर्मात्मा होंगे तब उनके राज्य में धर्म और विद्या का प्रचार होगा उनका धन अनर्थ में कभी न जायगा और उनके सङ्गी सब श्रेष्ठ धर्मात्मा होंगे इस्से सब देशस्थों का उपकार होगा केवल आर्यावर्त्त वासियों का नहीं किन्तु सब देशस्थ मनुष्यों को ऐसाही करना उचित है कि पक्षपात का छोड़ना सत्य का ग्रहण करना और जितने मत हैं वे सब मूर्खोंही के

कल्पित हैं और बुद्धिमानों का एकही मत अर्थात सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना है इस से क्या आया कि जो लाभ विद्या के प्रचार से होता है ऐसा लाभ कोई अन्य प्रकार से नहीं होता ये सब श्लोक मनुस्मृति के हैं जो पढ़ना अथवा पढ़ाना सो शास्त्रोक्त प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से सत्य २ परीक्षित करके हो पढ़ना और पढ़ाना भी ॥ इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम् ॥ यह गोतम मुनि का सूत्र है सो प्रत्यक्ष सब को अवश्य मानना चाहिये ॥ अक्षस्य २ प्रतिविषयंवृत्तिः प्रत्यक्षम्। अक्ष नाम इन्द्रिय का है इन्द्रिय इन्द्रिय के प्रति विषय ग्रहण करने वाली जो वृत्ति तज्जन्य जो ज्ञान उसको प्रत्यक्ष कहते हैं सो जब किसी बाह्य व्यवहार की जीव को इच्छा होती है तब मन को संयुक्त होके जीव प्रेरणा कर्त्ता है तब मन इन्द्रियों को अपने २ विषयों के प्रति प्रेरता है तब इन्द्रियों का और विषयों का सन्निकर्ष होता है अर्थात सम्बन्ध होता है सम्बन्ध किसका नाम है कि उन उन इन्द्रिय और विषयों का जो यथावत वृत्ति नाम वर्तमान का होना अथवा ज्ञान का होना उसका नाम है सन्निकर्ष सन्निकर्षोवृत्तिर्ज्ञानं वा। यह वात्स्यायन भाष्य का बचन है इस पुस्तक में बारम्बार न लिखा जायगा परंतु ऐसा जानना कि जो कुछ लिखा जायगा सो गौतम सूत्रादि के अनुसारही से और वात्स्यायनादिक मुनि के भाष्यों के अभिप्राय से लिखा जायगा इसमें जिसको शङ्का अथवा अधिक जानना चाहे सो उन ग्रन्थों में देख ले वैसा प्रत्यक्षज्ञान ठीक २ यथावत् तत्त्वस्वरूप जानना उसके भिन्न जो होगा उसको भ्रम नाम अज्ञान कहा जायगा जैसे कि ॥ व्यवस्थितः पृथिव्यांगन्धः अप्सु रसः रूपन्तेजसि वायौ स्पर्शः। ये सूत्र और अभिप्राय वैशेषिक सूत्रकार मुनि के हैं इन्द्रियों से गुणही का ग्रहण होता है द्रव्य का कभी नहीं क्यों-

कि ॥ श्रोत्रग्रहणोयोऽर्थः सशब्दः। यह वैशेषिक का सूत्र है ऐसे सब सूत्र हैं हम लोग श्रोत्र नाम कर्णेन्द्रिय से शब्दही का ग्रहण कर्ते हैं और स्पर्शादिकों का नहीं ऐसेही स्पर्शेन्द्रिय से स्पर्शही का ग्रहण कर्ते हैं तथा नेत्र से रूप का जीभ से रस का और नासिका से गन्ध का ये शब्दादिक आकाशादिकों के गुण हैं गुणोंही को इन्द्रियों से ग्रहण करते हैं आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इनका ग्रहण इन्द्रियों से कभी नहीं होता मन से तो जीव आकाशादिकों का प्रत्यक्ष ग्रहण कर्त्ता है क्योंकि जो जिसका स्वाभाविक गुण है वह उससे भिन्न कभी नहीं होता जैसे कि पृथ्वी का स्वाभाविक गुण गन्ध है सो पृथ्वी से भिन्न कभी नहीं रहता और गन्ध से पृथ्वी भी भिन्न नहीं रहती इन दोनों के सम्बन्ध से जीव को गन्ध के ज्ञान होने से पृथ्वी काभी प्रत्यक्ष होता है वैसेही रस, रूप, स्पर्श और शब्दों का जीभ, नेत्र, त्वक और श्रोत्र से ग्रहण होने से जल, अग्नि, वायु और आकाश का भी मनसे जीव को प्रत्यक्ष होता है सो प्रत्यक्ष किस प्रकार का लेना कि पृथ्वी में जल, अग्नि और वायु के सम्बन्ध होने से रस, रूप और स्पर्श भी ये तीनों गुण देख पड़ते हैं परन्तु तीन गुण स्पर्शादिक वायु आदिकों के संयोग निमित्तही से हैं वैसेही जल में रूप और स्पर्श मिले हैं तथा अग्नि में स्पर्श और वायु में शब्द आकाश में कोई नहीं एक शब्दही अपना स्वाभाविक गुण है वायु में जो शब्द है सो आकाश के संयोग निमित्त से और जल में जो गन्ध है सो पृथ्वी के संयोग से है ऐसेही अन्यत्र जान लेना सो प्रत्यक्ष ज्ञान ऐसा लेना कि अव्यपदेश्य नाम संज्ञा से जो होता है जैसे कि घट एक पदार्थ की संज्ञा है इस संज्ञा से जिसका नाम कि घट है वह घट शब्द के उच्चारण से कि तूं घड़े को ला जब वह घड़ा लेने को चला जिसवक्त उसने घड़े को देखा उस वक्त जो घट संज्ञा सो उस

को न देख पड़ी किन्तु जैसी घटकी आकृति और रूप वही तो देख पड़ा और घट शब्द नहीं फिर वह घड़े को लेके जिसने आज्ञा दी थी उसके पास घड़े को रखके बोला कि यह घड़ा है उसने घड़े को प्रत्यक्ष देखा परन्तु उसमें घड़ा ऐसा जो नाम उसको उसने भी न देखा के जो संज्ञा बिना पदार्थ मात्र का ज्ञान होना उसको अव्यपदेश्य कहते हैं और जो व्यपदेश्य ज्ञान है सो तो शब्द प्रमाण में है प्रत्यक्ष में नहीं और दूसरा प्रत्यक्ष ज्ञान का अव्यभिचारि यह विशेषण है सो जानना चाहिये व्यभिचारिज्ञान इस प्रकार का होता है कि अन्य पदार्थ में भ्रम से अन्यपदार्थ का ज्ञान होना जैसे कि लकड़ी के स्तम्भ में पुरुष का ज्ञान रज्जु में सर्पका सीपमें चांदी और पाषाणादि मूर्त्ति में देव का ज्ञान इत्यादिक ज्ञान सब व्यभिचारि हैं उस समय में तो यथार्थ भ्रमसे देखने में आते हैं परन्तु उत्तरकाल में स्तम्भादिकों का साक्षात् प्रत्यक्ष निर्भ्रम तत्त्वज्ञान के होने से पुरुषादिकों का जो भ्रम से ज्ञान हुआ था सो नष्ट होजाता है इससे क्या आया कि जिस ज्ञान का कभी व्यभिचारि नाम नाश न होय उसको कहते हैं अव्यभिचारि ज्ञान सो प्रत्यक्ष अव्यभिचारिही लेना अन्य नहीं और इस प्रत्यक्ष का तीसरा विशेषण व्यवसायात्मक है व्यवसाय नाम है निश्चय का और जो जिसका तत्त्व स्वरूप है उसका नाम है आत्मा जबतक उस पदार्थ का तत्त्व नाम स्वरूप निश्चय न होय तब तक व्यवसायात्म ज्ञान नहीं होता और जब उसके स्वरूप का यथावत् ज्ञान का निश्चय होता है उसको व्यवसायात्मक कहते हैं जैसे कि दूर से श्वेत बालुका देखी अथवा घोड़ा देखा उसके नेत्र से सम्बन्ध भी भया परन्तु उसके हृदय में निश्चय न हुआ कि यह वस्त्र अथवा बालू अथवा और कुछ है यह घोड़ा अथवा गैया अथवा और कुछ है जब तक यथावत् वह निकट से न देखेगा

तब तक सन्देह की निवृत्ति न होगी और जब तक सन्देह की निवृत्ति न होगी तब तक सन्देहात्मक नाम भ्रमात्मक ज्ञान रहेगा उसको प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं जानना और जो सत्य २ दृढ़ निश्चित तत्वज्ञान है उसको उक्त प्रकार से प्रत्यक्ष ज्ञान जानना इस प्रकार से थोड़ा सा प्रत्यक्ष के विषय में लिखा परंतु जिसको अधिक जानने की इच्छा होय सो षड्दर्शनों में देख लेवै इससे आगे दूसरा अनुमान प्रमाण है॥ अथतत्पूर्वकं त्रिविधमनुमानं पूर्ववच्छेषवत्सामान्यतोदृष्टञ्च। यह गौतममुनि का सूत्र है अथ नाम प्रत्यक्ष लक्षण लिखने के अनन्तर अनुमान लक्षण का प्रकाश कर्ते हैं तत्पूर्वक नाम प्रत्यक्ष पूर्वक जिसमें पहिले प्रत्यक्ष का होना आवश्यक होय और अनुमान पीछे मान नाम ज्ञान होना उसका नाम अनुमान है सो अनुमान प्रत्यक्ष पूर्वकही होता है अन्यथा नहीं यह अनुमान तीन प्रकार का होता है एक तो पूर्ववत् दूसरा शेषवत् तीसरा सामान्य तो दृष्ट पूर्ववत् इसका नाम है कि जहां कारण से कार्य का ज्ञान होना जैसे बादल के बिना वृष्टि कभी नहीं होती सो बादलों की उन्नति गर्जना और विद्युत् इनको देखके अवश्य वृष्टि होगी ऐसा ज्ञान होता है तथा परमेश्वर के बिना सृष्टि कभी नहीं होती क्योंकि रचना करने वाले के बिना रचना कभी नहीं होती और बादल जो है सो वृष्टि का कारण है परमेश्वर जो है सो जगत् का कारण है यह पूर्ववत् अनुमान है और शेषवत् यह है कि जहां कार्य से कारण का ज्ञान होना जैसे कि पहिले नदी में थोड़ा प्रवाह वेग भी न्यून अथवा सूखी देखते थे फिर जब वह पूर्ण हुई देख के उसके प्रवाह का शीघ्र चलना वृक्ष काष्ठ घासादिक बहे जाते देख के अवश्य ज्ञान होता है कि वृष्टि ऊपर कहीं भई होगी है इस संसार की रचना देख के अवश्य रचना करने वाला परमेश्वरही है इसका नाम शेषवत् अनुमान है तीसरा

सामान्य तो दृष्ट अनुमान है जैसे कि चलके एक स्थान से स्थानान्तर में जाता है किसी पुरुष को अन्य स्थान में कहीं बैठा देखा फिर दूसरे काल में अन्य स्थान में उसी पुरुष को बैठा देखा इससे देखने वाले ने क्या जाना कि यह पुरुष इस स्थानसे चलकेही आया है क्योंकि बिना गमन स्थान से स्थानान्तर में कोई भी नहीं जा सक्ता ऐसा सामान्य से नियम है इस प्रकार का सामान्य से दृष्ट अनुमान है उसका गमन तो उसने देखा नहीं परन्तु उसको गमन का ज्ञान होगया अथवा पूर्ववत् नाम किसी स्थान में अग्नि नाम अङ्गारे को काष्ठादिकों में मिला हुआ और उसमें धूम भी निकलता हुआ देखाथा उसने जान लिया कि अग्नि और काष्ठादिकों का संयोग जब होता है तब धूम अवश्य निकलता है फिर किसी समय उसने दूर स्थान में धूम को देखा देखने से उसको ज्ञान भया कि वहां अग्नि अवश्य है इस प्रकार का अनेकविधि पूर्ववत् अनुमान होता है सो जान लेना शेषवत् नाम किसी ने बुद्धि से बिचार करके कहा कि यह पुरुष उत्तम पण्डित है इससे क्या आया कि अन्य ऐसा कोई पण्डित नहीं और मूर्ख भी बहुत से हैं इस स्थान में बिना कहने से ऐसा जाना गया ऐसे अन्य भी बहुत प्रकार का शेषवत् अनुमान जान लेना सामान्य दृष्ट नाम जैसे कि मनुष्य के शिर में प्रत्यक्ष शृङ्ग के नहीं देखने से अदृष्ट मनुष्यों के शिर में भी शृङ्ग का नहीं होना ऐसा निश्चित जाना जाता है इसका नाम सामान्य से दृष्ट अनुमान है इससे आगे तीसरा उपमान प्रमाण है ॥ प्रसिद्ध साधर्म्यात्साध्यसाधनमुपमानम् । यह गौतम मुनि का सूत्र है प्रसिद्ध नाम प्रगट साधर्म्य नाम तुल्य धर्मता एक का दूसरे से होना साध्य नाम जिसको जनावै साधन नाम जिससे जनावै जिसकी उपमा जिससे की जाय उसका नाम उपमान प्रमाण है किसी ने किसी से पूछा कि गवय नाम नीलगाय

किस प्रकार की होती है उसने उसे उत्तर दिया कि जैसी यह गाय होती है वैसाही गवय होता है उसने उसके उपदेश को हृदय में रख लिया फिर उसने कभी कालान्तर में किसी स्थान में बन में वा अन्यत्र उस पशु को देखके जान लिया कि यही नीलगाय है क्योंकि गाय के तुल्य होने से ज्ञान का निश्चय होगया अथवा किसीने किसीसे कहा कि तूं देवदत्त नाम मनुष्य के पास जा तब उसने उससे पूछा कि देवदत्त कैसा है उसनेउससे कहा कि जैसा यह यज्ञदत्त है वैसाही देवदत्त है फिर वह वहां गया उसने यज्ञदत्त के तुल्य देवदत्त को देखके निश्चय जान लिया कि यही देवदत्त है तब देवदत्त ने कहा कि आपने मुझको कैसे जाना उसने कहा मुझसे किसी ने कहा था कि यज्ञदत्तही के समान देवदत्त है उस यज्ञदत्त के समान होने से आपको मैंने जान लिया इसका नाम उपमान प्रमाण है चौथा शब्द प्रमाण है ॥ आप्तोपदेशः शब्दः । यह गौतममुनि का सूत्र है ॥ आप्तः खलुसाक्षात् कृतधर्मा यथादृष्टस्यार्थस्य चिख्यापयिषया प्रयुक्त उपदेष्टा साक्षात् करण मर्थस्याप्तिस्तया प्रवर्ततइत्याप्तः ऋष्यार्यम्लेच्छानां समानंलक्षणम् ॥ यह वात्स्यायन मुनि का भाष्य है आप्त किसको कहते हैं कि साक्षात् कृतधर्मा जिसने निश्चय करके धर्मही कियाथा करता होय और करै अधर्म कभी नहीं और जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोकादिक दोषों का लेश कभी न होय विद्यादिक गुण सब जिसमें होंय वैर किसी से न होय पक्षपात कभी न करै और सब जीवों के ऊपर कृपा करै अपने हृदय में सत्य २ जानने से जैसा सुख भया वैसाही सब जीवों को सत्य २ उपदेश जनाने से सुख प्राप्त कराने की इच्छा से जो प्रेरित होके उपदेश करै और आप्ति उसका नाम है कि जो जैसा पदार्थ है उसका वैसाही ज्ञान का होना उस आप्ति से युक्त होय नाम सब काम जिसके पूर्ण होंय छल, कपट

और लोभ से जो कभी प्रवृत्त न होय किन्तु एक परमेश्वर की आज्ञा जो धर्म और सब जीवों के कल्याण के उपदेश की इच्छा जिसको होय उसको आप्त कहते हैं सब आप्तों में भी आप्त परमेश्वर है उस आप्त परमेश्वर का और उस प्रकार के उक्त आप्त मनुष्यों का जो उपदेश है शब्द प्रमाण उसको कहते हैं उसी का प्रमाण करना चाहिये इनसे विपरीत मनुष्यों के उपदेश का कभी प्रमाण न करना चाहिये आप्त कोई देश विशेष में होता है अथवा सब देशों में होता है इसका यह उत्तर है कि ऋष्यार्य्यम्लेच्छानांसमानंलक्षणम्। ऋषि नाम यथार्थ मंत्रदृष्टा यथार्थ पदार्थों के विचार के जानने वाले उत्तर में हिमालय और दक्षिण में विन्ध्याचल पूर्व में समुद्र और पश्चिम में समुद्र इन चारों के अवधि पर्यन्त देश में रहने वाले मनुष्यों का नाम आर्य्य है इस देश से भिन्न देशों में रहनेवाले मनुष्यों का नाम म्लेच्छ है म्लेच्छ नाम निन्दित नहीं है किंतु(म्लेच्छ-अव्यक्तेशब्दे। इस धातु से म्लेच्छ शब्द सिद्ध होता है उसका अर्थ यह है कि जिन पुरुषों के उच्चारण में वर्णों का स्पष्ट उच्चारण नहीं होता उनका नाम म्लेच्छ है) सब देशों में और सब मनुष्यों में आप्त होने का सम्भव है असम्भव कभी नहीं अर्थात् ऋषि आर्य्य और म्लेच्छ इनमें आप्त अवश्य होते हैं क्योंकि जो किसी मनुष्यों में उक्त प्रकार का लक्षण वाला मनुष्य होगा उसी का नाम आप्त होगा यह नियम नहीं है कि इस देश में होय और अन्य देश में न होय(आर्य्य नाम है श्रेष्ठ का)और जो हिन्दू नाम इनका रक्खा है सो मुसल्मानों ने ईर्ष्या से रक्खा है उसका अर्थ है दुष्ट, नीच, कपटी, कुली और गुलाम इससे यह नाम भ्रष्ट है किंतु(आर्य्यों का नाम हिन्दु कभी न रखना चाहिये॥ आसमुद्रात्तुवैपूर्वादासमुद्रात्तुपश्चिमात्। तयोरेवान्तरंगिर्योरार्य्यावर्त्तम्विदुर्बुधाः॥ आर्य्यैरावर्त्तः सआर्य्यावर्त्तः जो

देश आर्य्यों से नाम श्रेष्ठों से आवर्त्त नाम युक्त होय उसका नाम आर्य्यावर्त्त देश है सो देश हिमालयादिक अवधि से कह दिया सो जान लेना वह शब्द प्रमाण दो प्रकार का होता है सू० सद्विधोदृष्टाऽदृष्टार्थत्वात्। जिस शब्द का अर्थ प्रत्यक्ष देख पड़ता है सो तो दृष्टार्थ शब्द है और जिस शब्द का श्रवण तो प्रत्यक्ष होता है और उसका अर्थ प्रत्यक्ष देखने में नहीं आता उसका नाम अदृष्टार्थ शब्द है जैसे कि स्वर्गादिक शब्दों का अर्थ देखने में नहीं आता इस प्रकार के शब्द का नाम अदृष्टार्थ शब्द है दृष्टार्थ शब्द यह है कि जैसा पृथिव्यादिक इतने प्रत्यक्षादि के ४ प्रकार के भेद हैं एक तो प्रमाता होता है कि जो पदार्थ को प्रमाणों से जान लेता है जिसका नाम जीव है प्रमाणों का करने वाला प्रमिणोति सप्रमाता येनार्थं प्रमिणोतितत्प्रमाणम् जिससे अर्थ को यथावत् जानै उसका नाम प्रमाण है प्रत्यक्षादिक तो कह दिये जैसे कि नेत्र से जीव जो है सो रूप को जान लेता है योऽर्थः प्रतीयतेतत्प्रमेयम्। जिसको प्रतीति होती है उसका नाम प्रमेय है जैसा कि रूप नेत्र से देखा गया यदर्थविज्ञानंसा प्रमितिः। जो अर्थ का यथावत् तत्त्व विज्ञान होना उसका नाम प्रमिति है प्रमाता प्रमाण, प्रमेय, और प्रमिति इन चार प्रकार की विद्या को भी यथावत् जान लेना चाहिये और भी ४ प्रकार की जो विद्या है उसको जानना चाहिये हेयम् नाम त्याग करने के जो योग्य होय जैसे कि अधर्म और ग्राह्य नाम ग्रहण करने के योग्य जैसा कि धर्म दूसरा तस्यनिवर्तकम् नाम हेय जो अधर्म उसकी निवृत्ति का जो ज्ञान से करना और पुरुषार्थ से तस्य प्रवर्तकम् ग्राह्य जो धर्म उसकी जो प्रवृत्ति हृदय में विचार से और पुरुषार्थ से होनी तीसरा हानमात्यन्तिकम् जो हेय अधर्म का अत्यन्त त्याग कर देना पुरुषार्थ से और विचार से स्थान मान मात्यन्तिकम् नाम ग्राह्य जो धर्म उसको दृढ़स्थिति हृदय

में हो जानी कि हृदय और आचरण से धर्म का नाश कभी न होय चौथा तस्योपायोऽधिगन्तव्यः। हेय जो अधर्म उसके त्याग के उपाय को प्राप्त होना और धर्म के ग्रहण के उपाय को प्राप्त होना वह उपाय सत्पुरुषों का सङ्ग, श्रेष्ठबुद्धि और सद्विद्या के होने से प्राप्त होता है इतने ४ अर्थपद होते हैं इनका सम्यक् जानने से निःश्रेयस जो मोक्ष नाम नित्यानन्द परमेश्वर की प्राप्ति और जन्म मरणादिक दुःखों की अत्यन्त निवृत्ति हो जाती है इससे इस ४ प्रकार की विद्या को भी सज्जनों को अवश्य जानना चाहिये ४ प्रकार के जो प्रमाण हैं उनका विषय लिखा गया और इनकी परीक्षा भी संक्षेप से इससे आगे लिखी जाती है सो जान लेना॥ प्रत्यक्षादीनामप्रामाण्यं त्रैकाल्यासिद्धेः। इत्यादिक परीक्षा में गौतममुनि प्रणीत सूत्रों ही को लिखेंगे सो आप लोग जान लेवें प्रत्यक्षादिकों का प्रमाण नहीं है क्योंकि तीन कालों की असिद्धि के होने से पूर्वापर सम्बन्ध भाव नियम के भङ्ग होने से कि पहिले प्रमाण होता है वा प्रमेय देखना चाहिये कि पहिले जो प्रमाण सिद्ध होय और पीछे प्रमेय तो बिना प्रमेय के प्रमाण किसका होगा वा पहिले प्रमेय होय प्रमाण पीछे होय तो बिना प्रमाण के प्रमेय कैसे जाना जायगा और जो सङ्ग में दोनों का ज्ञान होय तो बिना प्रमेय से प्रमाण की उत्पत्ति ही नहीं इससे किसी प्रकार से भी प्रत्यक्षादिकों का प्रमाण नहीं हो सकता तथाहि पूर्वं हि प्रमाणसिद्धौ नेन्द्रियार्थसन्निकर्षात्प्रत्यक्षोत्पत्तिः। यह गौतममुनि का सूत्र है जैसे कि गन्धादि विषय का जो प्रत्यक्ष ज्ञान सो गन्धादिकों का और नासिकादिक इन्द्रियों का सम्बन्ध होने से प्रत्यक्ष की उत्पत्ति होती है अन्यथा नहीं और जो कोई कहै कि पहिले प्रमाण की उत्पत्ति होती है पीछे प्रमेय की अच्छा तो गन्धादिकों का तो सम्बन्ध भी उत्पन्न नहीं भया उनके सम्बन्ध से

बिना प्रत्यक्ष की उत्पत्तिही नहीं होती फिर इन्द्रियार्थ सन्नि-कर्षोत्पन्नं ज्ञानमित्यादि प्रत्यक्ष का जो लक्षण किया है सो व्यर्थ हो जायगा क्योंकि आप ने प्रमाण की उत्पत्ति प्रमेय के सम्बन्ध से पूर्वही मानी है इस्से आपके मतमें यह दोष आवेगा अच्छा तो मैं प्रमेयों के सम्बन्ध के पीछे प्रमाणों की उत्पत्ति मानता हूं फिर क्या दोष आवेगा अच्छा सुनो सूत्र ॥ पश्चा-त्सिद्धौनप्रमाणेभ्यः प्रमेयसिद्धिः। पहिले प्रमेय की सिद्धि मानेंगे तो प्रमाणोंही से प्रमेय की सिद्धि होती है यह जो आप का कहना सो मिथ्या होजायगा जो आप एक सङ्ग प्रमाण और प्रमेय मानेंगे तो भी यह दोष आवेगा सूत्र ॥ युगपत्सिद्धौप्रत्यर्थ-नियतत्वात्क्रमवृत्तित्वाभावोबुद्धीनाम्। यह जो बुद्धि है सो एक विषय को जानकर दूसरे विषय को जान सक्ती है दोनोंको एक समय में नहीं जान सकती जैसे कि एक वस्तु को देखा देख के जब रूप की बुद्धि होती है तब इतना यह वस्तु भारी है उसको न जानैगी और जब भार का मन बिचार करता है तब रूपका नहीं कर सकता जब रूप का तब भार का नहीं ॥ सूत्र। युग पज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसोलिङ्गम्। एक काल में दोनों ज्ञानको न ग्रहण करै किन्तु एक को ग्रहण करके फिर दूसरे का ग्रहण करै उसी का नाम मन है वैसेही प्रमाण और प्रमेय एककाल में दोनों का ज्ञान कभी नहीं होता जिस समय प्रमाण का ज्ञान होता है उस समय प्रमेय का नहीं जिस समय प्रमेय का ज्ञान होता है उस समय प्रमाण का नहीं यह सब जीवों को अनुभव सिद्ध बात है इस बात में आप के कहने से दोष आवेगा ऐसा भी कहना आप को उचित नहीं इस पूर्वपक्ष का यह समाधान है कि ॥ सूत्र । उपलब्धिहेतोरुपलब्धिविष-यस्यचार्थस्यपूर्वापरसहभावानियमाद्यथादर्शनंविभागवचनम् ॥ भाष्य उपलब्धि का हेतु नाम प्रकाशक जिस्से कि ज्ञान होता

है और उपलब्धि का विषय जिसका ज्ञान होता है जैसा कि घटादिक इनका पूर्वा पर सह भाव नाम यह इससे पूर्व वा यह पर ऐसा नियम नहीं सर्वत्र देखने में आता इससे जैसा जहां योग्य होय वैसा वहां लेना चाहिये देखना चाहिये कि सूर्य का दर्शन तो पीछे होता है और दो घड़ी रात्रि से पहिलेही प्रकाश हो जाता है उससे वस्त्रादिक पदार्थों का पहिलेही दर्शन होजाता है जब दीप को जलाते हैं तब दीप का दर्शन तो पहिले होता है फिर दीप के प्रकाश से अन्य सब पदार्थों का दर्शन पीछे होता है सूर्य और दीप अपना प्रकाश आपही करते हैं और अन्य पदार्थों का भी एक कालमें प्रकाश करते हैं यह तो दृष्टान्त हुआ वैसाही प्रमाणों के दृष्टान्त में जानना चाहिये कहीं तो पहिले प्रमाण होता है कहीं प्रमेय अन्य समय में दोनों एकही सङ्ग में होते हैं जैसे कि ॥ सूत्र। त्रैकाल्यासिद्धेः प्रतिषेधानुपपत्तिः। आपने प्रत्यक्षादिक प्रमाणों का जो निषेध किया सो तीनों कालों को मान के किया अथवा नहीं जो आप भूत काल नाम बीते भये कालमें प्रमाणों की सिद्धि न मानेंगे तो आपने निषेध किसका किया और जो भविष्यत्काल में होने वाले प्रमाणों का आपने निषेध किया तो प्रमाण उत्पन्न भी नहीं भये पहिले निषेध कैसे होगा और जो वर्तमान कालमें प्रत्यक्षादि प्रमाण सिद्ध हैं तो सिद्धों का निषेध कोई कैसे करेगा ॥ सूत्र। सर्वप्रमाणप्रतिषेधाच्च प्रतिषेधानुपपत्तिः। किसी प्रमाण को आप न मानेंगे तो आपके प्रतिषेध की प्रमाण से सिद्धि कैसे होगी जब प्रतिषेध में कोई प्रमाण नहीं है तब प्रतिषेध अप्रमाण होगा तब कोई शिष्ट इस प्रमाण के निषेध को न मानेगा वह आप का निषेधही व्यर्थ होगया इससे आप को भी प्रमाणों को अवश्य मानना चाहिये ॥ सूत्र। त्रैकाल्याप्रतिषेधश्च शब्दादातोद्यसिद्धिवत्तत्सिद्धेः

तीन कालों का निषेध नहीं हो सकता जैसे कि वीणा अथवा बांसुलि वा कोई वादित्र कोई दूर बजाता होय उनका शब्द दूसरे सुनके पूर्व सिद्ध वादित्र को जान लिया जाता है कि यह वीणा का शब्द है और जब वीणा देखी तब भविष्यत्काल में जो होने वाला शब्द उसको जान लिया कि वीणा आगे बजाने से शब्द होगा और जब सन्मुख वीणा को और उसके शब्द को भी एक काल में देखता और सुनता है तब वीणा और वीणा के शब्द को भी जान लेता है वैसीही व्यवस्था प्रमाणों की जान लेना ॥ सूत्र । प्रमेयताचतुलाप्रामाण्यवत् । जैसे कि तुला पदार्थों के तौलने के लिये प्रमाण की नाईं है तुलासेही घृतादिक द्रव्यों को तौल के प्रमाण कर लेते हैं इसमें तुला तो प्रमाण स्थानी है और घृतादिक प्रमेय स्थानी हैं परन्तु वही तुला दूसरी तुला से तौली जाय तब प्रमेय संज्ञा भी उसकी होती है वैसेही जब प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से रूपादिक विषयों को चक्षुरादिकों से हम लोग देखते हैं तब तो प्रत्यक्षादिक और चक्षुरादिक प्रमाण हैं रूपादिक विषय प्रमेय हैं और जब प्रत्यक्षादिक क्या होते हैं ऐसी आकांक्षा होगी तब वेही प्रमेय हो जांयगे क्योंकि ऐसे लक्षण वाले को प्रत्यक्ष प्रमाण कहना और ऐसा लक्षण जिसका होय वह अनुमान होता है इत्यादिक सब जान लेना तीन प्रकार से शास्त्र की प्रवृत्ति होती है १ एक उद्देश, २ दूसरा लक्षण, और ३ तीसरी परीक्षा, उद्देश उसका नाम है कि नाम मात्र से पदार्थ की गणना करनी जैसा कि द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष और समवाय लक्षण उसका नाम है कि निश्चित जो जिसका धर्म है उससे पृथक् कभी न होय जैसा कि पृथिवी में गन्ध जलमें रस इत्यादिक गन्धही पृथिवी को जनाता है और गन्धही से पृथिवी जानी जाती है गन्ध रसादिकों से विशेष है और गन्ध से रसादिक

विशेष हैं परस्पर ये गन्धादि वे निवर्तक और ज्ञापक हो जाते हैं इससे गन्ध पृथ्वी का लक्षण है और रसादिक जलादिकों का लक्षण हैं। गन्ध का लक्षण नासिका, नासिका का लक्षण मन, मन का लक्षण आत्मा, आत्मा का लक्षण भी आत्माही है और कोई नहीं लक्षण का भी लक्षण होता है वा नहीं लक्षण का लक्षण कभी नहीं होता जो कोई लक्षण का लक्षण कहता है सो मूर्ख पुरुष है वा जिसने ग्रन्थ में लिखा है वह भी मूर्ख पुरुष है क्योंकि पृथ्वी का लक्षण गन्ध है गन्ध का लक्षण नासिका सो नासिका के प्रति गन्ध लक्ष्य है क्योंकि नासिकाही से गन्ध जाना जाता है और नासिका मन से जानी जाती है इससे नासिका का लक्षण मन है नासिका मन का लक्ष्य है मन का लक्षण आत्मा है क्योंकि आत्माही से मन जाना जाता है आत्मा के प्रति मन लक्ष्य है क्योंकि मेरा मन सुखी वा दुःखी है सो आत्मा मन कोही जान के कहता है इससे मन आत्मा का लक्ष्य है(आत्मा और परमात्मा परस्पर लक्ष्य और लक्षण हैं क्योंकि आत्मा परमात्मा को जान सक्ता है और अपने को आप भी जान लेता है तथा परमात्मा सब काल में आत्माओं को जानता है और आप को भी आप सदा जानता है वे अपने आपही को लक्ष्य और लक्षण भी हैं)इससे आगे जो तर्क करना है सो मूढ़ों का धर्म है क्योंकि इसके आगे जो तर्क कुतर्क करता है उसका ज्ञान और बुद्धि नष्ट होजाती है इससे सज्जनों को और बुद्धिमानों को अवश्य जानना चाहिये कि यही ज्ञान की परम सीमा है और यही परम पुरुषार्थ है जो कोई लक्षण का लक्षण कहता है उसके मत में अनवस्था दोष प्रसङ्ग आवेगा कहीं भी अवस्था न होगी क्योंकि लक्षण का लक्षण उसका लक्षण २ ऐसा वाद करता २ मर जायगा कुछ हाथ नहीं आवेगा और जैसा कि लक्षण का लक्षण करता है वैसा लक्ष्य का लक्ष्य

उसका लक्ष्य २ यह भी अनवस्था दूसरी उसके मनमें आवेगी इससे बुद्धिमानों को ऐसी बात न कहनी चाहिये और न सुननी चाहिये कुछ थोड़ी सी प्रमाणों के विषय में परीक्षा लिख दी है और अधिक जानने की जिसको इच्छा होय वह गोतमसूत्र के २ ध्याय से लेके ५ पंचमाध्याय की पूर्त्ति पर्य्यन्त देख लेवै इतने ४ प्रमाण हैं परन्तु ४ चारों में और ४ चार प्रमाण मानना चाहिये॥ नचतुष्ट्वमैतिह्यार्थापत्तिसम्भवाभावप्रामाण्यात् । यह गोतममुनि का पूर्वपक्ष का सूत्र है ४ चारही प्रमाण नहीं किन्तु ८ आठ प्रमाण हैं ऐतिह्य नाम जो बहुत काल से सुनते सुनाते चले आये उसका नाम ऐतिह्य है अर्थापत्ति किसी ने किसी से कहा कि बादल के होनेही से वृष्टि होती है इससे क्या आया कि बिना बादल से वृष्टि नहीं होती इसका नाम अर्थापत्ति है सम्भव नाम मण के जानने से आधा मण पसेरी सेर और छटांक को जो विचार से ज्ञान होजाय उसका नाम सम्भव है क्योंकि मण ४० सेर का होता है उसका आधा २० सेर होगा २० सेर के चतुर्थांश की पसेरी होगी उसका ५ पांचवां अंश सेर होगा सेर का १६ सोलहवां अंश छटांक होगा ऐसा विचार करने से जो ज्ञान होता है उसका नाम सम्भव है यह सप्तम प्रमाण है आठवां अभाव किसी ने किसी से कहा कि तूं अलक्षित नाम अदृष्ट मनुष्य को ला जो कि तूने नहीं देखा है वह जाके जिसको उसने कभी न देखा था उसी को ले आवेगा देखने के अभाव से उसको ज्ञान होगया इससे अभाव भी आठवां प्रमाण मानना चाहिये इसका समाधान यह है कि॥ सूत्र । शब्दऐतिह्यानर्थान्तरभावादनुमानेऽर्थापत्तिसम्भवाभावानर्थान्तरभावाच्चाप्रतिषेधः । चारही प्रमाण मानना चाहिये उसका जो आप ने निषेध किया सो अयुक्त है क्योंकि आप्तों का उपदेश जो है सो शब्द है उसी में ऐतिह्य भी आगया क्योंकि

देव श्रेष्ठ होते हैं और असुर अश्रेष्ठ होते हैं यह भी तो आप्तोंही के उपदेश से सत्य २ जाना जाता है मूर्खों के उपदेश से कभी नहीं वैसेही प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष को जानना उसका नाम अनुमान है इस अनुमान में अर्थापत्ति सम्भव और अभाव ये तीनों गणना कर लीजिये इससे चारही प्रमाण का मानना ठीक है यह गोतममुनि का अभिप्राय है पूर्व मीमांसा दर्शन और वैशेषिक दर्शन में प्रत्यक्ष और अनुमान दो प्रमाण माने हैं तथा योगशास्त्र और सांख्यशास्त्र में प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द तीन प्रमाण माने हैं वेदान्त शास्त्र में प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति और अनुपलब्धि ये छः प्रमाण माने हैं और जो कोई आठ प्रमाण मानें तो भी कुछ दोष नहीं इन उक्त प्रमाणों से ठीक २ परीक्षा करके शास्त्र को पढ़ै वा पढ़ावे और जो पुस्तक इन प्रमाणों से विरुद्ध होय उनको न पढ़ै और न पढ़ावे इनसे विरुद्ध व्यवहार अथवा परमार्थ कभी न करना और मानना भी न चाहिये॥(अथ पठन पाठन विधिं वक्ष्यामः) प्रथम तो अष्टाध्यायी को पढ़ै और पढ़ावे सो इस क्रम से वृद्धिरादैच् यह तो पाठ भया वृद्धिः आत् ऐच् यह पदच्छेद भया आदैचां वृद्धि संज्ञा स्यात् यह सूत्र का अर्थ है कि आ, ऐ, और औ, इन तीन अक्षरों को वृद्धि संज्ञा कि वृद्धि नाम है इस प्रकार से पाणिनि मुनिजी को जो बुद्धिमान् अष्टाध्यायी के आठ अध्यायों को पढ़ै सो छः महीने में अथवा आठ महीने में पढ़ लेगा इसके पीछे धातुपाठ को पढ़ै उसमें भवति भवतः भवन्ति इत्यादिक तिङन्त रूपों को और भवः भावौ भावाः इत्यादिक सुबन्त रूपों को उन्हीं सूत्रों से साथ २ के पढ़ले तीन मास में दशगण दशलकार और बुभूषति इत्यादिक प्रक्रिया के रूपों को भी पढ़ लेगा वही सब अष्टाध्यायी के सूत्रों के उदाहरण और प्रत्युदाहरण होवेंगे इसके पीछे उणादि और गणपाठ को पढ़ै उसमें वायुः

वायू वायवः इत्यादिक रूप और बहुत से शब्दों का ज्ञान होगा एक मास में उसको पढ़ लेगा उसके पीछे सर्व विश्व उभ उभय इत्यादिक गणपाठ के साथ अष्टाध्यायी की द्वितीयानुवृत्ति नाम दूसरी बार पढ़े उसके सूत्रों में जितने शब्द हैं और जितनेपद हैं उनको सूत्रों से सिद्ध कर लेवेगा और सर्वादि गणों के सर्वः सर्वौ सर्वे ऐसे पुल्लिङ्ग में रूप होते हैं सर्वा सर्वे सर्वाः इत्यादिक स्त्रीलिङ्ग में रूप होते हैं और सर्वं सर्वे सर्वाणि इत्यादिक नपुंसक में रूप होते हैं इनको भी पढ़ लेवे सूत्रों से साध के ऐसे दूसरी बार अष्टाध्यायी को ४ वा ६ छः मास में पढ़ लेगा इस प्रकार से १६ वा १८ अठारह मास में पाणिनि मुनि के किये ४ चार ग्रन्थों को पढ़लेगा फिर इसके पीछे पतञ्जलि मुनि का किया महाभाष्य जिसमें अष्टाध्याय्यादिक चार ग्रन्थों की यथावत् व्याख्या है बहुत से वार्त्तिक सूत्र हैं सूत्रों के ऊपर और अनेक परिभाषा हैं अनेक प्रकार के शास्त्रार्थ, शङ्का और समाधान हैं उनको यथावत् पढ़ले जब उसको पढ़लेगा तब सब व्याकरण शास्त्र उसका पूर्ण हो जायगा वह महा वैय्याकरण कहावेगा फिर विद्वान् संज्ञा भी उसको हो जायगी सो अठारह १८ महीने में सब महाभाष्य का पढ़ना संपूर्ण हो जायगा ऐसे मिलके ३ वर्ष तक व्याकरण शास्त्र संपूर्ण होगा उसके संपूर्ण पठन होने से अन्य सब शास्त्रों का पढ़ना सुगम हो जायगा इसमें कोई सज्जन को शङ्का मत हो कि यह बात सत्य नहीं है किन्तु इस प्रकार से पढ़ना और पढ़ाना होय तीन ३ वर्ष में संपूर्ण व्याकरण को पढ़े और पूर्त्ति न होय तब शङ्का करनी चाहिये पहिले जो शङ्का करनी सो व्यर्थही है इससे जिन पुरुषों का बड़ा भाग्य होगा वेही इस रीति में प्रवृत्त होंगे और उनको शीघ्र विद्या भी हो जायगी वे बहुत सुख पावेंगे और जो भाग्यहीन हैं वे तो सुख की रीति को कभी न मानेंगे

व्याकरण के नाम से जो जाल रूप कौमुद्यादिक ग्रन्थ चन्द्रिका सारस्वतादिक और मुग्ध बोधादिकों के ५० वर्ष तक पढ़ने से भी जैसा बोध नहीं होता है उस्से हजारगुणा अष्टाध्याय्यादिक सत्य ग्रन्थों के पढ़ने से तीन वर्ष मेंही बोध हो जाता है इसमें बिचार करना चाहिये कि सत्य ग्रन्थों के पढ़ने में बड़ा लाभ होता है वा मिथ्या जालरूप ग्रन्थों के पढ़ने में जालरूप ग्रन्थों के पढ़ने से कुछ भी लाभ नहीं होगा क्योंकि जाल रूप ग्रन्थों में इस प्रकार का व्यर्थ बिवाद लिखा है उसको पढ़ाने और पढ़ने वाले भी वैसेही हठी, दुराग्रही और विरुद्ध वादी होंगे ऐसेही देख भी पड़ते हैं क्योंकि जैसा ग्रन्थ पढ़ेगा वैसीही बुद्धि उसकी होगी इस प्रकार का बड़ा एक जाल बनाया है कि मरण तक एक शास्त्र भी पूर्ण नहीं होता उसको अन्य शास्त्र पढ़ने का अवकाश कैसे होगा कभी न होगा एक शास्त्र के पढ़ने से मनुष्य की बुद्धि संकुचितही रहती है विस्तृत कभी नहीं होती सब दिन उसको शंकाही बनी रहती है सब पदार्थों का निश्चय कभी नहीं होता और जो व्याकरण का पढ़ना है सो तो वेदादिक अन्यशास्त्रों के पढ़ने केही लिये है जब वह एक व्याकरणही में बाद बिवाद करता २ मर जायगा तब हांथ में उसके कुछ भी न आवेगा इस्से सब सज्जन लोगों को ऋषि मुनियों की पठन पाठन की जो रीति है उसी में चलना चाहिये जाली लोगों की रीति में कभी नहीं क्योंकि आर्य्यावर्त्त मनुष्यों के बीच में कपिलादिक ऋषि मुनि जितने भये हैं वे बड़े बिद्वान् और बड़े धर्मात्मा पुरुष भये हैं उनके सहस्रांश में भी इस समय जो आर्य्यावर्त्त में मनुष्य हैं वे बुद्धि, बिद्या और धर्माचरण में नहीं देख पड़ते इस लिये उनका आचरण हम लोगों को करना उचित है कि उसी से आर्य्यावर्त्त के लोगों की उन्नति होगी अन्यथा कभी नहीं व्याकरण को तीन

वर्ष तक सम्पूर्ण पढ़के कात्यायनादि मुनि कृत जो कोश यास्क मुनिकृत जो निघण्टु और यास्क मुनिकृत निरुक्त को पढ़े और पढ़ावै उसमें अव्ययार्थ एकार्थ कोश और अनेकार्थ कोश नाम और नामियों का आप्तों के किये संकेत से जो सम्बन्ध हैं डेढ़ वर्ष के बीच में उसका ज्ञान होजायगा उसके पीछे पिङ्गल मुनि के किये जो छन्दों के सूत्र भाष्य सहित को पढ़ै पीछे यास्कमुनि के किये काव्यालङ्कार सूत्र और उसके ऊपर वात्स्यायन मुनि के भाष्य को पढ़ै उससे गायत्र्यादिक छन्दों का काव्य अलङ्कार और श्लोक रचने का भी यथावत् ज्ञान छः मास में होवेगा और अमर कोशादिक जो कोश ग्रन्थ और श्रुतबोधादिक जो छन्दो ग्रन्थ वे सब जाल ग्रन्थही हैं इनके दश वर्ष में पढ़ने से भी बोध नहीं होता सो उक्त निघंट्वादिक सत्यशास्त्रों के पढ़ने से दो वर्ष में होगा इससे इनकाही पढ़ना और पढ़ाना उचित है इसके पीछे पूर्व मीमांसाशास्त्र को पढ़ै जो कि जैमिनि मुनि के किये सूत्र हैं उनके ऊपर व्यासमुनि जीकी की अधिकरणमाला व्याख्या के सहित पढ़ै चार मास के बीच में पढ़ लेगा और(इसी शास्त्र के साथ मनुस्मृति को पढ़ै सो एक मास में मनुस्मृति को पढ़लेगा)उसके पीछे वैशेषिकदर्शन जो कि कणादमुनि के किये सूत्र हैं उसके ऊपर गोतममुनि जी का कथा जो प्रशस्त पादभाष्य और भरद्वाज मुनिको किये सूत्रों की वृत्ति के सहित को पढ़ै उसके पढ़ने में दो मास जांयगे उसके पीछे न्यायदर्शन जो कि गोतममुनि के किये सूत्र उनके ऊपर वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य उसको पढ़ै इसके पढ़ने में चार मास जांयगे इसके पीछे पातञ्जल दर्शन नाम योगशास्त्र जो कि पतञ्जलि मुनि के किये सूत्र उसके ऊपर व्यासमुनि जी का किया भाष्य इसको एक मास में पढ़ लेगा उसके पीछे सांख्यदर्शन जो कि कपिलमुनि के किये सूत्र उनके ऊपर भागुरि

मुनि का किया भाष्य इसको भी एक मास में पढ़ लेगा इसके पीछे (ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्ड, मांडूक्य, तैत्तिरीय, छान्दोग्य और वृहदारण्यक इन दश उपनिषदों को) पांच महीने के बीच में पढ़लेगा और इसके पीछे वेदान्तदर्शन को पढ़ै जो कि व्यास मुनि के किये सूत्र उनके ऊपर वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य अथवा बौधायन मुनि का किया भाष्य वा शङ्कराचार्य जी का किया भाष्य पढ़ै जब तक बौधायन और वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य मिले तब तक अन्य भाष्य को न पढ़ै इसको छः मास में पढ़लेगा इनको छः शास्त्र कहते हैं इनके पढ़ने में दो वर्ष काल जायगा दोवर्ष के बीच में सब पदार्थ विद्या पुरुष को यथावत् आवैगी और इनके विषय में बहुत से जालग्रन्थ लोगों ने रचे हैं जैसे कि पाराशर स्मृत्यादिक १७ सतरह पूर्व मीमांसा शास्त्र के विषय में जालग्रन्थ लोगों ने रचे हैं तथा वैशेषिकदर्शन और न्यायदर्शन के विषय में तर्कसंग्रह, न्यायमुक्तावली, जगदीशी, गदाधरी, और मथुरानाथी इत्यादिक जाल ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं ऐसेही योगशास्त्र के विषय में हठ प्रदीपिकादिक मिथ्या ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं तथा सांख्य शास्त्र के विषय में सांख्य तत्त्व कौमुद्यादिक जाल ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं और वेदान्तशास्त्र के विषय में पञ्चदशी, वेदान्त, संज्ञा, वेदान्तमुक्तावली, आत्मपुराण, योगवाशिष्ठ और पूर्वोक्त दश उपनिषदों को छोड़ के गोपालतापिनी, नृसिंहतापिनी, रामतापिनी और अल्लोपनिषत् इत्यादिक बहुत उपनिषद जाल करके लोगों ने रची हैं वे सब सज्जनों को त्याग करने के योग्य हैं इन जाल ग्रन्थों में जो कुछ सत्य है सो सत्य शास्त्रोंही का विषय है उसका लिखना ग्रन्थान्तर में अयुक्त है क्योंकि जो बात सत्य शास्त्रों में लिखीही है उसका फिर लिखना व्यर्थ है जैसे कि पीसे भये पिसान को फिर पीसना वैसाही वह है

किन्तु पिसान भी उड़ जायगा तथा सत्यशास्त्र की बात भी उनके हाथ से उड़ जायगी और जो सत्यशास्त्रों से विरुद्ध बात है सोतो कपोल कल्पित मिथ्याही है इस्से इनका पढ़ना और पढ़ाना मिथ्याही जानना चाहिये इस्से कुछ फल न होगा और जो कोई पढ़ता है वा पढ़ेगा एक शास्त्र की मरण तक भी पूर्त्ति न होगी और कुछ बोध भी उसको न होगा इस्से सज्जन लोगों को सत्यशास्त्रोंही का पढ़ना और पढ़ाना उचित है जाल ग्रन्थों का कभी नहीं पूर्व पक्ष छः शास्त्रों में भी अन्योन्यविरोध और परस्पर खण्डन देख पड़ता है एक का दूसरे से दूसरे का तीसरे से ऐसाही सर्वत्र है जैसा कि जाल ग्रन्थों में एक शास्त्र के विषय में बहुत सी परस्पर विरुद्ध टीका और मूल ग्रन्थ हैं वैसाही विरोध सत्यशास्त्रों में भी देख पड़ता है जो दोष आप ने जाल ग्रन्थों में दिया वही दोष सत्यशास्त्रों में भी आया फिर सत्य-शास्त्रों का पढ़ना और जालग्रन्थों का न पढ़ना आप कहते हैं इसमें क्या प्रमाण है उत्तर कि यह आप लोगों को जालग्रन्थों के पढ़ने और सुनने से भ्रान्ति होगई है कि सत्यशास्त्रों में भी विरोध और परस्पर खण्डन है यह बात आप लोगों की मिथ्याही है देखना चाहिये कि आज काल के लोग टीका वा ग्रन्थ रचते हैं सो द्वेष बुद्धिही से रचते हैं कि अपनी बात मिथ्या भी होय तो भी सत्य कर देते हैं तब सब लोग उसको कहते हैं कि वह बड़ा पण्डित है इस प्रकार के जो धूर्त्त मनुष्य हैं वेही टीका वा ग्रन्थ रचते हैं उनमें इसी प्रकार की मिथ्या धूर्त्तता रखते हैं उनको जो पढ़ता है वा पढ़ाता है उसकी भी बुद्धि वैसीही भ्रष्ट हो जाती है सो मिथ्या वाद मेंही प्रवृत्त होता है और सत्य वा असत्य का विचार कभी नहीं करता उसको तो यही प्रयोजन रहता है कि दूसरे की सत्य बात को भी खण्डन करके अपनी मिथ्या बात को मण्डन करके जिस किस प्रकार

से दूसरे का पराजय करना अपना विजय करलेना उससे प्रतिष्ठा करना और धन लेना पीछे विषय भोग करना यही आज काल के पण्डितों की क्षुद्रबुद्धि और सिद्धान्त हो गया है इस प्रकार के कितने मौलवी और पादरी लोग भी देखने में आते हैं पण्डितादिकों में कोई जो सत्य कथन करै तब वे सब धूर्त्त लोग उससे विरोध करते हैं उसका नाम नास्तिक रखते हैं और उससे सब दिन विरोधही रखते हैं क्योंकि उनकी बुद्धि वैसीही है इस दोष के होने से सत्य शास्त्रों का जो यथावत् अभिप्राय है उसको जानते भी नहीं इस्से वे कहते हैं कि सत्यशास्त्रों में भी परस्पर विरोध है परन्तु मैं आप लोगों से कहता हूं कि छः शास्त्रों में लेशमात्र भी परस्पर विरोध नहीं है क्योंकि इनका विषय भिन्न २ है और जो विरोध होता है सो एक विषय में परस्पर विरुद्ध कथन के होने से होता है जैसे कि एक ने कहा गन्धवाली जो होती है सो पृथ्वी कहाती है इसी विषय में दूसरे ने कहा कि नहीं जो रस वाली होती है सोई पृथिवी होती है क्योंकि पृथिवी में चार मिष्टादिकरस प्रत्यक्ष देख पड़ते हैं इस प्रकार के विषय कों विरोध जानना चाहिये और जो ऐसा कहै कि गन्धवाली जो पृथिवी होती है और रसवाला जल होता है सो एक तो पृथिवी के विषय में व्याख्या करता है और दूसरा जल के विषय में दोनों का विषय भिन्न होने से व्याख्या भी भिन्न होगी परन्तु उसका नाम विरोध नहीं जैसे कि किसी ने ज्वर के विषय में चिकित्सा निदान औषध और पथ्य को लिखा और दूसरे ने कफ के विषय में चिकित्सादिक लिखे उसको विरोध नहीं कहना चाहिये वैसाही षट् शास्त्रों के विषय और भी सब वेदादिक शास्त्रों के विषय में जानना चाहिये जैसे कि(धर्मशास्त्र नाम पूर्व मीमांसा में धर्म और धर्मी दो पदार्थों को मानते हैं)और कर्मकाण्ड जो कि वेदोक्त है

सन्ध्योपासन से लेके अश्वमेध पर्यन्त कर्मकाण्ड कहा है अब इसमें आकाङ्क्षा होती है कि धर्म और धर्मी किसको कहते हैं तब इसी को वैशेषिक दर्शन में स्पष्ट व्याख्या की है कि जो द्रव्य है सो तो धर्मी है और गुणादिक सब धर्म हैं फिर भी आकाङ्क्षा होती है कि गुण को क्यों नहीं द्रव्य और द्रव्य को क्यों नहीं गुण कहते उसका विचार न्यायदर्शन में किया है कि जिन प्रमाणों से द्रव्य गुणादिक सिद्ध होते हैं उसको द्रव्य और उन्हीं को गुण मानना चाहिये सो तीनों शास्त्रों से श्रवण नाम सुनना और मनन नाम उसी का विचार करना इस बात तक लिखा उससे आगे जितने पदार्थ अनुमान से सिद्ध होते हैं उतने प्रत्यक्ष से जैसा तीन शास्त्रों में कहा है वैसाही है अथवा नहीं उसको विशेष विचार से और योगाभ्यास से उपासना काण्ड जो कि चित्तवृत्ति के निरोध से लेके कैवल्य पर्यन्त उपासना काण्ड कहाता है उसकी रीति योगशास्त्र में लिखो है जो देखना चाहै सो उसमें देख लेवै सब के तत्त्व को यथावत् जानना चाहिये इस लिये योगशास्त्र है फिर कितने भूत और तत्त्व हैं उसकी भिन्न २ गणना और वैसाही निश्चय का होना उस लिये सांख्य शास्त्र का आवश्यक रचन हुआ इन पांच शास्त्रों का महाप्रलय तक व्याख्यान है जिसमें कि स्थूल भूतों का नाश होता है और सूक्ष्मों का नहीं फिर उसी सूक्ष्म भूतों से जैसी उत्पत्ति स्थूल की होती है और जिस प्रकार से प्रलय होता है वह बात सब लिखी है महाप्रलय तक परमाणु और प्रकृत्यादिक सूक्ष्म भूत बने रहते हैं उनका लय नहीं होता फिर कार्य और परम कारण का विचार वेदान्त शास्त्र में किया कि सब प्रकृत्यादिक भूतों का एक अद्वितीय अनादि परमेश्वरही कारण है और परमेश्वर से भिन्न सब कार्य हैं क्योंकि परमेश्वरही में सब

प्रकृत्यादिक सूक्ष्म भूत रचे हैं सो परमेश्वर के सामने तो संसार सब आदि है और अन्य जीवों के सामने अनादि परमाणु प्रकृत्यादिक भूत भी अनित्य हैं क्योंकि परमाणु और प्रकृति इनका ज्ञान अनुमान से होता है वैसा नाश भी अनुमान से हम लोग जान सक्ते हैं परमेश्वर तो सब जगत का रचने वाला है अन्य ब्रह्मादिक देव और सब मनुष्य शिल्पी हैं क्योंकि नवीन पदार्थ रचने का किसी का सामर्थ्य नहीं है बिना परमेश्वर के जगत् का रचने वाला कोई नहीं है सो वेदान्त शास्त्र में ज्ञान काण्ड का निश्चय किया है जो कि निष्काम कर्म से लेके परमेश्वर की प्राप्ति पर्यन्त ज्ञानकाण्ड है निष्काम कर्म यह है कि परमेश्वर की प्राप्ति जो मोक्ष उसके बिना भिन्न फल कर्मों से नहीं चाहना सो निष्काम कर्म कहाता है इससे बिचारना चाहिये कि षट्शास्त्रों में कुछ भी विरोध नहीं है किन्तु परस्पर सहायकारी शास्त्र हैं सब शास्त्र मिलके सब पदार्थविद्या छः शास्त्रों में प्रकाश कर दी है और उक्त जो जाल पुस्तक हैं उनमें केवल विरोधही है उनका पढ़ना और पढ़ाना व्यर्थही है किन्तु सत्य शास्त्रों के पठन न होने से और जाल ग्रन्थों के पढ़ने से आर्य्यावर्त्त देश के लोगों की बड़ी हानि हो गई है इससे सज्जन लोगों का ऐसा करना उचित है कि आज तक जो कुछ भ्रष्टाचार भया सो भया इससे आगे हमलोगों के ऋषि मुनि और श्रेष्ठ राजा लोग जो कि पहिले भये थे उनकी जो मर्यादा और वेदादिक सत्यशास्त्रोक्त जो मर्यादा उसी पर चलने से और सब पाखण्डों को छोड़नेही से आर्य्यावर्त्त देश की बड़ी उन्नति होगी अन्य प्रकार से कभी न होगी. इन सब शास्त्रों को पढ़के ऋग्वेद को पढ़ै उसका आश्वलायनकृत जो श्रौत सूत्र बह्वृच जो ऋग्वेद का ब्राह्मण और कल्पसूत्र इनके साथ २ मन्त्रों का अर्थ पढ़ै और स्वर को भी पढ़ै सो दो वर्ष

के भीतर सब ऋग्वेद को पढ़ लेगा तथा (यजुर्वेद की संहिता उसके साथ २ कात्यायन, श्रौतसूत्र, तथा गृह्यसूत्र तथा शतपथ ब्राह्मण स्वर अर्थ और हस्तक्रिया के सहित यथावत् पढ़ै) डेढ़ वर्ष तक यजुर्वेद को पढ़ लेगा इसके पीछे सामवेद को पढ़ै गोभिल श्रौतसूत्र तथा राणायनश्रौतसूत्र और कल्पसूत्र साम ब्राह्मण तथा गोभिल राणायन गृह्यसूत्र के साथ २ पढ़ै दो वर्ष में सब सामवेद को पढ़लेगा इसके पीछे अथर्ववेद को पढ़ै शौनकश्रौतसूत्र, शौनकगृह्यसूत्र, अथर्वब्राह्मण और कल्पसूत्र के साथ २ को एक वर्ष में पढ़लेगा ऐसे साढ़े छः वा सात वर्ष में चारो वेदों को पढ़लेगा चारो वेदों की जो संहिता है उन्हीं का नाम वेद है फिर उन्हीं वेदों की जितनी अन्य २ शाखा हैं वे सब वेदों के व्याख्यान हैं बिना पढ़े सब बिचार मात्र से आजांयगी तथा आरण्यक बृहदारण्यकादिक व्याख्यान हैं उनको भी बिचार करने से जानलेगा चारों वेदों को पढ़ के आयुर्वेद को पढ़ै जो कि ऋग्वेद का उपवेद है उसमें धन्वन्तरिकृत निघण्टु, चरक और सुश्रुत इन तीनों ग्रन्थों को शस्त्रक्रिया, हस्तक्रिया और निदानादिक विषयों को यथावत् पढ़ै सो तीन वर्ष में पढ़लेगा और वैद्यकशास्त्र के विषय में शार्ङ्गधरादिक जाल ग्रन्थों को पढ़ना और पढ़ाना व्यर्थही जानना इसके पीछे यजुर्वेद का जो उपवेद धनुर्वेद उसको पढ़ै उसमें शस्त्र विद्या जो कि शस्त्रों का रचना और शस्त्रों का चलाना और अस्त्र विद्या जो कि आग्नेयास्त्रादिक पदार्थ गुणों से होते हैं उनको यथावत् रच लेना अग्न्यादिक अस्त्रों के विषयों का बिस्तार राजधर्म में लिखेंगे और युद्ध समय में व्यूह की रचना यथावत् जान लेवै जैसे कि सूची व्यूह सूई का अग्र भाग तो बहुत सूक्ष्म होता है और उस अग्र भाग से पूछिले २ स्थूल होता है उससे सूत स्थूल होता है इसी प्रकार से सेना

को रचके शत्रु को सेना वा दुर्ग वा नगर में प्रवेश करें तब उसके विजय का सम्भव होता है ऐसेही शकटव्यूह, मकरव्यूह और गरुड़व्यूहादिकों को जान लेवे उसको दो वा तीन वर्ष में पढ़लेगा उसके आगे सामवेद का जो उपवेद गान्धर्व वेद उसको पढ़े उसमें वादित्रराग, रागिणी, काल-ताल स्वरपूर्वक गान विद्या का अभ्यास करै दोवर्ष में उसको पढ़लेगा इसके आगे अथर्ववेद का जो उपवेद अर्थवेद नाम शिल्पशास्त्र उसमें नाना प्रकार कला यन्त्र और नाना प्रकार के द्रव्यों को मिलाने से नाना प्रकार व्यवहारों के यानों को और दूरवीक्षण, अणुवीक्षण, नाम दूरस्थित पदार्थों को निकट देखे और अणुवीक्षण नाम सूक्ष्म पदार्थ भी स्थूल देख पड़ें इत्यादिक पदार्थों को रचले जैसे कि अग्नि का ऊर्द्ध्वगमन स्वभाव है और जल का नीचे जाने का स्वभाव है सो किसी पात्र में जल को करके चूल्हे के ऊपर रखदे और उसके नीचे अग्नि करै फिर उतनेही भार वाले पात्र से उस पात्र का मुख बन्द करै जब अग्नि से जल ऊपर उड़ेगा तब इतना बल होजायगा कि ऊपर का पात्र नाचने लगेगा वा गिर पड़ेगा इसी प्रकार से पदार्थों के अनुकूल गुणों को और विरुद्ध गुणों को जानने से पृथ्वीयान, जलयान और आकाश यानादिक पदार्थों को रच लेगा जैसे कि महाभारत में उपरिचरवसु राजा इन्द्रादिक देव तथा राम लङ्का से अयोध्या को आकाश मार्ग से आया उपरिचरादिक राजा लोग और इन्द्रादिक देव वे भी आकाश मार्ग से जाते और आते थे तथा जैसे कि आज काल अङ्गरेज लोगों ने रेल तारादिक बहुत से पदार्थ रचे हैं वे सब शिल्प शास्त्र के विषय हैं और उनसे बहुत से उपकार हैं उसको भी तीनवर्ष में पढ़लेगा पढ़के पीछे अपनी बुद्धि से बहुत सी शिल्प विद्या की उन्नति करलेगा पीछे ज्योतिश्शास्त्र को पढ़ै उसमें

गणित विद्या यथावत् जानै उस्से बहुत सा उपकार होता है दो वा तीन वर्ष में उसको पढ़लेगा और ज्योतिश्शास्त्र में जो फल विद्या है सो व्यर्थ ही है भृग्वादिक मुनियों के किये सूत्र और भाष्यों को पढ़ैं मुहूर्त चिन्तामण्यादिक शास्त्रग्रन्थों को कभी न पढ़ै इस प्रकार से साढ़े २७॥ वा २८ वर्ष तक पढ़लेगा संपूर्ण विद्या उसको आजायगी फिर उसको पढ़ने की आवश्यकता कुछ न रहेगी सब विद्याओं से वह पूर्ण होके पुरुषों में पुरुषोत्तम होजायगा और उसके शरीर से संसार में बड़ा उपकार होगा क्योंकि जैसे अपने विद्या को पढ़ा है वैसेही पढ़ावेगा इस्से जैसा मनुष्यों का उपकार होता है वैसा किसी प्रकार से नहीं होता ऐसे ३६ वर्ष की जब आयु होगी तबतक पुरुषों को विद्या भी पूर्ण हो जायगी और जो पुरुष ४०, ४४, और ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य्य रक्खेगा उस पुरुष के भाग्य और सुख को हम लोग नहीं कह सक्ते कि कितना होगा जिस देश में राज्याभिषेक जिसका होना होय वह तो सब विद्या से युक्त होवै और ३६, ४०, ४४ वा ४८ वर्षतक अवश्य ब्रह्मचर्याश्रम करै उसी को राजा होना उचित है क्योंकि जितने उत्तम व्यवहार हैं वे सब राजाही के आधीन हैं और सब दुष्ट व्यवहारों का बंध करना सो भी राजाही के आधीन है इस्से राजा और धनाढ्य लोगों को तो अवश्य सब विद्या पढ़नी चाहिये क्योंकि जो वे सब विद्याओं को न पढ़ेंगे तो अपने शरीर की भी रक्षा न कर सकेंगे फिर धर्मराज्य और धन की रक्षा तो कैसे करेंगे और जितनी कन्या लोग हैं वे भी पूर्वोक्त व्याकरण, धर्मशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, गानविद्या और शिल्पशास्त्र इन पांच शास्त्रों को तो अवश्य पढ़ैं और जो अधिक पढ़ैं तो उनका सौभाग्य बड़ा होगा १६ वर्ष से न्यून ब्रह्मचर्य कन्या लोग कभी न करैं और जो १८, २० वा २४ वर्षतक ब्रह्मचर्य्याश्रम करेंगी तो उनको

अधिक २ सौभाग्य और सुख होगा जबतक स्त्री और पुरुष लोग उक्त रीति पर ब्रह्मचर्य्य से विद्या प्राप्त न करेंगे तो उनका अभाग्य और दुःखही जानना परस्पर स्त्री और पुरुषों का विरोध और भ्रान्ति होगी जिन व्यवहारों से सुख वृद्धि होती है उनको भी न जानेंगे सर्वदा दीन रहैंगे और प्रमाद से धनादिकों का नाश करेंगे कहीं प्रतिष्ठा और आजीविका भी उनकी न होगी परस्पर व्यभिचारी होंगे उस्से वीर्य्य का नाश होगा फिर बहुत से शरीर में रोग होंगे रोगों से सदा पीड़ित रहैंगे वे मूर्ख होंगे इस्से कभी सुख न पावेंगे इस्से सब स्त्री और पुरुष लोग सब पुरुषार्थ से अवश्य विद्याही को पढ़ें इस्से मनुष्यों को अधिक लाभ कोई नहीं है क्योंकि आपही अपना उपदेष्टा, रक्षक, धर्मग्राहक और अधर्म त्याग करनेवाला होता है इस्से बड़ा कोई लाभ नहीं है विद्या के पढ़ने और पढ़ाने में जितने विघ्न रूप व्यवहार हैं उनको जब तक मनुष्य नहीं छोड़ता तब तक उसको विद्या कभी नहीं होती प्रथम विघ्न बाल्यावस्था में जो विवाह का करना सोई बड़ा विघ्न है क्योंकि शीघ्र विवाह करने से विषयी होगा और विषयही की चिन्ता करेगा शरीर में धातु पुष्ट तो होंगे नहीं और सब धातुओं का सार जो कि सब धातुओं का राजा घर में जैसा कि दीपक प्रकाशक होता है जैसा ब्रह्माण्ड में सूर्य प्रकाशक है वैसाही शरीर में वीर्य है इस अपरिपक्व वीर्य और अत्यन्त वीर्य के नाश से बुद्धि, बल, पराक्रम, तेज और धैर्य का नाश हो जाता है आलस्य, रोग, क्रोध और दुर्बुद्धि इत्यादि ये सब दोष उस्को हो जायगे फिर कैसे उसको विद्या होसक्ती है कभी न होगी क्योंकि जितेन्द्रिय, धैर्यवान्, बुद्धिमान्, शीलवान्, विचारवान्, जो पुरुष होता है उसी को विद्या होती है अन्य को नहीं इस्से ब्रह्मचर्य्य का अवश्य करना उचित है दूसरा विद्या का

नाशक विघ्न पाषाणादिक मूर्त्तिपूजन, जटू पुंड्र, त्रिपुंड्रादिक तिलक, एकादशी, त्रयोदश्यादिकव्रत, काश्यादिक तीर्थों में विश्वास, राम, कृष्ण, नारायण, शिव, भगवती और गणेशादिक नामोंसे पाप नाश होने का विश्वास यह भी विद्या धर्म और परमेश्वर की उपासना का बड़ा भारी विघ्न है क्योंकि विद्या का फल यही है कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना जो कि धर्म रूप है परमेश्वर को यथावत् जानना, मुक्ति का होना यथावत् व्यवहार और परमार्थ का धर्म से अनुष्ठान करना यही विद्या होने का फल है सोई फल मिथ्या बुद्धि से पाषाणादिक मूर्त्ति में और तिलकादिकोंही में मान लेते हैं और सम्प्रदायी लोग मिथ्या उपदेश करके धूर्तता और अधर्म का निश्चय करा देते हैं पीछे वे सम्प्रदायी लोग ऐसे कहते और उनके चेले सुनते हैं कि मूर्त्ति पूजादिक प्रकारही से आप लोगों को मुक्ति होगी यही परम धर्म है ऐसा सुनके उन विद्याहीन मनुष्यों को निश्चय होजाता है कि यही बात सत्य है सब कहने और सुनने वाले वैसे हैं जैसे कि पशु हैं वे ऐसा भी कहते हैं कि सम्प्रदायी और नाममात्र से जो पण्डित लोग आजीविका के लोभ से यही बात वेद में लिखी है ऐसी बात कहने वाले और सुनने वाले ने वेद का दर्शन भी कभी नहीं किया वेद में इन बातों का सम्बन्ध लेशमात्र भी नहीं है परन्तु अन्ध परंपरा की नांई कहते और सुनते चले जाते हैं उनको सुख वा सत्य फल कुछ भी नहीं होता क्योंकि वाल्यावस्था से लेके यही मिथ्याचार करते रहते हैं कि इसका दर्शन अवश्य करैं और तिलक माला धारण करैं काश्यादिक तीर्थों में जाके वास करैं और नाम स्मरण करैं एकादश्यादिक व्रत करैं और पुष्प ले आवैं चन्दन घसैं धूप दीप करैं नैवेद्य धरैं परिक्रमा करैं पाषाणादिक मूर्त्ति का प्रक्षालन करके जल ग्रहण करैं और कूदैं नाचैं

कूदैं और बाजे बजावैं रथ यात्रादिकों का मेला करैं और परस्पर व्यभिचार करैं मेले में उन्मत्तवत् होके घूमते घुमाते इत्यादिक मिथ्या व्यवहारोंही में फसे रहते हैं फिर उनको विद्या लेशमात्र भी न आवैगी क्योंकि मरणतक उनको अवकाशही न मिलेगा फिर कैसे वे पढ़ें और पढ़ावेंगे यह विद्या का नाशक दूसरा विघ्न है तीसरा विघ्न यह है कि माता, पिता और आचार्य्यादिक पुत्र और कन्याओं को लाड़न मेंही रखते हैं कुछ शिक्षा वा ताड़न नहीं करते इस्से भी विद्या का नाशही होता है चौथा विघ्न यह है कि गुरु, पण्डित और पुरोहित ये तीनों विद्या तो पढ़ते नहीं फिर वे हृदय से यही चाहते हैं कि मेरे चेले और मेरे यजमान मूर्खही बने रहैं क्योंकि वे जो पण्डित हो जांयगे तो हम लोगों का पाखण्ड उनके सामने न चलेगा इस्से हम लोगों की आजीविका नष्ट हो जायगी इस लिये वे सदा पढ़ने पढ़ाने में विघ्नही करते हैं धनाढ्य और राजा लोगों के ऊपर अत्यन्त विघ्न करते हैं कि ये लोग विद्याहीन बने रहैं इनसे हम लोगों की आजीविका बड़ी है धनाढ्य और राजा लोग भी आलस्य और विषय सेवा में फस जाते हैं इस्से वे भी पढ़ना नहीं चाहते धनाढ्य वा राजपुत्र पढ़ना भी चाहैं तो बैरागी आदि सम्प्रदायी और पण्डित लोग छल और कपट रखते हैं यथावत् पढ़ाते भी नहीं यहांतक वे छल और विघ्न करते हैं कि चेला और पुत्र वा बन्धुपुत्र भी विद्यावान् न हो जाय क्योंकि उनकी प्रतिष्ठा होने से मेरी प्रतिष्ठा नष्ट होजायगी इस्से जो कुछ गुण जानते भी हैं उस को छिपा रखते हैं इस लिये विद्या लोप आर्य्यावर्त्त देश में होगया है सब लोगों को विद्या का प्रकाश करना उचित है किसी को भी विद्या गुप्त रखना योग्य नहीं और पांचवां विघ्न यह है कि भङ्गपान, अफीम और मद्यपान करने से बहुत सा प्रमाद

होता है और बुद्धि भी नष्ट होजाती है उससे भी विद्या का नाश होता है छठवां विघ्न यह है कि राजा और धनाढ्य लोगों का घाट, मन्दिर, चर्चों में सदावर्त, विवाह, वयोदश्शाह, व्यर्थस्थान, और बागों के रचने में बहुत धन नष्ट होजाता है किन्तु गृहस्थ लोगों को जितना आवश्यक हो उतनाही स्थान रचैं निर्वाह मात्र विद्या प्रचार में किसी का धन नहीं जाता और विचार के न होने से गुणवान पुरुषों की प्रतिष्ठा भी नहीं होती किन्तु पाखण्डींही की होती है इससे मनुष्यों का उत्साह भङ्ग होजाता है सप्तम विघ्न यह है कि पांचवें वर्ष पुत्रों वा कन्याओं को पाठशाला में पढ़ने के लिये नहीं भेजते उनके ऊपर राजा का दण्ड न होने से भी विद्या का नाश होता है और विषय सेवा में अत्यन्त फसजाते हैं इससे भी विद्या नहीं होती यह आठवां विघ्न विद्या का नाशक है इत्यादिक और भी विद्या नाश करने के विघ्न बहुत हैं उनको सज्जन लोग विचार करलेवैं जब सोलह वर्ष का पुरुष होय तब से लेके जबतक वृद्धावस्था न आवै तबतक व्यायाम करै बहुत न करै किन्तु ४० बैठक करै और ३० वा ४० दण्ड करै कुछ भीत खम्भे वा पुरुष से बल करै फिर लोट करै उस को भोजन से एक घण्टा पहिले करै सब अभ्यास जब कर चुकै उससे एक घण्टा पीछे भोजन करै परंतु दूध जो पीना होय तो अभ्यास के पीछे शीघ्रही पीवै उससे शरीर में रोग न होगा जो कुछ खाया वा पीया सो सब परिपक्व हो जायगा सब धातुओं की वृद्धि होती है तथा वीर्य्य की भी अत्यन्त वृद्धि होती है शरीर दृढ़ होजाता है और हड्डियां बड़ी पुष्ट होजाती हैं जाठराग्नि शुद्ध प्रदीप्त रहता है और सन्धि से सन्धि हाड़ों की मिली रहती है अर्थात सब अङ्ग सुन्दर रहते हैं परन्तु अधिक न करना अधिक के करने से उतने गुण न होंगे क्योंकि सब धातु शुष्क

और रूक्ष होजाते हैं उस्से बुद्धि भी वैसी रूक्ष होजाती है और क्रोधादिक भी बढ़ते हैं इस्से अधिक न करना चाहिये यह बात सुश्रुत में लिखी है जो देखना चाहै सो देख लेवै इन बालकों के हृदय में वीर्य के रक्षण से जितने गुण लिखे हैं इस पुस्तक में और जितने दोष लिखे हैं वे सब माता पिता और आचार्य्यादिक निश्चय दृष्टान्त देदे के करा देवैं जैसे कि वीर्य की रक्षा में सुख लाभ होता है उसका हजारवां अंश भी विषय भोग में वीर्य के नाश करने से नहीं होता परन्तु जैसा नियम सत्यशास्त्रों में कहा है उसका कुछ अंश इसमें भी लिखा है उसप्रकार से जो वीर्य की रक्षा करेगा उसको बहुतसा सुख होगा जो प्रमाद और भांग आदिक नशा करेगा वह पागल भी होजाय तो आश्चर्य नहीं इस्से युक्ति पूर्वक विद्या और बल सेही वीर्य की रक्षा करनी चाहिये अन्यथा वीर्य की रक्षा कभी न होगी जब वीर्य की रक्षा न होगी तब विद्या भी न होगी जब विद्या न होगी तब कुछ भी सुख न होगा उसका मनुष्य शरीर धारण करनाही पशुवत होजायगा ॥ सैषानन्दस्यमीमांसाभवति युवास्यात्साधुयुवाध्यापकः आशिष्ठोद्रढिष्ठोवलिष्ठः तस्येयंपृथिवीसर्वावित्तस्यपूर्णास्यात्सएकोमानुष आनन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंमानुषा आनन्दाः सएको मनुष्य गन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंमनुष्यगन्धर्वाणामानन्दाः सएको देवगन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंदेवगन्धर्वाणामानन्दाः सएकः पितॄणांचिरलोक लोकानामानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतं पितॄणां चिरलोकलोकानामानन्दाः सएकः आजानजानान्देवानामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतमाजानजानान्देवानामानन्दाः सएकः कर्मदेवानामानन्दः येकर्मणादेवानपियन्ति श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंकर्मदेवानामानन्दाः सएकोदेवानामानन्दः श्रोत्रियस्य चाका

महतस्य तेयेशतंदेवानामानन्दाः सएकइन्द्रस्यानन्दः श्रोत्रि-यस्य चाकामहतस्य तेयेशतमिन्द्रस्यानन्दाः सएकोबृहस्पतेरान न्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतंबृहस्पतेरानन्दाः सएकः प्रजापतेरानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतंप्रजापतेरान न्दाः सएकोब्रह्मणआनन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य सयश्चायंपुरु षेयश्चासावादित्येसएकः॥ यह तैत्तिरीयोपनिषद की श्रुति है सो देखना चाहिये कि जैसा विद्या से आनन्द होता है वैसा कोई प्रकार से आनन्द नहीं होता इसमें इस श्रुति का प्रमाण है युवावस्था हो साधु युवा नाम उसमें कोई दुष्ट व्यसन न हो अध्यापक नाम सब शास्त्रों को पढ़के पढ़ाने का सामर्थ्य जिसको हो अर्थात सब विद्याओं में पूर्ण होय आशिष्ठ नाम सत्य जिसकी इच्छा पूर्ण हो दृढ़िष्ठ अतिशय नाम अत्यन्त जो शरीर और बुद्धि से दृढ़ हो अर्थात् कोई प्रकार का रोग जिसके शरीर में न होय बलिष्ठ नाम अत्यन्त बलवान् होवै और जिसकी वित्त नाम धनसे सब पृथ्वी पूर्ण होय अर्थात सार्वभौम चक्रवर्त्ती होवै इसको मनुष्य लोग के आनन्द की सीमा कहते हैं और जो कोई केवल विद्यावान्‌ही है और किसी प्रकार की कामना जिसको नहीं है अर्थात विद्या, धर्म और परमेश्वर की प्राप्ति के बिना किसी पदार्थ के ऊपर जिसको प्रीति न होवै ऐसा जो श्रोत्रिय॥ श्रोत्रियंश्छन्दोऽधीते। यह अष्टाध्यायी का सूत्र है व्याकरण पठन से लेके वेद पठन तक जिसका पूर्ण पठन होगया है उसको श्रोत्रिय कहते हैं उस श्रोत्रिय नाम विद्यावान् को वैसाही आनन्द होता है जैसा कि पूर्वोक्त चक्र-वर्त्ती को उससे भी अधिक होने का सम्भव है क्योंकि चक्रवर्ती राजा को तो राज्य के अनेक कार्य रहते हैं इससे चित्त की एकाग्रता नहीं होती और जो वह पूर्ण विद्वान् है सो तो सदा परमेश्वर के आनन्द में मग्न रहता है लेशमात्र भी दुःख का

उसको सम्भव नहीं है उस चक्रवर्ती के मनुष्यानन्द से शतगुण आनन्द मनुष्य गन्धर्वों को है मनुष्य गन्धर्वों के आनन्द से शतगुण अधिक आनन्द देवगन्धर्वों को है देवगन्धर्वों से पितृलोग वासियों को शतगुण आनन्द है और पितृलोगों से अधिक शतगुण आनन्द आजान नामक देवों को है आजान देवों से शतगुण आनन्द कर्म देवों को है जो कि कर्मों से देव होते हैं उनसे शतगुण आनन्द देवलोक वासी नाम देवों को है उन देवों से शतगुण आनन्द इन्द्र को है इन्द्र से शतगुण आनन्द बृहस्पति को है और बृहस्पति से प्रजापति को अधिक शतगुण आनन्द है और प्रजापति से ब्रह्मा को अधिक शतगुण आनन्द है जो २ आनन्द चक्रवर्ती और मनुष्य गन्धर्वों से शतगुण अधिक २ गणाते आये सो सब आनन्द विद्या वाले पुरुष को होता है क्योंकि जो आनन्द मनुष्य में है सोई सूर्य लोग में आनन्द है जिस एकही अद्वितीय परमेश्वर आनन्द स्वरूप सर्वत्र पूर्ण है उस परमेश्वर को विद्यावान् यथावत् जानता है उस परमेश्वर के जानने और उनका यथावत् योग होने से उस विद्वान् को पूर्ण अखण्ड आनन्द होता है उस आनन्द के लेशमात्र आनन्द में ब्रह्मादिक आनन्दित हो रहे हैं और उस आनन्द को जिस ने पाया है उस सुख को कोई गणना अथवा तोलना कभी नहीं कर सक्ता यह आनन्द विद्या के विना किसी को कभी नहीं होसक्ता इससे सब मनुष्यों को विद्या ग्रहण करने में अत्यन्त यत्न करना योग्य है यह ब्रह्मचर्य्याश्रम की शिक्षा तो संक्षेप से लिखी गई इससे आगे चौथे प्रकरण में विवाह और गृहाश्रम की शिक्षा लिखी जायगी॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते तृतीयः समुल्लासः सम्पूर्णः॥ ३॥

अथ विवाहगृहाश्रम विधिम्वक्ष्यामः ॥

पुरुषों का और कन्याओं का ब्रह्मचर्य्याश्रम और विद्या जब पूर्ण होजाय तब जो देश का राजा होय और अन्य जितने विद्वान् लोग वे सब उनकी परीक्षा यथावत् करैं जिस पुरुष वा कन्या में श्रेष्ठ गुण, जितेन्द्रियता, सत्यवचन, निरभिमान, उत्तमबुद्धि, पूर्णविद्या, मधुरवाणी, कृतज्ञता, विद्या और गुण के प्रकाश में अत्यन्त प्रीति जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक, कृतघ्नता, छल, कपट, ईर्ष्या, द्वेषादिक दोष न होवैं पूर्ण कृपा से सब लोगों का कल्याण चाहैं उसको ब्राह्मण का अधिकार देवें और यथोक्त पूर्वोक्त गुण जिसमें होंय परन्तु विद्या न्यून होय शूर, वीरता, बल और पराक्रम ये तीन गुण वाला जो ब्राह्मण भया उस्से अधिक हो उसको क्षत्रिय करैं और जिसको थोड़ी भी विद्या होवै परन्तु व्यापारादिक व्यवहारों में नाना प्रकारों के शिल्पों में देश देशान्तर से पदार्थों का लेआने और लेजाने में चतुर होवै और पूर्वोक्त जितेन्द्रियादिक गुण भी होवै परन्तु अत्यन्त भीरु होवै उसको वैश्य करना चाहिये और जो पढ़ने लगा जिसको शिक्षा भी भई परन्तु कुछ भी विद्या नहीं आई उसको शूद्र बनाना चाहिये इसी प्रकार से कन्याओं की भी व्यवस्था करनी चाहिये इसमें यह प्रमाण है ॥ शूद्रोब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैतिशूद्रताम् । क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि विद्यादिक पूर्वोक्त गुणों से जो शूद्र युक्त होवै सो ब्राह्मण होजाय और पूर्वोक्त विद्यादिक गुणों से जो ब्राह्मण रहित होजाय अर्थात् मूर्ख होय सो शूद्र होजाय और जिसमें क्षत्रिय का गुण होवै वह क्षत्रिय जिसमें

वैश्य का गुण होय वह वैश्य अर्थात् जो शूद्र के कुल में उत्पन्न भया सो मूर्ख होय तब तो वह शूद्रही बना रहै और वैश्य के जैसे गुण हैं वैसे गुण उसमें होने से वह शूद्र वैश्य होजाय क्षत्रिय के गुण होने से वह क्षत्रिय और ब्राह्मण के गुण होने से वह शूद्र ब्राह्मण होजाय तथा वैश्य कुल में उत्पन्न भया उसको वैश्य के गुण होने से वह वैश्यही बना रहै और मूर्ख होने से शूद्र होजाय तथा क्षत्रिय और ब्राह्मण के गुण होने से [illegible] क्षत्रिय और ब्राह्मण भी वैसेही क्षत्रिय कुल में जो उत्प[illegible] उसको क्षत्रियवर्ण के गुण होने से वह क्षत्रिही बना रहै [illegible] वैश्य और शूद्र के गुण होने से ब्राह्मण वैश्य और शूद्र भी [illegible]य तथा ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न भया ब्राह्मण के गुण होने से वह ब्राह्मणही रहै क्षत्रिय वैश्य और शूद्र के गुण होने से क्षत्रिय वैश्य और शूद्र भी वह ब्राह्मण हो जाय ऐसाही मनुष्य जाति के बीच में सर्वत्र जान लेना तैसे चारों वर्णों की कन्याओं में भी उन २ उक्त गुणों के होने से ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या और शूद्रा होजांय उनको वर्ण क्रम से अधिकार भी दिये जांय॥ अध्यापनमध्ययनं यजनंयाजनंतथा। दानम्प्रतिग्रहंचैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥ अध्यापन नाम विद्याओं का प्रकाश करना नाम पढ़ाना अध्ययन नाम पढ़ना यजन नाम अपने घरमें यज्ञों का कराना याजन नाम यजमानों के घरमें यज्ञों का कराना दान नाम सुपात्रों को दान का देना प्रतिग्रह नाम धरमात्[illegible]ओं से दान का लेना इन षट्कर्मों को करने और कराने [illegible] को अधिकार देना उचित है प्रजानांरक्षणंदान मिज्याध्ययनमेवच। विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्यसमासतः॥ प्रजा को यथावत् रक्षा करना अर्थात् श्रेष्ठों का पालन और दुष्टों का ताड़न करना पक्षपात को छोड़ के सुपात्रों को दान देना अपने घरमें यज्ञों का करना और अध्य-

यन नाम सब सत्यशास्त्रों का पढ़ना विषयेषु अप्रसक्ति नाम विषयों में फस न जाना यह संक्षेप से क्षत्रियों का अधिकार कहा पूर्वोक्त क्षत्रियों को इस अधिकार को देवें ॥ पशूनांरक्षणं दान मिज्याध्ययनमेवच । वणिक्पथंकुसीदञ्च वैश्यस्यकृषिमेवच ॥ गाय आदिक पशुओं की रक्षा करना सुपात्रों को दान देना अपने घर में यज्ञों का करना सत्यशास्त्रों का पढ़ना धर्म से व्यापार का करना धर्म से सूद नाम व्याज का लेना और कृषि नाम खेती का करना इन सात कर्मों का अधिकार वैश्यों को देना ॥ एकमेवहिशूद्रस्य प्रभुःकर्मसमादिशत् । एतेषामेववर्णानां शुश्रूषामनुसूयया ॥ ये चार श्लोक मनुस्मृति के हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों की निन्दा को छोड़ के सेवा करना इस एक कर्म का शूद्रों को अधिकार देना कि तीनों वर्णों को यथावत् सेवा करे ॥ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्यःकृतः । ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्यांशूद्रोऽअजायत ॥ यह यजुर्वेद की संहिता का मन्त्र है ॥ वेदाहमेतंपुरुषंमहान्तमादित्यवर्णन्तमसःपरस्तात् । यह भी उसी अध्याय का वचन है पुरुष नाम है पूर्ण का पूर्ण नाम परमेश्वर का परमेश्वर के बिना पूर्ण कोई नहीं होसक्ता क्योंकि सावयव और मूर्त्तिमान् जो होता है सो एकही देश में रहता है सर्व देशों में व्यापक नहीं होसक्ता उस अध्याय में परमेश्वरही का ग्रहण होता है क्योंकि पुरुष से सब जगत् की उत्पत्ति लिखी है सो परमेश्वरही से सब जगत् की उत्पत्ति होती है अन्य से नहीं उस परमेश्वर को अवयव का लेशमात्र भी सम्बन्ध नहीं मुख, बाहू, ऊरू और पाद स्थूल २ इतने अवयवों की तो कभी संगति नहीं है क्योंकि सूक्ष्म भी अवयव का भेद परमेश्वर में नहीं होसक्ता फिर स्थूल अवयव का भेद परमेश्वर में कैसे होगा कभी न होगा और इस मन्त्र में तो मुखादिक शब्दों का ग्रहण किया है सो इस अभिप्राय से किया

है कि शरीर में मुख सब अङ्गों से उत्तम अङ्ग है वैसे उत्तम से भी उत्तम गुण जिस मनुष्य में होय वह ब्राह्मण होवै मुख के समीप अङ्ग जैसा कि बाहु वैसाही ब्राह्मण के समीप क्षत्रिय है और हाथ के बल आदिक गुण हैं जिस्से कि दुष्टों का दमन होता है और श्रेष्ठों का पालन अपने शरीर का भी रक्षण शत्रुओं और शस्त्रों के बल हाथ से होसक्ता है वैसाही प्रजा का पालन होगा और हाथ के बिना कभी रक्षण जगत् का वा अपना युद्ध में वा दुष्टों से नहीं होसक्ता सो बलादिक गुण जिस मनुष्य में होंय वह क्षत्रिय होवै तथा जब नाम जङ्घा में जब बल होता है तब जहां तहां देशान्तरों में पदार्थों को उठा के लेजाना और देशान्तरों से लेआना हानि और लाभ में स्थिर बुद्धि होना जैसे कि जङ्घा के ऊपर स्थिर होके बैठना होता है इस प्रकार के बेगादिक गुण जिस मनुष्य में होवें वह वैश्य होय तथा पाद जैसे कि सब अङ्गों से नीचे का अङ्ग है जब मनुष्य चलता है तब कङ्कड़, पाषाण, कीच और कांटों पर पैर पड़ते हैं सब शरीर ऊपर रहता है पैरही विष्ठादिकों में पड़ते हैं वैसे मूर्खत्वादिक नीच गुण जिस मनुष्य में होवैं सो मनुष्य शूद्र होय इस मन्त्र से ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है सो सज्जनों को मानना और करना भी चाहिये सो इस प्रकार से परीक्षा करके वर्ण व्यवस्था अवश्य करनी चाहिये वर्ण व्यवस्था बिना जन्म मात्रही से वर्णों के होने से बहुत दोष होते हैं इस्से गुणोंही से वर्णों का होना उचित है और जो वर्णों को न मानैं तो विद्यादिक गुण ग्रहण में मनुष्य का उत्साह भङ्ग होजायगा क्योंकि उत्तम गुण वाले को उत्तम अधिकार की प्राप्ति न होगी और गुणहीन को नीच अधिकार की प्राप्ति न होगी तो कैसे मनुष्यों को उत्साह गुण ग्रहण में होगा अर्थात् कभी न होगा इस्से वर्ण व्यवस्था ब

मानना उचित है और जो गुणों के बिना वर्णों को जन्ममात्रही से मानैं तो सब वर्ण और सब गुण नष्ट होजांयगे क्योंकि जन्ममात्रही से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होंगे तो कोई भी गुण ग्रहण की इच्छा न करेगा इस्से सब विद्यादिक गुण नष्ट हो जांयगे जैसे कि ब्राह्मण कुल सब कुलों से उत्तम है उस कुल में उत्तम पुरुषोंही का निवास होना उचित है क्योंकि वे उत्तम कर्मही करैंगे नीच कर्म कभी न करेंगे इस्से उत्तम कुल की उत्तमता नष्ट कभी न होगी और जो ब्राह्मण कुल में मूर्ख और नीच पुरुषों के निवास होने से उत्तम कुल की उत्तमता नष्ट होजायगी क्योंकि वे अभिमान तो ब्राह्मणही का करेंगे और ब्राह्मण के गुणों को ग्रहण कभी न करेंगे सदा नीचही कर्म करेंगे इस्से ब्राह्मण कुल की बड़ी निन्दा उस निन्दा से अप्रतिष्ठा होगी उस्से ब्राह्मण कुल दूषित हो जायगा इस्से उत्तम गुण वाले को उत्तमही कुल में रखना उचित है तथा भीरु नाम भयादिक गुण वाले पुरुष को क्षत्रिय कुल में कभी न रखना चाहिये क्योंकि जिसको भय होगा सो दुष्टों को कैसे दण्ड और प्रजा का पालन कैसे करेगा युद्ध भूमि से सदा वह भाग जायगा उसका राज्य शत्रु लोग लेलेंगे चोर और डांकू लोग सदा उस राजा और प्रजा को पीड़ा देंगे इस्से उस राजा का राज्य और ऐश्वर्य्य नष्ट होजायगा इस्से विद्या, बल, बुद्धि, पराक्रम और पूर्वोक्त निर्भयादिक गुण युक्तही को क्षत्रिय कुल में रखना चाहिये अन्य को नहीं तथा व्यापारादिक पशुपालनादिक में जो चतुर और पूर्वोक्त विद्यादिक गुण से युक्त होवै उसी को वैश्य होना उचित है जो मूर्खत्वादि गुण युक्त है उसी को शूद्र रखना चाहिये ऐसी जब व्यवस्था होगी तब ब्राह्मणादिक वर्णों में ब्राह्मणादिकों को भय होगा कि हम लोग उत्तम गुण ग्रहण न करेंगे और

उत्तम कर्म न करेंगे तो नीच अधिकार नाम शूद्रत्व को प्राप्त हो जायगे अर्थात् शूद्र होजायगे और शूद्रादिकों को विद्यादिक गुण ग्रहण में उत्साह होगा क्योंकि हम लोग जो उत्तम गुण वाले होंगे तो उत्तम अधिकार को प्राप्त होंगे अर्थात् द्विज हो जायगे इससे उत्तमों को तो भय होगा और नीचों का उत्साह ही होगा इससे ऐसीही व्यवस्था सज्जनों को करना उचित है वर्ण शब्द के अर्थ से भी ऐसी व्यवस्था आती है ॥ त्रियन्ते वर्णाः। कि वर्ण नाम गुणों से जिसका स्वीकार किया जाय उसका नाम वर्ण है ऐसा दृष्टान्त भी सुन्ने में आता है कि विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्राह्मण भया वत्स क्षत्रिय से ब्राह्मण भये और श्रवण, श्रवण का पिता, श्रवण की माता, वैश्य और शूद्र वर्ण से महर्षि भये मातङ्गऋषि का चांडाल कुल में जन्म था फिर ब्राह्मण होगया यह महाभारत में लिखा है और जाबाल वेश्या के पुत्र से ब्राह्मण होगया यह छान्दोग्य उपनिषद में लिखा है इत्यादिक और भी जान लेना चाहिये जैसी वर्णों की व्यवस्था गुणों से है वैसी विवाह में व्यवस्था करनी चाहिये ब्राह्मण का ब्राह्मणी, क्षत्रिय का क्षत्रिया, वैश्य का वैश्या और शूद्रका शूद्रा से विवाह होना चाहिये क्योंकि विद्यादिक उत्तम गुणवाले पुरुष से विद्यादिक उत्तम गुणवाली स्त्री का विवाह होने से परस्पर दोनों को अत्यन्त सुख होगा और जो उत्तम पुरुष से मूर्ख स्त्री वा पण्डित स्त्री का मूर्ख पुरुष से विवाह होगा तो अत्यन्त क्लेश होगा कभी सुख न होगा तथा क्षत्रियों के गुणवाले से क्षत्रिय गुणवाली स्त्री का वैश्य गुणवाले पुरुष से वैश्य गुणवाली स्त्री का विवाह होना चाहिये और जो मूर्ख पुरुष कोई शूद्र है उससे मूर्ख स्त्री का विवाह होना उचित है क्योंकि तुल्य स्वभाव के होने से सुख होता है अन्यथा दुःखही होता है रूप की भी परीक्षा होनी चाहिये परस्पर दोनों की

अर्थात् वर और कन्या की प्रसन्नता से विवाह का होना उचित है कन्या वर की परीक्षा करै और वर कन्या की दोनों को परस्पर प्रसन्नता जब होय फिर माता, पिता वा बन्धु विवाह कर देवें अथवा आपही दोनों परस्पर विवाह करलेवें पशुवत् विवाह का व्यवहार करना उचित नहीं जैसे कि गाय वा छेरी को पकड़ के दूसरे के हाथ में दे देते हैं वे लेके चले जाते हैं जैसी इच्छा होय वैसा करते हैं इस प्रकार का व्यवहार मनुष्यों को कभी न करना चाहिये पूर्वोक्त काल के नियमही से विवाह करना चाहिये बाल्यावस्था में नहीं ॥ गुरुणानुमतःस्नात्वा समावृत्तोयथाविधि । उद्वहेतद्विजोभार्यां सवर्णांलक्षणान्विताम् ॥ यह मनु का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि ब्रह्मचर्य्याश्रम से पूर्ण विद्या पढ़के गुरु की आज्ञा लेके जैसी विधि वेद में लिखी है वैसे सुगन्ध्यादिक द्रव्य से मन्त्र पूर्वक स्नान करके शुभ श्रेष्ठ लक्षण युक्त अपने वर्ण की कन्या को वह द्विज ग्रहण करै । महान्त्यपिसमृद्धानिगोऽजाविधनधान्यतः । स्त्रीसम्बन्धे दशैतानि कुलानिपरिवर्जयेत् ॥ बड़े भी कुल होंय गाय, छेरी, अवि नाम भेड़ धन और धान्य से सम्पन्न होवें तो भी दश कुलों की कन्याओं को न ग्रहण करै वे कौन से दश कुल हैं ॥ हीनक्रियं निष्पुरुषंनिश्छन्दोरोमशार्शसम् । क्षय्यामयाव्यपस्मारि श्वित्रि कुष्ठिकुलानिच ॥ ये दश कुल हैं हीनक्रिय नाम जिस कुल में यज्ञादिक क्रिया नहीं है और आलस्य भी बहुत सा जिस कुल में होय १ निष्पुरुष नाम जिस कुल में पुरुष न होवें स्त्री २ होवें २ निश्छन्द नाम जिस कुल में वेदादिक विद्या न होय ३ रोम नाम जिस कुल में भालू की नांई देह के ऊपर लोम होवें ४ शार्श नाम जिस कुल में ववासिर रोग होय ५ क्षयि नाम जिस कुल में धातु क्षीणता दमा रोग होय ६ आमयावि नाम जिस कुल में आंव का विकार होय ७ अपस्मारि नाम जिस कुल

में मिर्गी रोग होय ८ श्वित्रि नाम वाला जिसको श्वेत कुष्ठ होय ९ और कुष्ठि नाम जिस कुल में कुष्ठ रहै और आमय १० इन दश कुलों की कन्याओं को विवाह स्थान में ग्रहण न करैं क्योंकि जो रोग पिता माता के शरीर में होता है सोई संतानों में भी कुछ २ रोग आवैगा इस्से उनका ग्रहण करना उचित नहीं ॥ नोद्वहेत्कपिलांकन्यां नाधिकाङ्गींनरोगिणीम् । नालोमिकान्नातिलोमान्नवाचाटान्नपिङ्गलाम् ॥ नर्क्षवृक्षनदीनाम्नीन्नान्त्यपर्वतनामिकाम् । नपक्ष्यहिप्रेष्यनाम्नीन्नचभीषणनामिकाम् ॥ कपिला नाम बिलाई की नाँई जिस कन्या के नेत्र होवैं उसके साथ विवाह न करै क्योंकि सन्तानों के भी वैसे नेत्र होंगे नाधिकाङ्गी नाम जिस कन्या के अङ्ग वर से अधिक होवैं अर्थात् कन्या का शरीर लम्बा चौड़ा वर का शरीर छोटा और दुबला होय उनका परस्पर विवाह न होना चाहिये अर्थात् दोनों के शरीर स्थूल अथवा दोनों के शरीर कृषित होवैं तब विवाह होना चाहिये परन्तु स्त्री के शरीर से पुरुष का शरीर लम्बा होना चाहिये हाथ के कन्धे तक स्त्री का सिर आवै उस्से अधिक स्त्री का शरीर न होना चाहिये न्यून होय तो होय अन्यथा गर्भ स्थिर न होगा और वंशच्छेद भी होजाय तो आश्चर्य नहीं इस्से स्त्री का शरीर पुरुष के शरीर से छोटाही होना चाहिये रोगिणी नाम स्त्री के शरीर में कोई रोग न होना चाहिये और स्त्री भी पुरुष की परीक्षा करै कि उसके शरीर में स्थिर रोग कोई न होवै कोई महारोग न होय इस प्रकार की कन्या से विवाह न करै कि जिसके शरीर में सूक्ष्म भी लोम न होय और जिसके शरीर के ऊपर बड़े २ लोम होवैं उस्से भी विवाह न करै वा चाटा नाम बहुत बोलने वाली जो स्त्री है उसके साथ विवाह न करै अर्थात् परिमित भाषण करै अधिक बकवाद न करै जिसका पीतवर्ण हर्दी की नाँई

होय करै और जिसका नक्षत्र के ऊपर नाम अश्विनी, भरणी, इत्यादिक तथा वृक्ष के ि कि आमा, अश्वत्था, इत्यादिक और नदी के ऊपर जैसा कि नर्मदा, गङ्गा, इत्यादिक अन्त्य नाम चांडाली, चर्मकारिणी, इत्यादिक पर्वत के ऊपर जिसका नाम होवै जैसे कि हिमालया, विन्ध्याचला, इत्यादिक जिसका पक्षी के ऊपर होय जैसा कि हंसी, काकी, इत्यादिक जिसका सर्प के ऊपर होय जैसे कि सर्पिणी इत्यादिक जिसका दासी इत्यादिक नाम होय जिसका भयङ्करी, चण्डी और भैरवी, काली, इत्यादिक नाम होवै इस प्रकार के नाम वाली स्त्री से विवाह न करना चाहिये नक्षत्रादिक जितने नाम हैं वे सब अयुक्त हैं मनुष्यों के न रखना चाहिये कैसी स्त्री का विवाह होना चाहिये कि ॥ अव्यङ्गाङ्गींसौम्यनाम्नीं हंसवारणगामिनीम् । तनुलोमकेशदशनां मृद्वङ्गीमुद्वहेत्स्त्रियम् ॥ अव्यङ्गाङ्गी नाम जिसके टेढ़े अङ्ग न होवैं अर्थात् सब अङ्ग सूधे होवैं सौम्य जिसका नाम सुन्दर होवै जैसा कि यशोदा, कामदा, धर्मदा, कलावती, सुखवती, सौभाग्यवती, इत्यादिक हंसवारणगामिनीम् जैसे कि हंस और हाथी चलता है वैसी चाल जिसकी होवै ऐसी चलने वाली स्त्री न होय कि ऊंट और काक की नाईं चलै तनु नाम सूक्ष्म लोम केश और सूक्ष्म दांतवाली होय जिसके अङ्ग कोमल होवैं ऐसी स्त्री के साथ पुरुष विवाह करै ब्राह्मादिक ८ आठ विवाह मनुस्मृति में लिखे हैं वे कौन हैं कि ॥ ब्राह्मोदैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः । गान्धर्वोराक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोधमः ॥ ये सब श्लोक मनुस्मृति के हैं ब्राह्म विवाह उसको कहते हैं कि कन्या और वर का सत्कार करना यथावत् होमादि करके और विद्या शीलादिकों की परीक्षा

करके कन्यादान देना उसका नाम ब्राह्म विवाह है मास वा दोमास पर्यन्त होम होता रहै और जामाताही ऋत्विक् होवै यज्ञ के अन्त दक्षिणा स्थान में कन्या देना उसका नाम दैव विवाह है एक गाय और एक बैल वा दो गाय और दो बैल बर से लेके कन्या को देना उसका नाम आर्ष विवाह है प्राजापत्य नाम बर और कन्या से प्रतिज्ञा का होना अर्थात् कन्या बर से प्रतिज्ञा करै कि मैं आप से व्यभिचार, अधर्म और अप्रियाचरण कभी न करूंगी तथा बर कन्या से प्रतिज्ञा करै कि मैं तुमसे व्यभिचार अधर्म और अप्रियाचरण कभी न करूंगा पीछे विधि पूर्वक विवाह होना उसका नाम प्राजापत्य विवाह है आसुर नाम अपने कुटुंबियों को थोड़ा सा धन देना और बर के कुटुंबियों को भी थोड़ा सा धन देना सत्कार के लिये कन्या और बर कों भी थोड़ा २ धन देना होमादिक विधि से विवाह करना उसका नाम आसुर विवाह अर्थात् दैत्यों का विवाह है कन्या और बर के परस्पर प्रसन्न होने से विवाह का होना उसको गान्धर्व विवाह कहते हैं इसमें माता, पिता और बंध्वादिकों का कुछ प्रयोजन नहीं कन्या और बर ये दोनों आपही से स्वतन्त्र होके सब विधि कर लेवैं इसी का नाम गान्धर्व विवाह है कोई कन्या अत्यन्त रूपवती और सब गुणों से जिसकी प्रशंसा अर्थात् हजारहों कन्याओं के बीच में श्रेष्ठ होवै और कहने सुनने से उसका पिता न देता होय कन्या को भी बन्ध करके रक्खै तब वहां जाके बल से कन्या का ले लेना है उसको राक्षस विवाह कहते हैं फिर होमादिक विधि कर के विवाह करलेवैं अर्थात् जैसे कि राक्षस लोग बल से परपदार्थों को छीन लेते हैं वैसा यह विवाह है अष्टम विवाह यह है कि कहीं एकान्त में कन्या सूती अथवा मत्त अथवा

भांग वा मद्यादिक पीके प्रमत्त हो अथवा कोई रोग से पागल भई होय उस्से समागम करै विवाह के पहिलेही समागम का होना है वह पैशाच विवाह कहाता है वह सब विवाहों से नीच विवाह है इन आठ विवाहों में ब्राह्म, दैव और प्राजापत्य ये तीन विवाह सर्वोत्तम हैं इन तीनों में भी ब्राह्म अति उत्तम है और गान्धर्व भी श्रेष्ठ है उस्से नीच आसुर, उस्से नीच राक्षस, और सब से नीच पैशाच विवाह है उसको कभी न करना चाहिये ॥ अनिन्दितैःस्त्रीविवाहै रनिन्द्या भवतिप्रजा । निन्दितैर्निन्दितानृणां तस्मान्निन्द्यान्विवर्जयेत् ॥ मनुष्यों को निन्दित विवाह कभी न करना चाहिये जैसी परीक्षा और जो काल लिखा है उस्से विरुद्ध विवाहों का करना वे निन्दित नाम भ्रष्ट विवाह हैं और भ्रष्ट विवाहों के करने से उनके सन्तान भी भ्रष्ट होते हैं जैसे कि बाल्यावस्था में विवाह का करना उस्से जो सन्तान होता है वह सन्तान रोगादिक पूर्वोक्त दूषितही होगा श्रेष्ठ कभी न होगा जो परीक्षा के विना विवाह का करना उस्से बहुत क्लेश होंगे और सन्तान भी बहुत क्लेशित होजांयगे उनके धनादिकों का नाश भी हो जायगा इस्से निन्दित विवाह मनुष्यों को कभी न करना चाहिये और जो ब्राह्मादिक उत्तम विवाह हैं उनका काल तथा परीक्षा लिखी है उस रीति से जो विवाह होते हैं वे अनिन्दित अर्थात् श्रेष्ठ विवाह हैं उन विवाहों के करने से स्त्री पुरुष और कुटुंबियों को सदा सुखही होगा और उनकी प्रजा भी अनिन्दित अर्थात् श्रेष्ठही होगी सदा माता, पिता और कुटुंबियों को वे पुत्रादिक सन्तान सुखही देवेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं महाभारत में जितने विवाह लिखे हैं वे युवावस्थाही में लिखे हैं परस्पर परीक्षा और परस्पर प्रसन्नताही से विवाह होते थे जैसे कि द्रौपदी,

कुन्ती, गान्धारी, दमयन्ती, लोपामुद्रा, अरुन्धती, मैत्रेयी, कात्यायनी और शकुन्तलादिकों के विवाह इसी प्रकार से हुये थे तथा मनुस्मृति में भी लिखा है ॥ बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत्पाणिग्राहस्य यौवने। पुत्राणां भर्त्तरि प्रेते न भजेत्स्त्री स्वतन्त्रताम् ॥ बाल्यावस्था न्यून से न्यून षोडश वर्ष पर्यन्त होती है तब तक पिता के वश में कन्या रहै और षोडश वर्ष से लेके २४ वर्ष पर्यन्त जिस वर्ष में विवाह होय तब अपने पति के वश में रहै जब पति न रहै तब पुत्रों के वश में स्त्री रहै स्त्री स्वतन्त्र न होवै क्योंकि स्त्री का स्वभाव चञ्चल होता है इससे आप कुमार्ग में चलेगी और धनादिकों का नाश भी करेगी इससे स्त्री को स्वतन्त्र न रखना चाहिये और जो लोग यह बात कहते हैं कि पिता के घरमें कन्या रजस्वला जो होय तो पितादिकों का धर्म नष्ट हो जायगा और पितादिक सब नरक में जांयगे यह बात सत्य है वा नहीं यह बात मिथ्याही है क्योंकि कन्या के रजस्वला होने से पितादिक अधर्मी हो जांयगे और नरक में जावेंगे यह बड़ा आश्चर्य है पितादिकों का क्या अपराध है कि रजस्वला का होना तो स्त्री लोगों का स्वाभाविक है तो सदा होहीगा इसमें पितादिकों का क्या सामर्थ्य है कि बन्द करदेवैं सो यह बात प्रमाण शून्य है बुद्धिमान् इस बात को कभी न मानैं इसमें मनु भगवान का प्रमाण भी है ॥ त्रीणिवर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमती सती। ऊर्द्ध्वन्तु कालादेतस्माद्विन्देत सदृशंपतिम् ॥ पिता के घरमें कन्या जब रजस्वला होय तब से लेके तीन वर्ष तक विवाह करने के लिये पति की परीक्षा करै तीन वर्ष के पीछे जैसी वह कन्या है वैसेही अपने तुल्य सवर्ण पति को ग्रहण करै कन्या के शरीर में धातु क्षीणादिक रोग न होवैं तो सोलहवें वर्ष रजस्वला होगी इससे पहिले नहीं और जो उक्त रोग होगा तो १५ पन्द्रहवें वा १४

चौदहवें अथवा १३ तेरहवें वर्ष कोई कन्या रोगी रजस्वला होजाय तो भी तीनवर्ष पीछे विवाह करेंगे तो १६ सोलहवें १७ सतरहवें वा १८ अठारवें वर्ष विवाह करना उचित है और जब सोलहवें वर्ष रजस्वला होय तो १९ वा २० बीसवें वर्ष विवाह होना चाहिये क्योंकि शरीर से जो रज निकलता है सो स्त्री के शरीर की शुद्धि होती है इस कारण रजस्वला स्त्री के साथ ४ दिन तक सङ्ग करने का निषेध है कि स्त्रीके शरीर से एक प्रकार की उष्णता निकलती है उसके निकलने से नाड़ी और उसका शरीर शुद्ध होजाता है इससे रजस्वला होने के पीछेही विवाह का करना उचित है जो जन्मपत्र देखके विवाह करते हैं सो बात सत्य है वा मिथ्या। यह बात मिथ्याही है क्योंकि जन्मपत्र को तो मिलाते हैं परंतु उनके स्वभाव, गुण, आयु और बल को न मिलाने से सदा उनको क्लेशही होता है इसलिये वह बात मिथ्याही है जन्मपत्र मिलाने का बुद्धिमान लोग सत्य कभी न जानें इसमें प्रमाण भी है॥ उत्कृष्टायाभिरूपाय वरायसदृशायच। अप्राप्तामपितांतस्मै कन्यान्दद्याद्यथाविधि॥ यह मनुस्मृति का स्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि उत्कृष्ट नाम उत्तम विद्यादिक गुणवान् अभिरूप अर्थात् जैसी कन्या रूपवती होय वैसा वर भी होवै और श्रेष्ठ स्वभाव दोनों का तुल्य होय अप्राप्त नाम निकट सम्बन्ध में भी होय तो भी उसी को कन्या देवै अर्थात् दोनों तुल्य गुण और रूपवाले होंय तब विवाह का करना उचित है अन्यथा नहीं इसमें यह मनुस्मृति का प्रमाण है॥ काममामरणात्तिष्ठे द्गृहेकन्यर्त्तुमत्यपि। नचैवैनाम्प्रयच्छेत्तु गुणहीनायकर्हिचित्॥ इसका यह अभिप्राय है कि ऋतुमती कन्या अपने पिता के घरमें मरण तक भी बैठी रहै यह बात तो श्रेष्ठ है परन्तु गुणहीन अर्थात् विद्याहीन पुरुष को कन्या कभी

न देवै अथवा कन्या आप भी दुष्ट पुरुष से विवाह न करै तथा पुरुष भी मूर्ख वा दुष्ट कन्या से विवाह न करै यही गृहस्थों को यथोक्त प्रकार से जैसा कि कहा वैसा विवाह करना सब सुखों का मूल है अन्यथा दुःखही है कभी सुख न होगा जो शीघ्रबोध में ये दो श्लोक लिखे हैं कि ॥ अष्टवर्षाभवे-द्गौरी नववर्षाचरोहिणी। दशवर्षाभवत्कन्या ततऊर्द्धं रजस्वला १। माताचैवपिताचैव ज्येष्ठभ्रातातथैवच। त्रयस्तेनरकंयान्ति दृष्ट्वा कन्यांरजस्वलाम् ॥ २ ॥ ये दोनों श्लोक मिथ्याही हैं क्योंकि आठवें वर्ष विवाह करने से जो कृष्णवर्ण वाली स्त्री गौर-वर्ण वाली कैसे होगी वा महादेव की स्त्री उसका गौरी नाम है उससे विवाह कैसे हो सकेगा वैसे रोहिणी नक्षत्र लोक है सो आकाश में रहती है वह जड़ पदार्थ है उससे विवाह कैसे होगा कभी नहीं होसक्ता जो रोहिणी बलदेव की स्त्री थी वह तो मर गई मरी हुई का विवाह कभी नहीं होसक्ता और दशवर्ष में कन्या होती है वह भी मिथ्याही है क्योंकि जब तक विवाह नहीं होता तब तक कन्याही कहाती है और पिता के सामने तो सदा कन्याही और बन्धु के सामने भगिनी रहती है फिर उसका जो नियम है कि दश वर्ष में कन्या होती है सो बात काशिनाथ की मिथ्याही है जो कहता है कि दशवर्ष के आगे रजस्वला होती है यह भी मिथ्याही है सुश्रुत में १६ वर्ष के आगे धातुओं की वृद्धि लिखी है सो ठीक है उस समय में सोलह वर्ष से लेके आगेही रजस्वला होने का संभव है सो सज्जनों को यही बात मानना चाहिये और काशिनाथ की बात कभी न मानना चाहिये जो उसने यह बात लिखी है कि कन्या रजस्वला होने से पितादिक नरक में जांयगे सो मनुस्मृति वा वेदादिक सत्यशास्त्रों और प्रमाणों से विरुद्ध है इस बात में तो

उसकी बड़ी भारी मूर्खता है क्योंकि माता पितादिकों का क्या दोष है कन्या रजस्वला होने से वे नरक में जांय यह कहना उसका बड़ा पामरपन है पूर्वपक्ष पिता ने काल में विवाह न किया इससे उनको दोष होता होगा और दश वर्ष के आगे उसको विवाह का फल न होता होगा इससे उस काशिनाथ ने लिखा होगा उत्तर यह बात भी उसकी मिथ्या है क्योंकि सोलहवर्ष के पहिले कन्या और २५ वर्ष के पहिले पुरुष का विवाह करने से अवश्य पितादिकों को पाप का संभव होता है अथवा उन स्त्री पुरुषों को तो पाप होने का सम्भव होता है किन्तु पाप का फल दुःख है सो बाल्यावस्था में विवाह करने से वीर्यादिक धातुओं के नाश और विद्यादिक गुण न होने से अवश्य वे दुःखी होते हैं और होंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं है इससे इस काशिनाथ का नाम काशिनाश रखना चाहिये क्योंकि काशि नाम प्रकाश का है इसने विद्यादिक गुणों का नाश कर दिया इससे इसका नाम काशिनाशही ठीक है जो इसने ग्रन्थ का नाम शीघ्रबोध रक्खा है उसका नाम शीघ्रनाश रखना चाहिये क्योंकि बाल्यावस्था में विवाह करने से शीघ्रही रोग होंगे और बहुत रोग होने से शीघ्रही मर जांयगे इससे इसका नाम शीघ्रनाशही ठीक है इस प्रकार से श्लोक हम लोग भी रच ले सक्ते हैं ॥ ब्रह्मोवाच । एकयामाभवेद्गौरी द्वियामाचैवरोहिणी । त्रियामातुभवेत्कन्या ततऊर्द्ध्वं रजस्वला ॥ १ ॥ मातातस्याःपिताचैव ज्येष्ठोभ्रातातथानुजः । एतेवैनरकंयान्ति दृष्ट्वाकन्यांरजस्वलाम् ॥ २ ॥ पूर्वपक्ष ये दो श्लोक कौन शास्त्र के हैं तो मैं पूछता हूं कि काशिनाथ के श्लोक कौन शास्त्र के हैं वे काशिनाथ के ग्रन्थ के हैं तो यह श्लोक मेरे ग्रन्थ के हैं आप के ग्रन्थ का क्या प्रमाण है तो काशिनाथ के ग्रन्थ का क्या प्रमाण है काशिनाथ के ग्रन्थ को तो

बहुत लोग मानते हैं जिसको बहुत मनुष्य मानें वही श्रेष्ठ होय तो जैन यसूमसी और महम्मद के मत को मानने वाले बहुत हैं उनी को मानना चाहिये वे हम लोगों के मत से विरुद्ध हैं इस्से हम लोग नहीं मानते तो आपलोगों का कौन मत है जो वेदोक्त और धर्मशास्त्रोक्त है सोई तो हम लोगों के मत से काशिनाथ का मत विरुद्ध हुआ क्योंकि आप लोगों का मत वेद और मनुस्मृत्युक्तही हुआ उस धर्मशास्त्र में मनुस्मृति भी है इस्से विरुद्ध होने से आप लोगों को काशिनाथ का मत मानना उचित नहीं और आप ने जो श्लोक बनाये उसके आगे ब्रह्मोवाच क्यों लिखा यह दृष्टान्त के लिये लिखा इस्से क्या दृष्टान्त हुआ कि इसी प्रकार से ब्रह्मोवाच, विष्णुरुवाच, नारदउवाच, नारायणउवाच, पाराशरउवाच, बसिष्ठउवाच, याज्ञवल्क्यउवाच, अत्रिरुवाच, अङ्गिराउवाच, युधिष्ठिरउवाच, व्यासउवाच, शुकउवाच, परीक्षितउवाच, कृष्णउवाच, अर्जुनउवाच, इत्यादिक नाम लिखके अष्टादश पुराण अष्टादश उपपुराण, १७ सतरह पाराशरादिक स्मृतियां, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु, नारदपंचरात्र, काशिखण्ड, काशिरहस्य, और सत्यनारायणकथा, इत्यादिक ग्रन्थ सम्प्रदायी लोग और पण्डित लोगों ने रच लिये हैं तथा महादेवउवाच, पार्वत्युवाच, भैरवउवाच, भैरव्युवाच, दत्तात्रेयउवाच, इत्यादिक लिख के बहुत तन्त्रग्रन्थ लोगों ने रच लिये हैं यह तो दृष्टान्त भया जैसे कि मैंने अपने श्लोकों के पहिले अपनी इच्छा से ब्रह्मोवाच लिखा वैसेही इनों ने ब्रह्मोवाच इत्यादिक रख के ग्रन्थ रच लिये हैं इस लिये कि श्रेष्ठों के नाम लिखने से ग्रन्थों का प्रमाण होजाय प्रमाण के होने से सम्प्रदायों और आजीविका की वृद्धि होवै उस्से बिना परिश्रम से धन आवै और बहुत सुख होवैं इस लिये धूर्त्तता रची है जैसा कि ब्रह्मोवाच मेरा लिखना वृथा है वैसा

उनका भी ब्रह्मोवाच इत्यादिक लिखना व्यर्थही है और जैसे मेरे श्लोक दोनों मिथ्या हैं वैसे उनके पुराणादिक ग्रन्थ और काशिनाथ का ग्रन्थ आर्य्यावर्त्त देशवासी लोगों के सत्यानाश करने वाले हैं इनको सज्जन लोग मिथ्याही जानैं इससे क्या आया कि मरण तक भी कन्या बिवाह के बिना घरमें बैठी रहै तो भी पितादिकों को कुछ दोष नहीं होता परन्तु दुष्ट पुरुष के साथ श्रेष्ठ कन्या अथवा दुष्ट कन्या के साथ श्रेष्ठ पुरुष का बिवाह कभी न करना चाहिये किन्तु तुल्य श्रेष्ठ गुण वालों का परस्पर बिवाह होना चाहिये जो दुष्ट पुरुष के साथ श्रेष्ठ कन्या वा श्रेष्ठ के साथ दुष्ट कन्या का बिवाह होगा तो परस्पर दोनों को दुखही होगा इससे दोनों का परस्पर बिचार करके बर और कन्या का बिवाह करैं क्योंकि श्रेष्ठ विवाह से उन्हीं को सुख और दुष्ट बिवाह से उन्हीं को दुःख होगा इसमें माता पितादिकों का कुछ भी अधिकार नहीं उन दोनों के बिचार और प्रसन्नताही से बिवाह होना चाहिये विवाह में बहुत धन का नाश करना अनुचितही है क्योंकि वह धन व्यर्थही जाता है इससे बहुत राज्य नष्ट होगये और वैश्य लोगों का भी बिवाह में धन के व्यय से दिवाला निकल जाता है सब लोगों का मिथ्या धन का व्यय करना अनुचित है इससे धन का नाश बिवाह में कभी न करना चाहिये एकही स्त्री से बिवाह करना उचित है बहुत स्त्री के साथ बिवाह करना पुरुषों को उचित नहीं स्त्री को भी बहुत विवाह करना उचित नहीं क्योंकि बिवाह सन्तान के लिये है सो एक स्त्री एक पुरुष को बहुत है देखना चाहिये कि एक व्यभिचारिणी स्त्री अथवा वेश्या वे बहुत पुरुषों को वीर्य्य के नाश से निर्बल कर देती हैं इससे एक पुरुष के लिये एक स्त्री क्या थोड़ी है अर्थात बहुत है एक स्त्री के साथ भी सर्वथा वीर्य्य का नाश करना

उचित नहीं क्योंकि वीर्य के नाश से पूर्वोक्त सब दोष हो जांयगे इससे विवाहिता उसके साथ भी वीर्य का नाश बहुत न करना चाहिये केवल सन्तान के लिये वीर्य्य का दान करना चाहिये अन्यथा नहीं और स्त्री भी केवल सन्तानकी की इच्छा करै अधिक नहीं दोनों परस्पर सदा प्रसन्न रहैं पुरुष स्त्री को सदा प्रसन्न रक्खै और स्त्री पुरुष को विरोध वा क्लेश परस्पर कभी न करैं॥ संतुष्टोभार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्य्यातथैवच। यस्मिन्नेवकुलेनित्यं कल्याणंतत्रवैध्रुवम्॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि स्त्री प्रियाचरण से पुरुष को सदा प्रसन्न रक्खै और पुरुष भी स्त्री को जिस कुल में इस प्रकार की व्यवस्था है उस कुल में दुःख कभी नहीं होता किंतु सदा सुखही रहता है और जो परस्पर अप्रसन्न रहेंगे तो यह दोष आवेगा॥ यदिहिस्त्रीनरोचेत पुमांसन्नप्रमोदयेत्। अप्रमोदात्पुनःपुंसः प्रजननंप्रवर्त्तते॥१॥ स्त्रियान्तुरोचमानायां सर्वन्तद्रोचतेकुलम्। तस्यान्त्वरोचमानायां सर्वमेवनरोचते॥२॥ ये दोनों मनुस्मृति के श्लोक हैं इनका यह अभिप्राय है कि जो स्त्री प्रीति और सेवा से पुरुष को प्रसन्न न करेगी तो पुरुष को अप्रसन्नता से हर्ष न होगा जब हर्ष न होगा तब प्रजनं नाम वीर्य की अत्यन्त उत्पत्ति और गर्भस्थिति भी न होगी तो स्त्री को पुरुष के अप्रीति से कुछ भी सुख न होगा और जो पुरुष स्त्री को प्रसन्न न रक्खेगा तो उस पुरुष को कुछ भी गृहाश्रम करने का सुख न होगा स्त्री को जो प्रसन्न रक्खेगा उसको सब आनन्द होगा तथाच॥ पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा पूज्याभूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः॥१॥ यत्रनार्यस्तुपूज्यन्ते रमंतेतत्रदेवताः। यत्रैतास्तुनपूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाःक्रियाः॥२॥ शोचन्तिजामयोयत्र विनश्यत्याशुतत्कुलम्। नशोचन्तितुयत्र

चैता वर्द्धन्तेतद्धिसर्वदा ॥ ३ ॥ जामयोयानिगेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः । तानिकृत्याहतानीव विनश्यन्तिसमन्ततः ॥ ४ ॥ तस्मादेताःसदापूज्या भूषणाच्छादनाशनैः । भूतिकामैर्नरैर्नित्यं सत्कारेषूत्सवेषुच ॥ ५ ॥ ये सब मनुस्मृति के श्लोक हैं इनका यह अभिप्राय है कि पिता, भ्राता, पति और देवर ये सब लोग स्त्रियों की पूजा करैं देखना चाहिये कि पूजा का अर्थ घण्टा, झांझ, झालरी, मृदङ्ग, धूप, दीप और नैवद्यादिक षोड़शोपचारों को पूजा शब्द से जो लेते हैं सो मिथ्याही लेते हैं क्योंकि स्त्रियों को ऐसी पूजा करनी उचित नहीं और न कोई ऐसी पूजा करता है इस्से पूजा शब्द का अर्थ सत्कारही है सत्कार जो होता है सो चेतनही का होता है जो सत्कार को जानै इस्से स्त्री लोगों का सदा सत्कार करना चाहिये जिस्से कि वे सदा प्रसन्न रहैं और उनको यथाशक्ति आभूषणों से प्रसन्न रक्खैं जिन गृहस्थों का बड़ा भाग्य होता है और बहुत कल्याण की जिनको इच्छा होवै वे इस प्रकार से स्त्रियों को प्रसन्नही रक्खैं ॥ १ ॥ जिस कुल में नारी लोग रमण नाम आनन्द से क्रीड़ा करती और प्रसन्न रहती हैं तिस कुल में देवता नाम विद्यादिक गुण जिनों से कि वह कुल प्रकाशित होजाता है वे गुण सदा उस कुल में बढ़ते रहते हैं जिस कुल में स्त्रियों का सत्कार और उनको प्रसन्नता नहीं होती उस गृहस्थ की सब क्रिया निष्फल होती है और दुर्दशा भी होती है इस्से स्त्रियों को प्रसन्नही रखना चाहिये ॥ २ ॥ और जिस कुल में जामय नाम स्त्री लोग शोक से दुःखित रहती हैं उस कुल का नाश शीघ्रही होजाता है जिस कुल में स्त्री लोग शोक नहीं करतीं अर्थात् प्रसन्न रहती हैं उस कुल की वृद्धि और आनन्द सदा होता है और आज काल आर्य्यावर्त्त में कोई एक राजा वा धनाढ्य विवाहिता स्त्री को तो कैद की नांई

बन्द करके रखते हैं और आप वेश्या और पर स्त्री के पास गमन करते हैं उसमें अपने धन और शरीर का नाश करते हैं और उनकी विवाहित स्त्रियां रोती और बड़ी दुखित रहती हैं परन्तु उन मूर्ख पुरुषों को कुछ भी लज्जा नहीं आती कि यह स्त्री तो मेरे साथ विवाहित है इसको छोड़ के मैं अन्य स्त्री गमन करता हूं यह मैं न करूं ऐसा विचार उन पुरुषों के मन में कभी नहीं आता अन्य स्त्री और वेश्या गमन जो करते हैं सो तो बुराही काम करते हैं परन्तु बालकों से भी बुरा काम करते हैं यह बड़ा आश्चर्य है कि स्त्री का काम पुरुषों से करते हैं इनको तो अत्यन्त भ्रष्ट बुद्धि सज्जनों को जाननी चाहिये ३ जिन पुरुषों को स्त्री दुःखित होके शाप देती हैं उन कुलों का नाशही होजाता है जैसे कि कोई विषदान करके कुल का नाश कर देवै वैसेही उन कुलों का नाश हो जाता है इसे सज्जनों को स्त्रियों का सत्कार सदा करना चाहिये जिस्से कि स्त्री लोग प्रसन्न होके गृह का कार्य धर्माचरण और मङ्गलाचरण सदा करैं ४ तिस्से स्त्रियों का सत्कार सदा करना चाहिये आभूषण, वस्त्र, भोजन और मधुर वाणी से स्त्रियों को प्रसन्न रक्खैं जिनको कि ऐश्वर्य की इच्छा होय वे यज्ञादिक उत्सवों में स्त्रियों का बहुत सत्कार करैं अर्थात् स्त्रियों को प्रसन्नही रक्खैं तथा स्त्री लोग भी सब प्रकार से पुरुषों को प्रसन्न रक्खैं ॥ ५ पाणिग्राहस्यसाध्वीस्त्री जीवतोवामृतस्यवा। पतिलोकमभीप्सन्ती नाचरेत्किञ्चिदप्रियम् ॥ १ ॥ जिसके साथ विवाह होय उसको स्त्री सदा प्रसन्न रक्खै जिस्से वह अप्रसन्न होय ऐसी बात कभी न करै सोई स्त्री श्रेष्ठ कहाती है यहां तक की पति मर भी गया होय तो भी अप्रियाचरण न करै उस स्त्री को सदा श्रेष्ठ पति इस जन्म वा जन्मान्तर में भी प्राप्त होता है ॥ १ ॥ अस्त्रं-तावृतुकालेच मन्त्रसंस्कारकृत्पतिः। सुखस्यनित्यंदातेह परलो

केचयोषितः ॥ २ ॥ बेद मन्त्रों से जिस पुरुष से बिवाह का संस्कार भया वही ऋतु काल वा अऋतु काल और इस लोक वा परलोक में नित्य सुख देने वाला है और कोई नहीं इस बिवाहित पुरुष की स्त्री सदा सेवा करै जिस्से कि वह प्रसन्न रहै और घर का जितना कार्य है वह स्त्री के अधिकार में रहै। सदाप्रहृष्टयाभाव्यं गृहकार्येषुदक्षया । सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्तया ॥ ३ ॥ सदा स्त्री प्रसन्न होके गृह कार्य चतुरता से करै पाक को अच्छी प्रकार से संस्कार करै जिस्से कि औषधवत् अन्न होय और गृह में जो पात्र लवणादिक पदार्थ और अन्न सदा शुद्ध रक्खै जितने घर हैं उन्हको सब दिन शुद्ध रक्खै जाला धूली वा मलिनता घरमें कुछ भी न रहै घर में लेपन प्रक्षालन और मार्जन करै जिस्से कि घर सब दिन शुद्ध बना रहै और घर के दास दासी नोकर इत्यादिकों पर सब दिन शिक्षा की दृष्टि रक्खै जो पाक करने वाला पुरुष वा स्त्री होवै उसके पास पाक करने समय बैठ के शिक्षा करै जैसो पाक की रीति वैद्यकशास्त्र म लिखी है [illegible] पाक करै और करावै नये घर को बनाना वा सुधारना हो[illegible] को स्त्रीही करावै शिल्पशास्त्र की रीति [illegible] जितना घर का जो कार्य है सो स्त्रीही के आधीन रहै [illegible] मे जो नित्य नित्य वा मास २ में खर्च होय वह पति[illegible]भा देवें और जितना बाहर का कार्य होय सो सब पुरु[illegible] आधीन रहै परस्पर सदा प्रसन्न से घर के कार्यों को करैं [illegible] इस प्रकार का बनावै कि जिसमें सब ऋतु में सुख होय और जिस स्थान में वायु शुद्ध होय चारो ओर पुष्पों की सुगन्ध वाटिका लगावै जिस्से कि सदा चित्त प्रसन्न रहै और व्यर्थ धन का नाश कभी न करैं धर्मही से धन का संग्रह करैं अधर्म से कभी नहीं अच्छे से अच्छा भोजन करैं जो विद्या पढ़ी होवै उसको सदा पढ़ावैं और

विचारते रहैं आज काल के लोग कहते हैं कि स्त्री लोगों को पढ़ना न चाहिये ऐसा विद्याहीन पुरुष कहते हैं वे पाखण्डी और धूर्त्त हैं क्योंकि स्त्री लोग जो पढ़ेंगी तो उनके सामने हमारी धूर्त्तता न चलेगी फिर उनसे धन भी न मिलेगा और वे जब विद्या से धर्मात्मा होंगी तब हम लोगों से व्यभिचार भी न करेंगी विना व्यभिचार से वे स्त्री धन भी न देंगी फिर हम लोगों का व्यवहार न चलेगा ऐसे आर्य्यावर्त्त देश में गोकुलस्थ गुसांई आदिक सम्प्रदाय हैं कि जिन की व्यभिचार और स्त्रीहो लोगों से बढ़ती होती है वे इस प्रकार का उपदेश करते हैं कि स्त्री लोगों को कभी न पढ़ना चाहिये परन्तु देखना चाहिये कि मनु भगवान् ने यथावत् आज्ञा दी है ॥ वैवाहिकोविधिःस्त्रीणां संस्कारोवैदिकस्मृतः । पतिसेवागुरौवासो गृहार्थोग्निपरिक्रिया ॥ ३ ॥-विवाह की जितनी विधि है सो वेदोक्तही है स्त्रियों का विवाह वेद की रीति से होना चाहिये और पति की सेवा अत्यन्त करनी चाहिये यही स्त्री का मुख्य कर्म है और विवाह के पहिले गुरौ वास नाम स्त्री लोग पढ़ने के लिये ब्रह्मचर्य्याश्रम करैं और गृह कार्य जानने के लिये अवश्य विद्या पढ़ैं अग्नि परिक्रिया नाम अग्निहोत्रादिक यज्ञ करने के लिये अवश्य वेदों को पढ़ैं अन्यथा कुछ भी न जानेंगी नित्य स्त्री और पुरुष मिलके अग्निहोत्र प्रातः और सायंकाल करैं अन्य यज्ञों की भी सामर्थ्य के अनुकूल करैं और जो विद्या न पढ़ी वा आप न जानती होगी तो अग्निहोत्रादिक यज्ञ और घर के सब कार्य को कैसे करेगी विद्या अन्य के पास होय तो उस विद्या को जिस प्रकार से मिलै उस प्रकार से लेवै क्योंकि मरण तक भी गुण ग्रहण करने की इच्छा मनुष्यों को करनी चाहिये उसी से मनुष्यों को सुख होता है ॥ ४ ॥ स्त्रियोरत्नान्यथोविद्या सत्यंशौचंसुभाषितम् । वि

विद्यानिचशिल्पानि समादेयानिसर्वतः॥ ५ ॥ ये पांच मनुस्मृति के श्लोक हैं सो हीरादिक रत्न सत्यविद्या, सत्यभाषण, पवित्रता, मधुरवाणी, नाम भाषण करने की रीति और विविध अर्थात् अनेक प्रकार के शिल्प ये सब जिस में होवैं उससेही लेना चाहिये भाषण की रीति यह है कि॥ सत्यंब्रूयात्प्रियंब्रूयान्नब्रूयात्सत्यमप्रियम्। प्रियंचनान्रुतंब्रूयादेषधर्मःसनातनः॥ १ ॥ भद्रभद्रमितिब्रूयाद्भद्रमित्येववावदेत्। शुष्कवैरंविवादञ्च नकुर्य्यात्केनचित्सह॥ २ ॥ ये दो श्लोक मनुस्मृति के हैं इसका यह अर्थ है कि सत्यही कहै मिथ्या कभी न कहै सदा सब जनों को जो प्रिय लगे वैसाही कहै पूर्वपक्ष प्रिय तो वेश्यागामी पर स्त्रीगामी और चोरी करने वाले आदि पुरुषों से उनी बातों को कहै तब उनको अनुकूल प्रिय होता है अन्यथा प्रिय नहीं होता इस्से ऐसाही कहना चाहिये वा नहीं उत्तरपक्ष इसको प्रियवचन न कहना चाहिये क्योंकि वेश्यादिक गमन की इच्छा जब वे करते हैं तभी उनके हृदय में शङ्का भय और लज्जा हो जाती है वह काम तो उनके हृदय को प्रियही नहीं है और उनका आचरण करना भी अधर्म है किन्तु उनका जो निषेध करना है वही ठीक २ प्रिय है जैसे कोई बालक अग्नि पकड़ने को चलै उसको उसकी माता कहै कि तूं अग्नि पकड़ वह वचन बालक को प्रिय न होगा किन्तु आगी में हांथ नावेगा तब हाथ जल जायगा उस्से बालक को अप्रिय होगा अर्थात दुःखही होगा किन्तु बालक को निषेध जो करना है कि तूं आग को मत पकड़ वही वचन उसको प्रिय है प्रिय उसका नाम है कि कभी जिस वचन से किसी का अहित न होय उसको प्रियवचन कहते हैं और सत्य होय वह अप्रिय होय तो उसको न कहै जैसे किसी ने किसी से पूछा कि विवाह किस लिये करना होता है और तेरा जन्म किस प्रकार भया तब उसको इतनाही

कहना उचित है कि विवाह का करना सन्तान के लिये है और मेरा जन्म मेरी माता और पिता से हुआ है जो गुप्त क्रिया है सो मैं और माता पिता को उसको कहना उचित नहीं यद्यपि यह बात सत्यही है तो भी सब लोगों को अप्रिय के होने से उस बात का कहना उचित नहीं तथा दश पांच पुरुष कहीं बैठे होवैं और उस समय में काना, अन्धा, मूर्ख वा दरिद्र पुरुष आवैं उनसे वे पुरुष कहैं कि काना आओ अन्धा आओ मूर्ख आ वा दरिद्र आओ ऐसा कहना उचित नहीं यद्यपि यह बात सत्य है तो भी अप्रिय के होने से न कहना चाहिये किन्तु देवदत्त आ यज्ञदत्त आओ ऐसा उनसे कहना उचित है फिर आप के आंख में कुछ रोग भया था वा जन्म से ऐसी ही है तब वह प्रसन्नता से सब बात कह देगा जैसी की भई थी इस्से इस प्रकार का सत्य होय और वह अप्रिय भी होय तो कभी न कहै। प्रियंचनानृतंब्रूयात्। और जो बात अन्य को प्रिय होय परन्तु वह अनृत अर्थात मिथ्या होय तो उसको कभी न कहै जैसे कि आज काल इन राजा और धनाढ्य लोगों के पास खुशामदी लोग बहुत से धूर्त रहते हैं वे सदा उनको प्रसन्न करने के लिये मिथ्याही कहते रहते हैं आप के तुल्य कोई राजा वा अमीर न हुआ न है और न होगा और जो राजा मध्य दिवस के समय में कहै कि इस समय में आधी रात है तब वे शुश्रूषु लोग कहते हैं कि हां महाराजाधिराज हां देखिये चांद और चांदनी भी अच्छी खिल रही है फिर वे कहते हैं कि महाराज के तुल्य कोई बुद्धिमान् न भया न है न होगा तब तो वह मूर्ख राजा और धनाढ्य प्रसन्नता से फूल के ढोल हो जाते हैं फिर वे ऐसी बात कहते हैं कि महाराज आप के प्रताप के सामने किसी का प्रताप नहीं चलता है आप का प्रताप कैसा है जैसा कि सूर्य और

आदि ऐसा कह २ के बहुत धन हरण कर लेते हैं वे राजा और धनाढ्य लोग उन्हीं से प्रसन्न रहते हैं क्योंकि आप जैसा मूर्ख वा पण्डित होता है उसको वैसेही पुरुष से प्रसन्नता होती है कभी उनको सत्पुरुषों का सङ्ग नहीं होता और कभी सत्पुरुषों का सङ्ग होजाय तो भी वे खुशामदी धूर्त्त राजा और धनाढ्य लोगों की मूर्खता के होने से उनको प्रसन्नता सत्य बात के सुनने से कभी नहीं होती क्योंकि जैसा जो पुरुष होता है उसको वैसाही संग मिलता है ऐसे व्यवहार के होने से आर्य्यावर्त्त देश के राज्य और धन बहुत नष्ट होगये और जो कुछ है उसकी भी रक्षा इस प्रकार से होनी दुर्लभ है जब तक कि सत्य व्यवहार सत्यशास्त्र और सत्सङ्गों को न करेंगे तब तक उनका नाशही होता जायगा कभी बढ़ती न होगी खुशामदी लोगों के विषय में यह दृष्टान्त है कि कोई राजा था उसके पास पण्डित वैरागी और नौकर वे खुशामदी लोग बहुत से रहते थे किसी दिवस राजा के रसोई में बैंगन का शाक मसाले डालने से बहुत अच्छा बना फिर राजा भोजन करने को जब बैठा तब स्वाद के होने से उस शाक को अधिक खाया राजा भोजन करके सभा में आया जहां कि वे खुशामदी लोग बैठे थे उन से राजा ने कहा कि बैंगन का शाक बहुत अच्छा होता है तब वे खुशामदी लोग सुन के बोले कि वाहवा महाराज की नाईं कोई बुद्धिमान् नहीं है महाराज आप देखिये कि जब बैंगन उत्तम है तब तो परमेश्वर ने उसके ऊपर मुकुट रख दिया तथा मुकट के चारों ओर कलङ्गीं रख दी है और बैंगन का वर्ण श्रीकृष्ण के शरीर का जैसा घनश्याम है वैसाही बनाया है और उसका गूदा मक्खन की नाईं परमेश्वर ने बनाया है इस्से बैंगन का शाक उत्तम क्यों न बने फिर जब उस शाक ने वादी की तब रात भर नींद भी न आई और ८

इस बार शौच भी गया उससे राजा बड़ा क्रोधित भया फिर जब प्रातःकाल भया तब भीतर से राजा बाहर आया वे खुशामदी लोग भी आये जब राजा का मुख बिगड़ा देखा तब उन खुशामदी लोगों ने भी उनसे अधिक मुख बिगाड़ लिया फिर वे सब खुशामदी लोग राजा के पास जाके बैठे राजा बोले कि बैंगन का शाक तो अच्छा होता है परन्तु बादी करता है तब वे बोले कि वाहवा महाराज के तुल्य कोई बुद्धिमान् नहीं है एकही दिन में बैंगन की परीक्षा कर ली देखिये महाराज कि जब बैंगन भ्रष्ट है तब तो उसके ऊपर परमेश्वर ने खूंटी गाड़ दी है उस खूंटी के चारों ओर कांटे लगा दिये हैं उस दुष्ट का वर्ण भी कोइले के तुल्य रक्खा है तथा परमेश्वर ने उस का गूदा भी श्वेतकुष्ठ के नांई बना दिया है तब उन खुशामदीयों से राजा ने पूछा कि शाम को तुम लोगों ने मुकुट, कलंगी, घनश्याम और मक्खन के तुल्य बैंगन के अवयव वर्णन किये उसी बैंगन के अवयवों को खूंटी. कांटे, कोइला और कुष्ठ के नांई बनाये हम कौन बात को सत्य मानैं कि जो कल शाम को कही थी उसको मानैं वा आज के कहे को मानैं वाहवा महाराज किस प्रकार के विवेकी हैं कि विरोध को शीघ्रही जान लिया सुनिये महाराज जिस बात से आप प्रसन्न होंगे उसी बात को हम लोग कहैंगे क्योंकि हम लोग तो आप के नौकर हैं सो आप झूंठी वा सच्ची बात कहैंगे उसी बात को हम लोग पुष्ट करेंगे और हम लोग वह साले बैंगन के नौकर नहीं हैं कि बैंगन की स्तुति करैं हम को बैंगन से क्या लेना है हम को तो आप की प्रसन्नता से प्रसन्नता है आप असत्य कहो तो भी हम को सत्य है वे इस प्रकार की सम्मति रखते हैं कि राजा सब दिन नशा करै और मूर्खही बना रहै फिर जब वे और कोई राजा वा धनाढ्य के पास जाते हैं तब उसी की

खुशामद करते हैं जिसके पास पहिले रहते थे उसकी निन्दा करते हैं इस प्रकार से खुशामदी मनुष्यों ने राजाओं की और धनाढ्यों की मति भ्रष्ट कर दी है जो बुद्धिमान् राजा और धनाढ्य लोग हैं इस प्रकार के मनुष्यों को पास भी नहीं बैठने देते न आप उनके पास बैठते तथा न उनकी बात सुनते हैं और जो कोई मिथ्या बात उनके पास कहता है उसी समय उसको उठा देते हैं और सदा बुद्धिमान्, सत्यवादी, विद्यावान् पुरुषों का सङ्ग करते हैं जो कि मुख के ऊपर सत्य २ कहैं मिथ्या कभी न कहैं उन राजाओं और धनाढ्यों को सदा बढ़ती ऐश्वर्य और सुख होता है इससे सज्जनों को अच्छी पुरुषों का संग करना चाहिये दुष्टों का कभी नहीं सत्य बात के आचरण में निन्दा वा दुःख होय तो भी न भय करना चाहिये भय तो एक परमेश्वर और अधर्मही से करना चाहिये और किसी से नहीं क्योंकि परमेश्वर सब काल में सब बातों को जानता है कोई बात परमेश्वर से गुप्त नहीं रहती इससे सज्जनों को परमेश्वरही से भय करना चाहिये कि परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध हम लोग कुछ भी कर्म न करैं तथा अधर्म के आचरण से भय करना चाहिये क्योंकि अधर्म से दुःखही होता है सुख कभी नहीं और एक पुरुष की सब लोग स्तुति करैं अथवा निन्दा करैं ऐसा कोई भी नहीं है निन्दा इसका नाम है कि॥ गुणेषुदोषारोपणमसूया तथादोषेषुगुणारोपणमप्यसूयार्थापत्त्या वेद्या ॥ जो कि गुणों में दोषों का स्थापन करना उसका नाम निन्दा है वैसेही अर्थापत्ति से यह आया कि दोषों में गुणों का आरोपण भी निन्दा होती है इससे क्या आया कि ॥ गुणेषुगुणारोपणंस्तुतिः दोषेषुदोषारोपणंचतद्विरोधत्वात् । गुणों में गुणों का जो स्थापन करना और दोषों में दोषों का उसका नाम स्तुति है जो जैसा पदार्थ है उसको वैसाही जानैं अर्थात्

यथावत् सत्यभाषण करना स्तुति है और अन्यथा अर्थात् मिथ्या भाषण करना निन्दा है इसलिये सज्जन लोगों को सदा स्तुति ही करनी चाहिये निन्दा कभी नहीं मूर्ख लोग सत्य बात कहने और सत्याचरण के करने में निन्दा करैं तो भी बुद्धिमान लोगों को दुःख वा भय न मानना चाहिये किन्तु प्रसन्नता ही रखनी चाहिये क्योंकि उनकी बुद्धि भ्रष्ट है इसलिये भ्रष्ट बात भी सदा कहते हैं जैसे वे भ्रष्ट लोग भ्रष्टता को नहीं छोड़ते हैं तो श्रेष्ठ लोग श्रेष्ठता को क्यों छोड़ैं किन्तु भ्रष्टता भ्रष्ट लोगों को भी अवश्य छोड़नी चाहिये यदि सब भ्रष्ट लोग विरोध भी अत्यन्त करैं यहां तक कि मरण की भी अवस्था आजाय तोभी सत्यवचन और सत्याचरण सज्जनों को कभी न छोड़ना चाहिये क्योंकि यही मनुष्यों के बीच में मनुष्यत्व है और इसको छोड़ने से मनुष्यत्व तो नष्ट ही हो जाता है किन्तु पशुत्व भी आजाता है आजीविका भी सत्य से करनी चाहिये असत्य से कभी नहीं इसमें यह मनु भगवान का प्रमाण है । नलोकवृत्तंवर्तेतवृत्तिहेतोःकथंचन । इसका यह अभिप्राय है कि संसार में बहुत धूर्त लोग असत्य और पाखण्ड से आजीविका करते हैं वैसे आचरण कभी न करै वृत्ति अर्थात् आजीविका के हेतु भी असत्य भाषणादिक न करै किन्तु सत्य ही भाषण से आजीविका करै यही धर्म सनातन है कि अनृत अर्थात् मिथ्या वही दूसरे को प्रिय होय तो कभी न करै किंच सदा सत्य भाषण ही करै दूसरा मनु भगवान का स्लोक है कि भद्रंभद्रमित्यादि । भद्र है कल्याण का नाम सो तीन बार स्लोक में पाठ किया है इसी हेतु कि कल्याण कारक वचन सदा कहै जिसको सुनके मनुष्य धर्मनिष्ठ होय और अधर्म त्याग करै शुष्कवैर अर्थात् मिथ्या वैर और विवाद किसी से न करना चाहिये जैसे कि आज काल के पण्डित और विद्यार्थी लोग हठ दुराग्रह और क्रोध से वाद विवाद करते २ लड़ पड़ते हैं उनके हाथ सिवाय दुःख के कुछ

भी नहीं लगता है इस से जो कुछ अपने को अज्ञात होय उस विषय को प्रीति पूर्वक विवाद छोड़ कर पूछ ने आप जो सत्य २ जानता होय सो औरों से कह दे ॥ परित्यजेदर्थकामौयौस्यातां-धर्मवर्जितौ। यह मनुस्मृति का वचन है इसका यह अभिप्राय है कि स्वाध्याय अर्थात् विद्या पठन पाठन और धन उपार्जन यदि धर्म से विरुद्ध होवें तो उनको छोड़ दे परन्तु विद्या प्रचार और धर्म को कभी न छोड़े । संतोषंपरमास्थायसुखार्थीसंयतोभवेत् संतोषमूलंहिसुखंदुःखमूलंविपर्ययः। इत्यादिक सब मनुस्मृति के श्लोक लिखेंगे सो जान लेना। संतोष इसका नाम है कि सम्यक प्रसन्न रहैं सदा अत्यन्त पुरुषार्थ रक्खैं आलस्य और पुरुषार्थ का छोड़ना संतोष नहीं किन्तु सब दिनपुरुषार्थ में तत्पर रहै सब दिन सुखार्थी और जितेन्द्रिय होवे कभी हर्ष और शोक न करै किंच जितना सुख है सो संतोष से ही है और जितना दुःख होता है सो लोभ ही से होता है॥ इन्द्रियार्थेषुसर्वेषुनप्रसज्येत-कामतः अतिप्रसक्तिञ्चैतेषां मनसासन्निवर्तयेत् ॥ २ ॥ श्रोत्रादि इन्द्रियों के शब्दादिक जो विषय हैं उन में कामातुर हो के प्रवृत्त कभी न होवे किन्तु धर्म के हेतु प्रवृत्त होवे और मन से उन में अत्यन्त प्रीति छोड़ता जाय धर्म और परमेश्वर में प्रीति बढ़ाता जाय ॥ २ ॥ बुद्धिवृद्धिकराण्याशुधन्या-निचहितानिच नित्यंशास्त्राण्यवेक्षेतनिगमांश्चैववैदिकान् ॥ ३ ॥ जो शास्त्र शीघ्रही बुद्धि धन और हित को बढ़ाने वाले हैं उन शास्त्रों को नित्य विचारै जैसे कि छः दर्शन चारों उपवेद और वेदों को नित्य विचारै उनके विचार से अनेक पदार्थविद्या को प्रकाश करै। किञ्चयथायथाहिपुरुषःशास्त्रंसमभिगच्छति तथातथाविजानातिविज्ञानंचास्यरोचते ॥ ४ ॥ जैसे २ पुरुष शास्त्र का विचार कर्ता है तैसे२ उसका विज्ञानबढ़ता जाताहै फिर विज्ञान ही से उसको प्रीति होती है और में नहीं ॥ ४ ॥ ऋषियज्ञंदेव-

यज्ञंभूतयज्ञं च सर्वदा नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत् ॥ ५ ॥ ऋषियज्ञ अर्थात् पठन पाठन और संध्योपासन १ देवयज्ञ अर्थात् अग्नि होमादिक २ भूतयज्ञ अर्थात् बलिवैश्वदेव ३ नृयज्ञ अर्थात् अतिथि सेवा ४ और पितृयज्ञ नाम श्राद्ध और तर्पण अपने सामर्थ्य के अनुकूल यथा शक्ति करै उन्हे कभी न छोड़ै इतने सब कर्म अविद्वान् पुरुषों के वास्ते हैं और जो ज्ञानी हैं वे तो यथावत् पदार्थविद्या और परमेश्वर को जानते हैं। योगाभ्यास करै सब शास्त्रों को विचारै ब्रह्म विद्या की प्राप्ति और उपदेश भी करै इसमे मनु भगवान का प्रमाण है एतानेके महायज्ञान्यज्ञशास्त्रविदो-जनाः अनीहमानाःसततमिन्द्रियेष्वेवजुह्वति ॥ ६ ॥ जितने ज्ञानी हैं वे पांच महायज्ञों को ज्ञान क्रिया होमे कर्ते हैं बाह्य चेष्टा से नही क्योंकि वे यज्ञशास्त्र के तत्वों को जानते हैं उनको अनीहमान अर्थात् बाहर की चेष्टा न देख पड़ै ज्ञान और योगाभ्यास से विषयों को इन्द्रियों में होम करदेते हैं तथा इन्द्रियों को मनमें मनको आत्मा में और आत्मा का परमेश्वर से योग कर्ते हैं उनको बाहर की चेष्टा करना आवश्यक नही ॥ ६ ॥ वाच्येकेजुह्वतिप्राणं प्राणेवाचंचसर्वदा वाचिप्राणेच पश्यन्तो यज्ञनिर्वृत्तिमक्षयाम् ॥ ७ ॥ कितने योगी और ज्ञानी लोग वाणी में प्राण का होम कर्ते हैं कितने प्राण में वाणी का होम कर्ते हैं सदा वाणी और प्राण में यज्ञ की सिद्धि अक्षय अर्थात् जिसका नाश नही होता उसको देखते हैं अर्थात् वाणी तो प्राणही से उत्पन्न होती है और प्राण आत्मा से आत्मा अविनाशी है उसको परमात्मा से युक्त कर देते हैं इससे उनको मुक्तिही हो जाती है फिर कभी उनको दुःख का संग नहीं होता है इससे उन को बाह्य क्रिया का करना आवश्यक नहीं ॥ ७ ॥ ज्ञानेनैवापरेविप्रा यजन्त्येतैर्मखैः सदा ज्ञानमूलांक्रियामेषां पश्यन्तोज्ञानचक्षुषा ॥ ८ ॥ औ

ज्ञान चक्षु से सब पदार्थों को यथावत् जानते हैं वे ज्ञान ही से ब्रह्म यज्ञादिक पांच महायज्ञों को करते हैं क्योंकि ज्ञानयज्ञों से उनका सब प्रयोजन सिद्ध है एव क्रिया उन को ज्ञानमूलक ही है क्योंकि उनके हृदय मन और आत्मा सब शुद्ध हो गये हैं उन का बाह्य अडंबर करना आवश्यक नहीं बाह्य क्रिया तो उन लोगों के लिये है कि जिनका हृदय और आत्मा शुद्ध नहीं वे अग्नि होत्रादिक यज्ञों को बाह्य क्रिया से अवश्य करें क्योंकि उनके करने बिना हृदय शुद्ध नहीं होगा उन ज्ञानियों की सेवा और सङ्ग से ज्ञानोपदेश लेवें जिस्से कि कर्मियों की भी बुद्धि बढ़े ॥ ८ ॥ आसनाशनशय्याभिरद्भिर्मूलफलेन वा नास्य कश्चिद्वसेद्गेहे शक्तितोनर्चितोतिथिः ॥ ९ ॥ गृहस्थ के घर किसी समय कोई अतिथि आवै तो असत्कृत अर्थात् सत्कार बिना न रहे जैसा अपना सामर्थ्य हो वैसा सत्कार करना चाहिये आसन भोजन शय्या जल कंद और फल से अवश्य सत्कार करे ॥ ९ ॥ परन्तु ऐसे मनुष्य का सत्कार कभी न करे। पाखण्डिनोविकर्मस्थान् वैडालव्रतिकाञ्छठान् हैतुकान्बकवृत्तींश्च वाङ्मात्रेणापिनार्चयेत् ॥ १० ॥ पाषंडि अर्थात् वेद विरुद्ध मार्ग में चलने वाले चक्राङ्कितादिक वैरागी और गोकुलिये गोसांई आदिकों का बचन से भी सत्कार गृहस्थ लोग कभी न करें वैसे चोरी वेश्या गमनादिक विरुद्ध कर्म करने वाले पुरुषों का भी सत्कार न करें वैडाल व्रतिक नाम परकार्य के नाश करने वाले अपने कार्य में तत्पर हैं जैसे कि बिलार मूसे का तो प्राण हरले और अपना पेट भरले ऐसे पुरुषों का बचनसेभी गृहस्थ लोग सत्कार न करें शठनाम मूर्खों का भी सत्कार न करें शठ वे होते हैं कि उन्हें बुद्धि न होय और अन्य का प्रमाण भी न करें हैतुका नाम वेद शास्त्र विरुद्ध कुतर्क के करने वाले उनका भी बचन से सत्कार न करें

वकवृत्ति अर्थात् जैसे वैरागियों में खाखी लोग भस्म लगा लेते जटा बढ़ालेते और काठ की कौपीन धारण कर लेते हैं फिर ग्राम वा नगर के समीप जाके ठहरते और शंखादिक बजादेते हैं अर्थात् सूचना कर देते हैं कि गृहस्थ लोग आवें और हमको धन आदिक पदार्थ देवें जब गृहस्थ लोग आते हैं तब दूर से देख के ध्यान लगाते हैं प्रमाद में विष भी देदेते हैं और उनका धन सब हरण कर लेते हैं उनका गृहस्थ लोग वचन से भी सत्कार न करें ऐसे जितने मंडली बांध के फिरते हैं वैरागी और साधू इत्यादिक उनको साधू न जानना चाहिये, किन्तु बड़ा ठग जानना चाहिये और कितने गृहस्थ लोग सदावर्त्त और क्षेत्र करते हैं वे अनुचित करते हैं क्योंकि बड़े धूर्त गांजा और भांग पीनेवाले तथा चोर और डांकू वैसेही लुच्चे सदावर्तों से अन्न लेते और क्षेत्रों में भोजन कर लेते हैं फिर कुकर्मही करते रहते और हरामी हो जाते हैं बहुत से लोग अपना काम काज छोड़ सदावर्तों और क्षेत्रों के ऊपर घर के सब काम और नौकरी चाकरी छोड़ के साधु वा भिखारी बन जाते हैं फिर संतका अन्न खाते और सोते पड़े रहते हैं अथवा कुकर्म करते रहते हैं इससे संसार की बड़ी हानि होती है सो जो कोई सदावर्त्त क्षेत्र करता है उसमें सज्जन वा सत्पुरुष कोई नहीं जाता इससे उन गृहस्थों का पुण्य कुछ नहीं होता किन्तु पापही होता है इससे गृहस्थ लोग अन्नादिक दान करना चाहें तो पाठशाला रचलेवें उसी में सब दान करें अथवा जो श्रेष्ठ धर्मात्मा गृहस्थ और विरक्त होवें उन को अन्नादिक देवें और यत्न करें तब उनको बड़ा पुण्य होय पाप कभी न होवै तथा मनु भगवान् का वचन है। वेदविद्याव्रतस्नानात् श्रोत्रियानगृहमेधिनः। पूजयेद्धव्यकव्येन विपरीतांश्चवर्जयेत् ॥ ११ ॥ जिनों ने ब्रह्म चर्य्याश्रम करके

वेदविद्या अर्थात् सब विद्या को पढ़ा है और धर्माचरण से शुद्ध होवें ऐसे श्रोत्रिय अर्थात् विद्वान् और गृहस्थ लोगों का हव्य नाम देवकार्य औ कव्यनाम पितृकार्य में गृहस्थ लोग सत्कार करें उन से विपरीत लोगों का सत्कार कभी न करें। ११ ॥ शक्तितोऽपचमानेभ्यो दातव्यं गृहमेधिना संविभागश्च भूतेभ्यः कर्तव्योऽनुपरोधतः ॥ १२ ॥ जो सन्यासी ब्रह्मचारी विद्यावान् और धर्मात्मा होवें उन को भी गृहस्थ लोग सेवा करें और भी जितने अनाथ होवें अर्थात अन्धे लंगड़े लूले और जिनका कोई पालन करने वाला न होवे उनका भी गृहस्थ लोग पालन करें ॥ १३ ॥ नोपगच्छेत्प्रमत्तोऽपि स्त्रियमार्त्तवदर्शने। समानशयने चैव न शयीत तया सह ॥ १३ ॥ जब स्त्री रजस्वला होय उस दिन से लेके चार दिन तक काम पीड़ा से प्रमत्त भी होय तो भी स्त्री का संग न करै और एक शय्या में स्त्री के साथ कभी न सोवै ॥ १३ ॥ रजसाभिप्लुतां नारीं नरस्य ह्युपगच्छतः। प्रज्ञा तेजो बलं चक्षुरायुश्चैव प्रहीयते ॥ १४ ॥ जो पुरुष रजस्वला स्त्री से समागम कर्ता है उसको बुद्धि तेज बल नेत्र और आयु ये पांच नष्ट हो जाते हैं क्योंकि स्त्री के शरीर से एक प्रकार का अग्नि निकलता है उससे पुरुष का शरीर रोगयुक्त होता है रोग युक्त होने से बुद्ध्यादिक नष्ट हो जाते हैं ॥ १४ ॥ तां विवर्जयतस्तस्य रजसा समभिप्लुताम्। प्रज्ञा तेजो बलं चक्षुरायुश्चैव प्रवर्द्धते ॥ १५ ॥ जो पुरुष रजस्वला स्त्री का संग नहीं कर्ता उस पुरुष के बुद्धि तेज बल नेत्र और आयु ये सब बढ़ते हैं ॥ १५ ॥ ब्राह्मे मुहूर्त्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्। कायक्लेशांश्च तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च ॥ १६ ॥ एक प्रहर रात जब रहै तब सब मनुष्य उठैं उठके प्रथम धर्म का विचार करैं कि यह २ धर्म की बात हमको करनी होगी तथा यह २ अर्थ नाम व्यवहार की बात अवश्य करना होगा उस धर्म और अर्थ के आचरण में विचार करैं कि परीश्रम थोड़ा होय और

वह कार्य सिद्ध हो जाय और जो शरीर में रोगादि क्लेश हो उनका औषध पथ्य और निदान का इस्से यह रोग भया है इन सबको विचारै विचार के उनके निवारण का विचार करै फिर वेदतत्त्वार्थ नाम परमेश्वर की प्रार्थना करै और उठ के मल मूत्रादिक त्याग करै हस्त पाद का प्रक्षालन करें फिर जो वृक्ष दूध वाले होवें उनसे दन्त धावन करें अथवा खैर के चूर्ण वा सूंघनी से युक्त करके दन्त धावन से दांतों को मलै और स्नान करै सूर्योदय से पहिले १ वा दो कोस भ्रमण करै एकान्त में जाके संध्योपासन जैसा कि लिखा है वैसा करै सूर्योदय के पीछे घरमें आके अग्निहोत्र जैसा जिस वर्ण का व्यवहार पूर्वक लिखा है वैसा करै जब तक पहर दिनन चढ़ै तबतक दूसरे प्रहर के प्रारंभ में तर्पण बलिवैश्वदेव और अतिथि सेवा करके भोजन करै तब जो जिसका व्यवहार है उस व्यवहार को यथावत् करैं ग्रीष्मऋतु को छोड़के दिवस में न सोवै क्योंकि दिन को सोने से रोग होते हैं और ग्रीष्म में अर्थात् वैशाख और ज्येष्ठ में थोड़ा सोने से रोग नहीं होता क्योंकि निद्रा से शरीर में उष्णता होती है सो ग्रीष्म में उष्णताही अधिक होती हैं जल भी अधिक पीने में आता है फिर जब मनुष्य सोता है तब सब द्वार अर्थात् लोम द्वार से भीतर से जल बाहर निकलता है उस्से सब मार्ग शुद्ध हो जाते हैं इस्से ग्रीष्म ऋतुमें सोने से रोग नहीं होता है अन्यऋतु में सोनेसे होता है और जो कुछ आवश्यक कार्य होय तो ग्रीष्म ऋतु में भी न सोवै तो बहुत अच्छा है फिर जब चार वा पांच घड़ी दिन रहै तब सबकार्यों को छोड़के भोजन के लिये जावै पहिले शौच स्नानादिक क्रिया करै तदनन्तर बलिवैश्वदेव फिर अतिथि सेवा करके भोजन करै भोजन करके फिर भी संध्योपासन के वास्ते एकान्त में चला जाय संध्योपासन करके फिर अपने अग्निहोत्र स्थान में आके अग्नि-

होच करै जब २ अग्निहोच करै तब २ स्त्री के साथही करै फिर जो जिसका व्यवहार होय वह उसको करै अथवा भ्रमण करै निदान एक प्रहर रात तक व्यवहार करै फिर सोवै दोप्र-हर अथवा डेढ़ प्रहर तक फिर उठके वैसेही नित्य क्रिया करै सो मध्यरात्रि के मध्य दो प्रहर में जब २ वीर्य दान करै उसके पीछे कुछ ठहर के दोनों स्नान करें पीछे अपने २ शय्या में पृथक २ जाके सोवैं जो स्नान न करेंगे तो उनके शरीर में रोगही हो जायगे क्योंकि उसमें बड़ी उष्णता होती है इसलिये स्नान करने से वह विकार न होगा और वीर्यतेज भी बढ़ेगा इस्से उस समय स्नान अवश्य करना चाहिये इसमें मनुभगवान् के वचन का प्रमाण है। भोजनंहिगृहस्थानांसायंप्रातर्विधीयते स्नानंमैथुनिन-स्मृतम् ॥ इसका अर्थ यह है कि दो वेर गृहस्थ लोगों को भोजन करना चाहिये सायं और प्रातः काल जो मैथुन करै तो उसके पीछे स्नान अवश्य करै तथाचश्रुतिः अहरहःसंध्यामुपासी-तअहरहरग्निहोचंजुहुयात् । इनका यह अभिप्राय है कि सायं और प्रातः काल में दो वेर संध्योपासन और अग्निहोच करै दोई संध्या हैं प्रातः और सायंकाल मध्यान संध्या कहीं नहीं क्योंकि संध्या नाम है सन्धिका सन्धि दो काल होती है प्रातःकाल प्रकाश और अन्धकार की संधि होती है तथा सायं काल प्रकाश और अन्धकार की सन्धि होती है मध्यान में केवल प्रकाशही है इस्से मध्यान्ह में संध्या नहीं हो सकी । संध्यायन्तिपरंतत्त्वंनामपरमेश्वरंयस्यांसासंध्या । इस समय परमेश्वर का ध्यान करते हैं इस्से इसका नाम संध्या है अ-थवा संधयेहितासंध्या मन और जीवात्मा का परमेश्वर से जिस कर्म से सन्धान होय उसका नाम सन्धि है संधि के लिये जो अनुकूल कर्म होता है उसका नाम संध्या है सो दोई हैं । तस्मादहोरात्रस्यसंयोगेब्राह्मणः संध्यामुपासीत ॥ यह

सामवेद के ब्राह्मण की श्रुति है। (उद्यन्तमस्तंयान्तमादित्यमभिध्यायन् ब्राह्मणोविद्वान्सकलंभद्रमश्नुते) यह यजुर्वेद के ब्राह्मण की श्रुति है इसका यह अभिप्राय है कि जिस्से अहोरात्र अर्थात रात्रि और दिवस के संयोग में संध्या करैं जब जीवात्मा बाहर व्यवहार करने को चाहता है तब बहिर्मुख होता है मन और इन्द्रियों को भी बहिर्मुख कर्ता है और जीव भी नेत्र ललाट और श्रोत्र ऊपर के अंगो में विहार कर्ता है जैसे कि सूर्यउदय होकर ऊपर २ विहार कर्ता है वैसे जीव भी जब सोना चाहता है तब हृदय पर्यन्त नीचे के अंगो में चला जाता है रात्रि की नांई अन्धकार हो जाता है विना अपने स्वरूप के किसी पदार्थ को नही देखता जैसे कि सूर्य जब अस्त हो जाता है तब अन्धकार होने से कुछ नहीं देख पड़ता है ऐसही जीव के ऊपर आने और नीचे जाने का व्यवहार उसका सन्धान दोनों संध्याकाल में करैं इसके सन्धान करने से परमेश्वर पर्यन्त का कालान्तर में मनुष्यों को बोध हो जाता है और जीवका कभी नाश नहीं होता इस्से इसका नाम आदित्य है इस श्रुतिका अर्थ हो गया अर्थात। उद्यन्तमस्तंयान्तमादित्यमभिध्यायन् ब्राह्मणः सकलंभद्रमश्नुते। इसहेतु उदय और सायंकाल की दो संध्या निकलती हैं सो जान लेना तथा मनुस्मृति के श्लोक भी हैं। नतिष्ठतितुयःपूर्वां नोपास्ते यश्चपश्चिमाम्। सशाधुभिर्बहिष्कार्यः सर्वस्माद्विजकर्मणः॥ १॥ प्रातःसंध्यांजपंस्तिष्ठेत्सावित्रीमार्कदर्शनात्। पश्चिमांतुसमासीनः सम्यगृक्षविभावनात्॥ २॥ जो प्रातः और सायम् काल को संध्या नहीं करता उसको श्रेष्ठ द्विज लोग सब द्विज कर्माधिकारों से निकाल देवें अर्थात् यज्ञोपवीत को तोड़ के शूद्र कुल में कर देवैं वह केवल सेवाही करै जो कि शूद्र का कर्म है॥ १॥ इस्से दो सन्ध्या निकलती हैं दूसरे श्लोक में सन्ध्या के काल का नियम और दोनों सन्ध्या

हैं दो घड़ी रात से लेके सूर्योदय पर्यन्त प्रातः संध्या के काल का नियम है तथा एक वा आध घड़ी दिन से लेके जब तक तारा न निकलें तब तक सायं सन्ध्या के काल का नियम है और गायत्री का अर्थ और जैसा ध्यान उसका कहा है वैसाही दोनों काल में करैं और जो कहता है कि मध्यान संध्या क्यों न होय तो उनसे पूंछना चाहिये कि मध्य रात्रि में संध्या क्यों न होय और दो पहर के दो मुहूर्त्त और दो क्षण में संध्या क्यों न होजाय ऐसा कहने से तो हजारों संध्या हो जांयगी और उसके मत में अनवस्था भी आजायगी इस्से उसका कहना मिथ्याही है ॥ २ ॥ अधार्मिकोनरोयोहि यस्यचाप्यनृतंधनम्। हिंसारतश्चयोनित्यं नेहासौसुखमेधते ॥ ३ ॥ जो नर अधार्मिक अर्थात अधर्म का करने वाला है और जिसका धन भी अनृत अर्थात असत्य से आया होय और नित्य हिंसारत अर्थात पर पीड़ाही में नित्य रहता होय वह पुरुष इस संसार में सुख को कभी नहीं प्राप्त होता ॥ ३ ॥ नसीदन्नापिधर्मेण मनोऽधर्मेनिवेशयेत्। अधार्मिकाणांपापानामाशुपश्यन्विपर्ययम् ॥ ४ ॥ यदि मनुष्य बहुत क्लेशित भी होय और धर्म के आचरण से भी बहुत दुःख पावै तो भी अधर्म में मनको प्रविष्ट न करै क्योंकि अधर्म करने वाले मनुष्यों का शीघ्रही विपर्यय अर्थात नाश हो जाता है ऐसा देखने में भी आता है इस्से मनुष्य अधर्म करने की इच्छा कभी न करै ॥ ४ ॥ नाधर्मश्चरितोलोके सद्यःफलतिगौरिव। शनैरावर्त्तमानस्तु कर्त्तुर्मूलानिकृन्तति ॥ ५ ॥ जो पुरुष अधर्म करता है उसको उसका फल अवश्य होता है जो शीघ्र न होगा तो देर में होगा जैसे कि गाय जिस समय उसकी सेवा करते हैं उस समय दूध नहीं देती किन्तु कालान्तर में देती है वैसेही अधर्म का भी फल कालान्तर में होता है धीरे २ जब अधर्म पूर्ण होजायगा तब उसके करने वालों का मूल अर्थात सुख

के कारणों को छेदन कर देगा इससे वे दुःख सागर में गिरेंगे॥५॥ अधर्मेणैधतेतावत्ततोभद्राणिपश्यति । ततःसपत्नान्जयति समूलस्तुविनश्यति ॥ ६ ॥ जब मनुष्य धर्म को छोड़ के अधर्म में प्रवृत्त होता है तब छल कपट और अन्याय से पर पदार्थों को हरण कर लेता है हरण करके कुछ सुख भी करता है फिर शत्रु को भी अधर्म छल और कपट से जीत लेता है परंतु उसके पीछे जैसा मूल सहित वृक्ष उखड़कर गिर जाता है वैसा मूल सहित उस अधर्म करनेवाले पुरुष का नाश होजाता है ॥६॥ इससे किसी मनुष्य को अधर्म करना न चाहिये किन्तु । सत्यधर्मार्यवृत्तेषु शौचेचैवारमेत्सदा । शिष्यांश्चशिष्याद्धर्मेण वाग्बाहूदरसंयतः ॥ ७ ॥ सत्य धर्म और आर्य जो श्रेष्ठ मनुष्य हैं उनमें और उनके आचरण में सदा स्थित हो शौच पवित्रता अर्थात हृदय की शुद्धि और शरीरादिक पदार्थों की शुद्धि करने में सदा रमण करें तथा अपने शिष्य पुत्र और विद्यार्थियों को यथावत् धर्म से शिक्षा करें और वाणी बाहु उदर इनका संयम करें अर्थात् वाणी से वृथा भाषण, बाहु से अन्यथा चेष्टा, और उदर का संयम अर्थात भोजन का बहुत लोभ न रक्खें ॥ ७ ॥ नपाणिपादचपलो ननेत्रचपलोऽनृजुः । नस्याद्वाक्चपलश्चैव नपरद्रोहकर्मधीः ॥ ८ ॥ पाणि हाथ पाद अर्थात पैर उनसे चपलता नाम चंचलता न करै तथा नेत्र से भी चपलता न करे अनृजु अर्थात अभिमान कभी न करै सदा सरल होय और वाक् चपल न होवै अर्थात बहुत न बोलै जितना उचित हो उतनाही भाषण करै और पराये का द्रोह अर्थात ईर्षा कभी न करै और कर्मही परम पदार्थ है उपासना और ज्ञान कुछ भी नहीं ऐसी बुद्धि कभी न करै किन्तु कर्म से उपासना और उपासना से ज्ञान श्रेष्ठ है ऐसी बुद्धि सदा रक्खै ॥८॥ येनास्यपितरोयाताः येनयाताःपितामहाः। तेनयायात्सतांमार्ग-

तेनगच्छन्नरिष्यते ॥ ८ ॥ जिस मार्ग से उसके पिता और पितामह गये हों उसी मार्ग से आप भी जावे उस मार्ग पर जाने से मनुष्य नष्ट नहीं होता किन्तु सुखीही होता है और दुःख कभी नहीं पाता (पूर्वपक्ष) यदि पिता और पितामह कुकर्मी होंय तो भी उनकी रीति से चलना चाहिये वा नहीं (उत्तर) नहीं क्यों कि इसी लिये मनु भगवान ने सतामिति विशेषण दिया है कि यदि पिता और पितामह सत्पुरुष अर्थात् धर्मात्मा होवें तो उन की रीति से चलना और यदि अधर्मी होवें तो उनकी रीति से कभी न चलना चाहिये ॥ ८ ॥ ऋत्विक्पुरोहिताचार्यैर्मातुलातिथिसंश्रितैः। बालवृद्धातुरैर्वैद्यैर्ज्ञातिसम्बन्धिबान्धवैः ॥ १० ॥ मातापितृभ्यांयामीभिर्भ्रात्रापुत्रेणभार्यया। दुहित्रादासवर्गेण विवादंनसमाचरेत् ॥ ११ ॥ ऋत्विक्, पुरोहित, आचार्य, मातुल अर्थात मामा, अतिथि, तथा संश्रित अर्थात मित्र, बालक, वृद्ध, आतुर, नाम दुःखी, वैद्य, ज्ञाति, संबधी अर्थात श्वसुरादिक, बान्धव अर्थात कुटुम्बी, माता, पिता, तथा दमाद, भ्राता, पुत्र, तथा भार्या अर्थात स्त्री, दुहिता अर्थात कन्या, दासवर्ग अर्थात सेवकलोग इनसे विवाद कभी न करै और औरों से भी विवाद न करै विवाद का करना दुःख मूलही है इसे सज्जनों का किसी से विरुद्ध वाद करना न चाहिये ॥ ११ ॥ प्रतिग्रहसमर्थोपिप्रसङ्गन्तत्रवर्जयेत्। प्रतिग्रहेणह्यस्याशु ब्राह्मंतेजःप्रशाम्यति ॥ १२ ॥ प्रतिग्रह लेने में समर्थ अर्थात गुणवान भी होय और उसको लोग देते भी होंय तो भी किसी से दान न लेवै किंतु अध्यायन नाम पढ़ाना याजन नाम यज्ञ का कराना अथवा अपने परीश्रम से आजीविका को करै और जो पुरुष प्रतिग्रह लेता है उसका ब्राह्म तेज अर्थात् विद्या नष्ट हो जाती है क्योंकि वह खुशामदी होजायगा इसे दान का लेना उचित नहीं ॥ १२ ॥ अतयास्त्वनधीयानः प्रतिग्रहरुचिर्द्विजः। अम्भस्यश्मप्लवेनेव सहतेनैवमज्ज-

ति ॥ १३ ॥ जो पुरुष तपस्वी और विद्वान् नहीं और प्रतिग्रह में रुचि रखता है वह उसी दान के साथ पाप समुद्र में डूब मरेगा जैसे कोई पाषाण की नौका से समुद्र वा नदी को तरे वह तरेगा तो नहीं परंतु डूब के मर जायगा वैसेही प्रतिग्रह लेनेवाले मूर्ख की गति होगी ॥ १३ ॥ त्रिष्वप्येतेषुदत्तंहि विधिनाप्यर्जितंधनम् । दातुर्भवत्यनर्थाय परत्रादातुरेवच ॥ १४ ॥ एक तो अविद्वान् दूसरा वैडालव्रतिक तीसरा बकव्रतिक इन तीनों को तो जल का भी दान न देवै और जिसने विधि अर्थात धर्म से धन का संचय किया होय उस धन को तीनों को कभी न देवै जो कोई दाता देगा उसको बड़ा दुःख होगा और परलोक में उन तीन पुरुषों को इस लोक में भी बड़ा दुःख होगा ॥ १४ ॥ यथाप्लवेनौपलेननिमज्जत्युदकेतरन् । तथानिमज्जतोधस्तादज्ञौदात्रप्रतीच्छकौ ॥ १५ ॥ जैसे कोई पाषाण की नौका पर चढ़ कै उदक में तरा चाहै वह तर तो नहीं सकेगा परंतु डूब के मर जायगा तैसेही परीक्षा के विना दुष्टों को जो दान देता है और जो दुष्ट लेने वाले हैं वे सब अज्ञान के होने से अधोगति को जायंगे अर्थात् दुःख और नरक को प्राप्त होंगे उनको कभी कुछ सुख न होगा इससे परीक्षा करके श्रेष्ठ और धर्मात्माओंही को दान देना चाहिये अन्य को नहीं वैडालव्रतिक और बकव्रतिक मनुष्यों का यह लक्षण है ॥ १५ ॥ धर्मध्वजीसदालुब्धश्छाद्मिकोलोकदम्भकः । वैडालव्रतिकोज्ञेयोहिंस्रःसर्वाभिसन्धकः ॥ १६ ॥ अधोदृष्टिर्नैष्कृतिकःस्वार्थसाधनतत्परः । शठोमिथ्याविनीतश्चबकव्रतचरोद्विजः ॥ १७ ॥ जो मनुष्य धर्मध्वजी अर्थात् धर्म तो कुछ न करै अथवा कुछ करै भी तो फिर अपने मुख से कहै कि मैं बड़ा पंडित वैराग्यवान् योगी तपस्वी और बड़ा धर्मात्मा हूं इसको धर्मध्वजी कहते हैं जो बड़ा लोभी होय अर्थात् जो कुछ पावै सो भूमि में अथवा

जहां तहां रख छोड़े खाने में भी लोभ करै और बड़ा कपटी छली होय लोगों को दंभ का उपदेश करै अर्थात् जैसे कि संप्रदायी लोग उपदेश करते हैं कि तुलसी की माला धारण करने से बैकुंठ को जाता है और सब पापों से छूट जाता है तथा रुद्राक्ष माला धारण करने से कैलास को जाता है और सब पापों से दूर हो जाता है और गङ्गादिक तीर्थ राम शिवादिक नाम स्मरण और काश्यादिकों में मरण से मुक्ति होजाती है इस प्रकार के उपदेश करके दंभ और अभिमान में लोगों को गिरा देते हैं और आप भी गिरे रहते हैं इससे दुःख और बन्धन तो होहीगा और मुक्ति कभी न होगी किंतु धर्माचरण विद्या और ज्ञान इनके विना मुक्ति कभी नहीं होसक्ती हिंस्रः नाम रात दिन जिसका चित्त प्राणियों को पीड़ा देने में नित्य प्रवृत्त रहै उसको हिंस्र कहते हैं सर्वाभिसन्धक अर्थात् अपने प्रयोजन के लिये दुष्ट तथा श्रेष्ठों से मेल रक्खे सो मेल धर्म से नहीं किन्तु अधर्मी से धनादिक हरण करने के लिये प्रीति करै उनको सर्वाभिसन्धक कहते हैं यह वैडालव्रतिक का लक्षण है ॥ क्रोध के मारे वा कपट छल से अधोदृष्टिःनाम नीचे देखता रहै कोई जाने कि वह बड़ा शान्त और वैराग्यवान् है नैष्कृतिक नाम यदि कोई एक कठिन बचन उसे कहै और उसके बदले में दस कठिन बचन भी उसको कहे तो भी उसकी शान्ति न होय उसको नैष्कृतिक कहते हैं स्वार्थ साधन तत्पर अर्थात अपने स्वार्थ साधन में जो तत्पर अर्थात् किसी को पीड़ा तथा हानि होजाय और वह अपने स्वार्थ के आगे कुछ न गिनै शठ अर्थात मूर्ख जो हठ दुराग्रह से निर्बुद्धि होय और अन्य का उपदेश न मानैं उसको शठ कहते हैं मिथ्या विनीत नाम विनय तथा नम्रता करै सो कुटिलता से करै शुद्ध हृदय से नहीं ऐसे लक्षण वाले को वकव्रतिक कहते हैं अर्थात जैसे वक नाम बकुला जल

के समीप ध्यानावस्थित होके खड़ा रहता है और मत्स्य को देखता भी रहता है जब मत्स्य उसके पेच में आता है तब उस को उठा के खा लेता है तथा जितने धूर्त पाखण्डी होते हैं व दूसरे का प्राण भी हरण कर लेते हैं तिस्पर उनको कभी दया नहीं आती ऐसेही जितने शैव शाक्त गाणपत्य वैष्णवादिक संप्रदाय वाले हैं, इनमें कोई लाखों में एक अच्छा होता है और सब वैसेही होते हैं इससे गृहस्थ लोग इनकी सेवा कभी न करें १७ ॥ सर्वेषामेवदानानांब्रह्मदानंविशिष्यते । वार्यन्नगोमहीवासस्तिलकाञ्चनसर्पिषाम् ॥ १८ ॥ वारि नाम जल अन्न गाय मही अर्थात पृथिवी वास नाम वस्त्र तिल कांचन नाम सुवर्ण सर्पि नाम घी ८ इन सब दानों से ब्रह्म अर्थात वेद विद्या का दान सब से श्रेष्ठ दान है ऐसा अन्य कोई दान नहीं है इससे सब गृहस्थों को अर्थ सहित वेद पढ़ने और पढ़ाने में शरीर मन और धन से अत्यन्त पुरुषार्थ करना उचित है ॥ १८ ॥ धर्मंशनैस्सञ्चिनुयाद्वल्मीकमिवपुत्तिकाः । परलोकसहायार्थं सर्वभूतान्यपीड़यन् ॥ १९ ॥ सब भूतों को पीड़ा के बिना धीरे धीरे धर्म का संचय मनुष्यों को करना उचित है जैसे कि चींटी धीरे २ मिट्टी को बाहर निकाल के संचय कर देती है तथा धान्य कणों का भी धीरे २ बहुत संचय कर देती हैं वैसेही मनुष्यों को धर्म का संचय करना उचित है क्योंकि धर्म ही के सहाय से मनुष्यों को सुख होता है और किसी के सहाय से नहीं ॥ १९ ॥ नामुत्रहिसहायार्थंपितामाताचतिष्ठतः । नपुत्रदारंनज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठतिकेवलः ॥ २० ॥ परलोक में सहाय के करने को पिता माता पुत्र तथा स्त्री ज्ञाति नाम कुटुम्बी लोग कोई समर्थ नहीं है केवल एक धर्मही सहायकारी है और कोई नहीं ॥ २० ॥ एकःप्रजायतेजन्तुरेकएवप्रलीयते । एकोऽनुभुंक्ते सुकृतमेकएवचदुष्कृतम् ॥ २१ ॥ देखना चाहिये कि जब

जन्म होता है तब एकही का होता है और मरण होता है तो भी एकही का होता है तथा सुख का भोग करता है तो एकही करता है अथवा दुःख का भोग करता है तो एकही करता है इसमें संग किसी का नहीं इससे सब मनुष्यों को यह उचित है कि अपना पालन वा माता पितादिकों का पालन धर्मही से जितना धनादिक मिलै उतनेही से व्यवहार और पालन करें अधर्म से कभी नहीं क्योंकि ॥ एकःपापानिकुरुते-फलंभुङ्क्तेमहाजनः। भोक्तारोविप्रमुच्यन्ते कर्तादोषेणलिप्यते॥ यह महाभारत का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि जो अधर्म करेगा उसका फल वही भोगेगा और माता पितादिक सुख के भोग करने वाले तो हो जायंगे परंतु दुःख जो पाप का फल उसमें से भाग कोई न लेगा किन्तु जिसने किया वही पाप का फल भोगेगा और कोई नहीं ॥ २१ ॥ मृतंशरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसमंक्षितौ। विमुखाबान्धवायान्ति धर्मस्तमनुगच्छति॥ २२ ॥ देखना चाहिये कि जब कोई मर जाता है तब काष्ठ वा लोष्ठ जैसा कि मिट्टी के ढेले को पृथिवी में फेंक के चले जाते हैं वैसे मरे हुए शरीर को अग्नि वा पृथिवी में डाल के विमुख नाम पीठ करके कुटुम्बी लोग चले आते हैं कुछ सहायता नहीं करते॥ २२ ॥ तस्माद्धर्मंसहायार्थं नित्यंसंचिनुयाच्छनैः। धर्मेणहिसहायेन तमस्तरतिदुस्तरम्॥ २३ ॥ तिससे नित्यही सहाय के लिये धीरे २ धर्मही का संचय करें क्योंकि धर्मही के सहाय से दुस्तर जो तम अर्थात् जन्म मरणादिक दुःखसागर का जो संयोग उसका नाश और मुक्ति अर्थात् परमेश्वर की प्राप्ति और सर्व दुःख की निवृत्ति धर्मही से होती है अन्यथा नहीं॥ २३ ॥ धर्मप्रधानंपुरुषं तपसाहतकिल्बिषम्। परलोकंनयत्याशुभास्वन्तंखशरीरिणम्॥ २४ ॥ जिस पुरुष को धर्मही प्रधान है अधर्म में लशमात्र भी जिसकी प्रवृत्ति नहीं

तथा तप जो धर्म का अनुष्ठान है और पाप का त्याग इससे जिस का पाप नष्ट होगया है उसको वही धर्म परलोक अर्थात् स्वर्ग लोक अथवा परमानन्द परमेश्वर को प्राप्त कर देता है वह किस प्रकार का शरीरवाला होता है भास्वन्त अर्थात तेजोमय वा ज्ञान युक्त, और आकाशवत् अदृष्ट, अच्छेद्य काटने वा दाह करने में न आवै ऐसा उसका सिद्ध शरीर होता है जैसा कि योगियों का ॥ २४ ॥ दृढकारी मृदुर्दान्तः क्रूराचारैरसंवसन् । अहिंस्रोदमदानाभ्यां जयेत्स्वर्गंतथाव्रतः ॥ २५ ॥ म० दृढ़कारी अर्थात् जो कुछ धर्म कार्य अथवा धर्म युक्त व्यवहार को करै सो दृढ़ही निश्चय से करै और मृदु अर्थात अभिमानादिक दोष से रहित होय दान्त अर्थात जितेन्द्रिय होय और क्रूराचार अर्थात् जितने दुष्ट हैं उनका साथ कभी न करै किन्तु श्रेष्ठ पुरुषोंही का संग करै दम अर्थात जिसका मन वशीभूत होय दान अर्थात वेद विद्या का नित्य दान करना और अहिंस्र अर्थात किसी से वैर बुद्धि नहीं ऐसाही लक्षणवाला पुरुष स्वर्ग को प्राप्त होता है अन्य नहीं ॥ २५ ॥ वाच्यर्थानियताःसर्वे वाङ्मूलावाग्विनिःसृताः । तांस्तुयःस्तेनयेद्वाचं ससर्वस्तेयकृन्नरः ॥ २६ ॥ जिस पुरुष को प्रतिज्ञा मिथ्या होती है अथवा जो मिथ्या भाषण कर्त्ता है उसने सब चोरी करली क्योंकि वाणीही में सब अर्थ निश्चित रहते हैं केवल वचनहीं व्यवहारों का मूल है उस वाणी से जो मिथ्या बोलता है वह सब चोरी आदिक पापों को अवश्य कर्त्ता है इससे मिथ्या भाषण करना उचित नहीं ॥ २६ ॥ आचाराल्लभतेह्यायुराचारादीप्सिताःप्रजाः । आचाराद्धनमक्षय्यमाचारोहन्त्यलक्षणम् ॥ २७ ॥ जो सत्पुरुषों के श्रेष्ठ आचार के करने से आयु, श्रेष्ठ, प्रजा और अक्षय्यधन प्राप्त होते हैं और पुरुष में जितने दुष्ट लक्षण हैं वे सब सत्पुरुषों के आचरण

और संग करने से नष्ट होजाते हैं और श्रेष्ठ लक्षण भी उसमें आजाते हैं इस्से श्रेष्ठही आचार को करना चाहिये २७ ॥ दुराचारोहिपुरुषोलोकेभवतिनिन्दितः। दुःखभागीचसततंव्याधितोऽल्पायुरेवच ॥ २८ ॥ दुष्ट आचार करनेवाला पुरुष लोक में निन्दित होता है निरन्तर दुःखीही रहता है अनेक काम क्रोधादिक हृदय के रोग और ज्वरादिक शरीर के रोगों से शीघ्र मर भी जाता है इस्से दुष्टों का आचार कभी न करना चाहिये ॥ २८ ॥ यद्यत्परवशंकर्मतत्तद्यत्नेनवर्जयेत्। यद्यदात्मवशंतुस्यात्तत्तत्सेवेतयत्नतः ॥ २९ ॥ जो जो पराधीन कर्म होय उनको यत्न से छोड़ देवै और जो स्वाधीन होंय उनको यत्न से कर्त्ता जाय ॥ २९ ॥ सर्वंपरवशंदुःखसर्वमात्मवशंसुखम्। एतद्विद्यात्समासेनलक्षणंसुखदुःखयोः ॥ ३० ॥ जो जो पराधीन कर्म हैं वे सब दुःख रूपही हैं और जो २ स्वाधीन कर्म हैं सो २ सब सुख रूप हैं सुख और दुःख का समास अर्थात संक्षेप से यही लक्षण है सो जान लेवें ॥ ३० ॥ यमान्सेवेतसततंनियमान्केवलान्बुधः। यमान्पतत्यकुर्वाणोनियमान्केवलान्भजन् ॥ ३१ ॥ यमों का निरन्तर सेवन करना चाहिये वे यम पूर्व कह दिये हैं वहीं जान लेना और यमों को छोड़ के पांच जो नियम हैं उनका सेवन करें वे नियम ये हैं। शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानियमाः। यह योगशास्त्र का सूत्र है शौच नाम पवित्रता रात दिन नहाने धोने में लगा रहै सन्तोष अर्थात् केवल आलस्य से दरिद्र बना रहै तप नाम निरन्तर कृच्छ्र चांद्रायणादिकों में प्रवृत्त रहै स्वाध्याय अर्थात केवल पढ़ने और पढ़ानेही में प्रवृत्त रहै धर्मानुष्ठान अथवा विचार कभी न करै और ईश्वर प्रणिधान अर्थात् स्वार्थ के लिये ईश्वर की प्रसन्नता चाहै ये अर्थ व्यवहारों की रीति से पांच नियमों के किये गये और योगशास्त्र की रीति

से नियमों के इस प्रकार के अर्थ हैं मृत्तिका और जलादिकों से बाह्य शरीर की शुद्धि और शान्त्यादिकों के ग्रहण और ईर्ष्यादिकों के त्याग से चित्त की शुद्धता इसका नाम शौच है धर्मयुक्त पुरुषार्थ करने से जितने पदार्थ प्राप्त होंय उतनेही में संतुष्ट रहै और पुरुषार्थ का त्याग कभी न करै इसका नाम सन्तोष है क्षुधा, तृषा, शीत और उष्ण इत्यादिक द्वंद्वों को सहै और कृच्छ्र, चांद्रायणादिक व्रत भी करै इसका नाम तप है मोक्ष शास्त्र अर्थात उपनिषदों का अध्ययन करै ॐकार के अर्थ का विचार और जप करै उसका नाम स्वाध्याय है पाप कर्म कभी न करै यथावत् पुण्यकर्मों को करके सिवाय परमेश्वर की प्राप्ति के फल की इच्छा न करै इसका नाम ईश्वर प्रणिधान है इनको तो करता रहै परन्तु यमों को न करै उस को उत्तम सुख नहीं होता किन्तु यमों का करना उसके साथ गौण नियमों का भी करनाही उचित है और केवल नियमों का करना उचित नहीं ऐसे यथावत् विवाह करके गृहस्थ लोग वर्तमान करें यह जितनी विद्यावाली स्त्री और पुरुष द्विज अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य पूर्वोक्त नियम से करें विवाह का विधान संक्षेप से लिख दिया और सब मनुष्यों के बीच में स्त्री और पुरुष जो मूर्ख होंय उनका यज्ञोपवीत भी हुआ होय तो उसको तोड़ के शूद्र कुल में करदें उनका परस्पर यथायोग्य विवाह भी होना चाहिये वे सब द्विजों की सेवा करें और द्विज लोग उनको अन्न वस्त्रादिक उनके निर्वाह के लिये देवें और यह बात भी अवश्य होना चाहिये कि देश देशान्तर से विवाह का होना उचित है क्योंकि पूर्व, उत्तर, दक्षिण और पश्चिम देशों में रहने वाले मनुष्यों में परस्पर विवाह के करने से प्रीति होगी और देश देशान्तरों के व्यवहार भी जाने जायगे बला-दिक गुण भी तुल्य होंगे और भोजन व्यवहार भी एकही होगा

इस्से मनुष्यों को बड़ा सुख होगा जैसे कि पूर्व दक्षिण देश की कन्या और पश्चिम उत्तर देश के पुरुषों से विवाह जब होगा और पश्चिम उत्तर देश के मनुष्यों की कन्या और पूर्व तथा दक्षिण देश में रहने वाले पुरुषों से विवाह होगा तब बलबुद्धि पराक्रमादिक तुल्य गुण हो जांयगे पत्र द्वारा और आने जाने से परस्पर प्रीति बढ़ेगी और परस्पर गुण ग्रहण होगा और सब देशों के व्यवहार सब देशों के मनुष्यों को विदित होंगे परस्पर विरोध जो है सो नष्ट होजायगा इस्से मनुष्यों को बड़ा आनन्द होगा पूर्वपक्ष जैसे स्त्री मर जाती है तब पुरुष का दूसरी बार विवाह होता है वैसे स्त्री का पति मरने से विधवाओं का विवाह होना चाहिये वा नहीं उत्तर विवाह तो न होना चाहिये क्योंकि बहुत बार विवाह की रीति जो संसार में होगी तो जब तक पुरुष के शरीर में बल होगा तब तक वह स्त्री उसके पास रहेगी जब वह निर्बल होगा तब उसको छोड़ के दूसरे पुरुष के पास जायगी जब दूसरा भी बल रहित होगा तब वह तीसरे के पास जायगी जब तीसरा भी बल रहित होगा तब चौथे के पास जायगी ऐसी स्त्री जब तक हृद्धा न होगी तब तक बहुत पुरुषों का नाश कर देगी जैसे कि एक वेश्या बहुत पुरुषों को नष्ट कर देती है वैसे सब स्त्री हो जांयगी और विषदानादिक भी होने लगेंगे इस्से द्विज कुल में दोबार विवाह का होना उचित नहीं स्त्रियों का और पुरुषों का भी बहुत विवाह होना उचित नहीं क्योंकि पुरुषों को भी वीर्य की रक्षा करनी उचित है जिस्से शरीर में बल पराक्रमादिक भी मरण तक बने रहैं और एक पुरुष बहुत स्त्री के साथ विवाह करता है यह तो अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है इस को कभी न करना चाहिये तथा कन्या और वर का पिता जो धन लेके विवाह करते हैं यह भी अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है जैसे कि आज

काल कान्यकुब्जों में है बहुत गृहस्थ इस्से दरिद्र होजाते हैं धन के नाश होने से दरिद्र लोग बिवाह करने में बड़ा दुःख पाते हैं बहुत कन्या हृद्ध होजाती हैं और बिवाह के बिना हृद्ध होके मर भी जाती हैं इस्से इस दुष्ट व्यवहार को छोड़ना उचित है और बंगाले में कुलीन लोगों में बहुत स्त्रियों के साथ एक पुरुष बिवाह कर लेता है एक जो वह मर जाय तो एक के मरने से वे सब स्त्री बिधवा होजाती हैं यह भी अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है इसको सज्जनों को छोड़नाही चाहिये और जो बिधवा होजाती हैं उनका कुछ आधार नहीं होने से भी बहुत अनर्थ होते हैं वे कन्या बाल्यावस्था वा युवावस्था में बिधवा होजाती हैं बहुत दुःखी होती और वे कुकर्म भी करती हैं बहुत गर्भहत्या और बालहत्या भी होती है इस्से बिधवाओं का पति के बिना रहना भी उचित नहीं क्योंकि इस्से बहुत अनर्थ होते हैं इस्से इस व्यवहार का रहना भी उचित नहीं फिर क्या करना चाहिये कि प्रथम तो जब पूर्ण युवावस्था होय तब बिवाह होना चाहिये जिस्से कि बिधवा भी बहुत न होंगी फिर जब कोई बिधवा होय तब छः पीढ़ी अथवा अपने गोत्र और अपनी जाति में देवर अथवा ज्येष्ठ जो संबंध से होय उस्से बिधवा का पाणिग्रहण होना चाहिये परन्तु स्त्री की इच्छा से जब (जिस स्त्री का पति मर जाय और मरने का शोक भी निवृत्त होजाय अर्थात् त्रयोदश दिवस के अनन्तर जब कुटुम्ब के श्रेष्ठ मनुष्य बिधवा स्त्री के पास जाके उससे पूछें कि तेरी क्या इच्छा है जो वह बिधवा कहै कि मेरी इच्छा न सन्तान और न नियोग की है तब तो वह स्त्री चांद्रायणादिक ब्रत तथा परमेश्वर का ध्यान और धर्म का अनुष्ठान करै ऐसेही मरण तक धर्म का आचरण करै दूसरे पुरुष का मन से भी चिन्तन न करै और जो बिधवा कहै कि मेरा पुत्र के बिना निर्वाह न

होगा तब सब पुरुषों के सामने देवर वा ज्येष्ठ का पाणिग्रहण करले उससे एक वा दो पुत्र उत्पादन करले अधिक नहीं इसमें ऋग्वेद के मन्त्र का प्रमाण है॥ कुहस्विद्दोषाकुहवस्तोरश्विना-कुहाभिपित्वङ्करतः कुहोषतुः कोवांशयुत्राविधवेवदेवरम्मर्त्यन्नयो-षाकृणुतेसधस्थआ। इसका यह अभिप्राय है कि स्त्री और पुरुष ये दोनों के प्रति प्रश्न की नाईं कहा है आप दोनों दोषा अर्थात रात्रि कुः नाम कौन स्थान में बास करते भये और किस स्थान में अश्वि नाम दिवस में बास किया था किस स्थान में इन दोनों ने अभिपित्वं अर्थात प्राप्ति इन पदार्थों की की थी इन दोनों का निवासस्थान किस देश में था और शयुत्रा नाम शयनस्थान इन दोनों का किस स्थान में है यह दृष्टान्त भया और इससे यह अभिप्राय भी आया कि स्त्री और पुरुष का बियोग कभी न होना चाहिये सब दिन स्थान और सब देशों में संगही संग रहैं अब यह दृष्टान्त है कि जैसे विधवा देवर के साथ रात्रि दिवस और प्राप्ति का करना एक देश में बास एक स्थान में शयन और संग २ रहती है और देवर को सधस्थ अर्थात स्थान में आकृणुते अर्थात स्वीकार करके रमण और सन्तानोत्पत्ति करती है वैसे उन दोनों से भी वेदमन्त्र से पूछा गया और देवर शब्द का निरुक्त में भी अर्थ लिखा है कि॥ देवरःकस्माद्द्वितीयोवरउच्यते। देवर अर्थात विधवा को जो दूसरा वर पाणिग्रहण करके होता है उस पुरुष को देवर कहते हैं इस निरुक्त से वर का बड़ा भाई अथवा छोटा भाई वा और कोई भी विधवा का जो दूसरा वर होय उसी का नाम देवर आया इस मन्त्र से विधवा का नियोग अवश्य करना चाहिये यह अर्थ आया और (मनुस्मृति में भी लिखा है)॥ देवराद्वासपिण्डाद्वास्त्रियासम्यङ्नियुक्तया। प्रजेप्सिताधिगन्तव्या-सन्तानस्यपरिक्षये॥ १ ॥ देवर अथवा छः पीढ़ी देवर वा

ज्येष्ठ के स्थान में कोई पुरुष होय उस्से विधवा स्त्री का नियोग करना चाहिये और जिसका उस स्त्री के साथ नियोग भया वह उस स्त्री के साथ गमन करे परन्तु जिस स्त्री को सन्तान की इच्छा होय और सन्तान के अभाव में भी नियोग का होना उचित है ॥ १ ॥ विधवायांनियुक्तस्तुघृताक्तोवाग्यतोनिशि। एक-मुत्पादयेत्पुत्रंनद्वितीयंकथंचन ॥ २ ॥ द्वितीयमेकेप्रजनंमन्यन्ते-स्त्रीषुतद्विदः। अनिर्वृत्तंनियोगार्थंपश्यन्तोधर्मतस्तयोः ॥ ३ ॥ जो विधवा के साथ नियुक्त होय सो रात्रि के दोनों मध्य प्रहरों में घृत का शरीर में लेपन करके ऋतुमती विधवा को वीर्य प्रदान करै मौन करके अर्थात बहुत मोहित होके क्रीड़ाशक्त न होय किन्तु सन्तानोत्पत्ति मात्र प्रयोजन रक्खै ॥ २ ॥ कोई एक आचार्य ऋषि लोग ऐसा कहते हैं कि दूसरा भी पुत्र विधवा को होना चाहिये क्योंकि एक पुत्र जो हो जाता है उस्से नियोग का प्रयोजन सब सिद्ध नहीं होता ऐसेही धर्म से विचार करके कहते हैं कि दो पुत्र का होना उचित है ॥ ३ ॥ विधवायांनियोगार्थेनिर्वृत्तेतुयथाविधि। गुरुवच्चस्नुषावच्चवर्तेया-तांपरस्परम् ॥ ४ ॥ विधवा में नियोग का जो प्रयोजन कि दो पुत्र का होना सो विधि पूर्वक जब होगया उसके पीछे वह विधवा नियुक्त पुरुष को गुरुवत् मानै और वह पुरुष उस विधवा को पुत्र की स्त्री की नांई मानै अर्थात फिर समागम कभी न करै और जैसे कि पहिले सब कुटुम्बियों के साम्हने पाणिग्रहण किया था और नियम भी किया था कि जब तक दो पुत्र न होवें तब तक नियोग रहै फिर वैसे फिर भी सब कुटुंबियों के साम्हने दोनों कह देवें कि हम लोगों का नियम पूर्ण होगया अब हम लोग वैसा काम न करेंगे ॥ ४ ॥ नियु-क्तौयौविधिंहित्वावर्त्तेयातांतुकामतः। तावुभौपतितौस्यातांस्नु-षागगुरुतल्पगौ ॥ ५ ॥ फिर जो वे दोनों विधि अर्थात उस

मर्यादा को छोड़ के कामातुर होके समागम करैं तो पतित होजांय क्योंकि ज्येष्ठ और कनिष्ठ इन दोनों को जैसे पुत्र वा गुरु की स्त्री से गमन करने का पाप होता है वैसाही पाप होता है अर्थात फिर कभी परस्पर कामक्रीड़ा न करैं ॥ ५ ॥ नान्यस्मिन्विधवानारीनियोक्तव्याद्विजातिभिः । अन्यस्मिन्हिनियुंजानाधर्मंहन्युःसनातनम् ॥ ६ ॥ उक्त प्रकार से भिन्न पुरुष के साथ बिधवा का नियोग कभी न करैं अपने कुटुम्बही में करैं जिस्से स्त्री जहां की तहां बनी रहै और सन्तान से भी कुल की वृद्धि बनी रहै क्षय कभी न होय जो और किसी पुरुष के साथ नियोग करैंगे तो स्त्री हाथ से जायगी और सन्तान की हानि होने से कुल की भी हानि होगी फिर जो कुल की वृद्धि करना सो सनातन धर्म नष्ट होजायगा इस्से अपनेही कुटुंब में नियोग करना उचित है इस बात की सज्जन लोग शीघ्रही प्रवृत्ति करैं क्योंकि इसके बिना बिधवा लोगों को अत्यन्त दुःख होता है और बड़ा पाप होता है संसार में इस बात के करने से यह दुःख और पाप कभी न होंगे ॥ ५ ॥ ज्येष्ठोयवीयसोभार्यांयवीयान्वाग्रजस्त्रियम् । पतितौभवतोगत्वानियुक्तावप्यनापदि ॥ ६ ॥ ज्येष्ठ कनिष्ठ की तथा कनिष्ठ ज्येष्ठ की स्त्री से नियुक्त भी होवें तो भी आपत्काल के बिना अर्थात दो पुत्र होने के पीछे जो गमन करैं तो पतित होजांय इस्से आपत्कालही में नियोग का बिधान है ॥ ६ ॥ यस्याम्रियेतकन्यायावाचासत्येकृतेपतिः । तामनेनविधानेननिजोविंदेतदेवरः ॥ ७ ॥ जिस कन्या का पाणिग्रहण मात्र तो होजाय और पति का समागम न होय तो उस स्त्री का देवर के साथ बिवाह होना उचित है ॥ ७ ॥ परंतु इस प्रकार से दोनों बिधान करैं ॥ यथाविध्यधिगम्यैनांशुक्लवस्त्रांशुचिव्रताम् । मिथोभजेताप्रसवात्सकृत्सकृदृतावृतौ ॥ ८ ॥ यथाबिधि बिधवा से देवर बिवाह करके

परस्पर ऋतु२ में एक२ बार समागम करैं परंतु वह स्त्री शुक्ल वस्त्र धारण करै परंतु जिसका श्रेष्ठ आचार होय उसी का तो और दुष्टाचारवाले का नहीं ८ मा चेदक्षतयोनिः स्यात् गतप्रत्यागतापि वा पौनर्भवेन भर्त्रा सा पुनः संस्कारमर्हति॥ ९॥ जो स्त्री अक्षतयोनि अर्थात विवाह तथा जाना आना मात्र व्यवहार तो हुआ हो परंतु पुरुष से समागम न भया होय तो पौनर्भव पुरुष अर्थात (विधवा के नियोग से) जो उत्पन्न भया होय उसके साथ उस विधवा का विवाह ही होना उचित है ॥ ९ ॥ यह विधवा नियोग का प्रकरण पूरा होगया (जो विधवा नहीं है और किसी प्रकार का आपत्काल है उनके लिये ऐसा विधान है कि जिसका पति परदेश चला जाय और समय के ऊपर न आवै उस स्त्री के लिये इस प्रकार का विधान शास्त्र में है और पुरुष के लिये भी है (प्रोषितो धर्मकार्यार्थं प्रतीक्ष्योऽष्टौ नरः समाः। विद्यार्थं षट् यशोर्थं वा कामार्थं त्रीँस्तु वत्सरान्॥ १०॥ जो पुरुष स्त्री को छोड़ के परदेश को जाय और जो धर्म ही के लिये गया हो तो आठ वर्ष पर्यन्त स्त्री पति की मार्ग प्रतीक्षा करै, और जो उस समय वह न आवै तो स्त्री पूर्वोक्त प्रकार से नियोग करके पुत्रोत्पत्ति करै, और जो पति बीच में आ जाय तो नियोग छूट जाय जिससे विवाह किया गया था उसी के पास स्त्री रहै और किसी उत्तम विद्या पढ़ने वा कीर्ति के लिये गया होय तो छः वर्ष तक परीक्षा करै तथा काम वा धन के लिये गया होय कि मैं धन लाके खूब विषयभोग करूंगा उसकी तीन वर्ष तक स्त्री प्रतीक्षा करै फिर उक्त प्रकार से नियोग करके पुत्रोत्पत्ति कर लेवै ॥ १० ॥ संवत्सरं प्रतीक्षेत द्विषन्तीं योषितं पतिः। ऊर्द्ध्वं संवत्सरात्त्वेनां दायं हृत्वा न संवसेत्॥ ११॥ जो दुष्टता करके स्त्री ऽ ऽतकूल होजाय अर्थात अपने पिता वा भाई के पास रुष्ट होके चली जाय तो पति एक वर्ष पर्यन्त राह देखै फिर दाय अर्थात जो कुछ स्त्री को गहना आदिक दिया था उसको लेके उसका सङ्ग न करै अर्थात दूसरा विवाह कर लेवै॥ ११॥ मद्यपासाधुवृत्ता च प्रतिकूला च या भवेत्। व्याधिता वाधिवेत्तव्या हिंस्रार्थघ्नी च सर्वदा ॥ १२ ॥ जो स्त्री मद्य पीती होय तथा विपरीत ही चलै कि

आज्ञाकोनमाने व्याधिनामरोगयुक्त होजाय वाविषादिकदेके कोई मनुष्यकोमारडाले औरघरकेपदार्थोंकोसदानाशकर्ती होय तो उसस्त्रीकोछोड़के दूसराविवाहकरलेवे ॥ १२ ॥ वन्ध्याष्टमेधिवेद्याऽब्देदशमेंतुमृतप्रजा। एकादशेस्त्रीजननीसद्यस्त्वप्रियवादिनी॥१३॥ विवाहकेपीछे ८ आठवर्षतकगर्भनरहै, औरवैद्यकशास्त्रकीरीतिसे परीक्षाभीकरले फिरअष्टमेवर्षदूसराविवाहकरले औरवन्ध्याका यथावत्पालनकरैपरंतुसमागमनकरै और जिसकेसंतानहोकेमर जांय औएकभीनजीयेतो१०मेवर्षदूसराविवाहकरलेवे औरउसको अन्नवस्त्रादिकदेवे औरजिसस्त्रीसेकन्याहीबहुतहोवें पुत्रएकभीनहो यतो ११ग्यारहवेंवर्षदूसराविवाहकरले औरउसस्त्रीकापालनकरै जोदुष्टस्त्रीहोय औरअप्रियवचनबोले तोउसकोशीघ्रहीछोड़केदू-सराविवाहकरलेवे १३ वैसापुरुषभीदुष्टहोजाय, तोस्त्रीभीउसको छोड़केधर्मसेनियोगकरकेपुत्रोत्पत्तिकरले और एकयहभीव्यवहार है इसकोजाननाचाहिये किअपनेशरीरसेपुत्रनहोय अर्थातरोग सेवीर्यहीनहोगयाहोयअथवापीछेकिसीरोगसेनपुंसकहोगयाहोय तोअपनेस्वजातिकेपुरुषसेवीर्यलेकेपुत्रोत्पत्तिकरालेवे परन्तुधर्मसे व्यभिचारसेनहीं इसीप्रकारसे १२पुत्रमनुस्मृतिमेंलिखेहैं जिसकोदे खनेकीइच्छाहोयसोदेखलेवेनियोगमें औरक्षेत्रजादिकपुत्रोंकेहो-नेमें महाभारतमें दृष्टान्तभीहै जैसेकिचित्रांगदऔरविचित्रवीर्य दोनोंजबमरगए तबबड़ेभाईजोव्यासजीउनकेवीर्यसे तीनपुत्रउ-त्पन्नकरालिये एकधृतराष्ट्र,दूसरापाण्डु,तीसराविदुर येतीनपुत्र सबसंसारमेंप्रसिद्धहैं औरयुधिष्ठिर,भीम,अर्जुन,नकुलऔरसह-देवयेपांचऔरोंकेनियोगसेउत्पन्नभयेहैं यहबातसंसारमेंप्रसिद्धहै, इससेनियोगकाकरना औरक्षेत्रजादि पुत्रोंकाहोना शास्त्रकीरीति और युक्तिसेठीकहै इसमेसबश्लोक मनुस्मृतिकेलिखेहैं(पूर्वपक्ष) औरस्मृतिकेश्लोकक्योंनहीलिखे(उत्तरपक्ष)अन्यस्मृतियोंका वेदोंसे विरोध औरवेदमें प्रमाणभीकिसीकानहीहै ऋषिमुनियोंकीकिई

भीकोई स्मृ तिनहीं (सिवायमनुस्मृतिके) ॥ यद्वै किञ्चनमनुरवदत्त-द्भेषजंभेषजतायाः । (यहछांदोग्यउपनिषदकीश्रुतिहै) इसकायह अभिप्रायहै किजोकुछमनुजीनेउपदेशकियाहै सोयथावतवेदोक्त है औरसत्यहीहै जैसेकिरोगकेनाशकरनेकाऔषधवैसाहीहै यह एकमनुस्मृतिहीकावेदमेंप्रमाणमिलताहैऔरकिसीस्मृतिकानहीं औरसबलोगोंकोभीयहबातसम्मतहै ॥ (किवेदार्थोपनिबन्धृत्वात्प्राधान्यंहिमनोस्मृतम्। मन्वर्थविपरीतायायासास्मृतिर्नप्रशस्यते ॥ इसश्लोककेसबपंडितलोगकहतेहैं किमनुस्मृतिकेअनुकूलजोस्मृति उसकोमाननाचाहिये औरउससेविरुद्धकिसीस्मृतिकानहीं सोएक बातमें तोपंडितोंकीऔरमेरीसम्मतहोगई परन्तुएकबातमेंविरो-धहोताहै किमनुकेअनुकूलस्मृतियोंकोवेमानतेहैं औरमैंनहीं मानता क्योंकिमनुस्मृतिकेअनुकूलतोतबकोईस्मृतिहोगीजबमनु-स्मृतिकेअर्थहीकोकहै फिरमनुजीनेतोवहअर्थकहदियाहै उसका कहनादूसरीबारव्यर्थहै, क्योंकिपीसेभयेपिसानकाजोपीसना सो व्यर्थहीहोताहै औरमनुस्मृतिमें जोउपदेशकरनाथा सोसबकर दियाहै कुछबाकीनहींरक्खा इससेभीअन्यस्मृतिकाहोनाव्यर्थहीहै इसबातकोपंडितलोगविचारकरलेवें तोबहुतअच्छीबातहै और महाभारतमेंभीजहांर प्रमाणलिखातहांर मनुस्मृतिहीकालिखा और किसीस्मृतिका नहीं इससे जानाजाताहै किमनुष्योंने ऋ-षियोंकेनामप्रमाणकेवास्ते लिख २ के शालअपनेप्रयोजनकेवास्ते बनालियाहै औरजोयहबातकहतेहैं कि कलौपाराशरीस्मृतिः। सोतोअत्यन्तअयुक्तहै क्योंकिद्वापरकेअन्तमें व्यासजीने मनुस्मृति काहीप्रमाणलिखा सोक्योंलिखा शङ्कराचार्यजीनेभीमनुस्मृतिका हीप्रमाणलिखाहै औरजोसत्यबातहैउसकासबदिनप्रमाणहोता है इसमें कुछशङ्कानहीं इससेजोपुरुषकहतेहैंकिकलीमें पाराशरी स्मृतिकाप्रमाणहैसोमिथ्याबातहै औरपाराशरीस्मृतिकेआरंभमें यहबातलिखीहैकिऋषिलोगोंनेव्यासजीकेपासजाकेपूछाआपहम

सेवर्णाश्रमयथावत्कहै तबउनसेव्यासजीनेकहाकिमैंयथावत्वर्णा-
श्रमधर्मोंकोनहींजानता इससे मेरेपिताजोपाराशरउनसेचलके
पूछें वेसबधर्मोंकोयथावत्कहैंगे फिरउनकेपासजाके तबलोगोंने
प्रश्नकिया औरपाराशरजोउनसेकहनेलगे उसमेंजोपाराशरजीने
कहाकि कलौपाराशराःस्मृताः इसमेंविचारनाचाहिये किव्यास
जीवेदादिकसबशास्त्रजाननेवाले वर्णाश्रमधर्मकोक्यानहीजानतेथे
किन्तु अवश्यहीजानतेथे औरपाराशरअपनेमुखसेकैसेकहेंगे कि
कलौमेंपाराशरउक्तधर्मोंकोमाननायहअयुक्तहै औरउसीमेंऐसे२
अयुक्तश्लोकलिखेहैं किकोईबुद्धिमानउनकाप्रमाणभीनकरै जैसे
कि। पतितोपिद्विजश्रेष्ठोनचशूद्रोजितेन्द्रियः। निर्दुग्धावापिगौः-
पूज्यानचदुग्धवतीखरी॥ १ ॥ अश्वालम्भंगवालम्भंसन्यासंपलपैतृ-
कम्। देवराच्चसुतोत्पत्तिं कलौपंचविवर्जयेत्॥ नष्टे मृतेप्रव्रजिते·
क्लीवेचपतितेपतौ। पञ्चस्वापत्सुनारीणां पतिरन्योविधीयते ३॥
इनमेंदेखनाचाहिये किकुकर्मीजोहैसोईपतितहोताहै वहश्रेष्ठ
कैसेहोगाकभीनहोगा औरजितेन्द्रियअर्थात्श्रेष्ठकर्मकरनेवाला
पुरुषहै सोश्रेष्ठकैसेहोगा किन्तुकभीनहोगा औरगायतोपशु
है, सोपशुकीक्यापूजाकरनाउचितहै कभीनहीं किन्तुउसकीतो
यहीपूजाहै किघास,जलइत्यादिकसेउसकीरक्षाकरना सोभीदु-
ग्धादिकप्रयोजनकेवास्ते अन्यथानहीं औरगधेकीभीपूजावैसीही
होतीहै जिसकोप्रयोजनरहताहै वहप्रयोजनकेवास्ते कर्ताहीहै ॥
१॥ औरदूसराश्लोकअश्वालम्भनामअश्वमेध गवालम्भनामगोमेध
औरसन्यासग्रहण औरमांसकापिण्डदान औरविधवासेदेवरके
नियोगसे पुत्रोत्पत्ति येपांचसबकालमेंकरनाचाहिये इनकात्याग
कभीनहीं इनसेबड़ासंसारकाउपकारहै औरकुछपापनहीं इसके
कहनेसेअजामेधादिकोंकात्यागनहींआया अश्वमेधऔरगोमेधका
जोकरनाउससे बड़ासंसारकाउपकारहै सोप्रथमलिखकहदिया।और
संन्यासकात्यागकरैतोअर्थात्पाखण्डकरेगा जैसेकिवैरागीआदिक

उस्से तोसंसारकीबड़ीहानिहोती इस्से संन्यासकाहोनाअवश्यहै,+ ~~औरमांसकेपिण्डदेनेमेंभीकुछपापनहीं~~ क्योंकि यदन्नाःपुरुषाल्लो-कातदन्नाःपितृदेवता ॥ १ ॥ यहमहाभारतकावचनहै । मधुपर्के तथायज्ञेपित्र्यदैवतकर्मणि । अत्रैवपशवोहिंस्यानान्यत्रेत्यब्रवीन्म-नुः । २ ॥ जोपदार्थआपखायउसीसेपञ्चमहायज्ञकरै अर्थात्पितृ-देवपूजाभीउसीसेकरै अर्थात्श्राद्धऔरहोमउसीकाकरै मधुपर्क विवाहादिक औरगोमेधादिकयज्ञ औरदेवपितृकार्य इनमेंमांस कोजोखाताहोय तोउसकेवास्ते मांसकेपिण्डकरनेका विधान है इस्से ~~मांसकेपिण्ड देनेमेंभीकुछपापनहीं~~/ देवरवाज्येष्ठसे नियोग काविधिलिखदिया सोवहीजानलेना कलिमेंपाचोंकानकरनाभी यहबातमिथ्याहीहै २ अर्थातपरदेशकोपतिचलागयाहोय तोस्त्री दूसरापतिकरले फिरजोपूर्वविवाहितपतिआजायतोदोनोंमेंबड़ा बखेड़ाहोगा क्योंकिएककहेगामेरीस्त्रीहै दूसराकहेगामेरीस्त्रीहै फिरक्यावआधी २ स्त्रीकोकरलेंवापारीलगालें सोइसप्रकारकाक-हनामिथ्याहीहै औरपांचप्रकारकेआपत्कालमेंछटहीआपत्आवै गीतावहस्त्रीक्याकरैगीइस्सेयतीनोंश्लोकमिथ्याहीहैंवैसेहीपाराश-रीमेंमिथ्याअयुक्तबहुतश्लोककहेहैं औरजोकोईसत्यहैसोमनुस्मृति हीकाहै इस्से पाराशरीकाप्रमाणकरना सज्जनोंको उचितनहीं औरजैसीपाराशरीवैसीयाज्ञवल्क्यादिकस्मृतियांहै इस्से मनुस्मृति कोछोड़केऔरकिसीकाप्रमाणकरनाउचितनहीं इसवास्तेजहां२ प्रमाणलिखावहां २ मनुस्मृतिहीकालिखागया।जबजिसदिनस्त्री रजस्वलाहोय उसदिनसेलेके१६सोलहदिनतकऋतुकालहै उस मेंसेपहिलेकेचारदिनत्याज्यहैं और११ग्यारहवां,और१३तेरहवां दिनछोड़देना औरअमावस्याऔरपौर्णमासीभीत्याज्यहै अर्थात सोलहमेंसे८आठदिनबाकीरहे उनमेंसेभीछठवां,आठवां,दशवां और१२वांदिन वीर्यदानकरनेमेंअच्छेहैं क्योंकिइनदिनोंमेंस्त्रीके शरीरकोधातु समसभावसेतुल्यवर्तमानरहतीहैं और५वां,७वां

औरदवां येतीनदिनमध्यमहैं क्योंकिउसदिनस्त्रीकेधातुओंकाअधिकबलहोताहै सोपहिले ४ चार दिनोंमें वीर्यदान करेगा तो प्राय:पुत्रहीहोगा अथवा कन्या होगी तो श्रेष्ठही होगी औरजो तीन दिनोंमें वीर्यदान करेगा तो प्राय: कन्या होगी औरनपुंसकभीहोजायतोआश्चर्यनहीं इससे ४चारदिनअथवा७सातदिन वीर्य्यदानके उत्तमऔरमध्यमहैं, अन्यदिनमेंसमागमकरेगा तो क्षीणबलसंतानहोगा इससे ११ग्यारहवांवा१३तेरहवांअमावस्या औरपौर्णमासीइनमें वीर्यदानकरेगातोवीर्यनष्टहोजायगा और जोसन्तानहोगासोभीनष्टहोगा रोगकेहोनेसे क्योंकिउनदिनोंमें स्त्रीकीधातुविषमहोजातीहैं एक २ मासमेंस्त्रीस्वभावसेरजस्वला होतीहै, सोउक्तप्रकारकेसोलहदिनकेपीछेस्त्रीकासमागमकभीन करै क्योंकिमिथ्यावीर्यनष्टहोगा औरगर्भकभीनरहेगा इससे मिथ्यावीर्यकानाशकभीनकरनाचाहिये जिसदिनसेगर्भहोवेउसदिन सेलेके एकवर्षतकस्त्रीकात्यागकरनाअवश्यचाहिये क्योंकिगर्भका नाश औरपुरुषकाबलभीनष्टहोजाताहै इससे एकवर्षतकत्यागअवश्यकरनाचाहिये जोपुरुषपरस्त्री अथवावेश्या गमनसे वीर्यनाश करतेहैं वेबड़ेमूर्खहैं क्योंकिउनकावीर्यमिथ्याहीजायगा औरबड़े रोगहोंगेजोकभीगर्भरहेगातोभीउसकोकुछफलनहीं क्योंकिजिसकीस्त्रीहै उसीकासन्तानहोगा औरवीर्यदेनेवालेकानहीं और वेश्यासेजोपुत्रहोगा सोभडुवाहीहोगा औरजोकन्याहोगी तो वहवेश्याहीहोगी इससेवीर्यदेनेवालेकोकुछलाभनहीं सिवायहानि केऔररोगभीउनकोबड़े२होतेहैं जिससेकीबड़ादु:खपातेहैंक्योंकि जबपरस्त्री गमनकीइच्छाकरताहै अथवाजिसवक्तसमागमकरताहै, तबउसके हृदयमेंभय,शंका औरलज्जापूर्णहोतीहै किइसकर्मको कोईनजानें जोकोईजानेगातोमेरीदुर्दशाहोजायगी एकतोयहअग्नि,दूसरामैथुनकाअग्निऔरतीसराचिन्ताग्नि किरातदिनउसी चिन्तासेजलताजायगा येतीनोंअग्निसेउसकीधातुसबदग्धहोजा-

तोहैं इससे महारोगीहोकेमरजाताहै औरयहबड़ापापभीहै इससे मनुष्यवासोअल्पायुहोजातेहैं औरजोवेश्यागमनकर्ताहै कुत्ताकी नांईवहपुरुषहै क्योंकिजैसेकुत्तासबकाजूंठ औरछांटकियेअन्नको खालेताहै उसकोघृणानहींहोती वैसेहीघृणाकेनहोनेसेसज्जनलोग उसपुरुषकोकुत्तेकेनांईजानैं औरजोव्यभिचारिणीस्त्री औरवेश्या उनकोभीकुत्तीकीनांईजानें क्योंकिइनकोभीघृणानहींहोतीहै और देखना चाहिये किमालीऔरखेतीकरनेवालेलोग अपनेबागमें औरअपनेहीखेतमेंदृत्वरात्रन्नबोते हैं अन्यकेबागवाक्षेत्रमेंनहीं ये मूर्खभीहैं तोभीपराएबागवाखेतमेंकभीकुछनहींबोतेऔरजोलौंडे बाजीकरतेहैं वेतोसूवरवाकौवेकीनांईहैं क्योंकिजैसेसूवर वा कौवे विष्टासेबड़ीप्रीतिरखतेहैं औरअरुचिकभीनहींकरतेवैसेवेभीपुरुष विष्टाजिसमार्गसेनिकलतीहै उसमार्गमेंबड़ीप्रीतिरखतेहैं, इससे इसप्रकारकेजोमनुष्यहैंवेमूर्खसेबढ़करहैं किवीर्यजोसबबीजोंसेउ-त्तमबीजहै उसकोव्यर्थनष्टकरतेहैं औरकेवलपापहीकमातेहैं जो युक्तिसेवीर्यकेरखनेमेंसुखहोताहै उतनासुखलाखवक्तस्त्रीकेसमा: गमसेभीनहींहोताऔरजब४८वा४४वा४०वा३६वर्षतकब्रह्मचर्या-श्रमसेवीर्यकोरक्षाकरैं फिरजबपूर्णबलशरीरमेंहोजायऔरस्त्रीभी ब्रह्मचर्य्याश्रमकरकेपूर्णायुवतीहोजाय तबजोउनदोनोंकोएकवार विषयभोगमेंसुखहोताहै सोबाल्यावस्थामेंविवाहकरनेसेलाखवक्त समागममेंभीसुखनहींहोता औरसंतानभीरोगयुक्तनष्टभ्रष्टहोते हैं जोब्रह्मचर्याश्रमकरनेवालेकेसन्तानहोंगे तोबड़ेसामर्थ्यवान् धनवान्शूरवीरविद्यावान्औरसुशीलहीहोंगे इससे वारंवारलि--खनेकायहीप्रयोजनहै किब्रह्मचर्याश्रमतथाविद्याकेबिनामनुष्यश-रीरधारनाहीनष्टहै सदाधर्मयुक्तपुरुषार्थसेविद्या,धनतथाशरीर औरनानाप्रकारकेशिल्प इनोंकीवृद्धिहीकरनीउचितहै औरजो लोगोंकेकुदूषणहैं उनकोस्त्रीलोगछोड़दें औरसबपुरुषछोड़ादेवें। पानन्दुर्जनसंसर्ग:पत्याचविरहोटनम्। स्वप्नोन्यगेहवासश्चनारी-

संदूषणानि षट्॥ यह मनुका श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि पानं अर्थात मद्य और भंगादि का नशा का करना दुर्जनसंसर्ग अर्थात दुष्टपुरुषों का संग होना पत्या विरह अर्थात पति और स्त्री का वियोग नाम स्त्री अन्यदेश में और पुरुष अन्यदेश में रहै अटन अर्थात पति को छोड़के जहां तहां स्त्री भ्रमण करै जैसे कि नाना प्रकार के मंदिरों में तथा तीर्थों में स्नान के वास्ते और बहुत पाखण्डियों के दर्शन के वास्ते स्त्री का भ्रमण करना स्वप्नोन्यगेहवासश्च अर्थात अत्यन्त निद्रा अन्य के घर में स्त्री का सोना और अन्य के घर में वास करै पति के बिना और अन्य पुरुषों के संग का होना ये छः अत्यन्त दूषण स्त्रियों के भ्रष्ट होने के वास्ते हैं कि इन छः कर्मों ही से स्त्री अवश्य भ्रष्ट हो जायगी इसमें कुछ संदेह नहीं और पुरुषों के वास्ते भी ऐसे बहुत दूषण हैं॥ मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा नविविक्तासनो भवेत्। बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति॥ माता और स्वसा अर्थात भगिनी दुहिता नाम कन्या इनके साथ भी एकान्त में निवास कभी न करै और अत्यन्त संभाषण भी न करै और नेत्र से उनका स्वरूप और उनकी चेष्टा न देखै जो कुछ उनसे कहना वा सुनना होय सो नीचे दृष्टि करके कहै वा सुनै इसका क्या आया कि जितनी व्यभिचारिणी स्त्री वा वेश्या और जितने वेश्यागामी वा परस्त्रीगामी पुरुष हैं उनमें प्रीति वा संभाषण अथवा उनका संग कभी न करै इस प्रकार के दूषणों से ही पुरुष भ्रष्ट हो जाता है क्योंकि यह जो इन्द्रियग्राम अर्थात मन और इन्द्रियां ये बड़े प्रबल हैं जो कोई विद्वान अथवा जितेन्द्रिय वा योगी वे भी इस प्रकार के संगों से भ्रष्ट हो जाते हैं तो साधारण जो गृहस्थ वा मूर्ख वह तो अवश्य भ्रष्ट ही हो जायगा इस वास्ते स्त्री वा पुरुष सदा इन दुष्टसङ्गों से बचे रहैं और जो स्त्रियों को अत्यन्त बन्धन में रखते हैं यह भी बड़ा भ्रष्ट काम है क्योंकि स्त्रियों को बड़ा दुःख होता है श्रेष्ठ पुरुषों का तो दर्शन भी नहीं होता और नीच पुरुषों से भ्रष्ट हो जाती हैं देखना चाहिये कि परमेश्वर ने तो सब जीवों को स्वतन्त्र रचे हैं और उनको मनुष्य लोग बिना अपराध से परतन्त्र अर्थात बन्धन में रख देते हैं। वे

बड़ापापकर्तेहैं सोइसबातकोसज्जनलोगकभीनकरैं यहबातमुसल्मानोंकेराज्यसेप्रवृत्तभईहै आगेनथी कौन्ती,गान्धारीऔरद्रौपद्यादिक,स्त्रियांराजसभामें जहांकिराजालोगोंकी सभाहोती थी औरवार्तासंभाषणकरतीथीं अपनेपतिकोपंखा औरजलादिकोंसे सेवाभीकरतीथीं औरगामोंमेंजैसेयेइत्यादिक ऋषिलोगोंकीस्त्रियां भीसभामेंशास्त्रार्थकरतीथीं यहबातमहाभारत औरबृहदारण्यक उपनिषद्‌मेंलिखीहै इसकोअवश्यकरनाचाहिये, मुसल्मानलोगों काजबराज्यभयाथा तबजिसकिसीकी कन्या वा स्त्री कोपकड़लेते, औरभ्रष्टकरदेतेथे उसीदिनसेश्रेष्ठआर्य्यावर्तदेशवासीलोगस्त्रियों कोघरमेंरखनेलगे औरस्त्रीलोगभीमुखकेऊपरवस्त्ररखनेलगीं सो इसबातकोछोड़देनाचाहियेक्योंकिइसव्यवहारमेंसिवायदुःखके सुखकुछनहींजैसेदाक्षिणात्यलोगोंकीस्त्रियांवस्त्रधारणकरतीहैं वैसा हीपहिलेथा क्योंकिकभीवस्त्र अशुद्धनहीरहता सबदिनजैसेपुरुषों केवस्त्रशुद्धरहतेहैं वैसेस्त्रीलोगोंकेभीशुद्धरहतेहैं इससे इसप्रकारका वस्त्रधारणकरनाउचितहै, स्त्रीलोगोंकोपतिकीसेवा औरतीर्थ के स्थानमें सास,श्वसुर इनतीनोंकीसेवाजोहै सोई उत्तम कर्म है और अपने घरका कार्य और धनादिकोंकी रक्षा करना और सबकुटुंबमेंपरस्परप्रीतिकाहोना सबदिनविद्या औरनानाप्रकार केशिल्पोंकीउन्नतिस्त्रीलोगकरैंऔरपुरुषलोगभीघरमेंकलहनकरैं परस्परप्रसन्नहोकररहना यहीगृहस्थलोगोंकाभाग्यऔरसुखकीउन्नतिहै यहगृहस्थलोगोंकोशिक्षासंक्षेपसेलिखदिया औरजोविस्तारसेदेखनाचाहै तोवेदादिकसत्यशास्त्रऔरमनुस्मृतिमेंदेखलेवै इसकेआगेवानप्रस्थ औरसन्यासियोंकेविषयमें लिखाजायगा॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषा विरचिते चतुर्थः समुल्लासः संपूर्णः॥ ४॥

अथवानप्रस्थसन्यासविधिंवक्ष्यामः। ब्रह्मचर्याश्रमंसमाप्यगृही भवेत् गृहीभूत्वावनीभवेत् वनीभूत्वाप्रव्रजेत् यहबृहदारण्यकउपनिषद्कीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहैकिब्रह्मचर्याश्रम अर्थात्यथावत् विद्याओंकोपढ़के फिरगृहाश्रमीहोय फिरवानप्रस्थहोय औरवानप्रस्थहोकेसन्यासीहोय ऐसाक्रमहैकिइसमें जितनेश्लोक लिखेंगेवेसबमनुस्मृतिहीकेजानलेउसकेआगेम०ऐसाचिन्हलिख देंगे। एवंगृहाश्रमेस्थित्वाविधिवत्स्नातकोद्विजः। वनेवसेत्तुनियतोयथावद्विजितेन्द्रियः॥ १ ॥ इसप्रकारसेविधिवत्गृहाश्रममेंरहकेस्नातकद्विज अर्थात्विद्यावाले ब्राह्मण,क्षत्रियऔरवैश्य,येतीनों वानप्रस्थहोवें सोवनमेंजाकेवासकरैं यथावत्निश्चयकरकेऔरजितेन्द्रियहोकेसोकिससमयवानप्रस्थहोयकि १॥गृहस्थस्तुयदापश्येत्वलीपलितमात्मनः। अपत्यस्यैवचापत्यं तदारण्यंसमाश्रयेत् २ म०जवगृहस्थावलीअर्थातशरीरकाचर्मढीलाहोजाय पलितनाम केशश्वेतहोजांय औरउसकापुत्रब्रह्मचर्यसेसबविद्याओंकोपढ़केविवाहकरलेवे फिरजबपुत्रकाभीपुत्रहोय तबवहगृहस्थवनकोचला जाय॥ २ ॥ संत्यज्यग्राम्यमाहारंसर्वंचैवपरिच्छदम् पुत्रेषभार्यांनिक्षिप्यवनंगच्छेत्सहैववा॥ ३ ॥ म०ग्रामोंकेजितनेपदार्थहैं उन सभोंकोछोड़देऔरअश्व छत्रवस्त्रादिकभीछोड़दे अर्थातनिर्वाहमात्र लेजाय उसकोभीछोड़दे वनमेंजाकेअपनीस्त्रीको पुत्रकेपासरखदे अथवास्त्रीजोकहैकिसेवाकेवास्तेमैंचलूंगीतोसंगलेकेवनकोदोनों जाय जोस्त्रीकहैकिमैं पुत्रोंकेपासरहूंगी तोउनकोछोड़के एकाकी जाय॥ ३ ॥ अग्निहोत्रंसमादाय गृह्यंचाग्निपरिच्छदम्। ग्रामादरण्यंनिःसृत्य निवसेन्नियतेन्द्रियः॥ ४ ॥ म० अग्निहोत्रकोसब सामग्रीअर्थातकुण्डऔरपात्रादिकोंकोलेके ग्रामसेनिकलकेजितेन्द्रियहोकेवनमेंवासकरै॥ ४ ॥ मुन्यन्नैर्विविधैर्मेध्यैःशाकमूलफलेनवा। एतानेवमहायज्ञान् निर्वपेद्विधिपूर्वकम्॥ ५ ॥ म०मुन्यन्न नाममुनियोंकेविविधजोअन्नसांवाकाचावलजोकिवनमेंबिनाबोए

होतेहैं वेमेध्यहोतेहैं अर्थात बुद्धिवृद्धि करनेवालेहैं उनसेशाकजो किपत्रऔरपुष्पमूलनामकन्द जोकिभूमिमेंसेनिकलतेहैं औरफल इनसेपूर्वोक्तपंचमहायज्ञोंकोविधिपूर्वकनित्यकरै॥ ५ ॥ वसीतचर्म- चीरंवासायंस्नायात्प्रगेतथा । जटाश्चबिभृयान्नित्यं श्मश्रु लोमन- खानिच ॥ ६ ॥ भ० मृगचर्मअथवाचीरजोकिवृक्षोंकेछालसेहोता है उसकोधारणकरै शरीरकीरक्षाकेवास्ते सायंकालऔरप्रातः कालदोवेरस्नानकरै जटादाढ़ीमोंछलोमऔरनखइनकोनित्यधा- रणकरै अर्थातगृहाश्रममेंइनकाधारणकरनाचाहिये सोईलिखा है ॥ ६ ॥ केशान्तःषोडशेवर्षे ब्राह्मणस्यविधीयते । आद्वविंशात्क्ष- त्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ॥ ७ ॥ भ०सोलहवर्षमेंब्राह्मण २२वर्ष मेंक्षत्रिय२४वर्षमेंवैश्यऔरशूद्रभीदाढ़ीमोंछऔरनखकभीनरक्खें इसमेंयहांवानप्रस्थकेवास्तेधारणलिखा॥ ७ ॥ यद्भक्ष्यंस्यात्ततोदद्या- त्बलिंभिक्षांचशक्तितः । अम्मूलफलभिक्षाभिरर्चयेदाश्रमागता- न् ॥ ८ ॥ भ०जोआपभक्षणकरैउसीसेपंचमहायज्ञसामर्थ्यकेअनु- कूलकरै जलमूलनामकन्दफल औरभिक्षाइनसेअपने आश्रममें कोईअतिथिआवै उनकाभीसत्कारकरै॥ ८॥ स्वाध्यायेनित्ययुक्तः- स्याद्दान्तोमैत्रःसमाहितः । दातानित्यमनादातासर्वभूतानुकम्प- कः॥ ९ ॥ भ० स्वाध्याय अर्थातशास्त्रकेविचार अथवायोगाभ्यास मेंनित्ययुक्तहोय औरदान्तनामउदारतासेसबइन्द्रियोंकोजीतेसब सेमित्रतारक्खै समाहितनामशरीरऔरचित्तकासमाधानरक्खै अपनेयकर्मकाभीसमाधानरक्खै नित्यऔरोंकोदेवैआपकिसीसेन लेवै औरसबजीवोंकेऊपरकृपारक्खै पक्षपातकभीययावत्करै॥ ९॥ नफालकृष्टमश्नीयादुत्सृष्टमपिकेनचित् । नग्रामजातान्योर्तो- पिमूलानिचफलानिच ॥ १० ॥ भ० फालकृष्टअर्थातहलकेजोतनेसे क्षेत्रमेंजोकुछहोताहै उसकोकभीनग्रहणकरै औरखेतवाखरि- हानमेंकूड़ाभयाजोअन्न उसकाभीग्रहणनकरै औरजोग्रामकेमूल वाफलउनकोग्रहणकभीनकरै॥१०॥ अग्निपक्वाशनोवास्यात्कालपक्व-

भुगेचवा। अश्मकुट्टोभवेद्वापिदन्तोलूखलिकोपिवा॥ ११॥ म० अ-
ग्निपक्वाशनअर्थातअग्निमेंपकाकेखावै कालपक्वभुगअर्थातजोआप
सेवृक्षोंमेंफलपकजांय उनकोखावे अश्मकुट्टअर्थातपाषाणसेकूटर
के फलादिकोंकोखाय दन्तोलूखलिकनाम दांततोमूसलकीनांई
औरमुखउलूखलकीनांई वैसेहोहाथसे फलादिकलेके मुखऔर
दांतोंसेखालेवै ११॥ सद्यःप्रक्षालकोवास्यात्मासमंचयिकोपिवा।
षरामासनिचयोवास्यात्समानिचयएववा॥ १२ ॥ म० एकतोयह
दीक्षाहैकिजितनेसेअपनानिर्वाहहोयउतनाहीलेआवै दूसरेदिन
केवास्ते नरक्खे दूसरीयहदिक्षाहैकिमासभरकेवास्ते फलादिकों
कासंचयकरलेवै अथवाछःमासपर्यन्तकासंचयकरलेवै यहतीसरी
दीक्षाहै चौथीदीक्षायहहैकिसालभरकासंचयकरले इत्यादिक ब-
हुतवानप्रस्थकेवास्ते व्रतलिखेहैं १२ ॥ ग्रीष्मेपंचतयास्तुवर्षास्वभ्रा-
वकाशिकः। आर्द्रवासास्तुहेमन्तेक्रमसोवर्द्धयंस्तपः॥ १३ ॥ म०
ग्रीष्मनामवैशाखज्येष्ठमेंजबसूर्यरश्मघंटाकेऊपरआवैतबचारोदि-
शाओंमेंअग्निकरदे आपबीचमेंबैठे जबतकतीननबजैतबतकऔर
वर्षाकालमेंमैदानमेंबैठे औरअपनेऊपरछायाकुछनरहै शीतकाल
मेंगीलेवस्त्रधारणकरै इत्यादिकप्रकारोंसेअत्यन्तउग्रतपकरै क्योंकि
विनातपअन्तःकरण शुद्धनहींहोता और इन्द्रियोंकाजय भीनहीं
होता इस्सेअवश्यतपकरनाचाहिये॥१३॥ अग्नीनात्मनिवैतानान्-
समारोप्ययथाविधि। अनग्निरनिकेतःस्यान्मुनिर्मूलफलाशनः॥
२४॥ म० जपतपसेमनऔरइन्द्रियांसबवशीभूतहोजांय तबअग्नि
आहवनीहगार्हपत्यदक्षिणात्यसभ्यऔरआवसथ्य यहपांचप्रकार
का अग्नि होता है औरवैतान अर्थात इष्टियों की सामग्री और
अग्निहोत्र की सामग्री उनको बाह्यक्रिया को छोड़दे क्योंकिजि
तनीबाह्यक्रियाहैं वेमनकीशुद्धीकेलियेहैं, सोजबमनशुद्धहोजाय
तबउनकेकरनेकाकुछप्रयोजननहीं किन्तुकेवलभीतरकीजोक्रिया
अर्थातयोगाभ्यासऔरविचारइन्हीकोकरै॥ १४ ॥ अप्रयन्नःसुखा-

येषुब्रह्मचारीधराशयः । शरणेष्वममश्चैव वृक्षमूलनिकेतनः १५ ॥ स० शरीरवा इन्द्रियोंकेसुखकीकुछइच्छानकरे किन्तुउनकात्याग हीकरे औरब्रह्मचारीरहे अर्थातअपनीस्त्रीसंगमेभीहोयतोभीउससे संगकभीनकरे किन्तुस्त्रीतोबनमेंसेवाकेवास्ते होहै औरभूमिमेंश- यनकरे शरणअर्थातजहां२रहे अथवाबैठेउसमेंममताकियहमेरा होहै ऐसाअभिमान कभीनकरे किन्तुवहांसेकोईउठादे तो उठ केचलाजाय दूसरीजगहजाकेबैठे क्रोधादिककुछभीनकरे, किन्तु प्रसन्नहीरहे॥ १५ ॥ तापसेष्वेवविप्रेषुयाचिकंभैक्षमाहरेत् । गृह- मेधिषुचान्येषुद्विजेषुवनवासिषु ॥ १६ ॥ बनमेंअन्यजितनेवानप्रस्थ लोगहोवें उनसेअपनेनिर्वाहमात्र भिक्षाकरलेअधिकनहीं अथ- वाब्राह्मणक्षत्रियऔरवैश्ययेतीनोंगृहाश्रमीबनमेंरहतेहोवें उनसे अपनेनिर्वाहमात्रभिक्षाकरले ॥ १६ ॥ ग्रामादाहृत्यवाश्नीयादष्टौ- ग्रामान्वनेवसन् । प्रतिगृह्यपुटेनैवपाणिनाशकलेनवा ॥ १७ ॥ स० जबदृढजितेन्द्रियहोजाय तोभीबनमेरहे परंतुकभी२ग्राममेंचला आवेभिक्षाकरनेकेवास्ते अपनेदोहाथ वाएकहाथमें जोगृहस्थों कोघरमेंअन्नभयाहोय उसकोप्रीतिसेजितनाकोईदेवैउतनालेलवै परन्तुआठग्रासमात्रले फिरउसकोलेके बनमेंचलाजाय जहांकि जलहोय वहांबैठकेआठग्रासखालेअधिकनहीं ॥ १७ ॥ एताश्चा- न्याश्चसेवेतदीक्षाविप्रोवनेवसन् । विविधाश्चौपनिषदीरात्मसंसिद्ध- येश्रुती ॥ १८ ॥ स० ऋषिभिर्ब्राह्मणैश्चैवगृहस्थैरेवसेविताः । वि- द्यातपोविवृद्ध्यर्थंशरीरस्यचशुद्धये ॥ १९ ॥ स० इनदीक्षाओंकोऔर अन्यदीक्षाओंकोभीबनमेंरहनाभया वहवानप्रस्थसेवनकरे नाना प्रकारकीजोउपनिषदोंकीश्रुति उनकोआत्मज्ञानअर्थातब्रह्मविद्या केवास्तेनित्यविचारे ॥ १८ ॥ ऋषियोंनेअर्थातयथावत्वेदकेमन्त्रो केअर्थजाननेवाले औरब्राह्मणोंनेअर्थातब्रह्मविद्याके जाननेवालों ने औरगृहस्थोंनेअर्थातपूर्णविद्यावाले धर्मात्माओंने जिनश्रुति- योंका सेवनकियाहोय उनकोनित्ययोगाभ्यास औरज्ञानदृष्टि से

विचारकरैं क्योंकिविद्या अर्थातब्रह्मविद्या औरतप अर्थात योग सिद्धिइनकोदृढ़िके औरशरीरको शुद्धिकेवास्ते अर्थात दशेन्द्रियां पांचप्राण मन,बुद्धि,चित्तऔरअहंकार इन १९ सतत्त्वोंके मिल नेसेलिंगशरीरकहाताहै इसकशुद्धिकेवास्ते ॥ १९ ॥ आसांमह-र्षिचर्याणांत्यक्त्वान्यतमयातनुम् । वीतशोकभयोविप्रोब्रह्मलोकेम-हीयते ॥ २० ॥ म० इनमहर्षियोंकीक्रियाओंकेमध्यकिसीक्रियाको करकेशरीरछूटजाय तोभीवहविद्वानशोकभयादिकदुःखोंसे छूटके ब्रह्मलोकअर्थात परमेश्वरकोप्राप्ति अथवाउत्तमस्वर्गकोप्राप्तिउसे होताहै।२० वनेषुचविहृत्यैवंतृतीयंभागमायुषः।चतुर्थमायुषोभागं त्यक्त्वासंगान्परिव्रजेत् ॥२१॥ म० इसप्रकारसेवानप्रस्थाश्रमकोय-थावत् आयुकेतीसरेभागकोसमाप्तिपर्यन्त वनोंमेंविहारकरकेजब आयुकाचतुर्थभाग अर्थात७०सत्तरवर्षकेऊपर आयुकेचतुर्थभाग मेंसबसंगोंका अर्थातस्त्रीयज्ञोपवीत शिखादिककोछोड़के परिव्राट् अर्थातसबदेशान्तरमेंभ्रमणकरैकिसीपदार्थमेंमोहवापक्षपातकभी नकरै वहस्त्रीअपनेपुत्रोंकेपासचलीजाय अथवावनमेंतपश्चर्याकरै ॥ २१ ॥ इसमेंकोईशंकाकरै कियज्ञोपवीतादिकचिन्होंकेछोड़नेसे क्याहोताहै अर्थातइनकोनछोड़नाचाहिये उत्तर अच्छायज्ञोप-वीतादिकचिन्होंकेरखनेसेक्याहोताहै पूर्वपक्षयज्ञोपवीतादिकोंसे द्विजदेखपड़ताहै औरविद्याकेचिन्हसे विद्याकोपरीक्षाभीहोतीहै उत्तर किजबसंसारकेव्यवहार औरअग्निहोत्रादिक बाह्यक्रियां जिनमेंउपवीतिनिवीति औरप्राचीनावीति यज्ञोपवीतसेक्रियाक-रनीहोतीहैं उनअग्निहोत्र बाह्यक्रियाओंकोतोछोड़दिया और कहींप्रतिष्ठाविद्यासेकरानीउसकीनहीं फिरयज्ञोपवीतादिकका रखनाउसकोव्यर्थहीहै इसमेंयहप्रमाणहै। प्राजापत्यांनिरूप्येष्टिं तस्यांसर्ववेदसंहुत्वाब्राह्मणःप्रव्रजेत्॥ यहयजुर्वेदकेब्राह्मणकीश्रुति है इसकायहअभिप्रायहै किप्राजापत्यइष्टिकोकरकेउसमें सर्ववेद सवेदसविहलाभे ओ२मयज्ञोपवीतादिक बाह्यचिन्हप्राप्तहुयेथे उन

सभोंको छुत्वानामसंन्यास अर्थात छोड़केब्राह्मणविद्वान्‌ नज्ञानतया वैराग्यइत्यादिकगुणवालापरिव्रजेत्‌ परित:सर्वत:व्रजेत्‌ सबसंसार केबन्धनोंसेमुक्तहोकेसन्यासीहोजाय। लोकैषणायाश्चवित्तैषणायाश्च पुत्रैषणायाश्चोत्थायाथभिक्षाचर्यंचरति। यहबृहदारण्यकउपनिषद्कीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहै किलोकैषणाअर्थातलोककोजननिन्दाकरैवास्तुतिकरै औरप्रतिष्ठाकरैतोभीजिसकेचित्तमेंकुछहर्षऔरशोकहोय औरजितनेलोककेविषयभोगहैं, स्त्रीधनहस्त्यश्वचन्दनादिक इनसेउठकेअर्थातइनकोतुच्छजानकेजसेवेहर्षशोककेदेनेवालेहैं वैसेयथावतसमझके सत्यधर्मऔरमुक्ति अर्थात सबदु:खोंकीनिवृत्ति औरपरमेश्वरकीप्राप्तिइनमेंस्थिरहोकेआनन्दमेंरहै औरकिसीकापक्षपातअथवाकिसीसभयकभीनकरै वित्तैषणाअर्थातधनकीइच्छा औरधनकीप्राप्तिमेंप्रयत्नऔरलोभकिसुझकोधनअधिकहोय औरजितनेधनाढ्यहैं उनसेधन प्राप्तिकेवास्ते बहुतप्रीतिकरै द्रव्यकोबड़ापदार्थजानकेसंचयकरना औरदरिद्रोंसेधनकेनहीं होनेसेप्रीतिकानकरना औरधनाढ्यों की स्तुति न करना इनसबबातोंकाजोछोड़ना उसकानामवित्तैषणाकात्याग है पुत्रैषणाअर्थातअपनेपुत्रोंमेंमोहकाकरना वाजेसेवकलोगहैं उनसेमोह अर्थात प्रीति करना और उनके सुखमें हर्षका होना और उनकेदु:खमें शोककाहोना उसका पुत्रैषणानामहै एषणानामइच्छाकातीनपदार्थोंमेंहोना इनतीनोंएषणाओंसे जोबहुनहीहै वहीसन्यासीहोताहै औरपक्षपातरहितभीसन्यासीयथावत्‌होताहै क्योंकिजितनेब्रह्मचारी,गृहस्थऔरवानप्रस्थहैं उनकोबहुत व्यवहारोंकेहोनेसे बुद्धिमानहोय तोभीभय,शंका औरलज्जाकुछ किसीव्यवहारमेंरहतीहीहै औरजोसन्यासीहोताहै उसकोकिसी संसार सबन्धीव्यवहारकाकरना आवश्यकनहीं वाकिसीमनुष्यसे शंका,लज्जा,भय औरपक्षपातकभीनहीहोता। आश्रमादाश्रमंगत्वाहुतहोमोजितेन्द्रिय:। भिक्षावलिपरिश्रान्त: प्रव्रजन्प्रेत्यव-

ईते॥ २२ ॥ भा० आश्रमसेआश्रमकोजाकेअर्थातक्रमसेब्रह्मचर्या-
श्रमादिकतीनोंकोकरके यथावत् अग्निहोत्रादिक यज्ञोंकोकरके
जितेन्द्रियजबहोजाय भिक्षादेदेऔरबलीअर्थातबलीवैश्वदेवकरके
परिश्रान्तअत्यन्तश्रमयुक्तजबहोय तबसन्यासलेतोउसका सन्यास
यथावत्बढ़ताजायखंडितनहोय ॥ २२ ॥ ऋणानित्रीण्यपाकृत्यम-
नोमोक्षेनिवेशयेत्। अनपाकृत्यमोक्षन्तुसेवमानोव्रजत्यधः॥ २३ ॥
भा० तीनऋणअर्थातऋषिपितृऔरदेवऋण इनकोकरके मोक्षके
वास्तेसन्यासमेंचित्तप्रविष्टकरै औरइनतीनोंकोनकरकेजोसन्यास
कोइच्छाकरताहै सोनीचेगिरपड़ताहै उसकोमोक्षनहीप्राप्तहोता
२३॥ वेकौनतीनऋणहैं अधीत्यविधिवद्वेदान्पुत्रानुत्पाद्यधर्मतः।
इष्ट्वाचशक्तितोयज्ञैर्मनोमोक्षेनिवेशयेत्॥ २४॥ भा० विधिवत्अर्था-
तउक्तप्रकारसे ब्रह्मचर्याश्रमकोकरके सबवेदोंकोपढ़ै अर्थसहित
औरअङ्गउपवेद औरछःशास्त्रसहितपढ़ै फिरपढ़केयथावत्पढ़ावै,
क्योंकिविद्याकालोपइसप्रकारसेकभीनहोगा यहप्रथमऋषिऋण
है इसमें जपऔरसंध्योपासनभीजानलेना सबमनुष्योंकेऊपरयह
परमेश्वरकीआज्ञाहै किब्रह्मचर्याश्रमसेविद्याओंकोपढ़नाऔरप-
ढ़ाना इसकेबिनासबआश्रमनष्टहैं जैसेकिमूलकेबिना वृक्षनष्टहो
जाताहै उक्तप्रकारसेपुत्रोंकोशिक्षा धर्मकीविद्यापढ़ने औरपढ़ाने
कोकरै अपनीकन्याअथवाअपनापुत्र विद्याकेबिनाकभीनरहै सब
श्रेष्ठगुणवालेहोवैंऐसाकर्ममातापिताकोकरनाउचितहै औरजो
अपनेसन्तानोंकोश्रेष्ठगुणवालेनकरेंगे तोउनमातापिताओंनेबा-
लककोजैसामारडाला फिरमारनातोअच्छा परन्तुमूर्खरखना
अच्छानहीं इसीमेंउक्तप्रकारसेतर्पण औरश्राद्धभीजानलेना यह
दूसरापितृऋणहै फिरगृहाश्रममेंयथावत्अग्निहोत्रादिकोंकाअ-
नुष्ठानकरै जिस्सेकिसबसंसारकाउपकारहोय इस्से उसकाभीबड़ा
उपकारहै अर्थातपुण्यसेसुखपाताहै सोइनतीनऋणोंकोउतारके
मोक्षअर्थातसन्यासकरनेमेंचित्तदेवै अन्यथानहीं॥ २४ ॥ अनधी-

त्यद्द्विजोवेदानुत्पाद्यतथासुतान्। अनिष्ट्वाचैवयज्ञैश्चमोक्षमिच्छन्-व्रजत्यधः॥ २५॥ भ० द्विजअर्थात ब्राह्मणक्षत्रियऔरवैश्यवेदोंकोन पढ़के यथावतधर्मोंसे पुत्रोंकाउत्पादनभीनकरैं अग्निहोत्रादिक यज्ञभीनकरैं फिरजोमोक्षअर्थात्सन्यासकीइच्छाकरै सन्यासतो उसकानहोगाकिन्तुसंसारहीमेंगिरपड़ेगा॥ २५॥ एकबाततोस-न्यासकेक्रमकीहोगई दूसरीयहबातहैकि प्राजापत्यांनिरूप्येष्टिंस-र्ववेदसदक्षिणाम्। आत्मन्यग्नीन्समारोप्य ब्राह्मणःप्रव्रजेगृहात्॥ २६॥ भ० प्राजापत्यइष्टिकासबयथावत्निरूपणकरके उसमेंसर्व-वेदसअर्थातयज्ञोपवीतादिकजितनेचिन्हप्राप्तभयेथे उनकोदक्षिणा मेंदेकेऔरपूर्वोक्तपांचअग्नियोंकोआत्मामेंसमारोपणकरकेब्राह्म-णअर्थातविद्वानवानप्रस्थकोभीनकरै अर्थात्गृहाश्रमहीसेसन्यास लेलेवै॥ २६॥ योदत्वासर्वभूतेभ्यःप्रव्रजत्यभयंगृहात्। तस्यतेजोम-यालोकाभवन्तिब्रह्मवादिनः॥ २७॥ भ० जोसबभूतोंकोअभयदान अर्थात ब्रह्मविद्यादानदेके घरसेहीसन्यास लेताहै तिसको तेजो-मयलोकप्राप्तहोताहै अर्थातपरमेश्वरहीप्राप्तहोतेहैं फिरकभीज-न्ममरणमेंवहपुरुषनहीआता सदाआनन्दमेंहीपरमेश्वरको प्राप्त होकेरहताहै॥२७॥ आगारादभिनिष्क्रान्तःपवित्रोपचितोमुनिः। समयोढेषुकामेषुनिरपेक्षःपरिव्रजेत्॥ २८॥ भ० आगारअर्थात ब्रह्मचर्याश्रमसेभीसन्यासलेले परंतुअभिनिष्क्रान्तजबअन्तर्मुखमन होजाय किविषयसेवाकी इच्छाथोड़ीभीनहोय औरपवित्रगुणोंसे अर्थात शमदमादिकोंसे उपचित नाम जबयुक्त होय और मुनि अर्थात मनन शील सत्य२ विचार वाला होय और सब कामों कोजीतले कोईकामउसकेमनको अधर्ममेंनलगासके स्थिरचित्त होय निरपेक्षकिसीसंसारकेपदार्थकी सिवायपरमेश्वरकीप्राप्तिकी अपेक्षानहो यतबब्रह्मचर्याश्रमसेभीसन्यासलेवैतोभीकुछदोषनहीं २८॥ इसमेंश्रुतियोंकाभीप्रमाणहै यदहरेवविरजेततदहरेवप्रा-व्रजेद्वनाद्वागृहाद्वा १ ब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेत् २॥ यहयजुर्वेदकेब्राह्मण

कोष्ठ तिष्ठै इसकायहअभिप्रायहैकिजिसदिनपूर्णवैराग्यहोय उसी दिन सन्यासीहोजाय वानप्रस्थाश्रम अथवा गृहाश्रमसे औरजब पूर्णविद्याऔरपूर्णवैराग्यऔरपूर्णज्ञान, औरविषयभोगकीइच्छा कुछभीनहोय तोब्रह्मचर्याश्रमसेहीसन्यासलेलेवैतोभीकुछदोषन- नीं पूर्वपक्षयहबातपरमेश्वरकीआज्ञासेविरुद्धहै क्योंकिपरमेश्वर काअभिप्रायप्रजाकीवृद्धिकरनेमेंजानाजाताहै औरप्रजाकीहानिमें नहीं जोकोईसन्यासलेगा सोविवाहनकरेगा इस्से संसारकीवृद्धि नहोगी इसवास्ते सन्यासकालेनाउचितनहीं जबतकजियेतबतक गृहाश्रममें रहकेसंसारकेव्यवहार औरशिल्पविद्याओंकोउन्नति करै इस्से सन्यासकाकरना उचितनहीं किन्तु ब्रह्मचर्याश्रमसेवि- द्यापढ़केगृहाश्रमहीमेंरहनाउचितहै उत्तरपक्षऐसाकहनाउचि तनहींक्योंकिब्रह्मचर्याश्रमनहोगातोविद्याकीउन्नतिनहोगी और गृहाश्रमनकरनेसे आगेमनुष्यकीउत्पत्ति संसारकाव्यवहारयेसब नष्टहोजांयगे औरवानप्रस्थके नहोनेसे मनभी शुद्धनहोगा और सन्यासकेनहोनेसे सत्यविद्या औरसत्योपदेशकी उन्नति नहोगी पाखंडऔरअधर्मका खण्डनभीनहोगा इस्से संसारको उन्नतिका नाशहोगा क्योंकिज्ञानकीवृद्धिहोनेसे सबसुखोंकीवृद्धिहोतीहै अ- न्यथानहीं इसमेंदेखनाचाहिएकिब्रह्मचारीकोपढ़नेसेरातदिनअ- वकाशहीनहीरहताऔरगृहस्थकोभीबहुतव्यवहारकेहोनेसेचित्त फसाहीरहताहै औरवानप्रस्थकातपहीमेंचित्तरहताहै औरकुछ विचारभीकर्ताहै जोसन्यासीहोगा वह विचारकेविना अन्यव्यव- हारहीनरहेगा इस्से पृथ्वीमेलेकेपरमेश्वरपर्यन्तपदार्थोंकायथा- र्थविचारकरकेऔरोंकोभीउपदेशकरेगा सबदेशोंमेंभ्रमणकरेगा इस्से सबदेशोंकेमनुष्योंकोउसकेसंग औरसत्यउपदेशके सुननेसेब- ड़ालाभहोगा जोगृहस्थहोगा उसकाजहां २घरहै वहां २ प्रायः रहेगाअन्यत्रभ्रमणनकरसकेगा इस्से सन्यासकाहोनाभीउचितहै परमेश्वरन्यायकारीहै औरविद्याकीउन्नतिभीचाहताहै जिसको

विषयभोगकीइच्छानहोगी उसकोपरमेश्वरकैसेआज्ञादेगें कितू विवाहकर जैसेकिकोईपुरुषको रोगकुछनहीं उससे वैद्यकहै कितू कुछऔषधखा वहऔषधक्योंखायगा औरजिसकोभोजनकरनेकी इच्छानहोय उसकोकोईबलसे कहेकितू अवश्यभोजनकर तोवह विनाक्षुधाकेभोजनकैसेकरेगाकिन्तु कभीनकरेगा ऐसेहोजिसको विषयभोग औरसंसारकेव्यवहारोंकीइच्छानहीं वहविवाह और संसारकेव्यवहारकैसेकरेगा कभीनकरेगा संसारकेजनोंमेकुछप्रयोजन न होने से सबके मुख पर सत्यही कहेगा अपने सामने जैसा राजा वैसोही प्रजा को समुझेगा इसवास्ते जिस पुरुषको विद्या, ज्ञान, वैराग्य, पूर्णजितेन्द्रियता होय और विषय भोग कीइच्छानहोय उसीको सन्यासलेना उचितहै अन्यको नहीं जैसे किआजकालआर्य्यावर्त्तदेशमेंबहुतसंप्रदायीलोगहोगयेहैंवेकेवल धूर्त्तासेपरायाधनहरणकरलेतेहैं औरपराईस्त्रीकोभ्रष्टकरदेते हैं औरमूर्खतातथापक्षपातकेहोनेसे मिथ्याउपदेशकरके मनुष्यों कीबुद्धिनष्टकरदेतेहैंऔरअधर्ममेंप्रवृत्तकरादेतेहैंइस्सेइनकातोबन्दहीहोनाउचितहै क्योंकिइनकेहोनेसेसंसारकाबहुतअनुपकार होताहै॥ कपालंवृक्षमूलानिकुचैलमसहायता। समताचैवसर्वस्मिन्नेतन्मुक्तस्यलक्षणम्॥ २९॥ भ० कपालअर्थातभिक्षापात्रवृक्षके जड़मेंनिवास औरकुत्सितवस्त्र औरसबकेऊपरसमबुद्धि नकिसीमे प्रीति औरनकिसीसेवैर यहमुक्तपुरुष अर्थातसन्यासीका लक्षण है॥ २९॥ नाभिनन्देतमरणंनाभिनन्देतजीवितम। कालमेवप्रतीक्षेतनिर्द्देशंभृतकोयथा॥ ३०॥ भ० जोसन्यासीहोयसोमरने औरजीनेमेंशोकवाहर्षनकरै किन्तु कालकोप्रतीक्षाकियाकरै जब मरणसमयआवैतबशरीरछोड़दे शरीरसेमोहकुछनकरै जैसाकि छोटानौकरस्वामीकीआज्ञाजबहोतीहै तभीवहकामकरनेलगता है जहांकहैवहांचलाजाताहै औरसन्यासीकिसीपदार्थसे सिवाय परमेश्वरकेमोहवाप्रीतिनकरै॥ ३०॥ दृष्टिपूतंन्यसेत्पादंवस्त्रपूतंज-

लंपिबेत्। सत्यपूतांबदेद्वाचंमनःपूतंसमाचरेत्॥ ३१॥ भ० इसका अर्थतो पहिलेकरदियाहै परन्तु सन्यासधर्मकेप्रकर्णमें लिखनेका यहप्रयोजनहै किबहुतलोगकहतेहैं किसन्यासीकिसीकोउपदेशन करै इनसेपूछनाचाहिएकि सत्यपूतांवदेद्वाक्यं सत्यअर्थातप्रमाण औरबिचारसे यथावत निश्चयकरके सत्यउपदेशकरै सबबिद्यासे जोपूर्ण बिद्वान् सन्यासी सोतो उपदेश न करै और जितने पाखण्डी मूर्खलोग हैंवे उपदेश करैं तभीतो संसार का सत्यानाश होताहै जितनेमूर्खपाखण्डी उनकातो ऐसाप्रबन्धकरनाचाहिए कि वेउपदेशहीनकरनेपावैं औरजितने बिद्वानसन्यासी लोगहैं वे सदाउपदेशकियाकरैं अन्यकोईनहीं अन्यथामूर्खपाखण्डियोंकेउपदेशसेदेशकानाशहोताहै जैसेकिआजकालआर्यावर्त्त देशकीअवस्थाभईहै ॥ ३१ ॥ क्रुध्यन्तंप्रतिनक्रुध्येदाक्रुष्टःकुशलंवदेत्। सप्तद्वारावकीर्णाञ्चनवाचमनृतांवदेत्॥ ३२॥ भ० जोकोईक्रोधकरै उससे सन्यासीक्रोधनकरै औरकोईनिन्दाकरैउसकोभीकल्याणका उपदेशकरै किञ्चसप्तद्वारमुखनासिकाकेदोछिद्रदोछिद्रआंखके औरकानकेइनसातद्वारोंमेंजोवाणीबिखररहीहै उससेमिथ्याकभी नकहै अर्थातसन्यासीसदासत्यहीबोलै॥ ३२॥ क्लृप्तकेशनखश्मश्रुःपात्रीदण्डीकुसुम्भवान्। बिचरेन्नियतोनित्यं सर्वभूतान्यपीड़यन् ॥ ३३॥ भ० केशसिरकेसबबालनखऔरश्मश्रु अर्थातदाढ़ीमोंछइनकोकभीनरक्खै अर्थातछेदनकरादेवैपात्रीएकहीपात्ररक्खै और एकही दंड रक्खै इससे तीनदण्डोंका धारना पाखण्डही है जैसाकिचक्रांकितोंका कुसुंवा रंगसेरंगेबस्त्रपहिरैं औरगेरूवाम्रत्तिकाकेरंगेनहीं अथवाश्वेतबस्त्रधारणकरैं निश्चयबुद्धिहोकेसबभूतोंसेरागद्वेषछोड़केअपनेब्रह्मानन्दमेंबिचरै॥ ३३॥ एककालंचरेद्भैक्षंनप्रसज्जेतविस्तरे। भैक्षेप्रसक्तोहियतिर्बिषयेष्वपिसज्जति॥ ३४॥ एकबेरभिक्षाकरै अत्यन्तभिक्षामेंआसक्तनहोय क्योंकिजो भोजनमेंआसक्तहोगा सोविषयमेंभीआसक्तहोगा॥ ३४॥ विधूमे-

सन्नमुसलेव्यङ्गारेभुक्तवज्जने। वृत्ते शरावसंपाते भिक्षांनित्यंयतिश्चरेत्॥ ३५॥ भ० जबगांवमेंधूम नदेखपड़े मूसलवा चक्कीकाशब्दनसुनपड़े किसोकेघरमेंअंगारनदेखपड़े सबगृहस्थलोगभोजन करचुकें औरभोजनकरके पत्तोंऔरसकोरेबाहरकोफेंकदेवें उस समयसन्यासीगृहस्थलोगोंकेघरमें भिक्षाकेवास्ते नित्यजांय और जोऐसाकहतेहैंकिहमपहिलेहीभिक्षाकरेंगे यहउनकापाखंडही जानना क्योंकिगृहस्थलोगोंकोपीड़ाहोतीहै औरजोविरक्तहोके बैरागीआदिकअपनेहाथमेंलेकेकरतेहैं वेबड़ेपाखण्डीहैं॥ ३५॥ अलाभेनविषादीस्यात् लाभेचैवनहर्षयेत्। प्राणयात्रिकमात्रःस्यात्मात्रासंगाद्विनिर्गतः॥ ३६॥ भ० जबभिक्षाकालाभनहोयतबविषादनकरै औरलाभमेंहर्षनकरै प्राणरक्षणमात्र प्रयोजनरक्खै भिक्षामेंप्रसक्तनहोय औरविषयोंकेसंगोंसेपृथकरहै॥ ३६॥ अभिपूजितलाभांस्तु जुगुप्सेतैवसर्वशः। अभिपूजितलाभैश्चयतिर्मुक्तोपिबध्यते॥ ३७॥ भ० अत्यन्तश्रेष्ठपदार्थ स्तुत्यादिकउनकी निंदाहीकरै क्योंकिस्तुत्यादिक बन्धनही करनेवाले हैं मुक्तभीहोयतो भी इनसे बद्धहीहोजाताहै॥ ३७॥ अल्पान्नाभ्यवहारेण रहःस्थानासनेनच। ह्रियमाणानिविषयैरिन्द्रियाणिनिवर्तयेत्॥ ३८॥ इन्द्रियाणिनिरोधेनरागद्वेषक्षयेणच। अहिंसयाचभूतानाम् मृतत्वायकल्पते॥ ३९॥ भ० इन्द्रियोंकानिरोधरागद्वेषऔरअहिंसा इनचारोंकाजोत्यागकर्ताहै सोईमोक्षकाअधिकारीहोताहै अन्य कोईनहीं॥ ३९॥ दूषितोपिचरेद्धर्मं यत्रतत्राश्रमेरतः। समसर्वेषुभूतेषुनलिंगंधर्मकारणम्॥ ४०॥ भ० जिसकिसीआश्रममेंदोषयुक्तपुरुषभीहोय परन्तुधर्महीकोकरै औरसबभूतोंमेंसमबुद्धि अर्थात रागद्वेषरहितहोय सोईपुरुषश्रेष्ठहै जितनेबाह्यचिन्हहैं यज्ञोपवीतदंड दोनोंकोधारणकरैऔरधर्मनकरैतो धारणमात्रहीसेकुछनहीहोसक्ता औरतिलक,छापा,मालायेतो सबपाखण्डोंहीकेचिन्हहैं इनकोतोकभीनधारनाचाहिये॥ ४०॥ फलंकतकवृक्ष-

स्वयद्यप्यंबुप्रसादकम्। ननामगृहणादेवतस्यवारिप्रसीदति ४१।
भ० यद्यपिकतकनामनिर्मलीवृक्षकाफल जलकोशुद्धकरनेवालाहै
सोजबउसकोपीसकेजलमेंडालै तबतोजलशुद्धहोजाताहै औरजो
पीसकेनडालै कतकवृक्षस्यफलायनमः ऐसा माला लेकेजप कि
याकरै वाउसकानाम जलकेपासलिखाकरै, उस्से जलकभीनशुद्ध
होगावैसेहीनाममात्रसेकुछनहींहोताजबतकधर्मनहींकरता ४१
प्राणायामाब्राह्मणस्य त्रयोपिविधिवत्कृताः। व्याहृतिप्रणवैर्युक्ता-
विज्ञेयंपरमंतपः ॥४२॥ भ० ओमभूः,ओम्भुवः,ओम्स्वः,ओम्
महः,ओम्जनः,ओम्तपः,ओम्सत्यं इसमन्त्रकाहृदयमेउच्चारण
करै पूर्वोक्तरीतिसे तीनबारभीप्राणोंका निग्रहकरै तोभी उसस-
न्यासीकापरमतपजानना॥ ४२ ॥दह्यन्तेध्यायमानानांधातूनां-
हियथामलाः। तथेन्द्रियाणांदह्यन्ते दोषाःप्राणस्यनिग्रहात् ४३॥
भ० जैसेसुवर्णादिकधातुओंको अग्निमेंतपानेसेमैलनष्टहोजाताहै
वैसेहीप्राणकेनिग्रहसेइन्द्रियोंकेमलभस्महोजातेहैं।४४॥ प्राणा-
यामैर्दहेद्दोषान्धारणाभिश्चकिल्बिषम्। प्रत्याहारेणसंसर्गान्ध्या-
नेनानीश्वरान्गुणान्॥४५ ॥ भ० प्राणायामोंसेसबइन्द्रियऔरश-
रीरकेदोषोंकोभस्मकरदे औरधारणयोगशास्त्रकोरीतिसेकरै उस्से
विरागऔरद्वेषजोहृदयमेंपापउसकोछोड़ादे प्रत्याहारसेइन्द्रियों-
काविषयोंसेनिरोधकरकेसबदोषोंकोजीतले औरध्यानसेअल्पज्ञा-
दिकअनीश्वरके जितनेगुणउनकोछोड़ादे अर्थातसर्वज्ञादिकगुण
सम्पादनकरै॥४५॥ उच्चावचेषुभूतेषुदुर्ज्ञेयामकृतात्मभिः। ध्यान
योगेनसंपश्येद्गतिमस्यांतरात्मनः॥४६॥ भ० स्थूलऔरसूक्ष्मउ-
नमेंजोपरमेश्वरव्याप्तहै औरअपनेशरीरमेंजोअपनाआत्मा और
परपरमात्माउनकोजोगतिनामज्ञान उसकोसमाधिसेसम्यकदेख
ले जोदुष्टलोगोंकोदेखनेमेंकभीनहीआती॥४६॥ सम्यक्दर्शनस-
म्पन्नःकर्मभिर्ननिबध्यते। दर्शनेनविहीनस्तु संसारंप्रतिपद्यते॥
४७॥ भ० जबसन्यासीसम्यकज्ञानसेसम्पन्नहोताहै तबकर्मोंसेबद्ध

नहींहोता औरजोज्ञानसेहीनसन्यासीहै सोमोक्षकोतोनहींप्राप्त होता किन्तु संसारहीमेंगिरपड़ताहै ॥ ४७ ॥ अहिंसयेन्द्रियासंगैर्वैदिकैश्चैवकर्मभिः। तपसश्चरणैश्चोग्रैःसाधयन्तीहतत्पदम्॥४८॥ म० वैरइन्द्रियोंसेविषयोंकाअसंगवैदिककर्मकाकरना अत्यन्तउग्र तपइन्होंसेमोक्षपदकोसिद्धलोगप्राप्तहोतेहैंअन्यथानहीं ॥४८॥ अस्थिस्थूणंस्नायुयुतं मांसशोणितलेपनम्। चर्मावनद्धं दुर्गन्धिपूर्णं मूत्रपुरीषयोः॥ ४९ ॥ म० जराशोकसमाविष्टं रोगायतनमातुरम्। रजस्वलमनित्यं चभूतावासमिमंत्यजेत्॥५०॥ म० हाड़जिसकाखंभाहै नाड़ियोंसेबांधाभयामांस, औररुधिरका ऊपरलेपन चामसेढपाहुवादुर्गन्धमूतऔरविष्टासेपूर्ण॥ ४९ ॥ जराऔरशोकसेयुक्तरोगकाघरक्षुधातृषादिकपीड़ाओंसे नित्यआतुरऔरनित्यहीरजस्वलअर्थातजैसीरजस्वलास्त्रीनित्यजिसकीस्थितिनहीं और सबभूतोंकानिवास ऐसाजोयहदेह इसकोसन्यासी योगाभ्याससे छोड़दे ॥ ५० ॥ नदीकूलंयथावृक्षो वृक्षंवाशकुनिर्यथा। तथात्यजन्निमंदेहं कृच्छ्राद्ग्राहाद्विमुच्यते॥५१॥ म० जैसेवृक्षजबनदीकेतट सेजलमेंगिरकेचलाजाय वैसेहीसमाधियोगसेइसकोछोड़ै तबबड़ा भारी जन्म मरण रूप संसार के सब दुःख स छूटके मुक्त हो जाय॥ ५१ ॥ प्रियेषुस्वेषुसुकृतमप्रियेषुचदुष्कृतम्। विसृज्यध्यानयोगेनब्रह्माभ्येतिपरंपदम्॥ ५२ ॥ म० जितनेअपनीसेवाकरने वालेउनमेंध्यानयोगसेसबपुण्यकोछोड़दे औरदुःखदेनेंवालेपुरुषोंमेंसबपापोंकोछोड़दे इससे पापपुण्यरहितअबशुद्धहोताहै तबसनातनपरमोत्कृष्टब्रह्मउसकोप्राप्तहोताहै फिरकभीदुःखसागरमेंनहीं आता॥५२॥ यदाभावेनभवतिसर्वभावेषुनिस्पृहः। तदासुखमवाप्नोतिप्रेत्यचेहचशाश्वतम्॥ ५३ ॥ म० जबसबप्रकारसेसन्यासी काअन्तःकरण औरआत्मशुद्धहोजाताहै, उसकायहलक्षणहै कि किसीपदार्थमें मोहनहींहोता तबवहपुरुषजीताभयाऔरमृत्युहोकेनिरन्तरब्रह्म सुखउसकोप्राप्तहोताहै अन्यथानहीं॥ ५३ ॥ अ-

नेनविधिनासर्वांस्त्यक्त्वासंगान्शनैःशनैः। सर्वद्वन्द्वविनिर्मुक्तोब्रह्मण्येवावतिष्ठते॥ ५४॥ भ० इसविधिसेंजितनेदेहादिक अनित्यपदार्थहैं इनकोधीरे २ छोड़ औरहर्ष, शोक, सुख, दुःख, शीत, उष्ण रागद्वेष, जन्ममरणादिकसबद्वन्द्वोंसेछूटकेजोताभया अथवाशरीर छोड़केब्रह्महीमेंसदारहताहै फिरदुःखसागरमेंकभीनहींगिरता क्योंकि पूर्व सबदुःखों कोभोगसे अनुभव किया है फिरबड़े भाग्य और अत्यन्तपरिश्रमसेपरमेश्वरकीप्राप्तिभई क्यावहमूर्खहै किपरमानन्दकोछोड़केफिरदुःखमेंगिरैकभीनगिरेगा॥ ५४॥ ध्यानिकं सर्वमेवैतद्यदेतदभिशब्दितम्। नह्यनध्यात्मवित्कश्चित्क्रियाफलमुपाश्नुते॥ ५५। भ० सन्यासकायहीमार्गहै किनित्यध्यानावस्थित होके एकान्तमेंसबपदार्थोंकायथावतज्ञानकरना सोइसप्रकरण मेंसबध्यानकनामभात्रसेकहदिया परन्तु इसकायथावतविधानपातञ्जलदर्शनमेंलिखाहै वहांसबदेखलेवें अन्यथासिद्धकभीनहोगा क्योंकिप्राणायामादिकअध्यात्मविद्याजोकोईनहींजानता उसको सन्यासग्रहणका कुछफलनहींहोता उसकासन्यासग्रहणहीव्यर्थ है॥ ५५॥ अधियज्ञंब्रह्मजपेदधिदैविकमेवच। आध्यात्मिकञ्चसततंवेदान्ताभिहितंचयत्॥ ५६॥ भ० अधियज्ञब्रह्मजोओंकारउसकाजपउसकाअर्थजोपरमेश्वरउसमेंनित्यचित्तलगावै औरअधिदैविकइन्द्रियांऔरअन्तःकरणउसकेदिशादिकदेवताओंचादिकों केउनकाजोपरस्परसंबंधउसकोयोगसेसाक्षात्करै औरअध्यात्मिक जीवात्मा औरपरमात्माका यथावतज्ञान औरप्राणादिकोंकानिग्रहइसकोयथावतकरै तबउसपुरुषकामोक्षहोसक्ताहै अन्यथानहीं॥ ५६॥ एषधर्मोऽनुशिष्टो वोयतीनांनियतात्मनाम्। वेदसन्यासिकानांतुकर्मयोगंनिबोधत॥ ५७॥ भ० मुख्य सन्यासीनियतात्मानामजिनकाआत्मास्थिरशुद्धहोगयाहै उनकाधर्मऋषिलोग सेमनुजीकहतेहैं मैंनेकहदिया औरजोवेदसन्यासिकअर्थातगौण सन्यासीउसकाकर्मयोगमुझसेआपसुनलेवें॥ ५७॥ ब्रह्मचारीगृ-

हस्थस्त्वानप्रस्थोयतिस्तथा । एतेगृहस्थप्रभवाश्चत्वारःपृथगाश्रमाः
॥ ५८ ॥ म० ब्रह्मचारीगृहस्थवानप्रस्थऔरसन्यासी येचारोंगृह-
स्थाश्रमसेउत्पन्नहोतेहैं, पृथक२क्योंकिगृहाश्रमनहोय तोमनुष्य
कीउत्पत्तिहीनहोय फिरब्रह्मचर्यादिक आश्रमकभीनहोंगे इस्से
उत्पत्तितथासबआश्रमोंकाअन्नवस्त्रस्थान औरधनादिकदानोंसेगृ-
हस्थलोगहीपालनकर्त्तेहैं इनदोबातोंमेंगृहस्थहीमुख्यहैं विद्याग्र-
हणमेंब्रह्मचारीतपमेंवानप्रस्थविचारयोगऔरज्ञानमेंसन्यासीश्रे
ष्ठहै ॥ ५८ ॥ सर्वेपिक्रमशस्त्वेतेयथाशास्त्रंनिषेविता । यथोक्तका-
रिणंविप्रंनयन्तिपरमाङ्गतिम् ॥ ५९ ॥ म० सबआश्रमीयथावत्
शास्त्रोक्तक्रमजोधर्माचरणउस्सेचलनेवालेपुरुषोंकोवेआश्रमोंकेजि-
तनेव्यवहारश्रेष्ठहैं उनसेसबआश्रमीलोगमोक्षपासकतेहैं परन्तु
बाहरदेखनेमात्रभेदरहैगा उनकाभीतरव्यवहारसन्यासवत एक
हीहोगा ॥ ५९ ॥ चतुर्भिरपिचैवैतैर्नित्यमाश्रमिभिर्द्विजैः । दशल-
क्षणकोधर्मःसेवितव्यःप्रयत्नतः ॥ ६० ॥ म० ब्रह्मचारीआदिकसब
आश्रमीलक्षणहैजिसधर्मकेउसधर्मकानित्यसेवनकरैं वे लक्षणये
हैं ॥ ६० ॥ धृतिःक्षमादमोऽस्तेयंशौचमिन्द्रियनिग्रहः । धीर्विद्या-
सत्यमक्रोधोदशकंधर्मलक्षणम् ॥ ६१ ॥ म० धर्महैनामन्यायकान्या
यहैनामपक्षपातकाछोड़ना उसकापहिलालक्षणअहिंसाकिसीसे
वैरनकरनादूसरालक्षणधृतिकिअधर्मसेचक्रवर्तीराज्यभीमिलता
होय तोभीधर्मकोछोड़केचक्रवर्तीराज्यकाग्रहणनकरना तीसरा
लक्षणक्षमाकोईस्तुतिवानिन्दाअथवावैरकरैतोभीसबकोसहले प-
रन्तुधर्मकोनछोड़ै तथासुखदुःखादिकभीसबसहले परन्तुअधर्म
कभीनकरैदमनामचित्तसेअधर्मकरनकोइच्छानकरै इसकानाम
हैदमअस्तेयअर्थातचोरीकात्याग किसीकापदार्थआज्ञाकेविनाले
लेनाइसकानामचोरीहै इसकाजोसदात्यागउसकानामहैअस्तेय
शौचनामपवित्रतासदाशरीरवस्त्रस्थानअन्नपात्र औरजलतथाघृ-
तादिकशुद्धदेशमेंनिवासरागद्वेषादिककात्यागइसकानामशौचहै

इन्द्रियनिग्रह श्रोत्रादिक इन्द्रियों को अधर्म में कभी न जाने देना और इन्द्रियों को सदा धर्म में स्थिर रखना तथा पूर्वोक्त जितेन्द्रियता का करना इसका नाम इन्द्रियनिग्रह है सत्यशास्त्रपठन, सत्पुरुषों का संग योगाभ्यास सुविचार एकान्तसेवन परमेश्वर में विश्वास और परमेश्वर की प्रार्थना स्तुति और उपासना शील संतोष का धारण इन से सदा बुद्धि ही वृद्धि करनी इसका नाम धी है विद्या नाम पृथिवी से लेके परमेश्वरपर्यन्त पदार्थों का ज्ञान होना जो जैसा पदार्थ है उसको वैसा ही जानना उसका नाम विद्या है सत्य सदा भाषण करना पूर्वोक्त नियम से अक्रोध नाम क्रोध काम लोभ मोह शोक भयादिकों का त्याग उसका नाम अक्रोध का त्याग है इतने संक्षेप से धर्म के ग्यारह लक्षण लिख दिये परन्तु वेदादिक सत्य शास्त्रों में धर्म इत्यादिक सहस्रों लक्षण लिखे हैं जिसको इच्छा होय उन शास्त्रों में देख लेवे अब इसके आगे अधर्म के लक्षण लिखे जाते हैं अधर्म नाम अन्याय का अन्याय नाम पक्षपात का न छोड़ना इसके भी एकादश लक्षण हैं पहिला लक्षण अहिंसा अर्थात वैरबुद्धि का करना ॥ ६२ ॥ परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिन्तनम्। वितथाभिनिवेशश्च त्रिविधं कर्म मानसम् ॥ ६२ ॥ म० पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यमपि सर्वशः। असंबद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम् ॥ ६३ ॥ म० अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः। परदारोपसेवा च शारीरं त्रिविधं स्मृतम् ॥ ६४ ॥ म० परद्रव्यहरण करने की छल कपट और अन्याय से इच्छा यह दूसरा लक्षण अधर्म का है और तीसरा लक्षण पर का अनिष्टचिन्तन अन्य जीवों को दुःख देना अपना सुख चाहना चौथा वितथाभिनिवेश अर्थात मिथ्यानिश्चय जो जैसा पदार्थ है उसको वैसा न जानना किन्तु विपरीत ही जानना जैसे कि विद्या को अविद्या और अविद्या को विद्या जानना सत्य असत्य और श्रेष्ठ साधु इनको असत्य और अश्रेष्ठ असाधु जानना और पाषाणादिक मूर्त्ति और उनके पूजन से देवबुद्धि और मुक्ति का होना इत्यादिक मिथ्यानिश्चय से जान लेना ये तीन मन से अधर्म के लक्षण उत्पन्न होते हैं पारुष्य नाम कठोर वचन बो-

लना जैसेकिआगच्छकाणइत्यादिक इसकानामपारुष्यहै मिथ्या भाषणनामअसत्यकाबोलनादेखनेसुननेऔरहृदयसेविरुद्धबोलना उसकानामअसत्यभाषणहैपैशून्यनामचुगलीखानाजैसेकिकिसीने धनदेनेकोकहावादिया उसको राजाकेवाअन्यकेसमीपजाकेउसकी कार्यकोहानिकरनी औरउनकेसामनेउसकीनिन्दाकरनीअर्थात अन्यपुरुषकोप्रतिष्ठावासुखदेखकेहृदयसेबड़ादुःखितहोयफिरजहां तहांचुगलीखाताफिरै इसकानामपैशून्यहै असंबद्धप्रलापनामपू-र्वापरविरुद्धभाषणऔरप्रतिज्ञाकोहानि जैसेकिभागवतादिकऔर कौमुद्यादिकग्रन्थोंमें पूर्वापरविरुद्धऔरमिथ्याभाषणहैं इसकाना-मअसंबद्धप्रलापहै अदत्तानामुपादानं बिनाआज्ञासेपरपदार्थका ग्रहणकरना अर्थातचोरीविधानकेबिना हिंसानामपशुओंकाह-ननकरना अपनीइन्द्रियोंकीपुष्टकेवास्ते मांसकाखाना औरपशु-ओंकामारना यहराक्षसविधानहै औरयज्ञकेवास्ते जोपशुओंको हिंसाहैसोभीविधिपूर्वकहननहै औरजिनपशुओंसेसंसारकाउपका रहोताहै उनपशुओंकोकभीनमारनाचाहिए क्योंकिइनकोमा-रनेसे आगेपशुदूधऔर घीकी उत्पत्तिहो मारीजातीहै औरइ-न्होंसेसंसारका पालनहोताहै इससेपशुओंकी स्त्रियोंकोतो कभीन मारनाचाहिए औरजोइनपशुओंकोमारनाहै इसकानामअवि-धानसेहिंसाहै परदारोपसेवनपरस्त्रीगमन अर्थातवेश्या वा अन्य किसीकीस्त्रीकेसाथगमनकरनाऔरअन्यपुरुषोंकेसाथस्त्रीलोगोंका गमनकरनादोनोंकोतुल्यपापहै यएकादशअधर्मकेलक्षणकहदिये इनसेअन्यभी वेदादिकशास्त्रोंमें अभिमानादिक सहस्रों अधर्मके लक्षणलिखेहैं सोउनकेबिनापठनऔरअधर्मनजाननेमेंकभीज्ञान नहीहोसक्ता धर्मऔरअधर्मसबमनुष्योंकेवास्तेएकहीहैं इनमेंभेद नही जितनेभेदहैं वेसबभ्रमहीसेहैं क्योंकिसबका ईश्वरएकहीहै इससे उसकी आज्ञाभी सबकेवास्ते एकरसहीं निश्चित होनीचा-हिए किन्तु जोसत्यबातवाअसत्यबातहै सोतोसर्वत्रएकहीहोतीहै

उसीको जितने बुद्धिमान लोगजानतेहैं वेकिसी जालवा बन्धनमें नहींगिरते किन्तु धर्महीकरतेहैं औरअधर्मको छोड़देतेहैं यही बुद्धिमानोंकामार्गहै औरजितनेसंप्रदायजाल,पाखण्डहैं वेमूर्खोंहीकेहैं चारोंआश्रमवालेपुरुषधर्महीकासेवनकरैं अधर्मकाकभी नहीं॥ दशलक्षणकंधर्ममनुतिष्ठन्समाहितः। वेदान्तंविधिवच्छ्रुत्वासन्यासेदनृणोद्विजः॥ ६५॥ म० दशलक्षणऔरएकयोगशास्त्रकीरीतिसेएवंग्यारहलक्षणजिसधर्मकेलक्षणकहदिये उसधर्मका अनुष्ठानयथावत्करैं समाहितचित्तहोकेवेदान्तशास्त्रकोविधिवत् सुनके अनृणजोद्विजनामब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,येतीनविद्वानहोके यथाक्रमसेसन्यासग्रहणकरैं॥ ६५॥ सन्यस्यसर्वकर्माणि कर्मदोषानपानुदन्। नियतोवेदमभ्यस्यपुत्रैश्वर्येसुखंवसेत्॥ ६६॥ म० बाह्यजितनेकर्मउनकात्यागकरै औरआभ्यन्तरयोगाभ्यासादिकजितनेकर्मउनकोयथावतकरै इस्से सबकर्मदोषअर्थातअन्तःकरणकी मलिनतारागद्वेषइत्यादिकोंकोछोड़ादै निश्चितहोके वेदकाअभ्यासकदाकरै औरअपनेपुत्रोंसेअन्नवस्त्रशरीरनिर्वाहमात्रलेलेवै नगरकेसमीपएकान्तमेंजाकेवासकरै नित्यघरसेभोजन आच्छादन करै हानिवालाभमेंकुछदृष्टिनदेकिसीकाजन्मवामरणहोय घरमें तोभीकुछउसमेंमोहवाद्वेषनकरै अपनीमुक्तिकेसाधनमेंसदातत्पररहै॥ ६६॥ एवंसन्यस्यकर्माणि स्वकार्यपरमोस्पृहः। सन्यासेनापहत्यैनःप्राप्नोतिपरमाङ्गतिम्॥ ६७॥ म० इसप्रकारसेसबबाह्यकर्मोंकोछोड़दे स्वकार्यजोमुक्तिकाहोना अर्थातसबदुःखोंसेछूटकेपरमेश्वरकोप्राप्तहोना इसकार्यमेंतत्परहोय इस्से भिन्नपदार्थकीइच्छाकभीनकरै इसप्रकारकेसन्यासमे सबपापोंकानाशकरदे औरपरमगतिजोमोक्षउसकोप्राप्तहोजाय पूर्वपक्षसन्यासीधातुओंकास्पर्शकरैवानहींउत्तर अवश्यधातुओंकास्पर्शकविनाकिसीकानिर्वाहनहींहोसक्ता क्योंकिभूआदिकधातुओंकास्पशभाषावासंस्कृत बोलनेमेंनिश्चितहोकरेगा औरवियादिक७सातधातुओंकाभोस्प-

र्थ निश्चित होगा और सुवर्णादिक जितनी धातु हैं उनका भी स्पर्श होगा पूर्वपक्ष ॥ यतीनां कांचनं दद्यात्तांबूलं ब्रह्मचारिणम्। चौराणामभयं दद्यात् स नरो नरकं व्रजेत्॥ इस श्लोक से यह आपका कथन विरुद्ध हुआ संन्यासी को सुवर्ण ब्रह्मचारी को तांबूल चोरों को अभय का देने वाला पुरुष नरक में जाता है ॥ उत्तरपक्ष ब्रह्मोवाच गृहीणां काञ्चनं दद्यात् इसं वै ब्रह्मचारिणाम्। चौराणां मासनन्दद्यात् स नरो नरकं व्रजेत् ॥ इस से आपका कहना विरुद्ध हुवा जैसा कि मेरा वचन उस श्लोक से यह कौन शास्त्र का श्लोक है अच्छा वह कौन शास्त्र का है यह तो पद्धति का है अच्छा तो यह हमारी पद्धति का है और ब्रह्मा का कहा है ऐसा श्लोक ब्रह्मा जी क भी न रचेंगे अच्छा तो यह मैंने रचा है जैसा कि वह किसी ने रच लिया है ये दोनों श्लोक अर्थ विचारने में मिथ्या होते हैं क्योंकि संन्यासी को काञ्चन नाम सुवर्ण के देने से इन ने नरक लिखा इस से पूछना चाहिए कि चांदी हीरा आदि करत्नभूमि राज्य और स्त्री आदि देने से तो नरक को नहीं जायगा और ब्रह्मचारी के विषय में भी जान लेना चोर के विषय में जो इस ने लिखा सो तो ठीक होहै और सर्व मिथ्या कथन है अच्छा तो श्लोक का ऐसा पाठ है ॥ यदि हस्ते धनं दद्यात्तांबूलं ब्रह्मचारिणम्। अन्यत् पूर्ववत् यह भी मिथ्या श्लोक है क्योंकि यती के पात्र और आगे वा वस्त्र से बांध के धन देने में तो पाप न होगा इस से ऐसी जो बात कहना सो मिथ्या ही है और जो धन में दोष अथवा गुण है सो सर्वत्र तुल्य ही है जैसा उपद्रव धन के रखने में गृहस्थों को होता है इस से संन्यासी को धन के रखने में कुछ अधिक उपद्रव होगा क्योंकि गृहस्थों के स्त्री पुत्र और भृत्यादि करचाकर ने वाले हैं उस को कोई नहीं शरीर के निर्वाह मात्र धन रख ले तब तो विरक्त को भी कुछ दोष नहीं और जो अधिक रक्खेगा सो तो मोक्षपद को प्राप्त होके संसार में गिर पड़ेगा जैसे कि वैरागी, गुसांई बहुत सम्हन्त और मठधारी हो गये हैं जैसे कि गृहस्थों से भी नीच हो जाते हैं और सांई धन को पाके अमीर हो जाता है इस से क्या आया कि पहिले तो अधिकार के बिना संन्यासग्रहण हो नहीं करना चाहिए जब तक विद्या

ज्ञान, वैराग्य, और जितेन्द्रियता, पूर्ण न होजाय तबतक गृहाश्रमही में रहना उचित है इस से धातु सुवर्ण धन देने और लेने में दोष करते हैं यहबात मिथ्या है उनको कोई दे और विरक्त लेवै अथवा न लेवै अपनी २ इच्छा के आधीन व्यवहार है एकबात देखना चाहिए कि जो विद्वान सो सब पदार्थों का गुण और दोष जानता है उसको देने वाला स्वर्ग जाय सो तो ठीक बात है परन्तु नरक को वह जाता है यह बात अत्यन्त नष्ट है वह विद्वान जो सन्यासी सत्कार और उत्तम पदार्थों की प्राप्ति में हर्ष कभी न करेगा अस्त्कार और अनिष्ट पदार्थों की प्राप्ति में शोक न करेगा सो देने लेने वाले दोनों धर्मात्मा और विद्यावान होंगे तब तो उभय च सुख ही सत्ता है और जो दोनों कुकर्मी हैं तो पाप ही है जैसे कि चक्रांकितादिक वैरागी और गोकुलिये, गुसांई और नान्हक, कविरादिकों के सम्प्रदायी लोग हैं और मूर्ख ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ और सन्यासी इनको देने में पाप ही होगा पुण्य कुछ नहीं क्योंकि पुण्य तो विद्वान और धर्मात्माओं को देने में है अन्यथा नहीं चार वर्ण और चार आश्रम इनकी शिक्षा संक्षेप से लिख दिया और विस्तार से जो देखना चाहै सो वेदादिक सत्य शास्त्रों में देख लेवै इस से आगे राजा और प्रजा के विषय में लिखा जायगा ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषा विरचिते पंचमस्समुल्लासः संपूर्णः ॥ ५ ॥

अथराजाप्रजाधर्मान्व्याख्यास्यामः ॥ राजधर्मान्प्रवक्ष्यामि यथावृत्तो भवेन्नृपः। सम्भवश्च यथा तस्य सिद्धिश्च परमो यथा ॥ १ ॥ म० राजधर्मों को मनु भगवान कहते हैं कि मैं कहूंगा जिस प्रकार से राजा को वर्तमान करना चाहिए जिन गुणों से राजा होता है और जिन

कर्मोंकेकरनेसेपरमसिद्धिहोतीहै किराज्यकरैऔरसन्ततिभीउसकोहोय इसकोयथावतप्रतिपादनआगे२कियाजायगा ॥ १ ॥ ब्राह्मं प्राप्तेनसंस्कारंक्षत्रियेणयथाविधि । सर्वस्यास्ययथान्यायंकर्त्तव्यं परिरक्षणम् ॥ २ ॥ भ० जैसाब्राह्मणोंका संस्कारहोताहै वैसाही सबसंस्कारयथाविधिजिसकाहोताहै अर्थातसबविद्याओंमेंपूर्णबल बुद्धि,पराक्रम,तेज,जितेन्द्रियताऔरशूरबीरता जिसमनुष्यमेंइस प्रकार केगुणहोवैं औरकोईमनुष्य उसदेशमें विद्यादिकगुणोंमें उससे अधिकनहोय ऐसेपुरुषकोदेशकाराजाकरनाचाहिए तबवह देशआनन्दितऔरअत्यन्तसुखीहोताहै अन्यथानहीं उसराजाका मुख्ययहीधर्महैकिअपनीप्रजाकीयथावत्रक्षाकरै ॥ २ ॥ अराजकेहिलोकेस्मिन्सर्वतोविद्रुतेभयात् । रक्षार्थमस्यसर्वस्य राजानमसृजत्प्रभुः ॥ ३ ॥ भ० जिसदेशमेंधर्मात्माराजाविद्वाननहींहोता उसदेशमेंभयादिकदोष संसारमेंबहुतहोजातेहैं इसवास्ते राजाको परमेश्वरनेउत्पन्नकियाहै कियहसबजगत्कोरक्षाकरै औरजगतमें अधर्मनहोनेपावै ॥३॥ इन्द्रानिलयमार्काणामग्नेश्चवरुणस्यच चंद्रवित्तेशयोश्चैवमात्रा निर्हृत्यशाश्वतीः ॥ ४ ॥ भ० इन्द्रअनिलनाम वायुअर्कनामसूर्य,अग्नि,वरुण,चन्द्र,वित्तेशअर्थातकुबेर इनआठ राजाओंकीनीतिऔरगुणोंसे मनुष्यराजाहोनेकाअधिकारीहोता है तैसेहीइन्द्रकागुण शूरवीरतादाताकाहोना इन्द्रजैसाप्रजाकी रक्षा सबप्रकारसेकरताहै तैसेहीराजा,वायुकागुण,बल औरदूत द्वारासबप्रजाकोवर्तमानकाजाननाजैसाकिवायुसबकेहृदयमेंव्याप्त होकेधारणकर्त्ताहै औरसबमर्मोंकोजानताहैयमकागुणपक्षपातको छोड़ना सदान्यायहीकरनाअन्यायकभीनहीं जैसाकिभरतराजा नेअपनेपुत्रजोअन्यायकारी थे नवउनकाखड्गसेशिरच्छेदनकर दिया औरसगरनेअपनाएकजोपुत्रअसमंजा थोड़ेअपराधसेवनमें निकालदिया यहबातमहाभारतमेंविस्तारसेलिखीहै किअपनेपुत्र काजबपक्षपातनकिया तोऔरका कैसेकरेंगे अर्कनामसूर्य जैसा

कि सब पदार्थों को तुल्य प्रकाश करता है और अन्धकार का नाश कर देता है ऐसे ही राजा सब राज्य में प्रजा के ऊपर तुल्य प्रकाश करै और अधर्म करनेवाले जितने दुष्ट अन्धकार रूप उनका नाश करदे और जैसे अग्नि में प्राप्त भया पदार्थ दग्ध होजाता है वैसे ही धर्मनीति से विरुद्ध करनेवाले पुरुषों को दग्ध अर्थात यथावत दण्ड देवै जैसा कि अग्नि सूखे वा गीले पदार्थों का भस्म कर देता है और मित्र शत्रु जब २ अधर्म करैं तब २ कभी दण्ड के विना न छोड़ै वरुण का गुण ऐसे पाश अर्थात बन्धनों से दुष्टों को बांधै कि फिर छूटने न पावें और कभी छूटैं तो ऐसा दुःख पावें कि उस दुःख का विस्मरण कभी न होय जिस्से अधर्म में उनका चित्त कभी न जाय चन्द्र का गुण जैसे कि चन्द्रमा सब प्राणियों को तथा स्थावर औषधियों को शीतल प्रकाश और पुष्टि से आनन्दयुक्त कर देता है और राजा अपनी प्रजा के ऊपर कृपा दृष्टि रक्खै और प्रजा की पुष्टि कि किसी प्रकार से प्रजा दुःखित न होवै सदा प्रसन्न हो रहै कुवेर का गुण जैसे कि कुवेर बड़ा धनाढ्य है धन की वृद्धि और धन की रक्षा यथावत करता है वैसे राजा भी धन की रक्षा सदा करै जिस्से कि राजा के ऊपर ऋणवा दरिद्र कभी न होवै अपने वा प्रजा के ऊपर जब आपत्काल आवै तब उस धन से अपनी वा प्रजा की रक्षा कर लेवैं इन आठ गुणों से राजा होता है अन्यथा नहीं ॥ ४ ॥ सोऽग्निर्भवति वायुश्च सोऽर्कः सोमः स धर्मराट् । स कुवेरः स वरुणः स महेन्द्रः प्रभावतः ॥ ५ ॥ म० प्रभाव अर्थात गुणों ही से अग्नि, वायु, आदित्य, सोम, धर्मराज, कुवेर, वरुण और महेन्द्र नाम इन्द्र राजा हो इन गुणों से जब युक्त होता है तब वही राजा ये आठ नामवाला होता है ॥ ५ ॥ कार्यं सोऽवेक्ष्य शक्तिञ्च देशकालौ च तत्त्वतः । कुरुते धर्मसिद्ध्यर्थं विश्वरूपं पुनः पुनः ॥ ६ ॥ म० सो राजा कार्य और शक्ति नाम सामर्थ्य देश और काल तत्त्व अर्थात यथावत इनको विचार के करै कि र के वास्ते कि धर्म सिद्धि के वास्ते वारंवार विश्वरूप धारण करता है ॥ ६ ॥ यस्य प्रसादे पद्मा श्रीर्विजयश्च पराक्रमे । मृत्युश्च वसति क्रोधे सर्वतेजोमयो हि सः ॥ ७ ॥ म० जिसको कृपा से

दरिद्रजोहै सोधनाढ्यहोजाय औरअल्पसेदुष्टदरिद्रहोजाय और पराक्रममें निश्चयकरकेविजयहोय इससे राजासबतेजोमयहोता है औरजिसकेक्रोधमेंदुष्टोंकामृत्युहीबासकरताहोयअर्थातसबप्रकार केगुणबलपराक्रमजिसमेंहोवेंवहीराजाहोसक्ताहैअन्यथानहीं ७। तस्माद्धर्मंयमिष्टेषुसव्यवस्येन्नराधिपः। अनिष्टंचाप्यनिष्टेषुतधर्मं-नविचालयेत् ॥ ८ ॥ भ० जोराजाधर्मकोइष्टअर्थातधर्मात्मा और विद्वानोंकेऊपरनिश्चितकरै तथाअनिष्ट अर्थातमूर्ख औरदुष्टोंके बीचमेंदण्डकीव्यवस्थाकरैउसधर्मकोकोईमनुष्यनछोड़ै किन्तुसब लोगकरैं जिस्सेधर्मात्माऔरविद्वानोंकीवढ़तीहोय औरमूर्खऔर दुष्टोंकी घटी इसहेतु अवश्य इसव्यवस्थाकोकरै ॥ ८ ॥ तस्यार्थे-सर्वभूतानांगोप्तारंधर्ममात्मजम्। ब्रह्मतेजोमयंदंडमसृजत्पूर्वमी-श्वरः ॥ ९ ॥ भ० उसराजाकेलियेदण्डकोपरमेश्वरनेपूर्वहीसेउत्प-न्नकियावहदण्डकैसाहैकिब्रह्मतेजोमयब्रह्मपरमेश्वरऔरविद्याका नामहैउनकाजोतेजअर्थातसत्यव्य२वस्थावहीदण्डकहलाताहैफिर वहदण्डकैसाहैकिपरमेश्वरहीसेउत्पन्नभया क्योंकिपरमेश्वरन्या-यकारीहै उसकोआज्ञा न्यायहीकरनेकीहै उसीकानाम दण्डहै औरजोन्यायहैकिपक्षपातकाछोड़नासोईधर्महै जोधर्महैसोईसब भूतोंकीरक्षाकरनेवालाहैअन्यकोईनहींऔरवहदण्डराजाकेआ-धीनरक्खागयाहै क्योंकिवहीराजासमर्थहैइसदण्डकेधारणकरने मेंअन्यकोईनहींजोकोईराजाकहैकिधर्मकीवातहमनहींसुनते तो उसकाकहनामिथ्याहैक्योंकिधर्मनकरेगातोराजाऔरधर्मकास्था-पनतथापालनभीनकरेगा वहराजाहीनहीं राजातोवहहोताहै किधर्मकायथावतस्थापन और अधर्म काखण्डन करै यहीराजा का मुख्य पुरुषार्थ है ९ ॥ तस्यसर्वाणिभूतानिस्थावराणिचराणि-च। भयाद्भोगायकल्पन्तेस्वधर्मान्नचलन्तिच ॥१०॥ भ० उसदण्डके भयसेही जितनेजड़ औरचेतनभूतहैं दंडकेनियमसे वसबभोगमें आतेहैं अपना२जोपुरुषार्थ अर्थातअधिकार उसमेंयथावतचलते

हैं अपनेस्वधर्म अर्थात जो२ जिसका व्यवहार करने का अधिकार उससे भिन्नमार्ग में कभी नहीं चलते ॥ १० ॥ तं देशकालौ शक्तिञ्च विद्यांचावेक्ष्य तत्वतः । यथार्हतः संप्रणयेन्नरेष्वन्यायवर्त्तिषु ॥ ११ म० उस दण्डको अन्याय करनेवाले जो मनुष्य हैं उन में यथावत स्थापन करें अर्थात् यथावत दण्ड देवै परन्तु देशकालसामर्थ्य और विद्या इनसे यथावत तत्त्व का विचार करके दण्ड दे क्योंकि अदण्ड्य पुरुष अर्थात धर्मात्मा को कभी न दण्ड दिया जाय और अधर्मात्मा पुरुष दण्ड के बिना त्याग कभी न किया जाय ॥ ११ ॥ स राजा पुरुषो दण्डः स नेता शासिता च सः । चतुर्णामाश्रमाणांच धर्मस्य प्रतिभूः स्मृतः ॥ १२ ॥ राजा पुरुष नेता अर्थात व्यवस्था में सब जगत्को चलानेवाला शासिता अर्थात यथावत शिक्षक दण्ड ही है किञ्च राजा और प्रजास्थ मनुष्य सब तुल्य ही हैं जैसा राजा मनुष्य है वैसा ही और सब मनुष्य हैं इसवास्ते मनुभगवान्ने लिखा कि दण्ड ही राजा, दण्ड ही पुरुष, दण्ड ही नेता और दण्ड ही शासिता, जिसमें यथावत विद्यादिक गुण और दण्ड की व्यवस्था होय सोई राजा है, अन्य कोई नहीं और ब्रह्मचर्याश्रमादिक चार आश्रम और चारो वर्णों का यथावत स्थापन तथा उनका रचन करनेवाला दण्ड ही है किन्तु प्रतिभूः अर्थात जामिन है इसके बिना धर्म या वर्णाश्रम व्यवस्था नष्ट हो जाती है कभी नहीं चलती उस व्यवस्था के बिना जितने उत्तम व्यवहार हैं वे तो नष्ट ही हो जाते हैं किन्तु भ्रष्ट व्यवहार भी हो जाते हैं जैसे कि आजकाल आर्यावर्त्त देश की व्यवस्था है ॥ १२ ॥ दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति । दण्डः सुप्तेषु जागर्त्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः ॥ १३ ॥ म० सब प्रजा को दण्ड ही शिक्षा करता है और दण्ड ही सब जगत्का रक्षक है जब प्राणी सो जाते हैं तब प्रायमृतक हो जाते हैं परन्तु दण्ड ही नहीं सोता इससे सब आनन्द से सोके उठते हैं उठके अपना२ काम काज और आनन्द करते हैं और जो दण्ड सो जाय तो जगत्का नाश ही हो जाय इससे जो दण्ड है सोई धर्म है ऐसा बुद्धिमान लोगों का दृढ़ निश्चय है ॥ १३ ॥ समीक्ष्य स धृतः सम्यक् सर्वा रञ्जयति प्र-

का:। असमीक्ष्यप्रणीतस्तु विनाशयतिसर्वत:॥१४॥ भ० उसदण्ड कोसम्यक्विचारकरकेजोधारणकरताहै वहराजासबप्रजाकोप्रसन्नकरदेताहैऔरजोविचारकेविनादण्डदेताहै वाआलस्य,मूर्खता सेदण्डकोछोड़देताहै वहीराजासबजगत्कानाशकरनेवालाहोता है राजृदीप्तौइसधातुसेराजाशब्दसिद्धहोताहै दीप्तिनामप्रकाशका है जोसबधर्मोंकाप्रकाश औरअधर्म माचकानाश करै उसका मामराजाहै औरजोऐसानहींहैउसकानामराजातोनहीरखना चाहिए किन्तुउसकानामडांकूऔरअन्धकाररखनाचाहिये।१४। दुष्येयु:सर्ववर्णाश्चभिद्येरन्सर्वसेतव:। सर्वलोकप्रकोपश्चभवेद्दण्डस्यविभ्रमात्।१५॥ भ० दण्डकेनाशसेसबवर्णाश्रमनष्टहोजातेहैं तथाधर्मकीजितनीमर्यादाहैभीसबनष्टहोजातीहैं औरसबलोगोंमें प्रकोपअर्थातअधर्मपूर्णहोजाताहै इससे दण्डकोकभीनछोड़नाचाहिए॥१५॥ यत्रश्यामोलोहिताक्षोदण्डश्चरतिपापहा। प्रजास्तत्रनमुह्यन्तिनेताचेत्साधुपश्यति॥१६॥ भ० जिसदेशमेंश्यामवर्ण रक्तजिसकेनेत्र ऐसाजोपापनाश करनेवालादण्डविचरताहै उस देशमेंप्रजामोहवादु:खकोनहीप्राप्तहोती परन्तु दण्डकाधारणकरनेवालाराजाविद्वानऔरधर्मात्माहोयतोअन्यथानहींकैसाराजा होयकि॥१६॥ तस्याहु:संप्रणेतारंराजानंसत्यवादिनम्। समोच्ययकारिणंप्राज्ञंधर्मकामार्थकोविदम्॥१७॥ भ० इसदण्डका सम्यक्चलानेवालासत्यवादीकिकभीमिथ्यानबोलै औरजोकुछकरैसोविचारहोसेसत्य२करै असत्यकभीनहींप्राज्ञअर्थातपूर्णविद्या औरपूर्णबुद्धिजिसकोहोय धर्मअर्थऔरकाम इनकोयथावतजानताहोय उसकोदण्डचलानेका अधिकारीकहतेहैं औरकिसीको नहीं॥१७॥ तंराजाप्रणयनसम्यक्त्रिवर्गेणाभिवर्द्धते। कामात्मा विषम:क्षुद्रोदण्डेनैवनिहन्यते॥१८॥ भ० उसदण्डअर्थातधर्म कोराजायथावतनिश्चयमेंकरैगा तोधर्मअर्थऔरकामयेतीनराजाकेसिद्धहोजांयगेऔरजोकामात्माअर्थातवेश्या,परस्त्री,लौंडे,इत्या-

दिकोंकेसाथ फसारहताहै तथानम्रता,शील,नीति,विद्या,धैर्य्य,
बुद्धि,बल,पराक्रमतथासत्पुरुषोंकासंग इनकोछोड़के विषमनाम
कुटिलअर्थातअभिमानईर्ष्या,द्वेष,मात्सर्यऔरक्रोधइनसेयुक्तहोके
कर्मविपरीतकरनेसेवहराजाविषमपुरुषहोजाताहै नीचबुद्धिनीच
संगनीचकर्मऔरनीचस्वभाव इत्यादिकदोषोंसेपुरुषजबयुक्तहोगा
तबवहपुरुषनामराजाक्षुद्रहोजायगा जबधर्मनीतिसेदण्डयथावत्
नकरसकेगा तबउसीकेऊपरदण्डआकेगिरेगा सोदण्डसेहतहो
जायगा जैसेकिआजकालआर्य्यावर्त्तदेशकेराजाओंकीदशानित्यदे-
खनेमेंआतीहै ॥ १८ ॥ दण्डोहिसुमहत्तेजोदुर्द्धरश्चाकृतात्मभिः।
धर्माद्विचलितंहन्तिनृपमेवसबान्धवम् ॥ १९ ॥ ततोदुर्गंचराष्ट्रञ्च-
लोकंचसचराचरम्। अन्तरीक्षगतांश्चैव मुनीन्देवांश्चपीडयेत् ॥
२० ॥ भ० दंडजोहैसो बड़ाभारीतेजहै उसकाधारणकरनामूर्ख
लोगोंकोकठिनहै जबवेदण्डअर्थात धर्मसेविचलजातेहैं तबकुटु-
म्बसहितराजाकोवहदण्डनाशकरदेताहै ॥ १९ ॥ तदनन्तरदुर्गजो
किला राष्ट्रनाम राज्यचर अचर लोग अन्तरिक्ष में रहने वाले
अर्थात सूर्य चन्द्रादिक लोगों में रहने वाले अथवा मुनिनाम
विचार करने वाले देवनाम पूर्ण विद्या वाले उनका नाश और
अत्यन्त पीड़ा करता है इसकाअभिप्रायकि पक्षपात कोछोड़के य-
थावतदण्डकरनाचाहिए तभीसुखकीउन्नतिहोगी औरजोदण्ड
कोयथावतन्यायसेनकरैंगे तोउनकाही नाशहोजायगा ॥ २० ॥
सोऽसहायेनमूढेनलुब्धेनाकृतबुद्धिना। नशक्योन्यायतोनेतुंसक्ते-
नविषयेषुच ॥ २१ ॥ भ० सोअच्छेपुरुषोंकेसहायसेरहितमूढनाम
मूर्ख,लुब्धनामबड़ालोभी,अकृतबुद्धिजिसकोबुद्धिनहीहै सोराजा
मूर्खहै वहन्यायसेदंडकभीनदेसकेगा क्योंकिजोजितेन्द्रियहोताहै
वहीराज्यकरनेकाअधिकारीहोताहै औरजोविषयासक्ततथामूढ
सोकभीदण्डदेनेवाराज्यकरनेकोसमर्थनहीहोता ॥ २१ ॥ राजा
कैसाहोनाचाहिएकि ॥ शुचिनासत्यसन्धेन यथाशास्त्रानुसारि-

णा । प्रणेतुं शक्यते दण्डः सुसहायेन धीमता ॥ २२ ॥ भ० शुचि जो बाहर भीतर अत्यन्त पवित्र होय सत्यधर्म से सदा जिसका सम्बन्ध रहै तथा जैसो शास्त्र में परमेश्वर की आज्ञा है वैसा ही करै सुसहाय अर्थात सत्पुरुषों का सङ्ग जो करता है और बड़ा बुद्धिमान वही राजा दण्डव्यवस्था करने को समर्थ होता है अन्यथा नहीं ॥ २२ ॥ ब्राह्मणान्नित्यं सेवेत् विप्रान्वेदविदः शुचीन् । वृद्धसेवी हि सततं रक्षोभिरपि पूज्यते २३ ॥ भ० जितने ज्ञानवृद्ध विद्यावृद्ध तपोवृद्ध, पवित्र विचक्षण वेदवित धर्मात्मा धैर्यवान् होवैं उनको ही राजा नित्य सेवा और सङ्ग करै जो इन पुरुषों का राजा संग करैगा तो उसका राक्षस अर्थात दुष्टपुरुष भी सत्कार और आज्ञा करैंगे ॥ २३ ॥ तेभ्योऽधिगच्छेद्विनियं विनीतात्मापि नित्यशः । विनीतात्मा हि नृपतिर्न विनश्यति कर्हिचित् ॥ २४ ॥ जो राजा विनीतात्मा होवै अर्थात सब श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न भी होवै तो भी उत्तम पुरुषों से विनय को ग्रहण करै क्योंकि जो अभिमानादिक दोषों से रहित और विद्या नम्रतादिक गुणों से युक्त होता है उस राजा का कभी नाश नहीं होता ॥ २४ ॥ त्रैविद्येभ्यस्त्रयीं विद्यां दण्डनीतिं च शाश्वतीम् । आन्वीक्षिकीं चात्मविद्यां वार्त्तारम्भांश्च लोकतः ॥ २५ ॥ भ० तीनों वेदों को जो पाठ स्वर और अर्थ सहित पढ़ा होवै उससे तीन वेदों को राजा यथावत पढ़ै दण्डनीति जो कि सनातन राजधर्म शिक्षा अर्थात् देने की जो व्यवस्था है इसको भी पढ़ै तथा आन्वीक्षिकी जो न्याय शास्त्र, आत्मविद्या और श्रेष्ठ मनुष्यों से कहने पूंछने और निश्चय करने के वास्ते वार्त्ताओं का आरंभ इनको राजा यथावत् पढ़ै और पढ़के यथावत् करै ॥ २५ ॥ इन्द्रियाणां जये योगं समातिष्ठेद्दिवानिशम् । जितेन्द्रियो हि शक्नोति वशे स्थापयितुं प्रजाः ॥ २६ ॥ भ० राजा रात दिन इन्द्रियों के जीतने में नित्य ही प्रयत्न करै क्योंकि जो जितेन्द्रिय राजा होता है वही प्रजा को वश में स्थापन करने में समर्थ होता है और जो अजितेन्द्रिय अर्थात कामी सो तो आप ही नष्ट भ्रष्ट हो जाता है फिर प्रजा को वश कैसे करेगा इससे क्या आया कि जो शरीर, मन और इ-

न्द्रिय इनको वशमें रखता है सोई राजा प्रजा को वशमें करता है अ-
न्यथा कभी प्रजा वशमें राजा के नहीं होती जब तक प्रजा वश में न
होगी तब तक निश्चल राज्य कभी न होगा इससे जो जितेन्द्रिय होय उ-
सको ही राजा करना चाहिए अन्य को नहीं ॥ २६ ॥ दश कामसमु-
त्थानि तथाष्टौ क्रोधजानि च। व्यसनानि दुरन्तानि प्रयत्नेन विवर्ज-
येत् ॥ २७ ॥ म० जो राजा कामी होता है उसमें दश दुष्टव्यसन अवश्य
होंगे और जो राजा क्रोधी होगा उसमें आठ दुष्टव्यसन अवश्य होंगे
उनको अत्यन्त प्रयत्न से छोड़ दे अन्यथा राजा हो राज्यसहित नष्ट हो
जाता है ॥ २७॥ फिर क्या होगा कि। कामजेषु प्रसक्तो हि व्यसनेषु म-
हीपतिः। वियुज्यतेऽर्थधर्माभ्यां क्रोधजेष्वात्मनैव तु ॥ २८ ॥ म०
जो राजा कामसे उत्पन्न भये जो दश दुष्टव्यसन उनमें जब फसजायगा
तब उसका अर्थ नाम द्रव्य और राज्यादिक सब पदार्थ तथा धर्म इनसे
रहित हो जायगा अर्थात् दरिद्र और पापी होजायगा और क्रोधसे
उत्पन्न होते हैं जो आठ दुष्टव्यसन उनमें फसजाने से वह आप राजा हो
मरजाता है इससे इन अठारह दुष्टव्यसनों को राजा छोड़दे जो अपने
कल्याण की इच्छा होवै कौन से १८ अठारह दुष्टव्यसन हैं ॥ २८॥ मृ-
गयाक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः। तौर्यत्रिकं वृथाट्या च काम
जो दशको गणः ॥ २९ ॥ म० मृगया नाम शिकार का खेलना अक्ष-
नाम फांसाओं से क्रीड़ा वा द्यूत का करना दिवास्वप्न दिवस में सोना
परिवाद नाम वृथा बात्तों वा किसी की निन्दा करना स्त्री नाम वेश्या और
परस्त्रीगमन तो अत्यन्त भ्रष्ट है किन्तु अपनी जो विवाहित स्त्री उससे
भी कामसे आसक्त होके अत्यन्त फसजाना वा स्त्री में अत्यन्त वीर्य का
नाश करना मद नाम भांग, गांजा, अफीम और मद्य इनका सेवन क-
रना तौर्यत्रिक नृत्य का देखना और करना वादित्रों का बजाना वा सु-
नना गान का सुनना वा कराना वृथाट्या नाम वृथा जहां तहां भ्रमण
करना अथवा वृथा बात्तों वा हास्य करना यह कामसे दश व्यसन सम्-
हगण उत्पन्न होते हैं इसको प्रयत्न से राजा छोड़ दे इसको जानको है

गा तो धर्म और अर्थ अर्थात् धनसहित राज्य नष्ट होजायगा इसमें कुछ सन्देह नहीं क्रोध से आठ उत्पन्न जो दुष्ट व्यसन वे ये हैं ॥ २९ ॥ पैशुन्यं साहसंद्रोह ईर्ष्यासूयार्थदूषणम्। वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोपि गणोऽष्टकः ॥ ३० ॥ भ० पैशुन्य नाम चुगली करना साहस नाम विचार के बिना अन्याय से पर पदार्थ का हरण कर लेना अभिमान बल युक्त होके द्रोह नाम सज्जनों से भी प्रीति का न करना ईर्ष्या नाम पर सुख न सहना असूया नाम गुणों में दोष और दोषों में गुणों का कहना अर्थदूषण नाम अपने पदार्थों का वृथा नाश करना अथवा अभिमान से दूसरे के कहे अर्थ में अनर्थ का लगाना वाग्दण्डज पारुष्य नाम बिना विचारे मुख से बोल देना अथवा कठोर वचन का कहना इसका नाम वाक् है पारुष्य बिना विचारे दण्ड का देना वा अपराध के बिना किसी को दण्ड देना अपराध के ऊपर भी पक्षपात से मित्रादिकों को दण्ड का न देना यह क्रोध से आठ दुष्ट व्यसन युक्त गण उत्पन्न होता है इसको अत्यन्त प्रयत्न से राजा छोड़दे अन्यथा अपने शरीर सहित शीघ्रही राज्य का नाश होजाता है इन दोनों गणों का जो मूल है सो यह है ॥ ३० ॥ द्वयोरप्येतयोर्मूलं सर्वे कवयो विदुः। तं यत्नेन जयेल्लोभं तज्जावेतावुभौ गणौ ॥ ३१ ॥ भ० जिस्से काम ज और क्रोध ज दोनों गण उत्पन्न होते हैं अर्थात् सब पाप और सब अनर्थों का मूल लोभ ही है ऐसा सब विद्वान लोग जानते हैं उस लोभ को प्रयत्न से राजा छोड़दे क्योंकि लोभ ही से दोनों गण पूर्वोक्त काम ज और क्रोध ज उत्पन्न होते हैं इस्से राजा और सज्जन लोग जो सब पापों का मूल उसी को छेदन कर देवें इसके छेदन से सब अनर्थ और पाप नष्ट होजांयगे जैसे कि मूल छेदन से वृक्ष नष्ट होजाते हैं ॥ ३१ ॥ पानमक्षाः स्त्रियश्चैव मृगया च यथाक्रमम्। एतत्कष्टतमं विद्याच्चतुष्कं कामजे गणे ॥ ३२ ॥ भ० पान नाम मद्यादिक नशा का करना अक्ष तथा स्त्री मृगया पूर्वोक्त सब जान लेना ये चार काम ज गण में अत्यन्त दुष्ट हैं ऐसा राजा जाने ॥ ३२ ॥ दण्डस्य पातनं चैव वाक्पारुष्यार्थदूषणे। क्रोधजेपि गणे विद्यात्कष्टमेतच्चि-

कं सदा॥ ३३॥ भा० दण्डका निपातन वाकपारुष्य और अर्थदूषण ये तीन क्रोधके गणमें अत्यन्त दुष्ट हैं १८ अठारहमेंसे ये सात अत्यन्त दुष्ट हैं॥ ३२॥ सप्तकस्यास्यवर्गस्य सर्वत्रैवानुषंगिणः। पूर्वं पूर्वं गुरुतरं विद्याद्व्यसनमात्मवान्॥ ३४॥ भा० चार कामके गणमें और तीन क्रोधके गणमें सब ये अनुसंगी हैं कि एक होवै तो दूसरा भी होजाय इन सातोंमें पूर्व २ अत्यन्त दुष्ट हैं ऐसा विचारवान् को जानना चाहिये जैसे कि अर्थदूषणसे वाक्पारुष्य दुष्ट है वाक्पारुष्यसे दण्डका निपातन दंड के निपातनसे शिकार शिकारसे स्त्रियोंका सेवन इससे अक्षक्रीड़ा और सबसे मद्यादिकपान दुष्ट है ऐसा निश्चित सब सज्जनोंको जानना चाहिए॥ ३४॥ व्यसनस्य च मृत्योश्च व्यसनं कष्टमुच्यते। व्यसन्यधोऽधो व्रजति स्वर्यात्यव्यसनी मृतः॥ ३५॥ भा० व्यसन और मृत्यु इन दोनोंमें जो व्यसन है सो मृत्युसे भी बुरा है क्योंकि जो व्यसनी पुरुष है सो पापोंमें फसके नीच २ गतिको चला जाता है और जो व्यसनरहित पुरुष है सो मर जाय तो भी स्वर्ग अर्थात सुखको प्राप्त होता है इससे जिसका बड़ा दुष्ट भाग्य होता है वही दुष्ट व्यसनमें फस जाता है और जिसका भाग्य अच्छा होता है वह दुष्ट व्यसनोंसे दूर रहता है॥ ३५॥ मौलान्शास्त्रविदःशूरान्लब्धलक्ष्यान्कुलोद्गतान्। सचिवान्सप्तचाष्टौवा प्रकुर्वीतपरीक्षितान्॥ ३६॥ भा० फिर राजा सात वा आठ पुरुषोंको अपने पास रखले वे कैसे होवैं कि बड़े उदार सब शास्त्रके जाननेवाले शूरवीर, जिनोंने प्रमाणोंसे पदार्थविद्या पढ़लिया है श्रीमानोंके उत्तम कुलमें जिनका जन्म होय उनको यथावत् परीक्षा करके राजा देखले क्योंकि राज्यके कार्य एकसे कभी नहीं होसक्ते इससे जितने पुरुषोंसे अपना काम होसके उतने पुरुषोंकी परीक्षा कर २ के रखले उनसे यथावत काम लेवै परन्तु बिना परीक्षा मूर्खको कभी न रक्खै और बिना उन सभासदोंकी सम्मतिसे किसी छोटे कामको भी राजा स्वतन्त्र होके न करै और जो स्वाधीन होके कुकर्म राजा करै तो वे सभासद् पुरुष राजाको दण्ड दें फिर दण्डसे भी न मानै तो उसको निकालके

दूसरा राजा उसी वक्त बैठा दे॥३६॥ सैनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च। सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति॥३७॥ भा॰ सेनापति राज्य करने के योग्य राजा दण्ड देनेवाला सर्वलोकाधिपति अर्थात् राजा के नीचे मुख्य सबों परि जिसका नाम दीवान कहते हैं ये चार अधिकार वेद और सब सत्य शास्त्र इन में पूर्ण विद्वान् होवें उन्हों को देवें अन्य को नहीं क्यों कि ये चार अधिकार मुख्य हैं बिना विद्वानों के ये चार अधिकार यथावत नहीं होते और जो मूर्ख काम, क्रोधादिक, दोषयुक्त इनको देने से ये चार अधिकार नष्ट हो जांयगे इसवास्ते अत्यन्त परीक्षा करके चार पुरुष विद्वानों को चार अधिकार देना चाहिए जिस्से कि विजय राज्य वृद्धि धर्म न्याय और सब व्यवहारों की यथावत व्यवस्था होय अन्यथा सब राज्य और ऐश्वर्य नष्ट हो जाते हैं॥३७॥ तेषामर्थे नियुञ्जीत शूरान्दक्षान्कुलोद्गतान्। शुचीनाकरकर्मान्तेभीरूनन्तर्निवेशने॥३८॥ भा॰ उन अमात्यों के समीप राज्य कार्य करने के वास्ते राजा शूर चतुर, कुलीन पवित्र जो होवें उनको राजा रक्खे वे अमात्य उनसे सब राज्य कार्यों को सिद्ध करें उनमें से जितने शूर होवें उनको जहां २ शंका वा युद्ध वहां २ रक्खे और जितने भीरु होंय उनको भीतर गृह के अधिकार में रक्खे जहां कि स्त्री लोग और कोश वहां डरने वालों को रक्खे और जहां शूरवीर लोगों का काम होय वहां शूरवीरों को रक्खे।३८॥ दूतं चैव प्रकुर्वीत सर्वशास्त्रविशारदम्। इङ्गिताकारचेष्टज्ञं शुचिं दक्षं कुलोद्गतम्॥३९॥ भा॰ फिर राजा दूत को रक्खे वह दूत कैसा होय कि सब शास्त्र विद्या से पूर्ण होय मनुष्य को हृदय की बात गमन शरीर की आकृति और चेष्टा इन से जान लेना जो कि उसके हृदय में होय पवित्र चतुर और बड़े कुल का जो पुरुष होय ऐसे पुरुष को राजा दूत का अधिकार देवै॥३९॥ अनुरक्तः शुचिर्दक्षः स्मृतिमान्देशकालवित्। वपुष्मानभीर्वाग्मी दूतो राज्ञः प्रशस्यते॥४०॥ भा॰ फिर वैसे को दूत करै कि राजा में बड़ी प्रीति जिसकी होय दक्ष नाम बड़ा चतुर एक बक्त का कही बात को कभी न भूलै और जैसा देश जैसा काल वैसी बात को जानै वपुष्मान् नाम रूप

बलश्रौरशूरवीरता जिसमेंहोय वीतभीनामकिसीसेजिसकोभयन होय वाग्मीवड़ाबक्काधृष्टश्रौरप्रगल्भहोवै ऐसाजोदूतराजाकाहोय सोश्रेष्ठहोताहै ॥ ४० ॥ अमात्येदण्डश्रायत्तोदण्डेवैनयिकीक्रिया। नृपतौकोशराष्ट्रे चदूतेसन्धिविपर्ययौ ॥ ४१ ॥ म० दण्डदेनेकाजितनाव्यवहारवहसर्वशास्त्रवितधर्मात्मापुरुषोंकेश्राधीनरक्खै और दण्डश्रन्यायसेनहोनेपावै किन्तु विनयपूर्वकहोहोवै कोशश्रौरराज्यवहदोनोंराजाकेश्रधिकारमेंरहैं सन्धिनाममिलापविपर्ययनाम विरोधयेदोनोंदूतकेश्राधीनराजारक्खै ॥ ४१ ॥ तत्स्यादायुधसम्पन्नं धनधान्येनवाहनैः। ब्राह्मणैःशिल्पिभिर्यन्त्रैर्यवसेनोदकेनच ॥ ४२ ॥ म० तत्नामदुर्गकिलासबप्रकारकेश्रायुध धनधान्यनामश्रन्नवाहनसवारीब्राह्मणविद्वान शिल्पीनामकारीगरलोग नानाप्रकारकेयन्त्रतथाघासश्रादिकचारा श्रौरउदकनामजल इनसेपूर्ण सदारहैकमतीकिसीवातकीनहोय॥ ४२ ॥ तस्यमध्ये सुपर्याप्तंकारयेद्गृहमात्मनः। गुप्तंसर्वर्तुकंशुभ्रंजलवृक्षसमन्वितम् ॥ ४३ ॥ म० उसश्रेष्ठदेशमेंसबप्रकारसेश्रेष्ठश्रपनाघरराजारहनेकोबनवावैसब प्रकारसेउसस्थानकीरक्षाकरैश्रौरसबऋतुश्रोंमेंजिसघरमेंसुखहोवै शुभ्रतामसुफेदवहघरहोवै चारोंश्रोरघरकेजलश्रौरश्रेष्ठ २ इक्ष होरे२पेड़रहैं उसमेंश्रापरहै सबराज्यकोदेखैभ्रमणकरै श्रौरसबकेऊपरसदादृष्टिरक्खै जिससे कोईश्रन्यायनकरनेपावै ॥ ४३ ॥ तदध्यास्योद्वहेद्भार्यांसवर्णांलक्षणान्विताम्। कुलेमहतिसम्भूतांहृद्यांरूपगुणान्विताम् ॥ ४४ ॥ म० उसस्थाममेरहकेश्रपनेवर्णकीसब श्रेष्ठलक्षणोंसेयुक्तश्रौरवड़ेकुलमेंउत्पन्नभई श्रत्यन्तहृदयकोप्रसन्न करनेवाली उत्तमजिसकारूपश्रौरसबविद्यादिकश्रेष्ठगुणोंसेसम्पन्नस्त्रीकेसाथराजाबिवाहकरै देखनाचाहिएकिब्रह्मचर्याश्रमसेसब विद्याकांपढ़ना सबराज्यकार्यका प्रबन्धकरना श्रौरसबव्यवहारों कोयथावतजानना पीछेराजाकाबिवाहमनुभगवाननेलिखा इससे क्याश्रायाकि-४८,वा४४ वा४०चालीसवा३६सवर्षमें राजाकोवि-

बाहकरनाउचितहै इससेपहिलेकभीनहीं औरस्त्रीभी२०वर्षसेऊपर
२५वर्षतककीहोनाचाहिए तबराजाकासन्तानसर्वोत्तमहोय अ-
न्यथानष्टभ्रष्टहोजाताहै ॥ ४४ ॥ पुरोहितंचकुर्वीतवृणुयादेवच-
र्त्विजम् । तेऽस्यगृह्याणिकर्माणिकुर्युर्वैतानिकानिच ॥ ४५ ॥ म०
सबशास्त्रोंमेंविशारदनामनिपुण धर्मात्माजितेन्द्रियऔरसत्यवादी
जोकिपूर्वोक्तलक्षणवालाब्राह्मणकोपुरोहितकरै औरऋत्विजभी
वैसेहीकोकरै एराजाकेजितनेअग्निहोत्रादिकगृह्यकर्मऔरइष्टि-
यांउनकोनित्यकरैं ॥ ४५ ॥ यजेतराजाक्रतुभिर्विविधैराप्तदक्षिणैः । ध-
र्मार्थंचैवविप्रेभ्योदद्याद्भोगान्धनानिच ॥ ४६ ॥ म० अग्निष्टोमसे
लेकेजितने अश्वमेधतकयज्ञहैं उनमेंसेकोईयज्ञको राजाकरै सो
पूर्णक्रियाऔरपूर्णदक्षिणासेकरै जितनेविद्वान औरधर्मात्माहोवें
उनकोनानाप्रकारकेभोजनकरावैऔरदक्षिणाभीदेवै ॥ ४६ ॥ सां-
वत्सरिकमाप्तैश्च राष्ट्रादाहारयेद्बलिम् । स्याच्चाम्नायपरोलोकेवर्ते-
तपितृवन्नृषु ॥ ४७ ॥ म० श्रेष्ठपुरुषोंकेद्वारावर्ष२केप्रजासेकरोंको
राजालियाकरै केवलवेदविहितऔरधर्मशास्त्रोक्तआचारमेंतत्पर
होवै जितनीप्रजामेंकन्यायुवती औरवृद्धहोवें इनकोकन्याभगिनी
औरमाताकीनांईराजाजाने जितनेबालकयुवाऔरवृद्धउनकोपुत्र
भाई औरपिताकीनांईराजाजानै अधिकक्याकिसबप्रजाकोपुत्रकी
नांईजानै औरअपनेपिताकीनांईवर्तमानकरै ॥४७॥ अध्यक्षान्वि-
विधान्कुर्यात्तत्रतत्रविपश्चितः । तेऽस्यसर्वाण्यवेक्षेरन्नृणांकार्या-
णिकुर्वताम् ॥ ४८ ॥ म० जहां२जैसा२कामहोय वहां२नानाप्र-
कारकेमन्त्रियोंकोरखदेवै सबप्रजाकेसुखकेवास्ते सबकार्योंकोदे-
खतेरहैं औरव्यवस्थाकर्त्तारहैं जिस्से किअधर्मनहोनेपावै परन्तुवे
मूर्खनहोवैंकिन्तु सबविद्वानहीहोवें ॥ ४८ ॥ आवृत्तानांगुरुकुला-
द्विप्राणांपूजकोभवेत् । नृपाणामक्षयोह्येष निधिर्ब्राह्मोऽभिधीयते ॥
४९ ॥ म० नतंस्तेनानचामित्राहरन्तिनचनश्यति । तस्माद्राज्ञा-
निधातव्योब्राह्मणेष्वक्षयोनिधिः ॥५०॥ म० नस्कन्दतेनव्यथतेनवि-

नश्यति कर्हिचित् । परिष्टमग्निहोत्रे भ्यो ब्राह्मणस्य मुखे कृतम् ५१ ॥ भ० जो ब्रह्मचर्याश्रम से गुरुकुल में गुरु के पास विद्या पढ़ के पूर्ण विद्वान होके आवैं उनको राजा यथायोग्य सत्कार करै और यथायोग्य उनको अधिकार भी देवै जिस्से कि सत्यविद्या का लोप कभी न होय किन्तु सब विद्या सब मनुष्यों के बीच में सदा प्रकाशित रहै अर्थात पुरुष वा स्त्री विद्या रहित न रहने पावै यही राजाओं का अक्षय निधि अर्थात अक्षय पुण्य है जो कि ब्रह्म नाम वेद का यथावत पढ़ना और यथावत वेदोक्त कर्मों का करना इस्से आगे कोई पुण्य नहीं है क्योंकि ॥ ४९ ॥ जितने धन हैं सुवर्ण रजतादिक पुत्र दारा और शरीर उनको चोर ले सक्ते हैं शत्रु भी हरण कर सक्ते हैं और उनका नाश भी हो जाता है परन्तु जो विद्या निधि है उसको न चोर न शत्रु हर सक्ते हैं और न कभी उसका नाश होता है इस्से राजा लोगों को विद्या का प्रकाश रूप जो निधि उसको विद्वानों के बीच में स्थापन करना चाहिए और नित्य उसका प्रचार करना चाहिए ॥ ५० ॥ जो विद्यानिधि है उसको कोई उठाई गिरा उठा नहीं सक्ता न उसको व्यथा अर्थात कभी पीड़ा होती है अग्निहोत्रादिक जितने यज्ञ हैं उनसे यह जो विद्यारूप यज्ञ और मुख में ब्रह्म के जानने वाले अथवा पढ़ने वाले के मुखरूप वेदि में होम अर्थात विद्या का जो स्थापन करना है सो विशिष्ट अर्थात श्रेष्ठ है इस्से राजा लोगों को अवश्य २ चाहिए कि शरीर, मन और धन से अत्यन्त प्रयत्न विद्या के प्रचार में करैं इसी से राजा लोगों का ऐश्वर्य पूर्ण आयु, बल, बुद्धि और पराक्रम सदा अधिक होते हैं ॥ ५१ ॥ संग्रामेष्वनिवर्त्तित्वं प्रजानांचैवपालनम् । शुश्रूषाब्राह्मणानांच राज्ञांश्रेयस्करंपरम् ॥ ५२ ॥ भ० संग्रामों में कभी निवृत्त न होना किन्तु जबतक उस शत्रु को न जीत ले तबतक उपाय में हो रहै किन्तु भागने के समय में भाग भी जाना और पराक्रम के समय में पराक्रम करना इसका नाम शूरवीरपना है जो कि पशु की नांई मार खाना वा मर जाना इसका नाम शूरवीरता नहीं किन्तु बुद्धि ही से विजय होता है अन्यथा कभी नहीं प्रजाओं का पालन करना जितने

विद्वानसत्यवादीधर्मात्माब्राह्मण अर्थातब्रह्मवित्सबविद्याओंमेंपूर्ण उनकायथावतसत्कारकरना यहीराजालोगोंकाकल्याणकरनेवालापरमश्रेष्ठकर्महै अन्यकोईनहीं ॥ ५२ ॥ आहवेषुमिथोन्योऽन्यंजिघांसन्तोमहीक्षितः। युध्यमानाःपरंशक्त्यास्वर्गंयान्त्यपराङ्मुखाः॥ ५३ ॥ भ० प्रजाकेपालनकरनेकेवास्ते श्रेष्ठधर्मात्माओंका यथावतपालन औरदुष्टोंकाताड़नकरनेकेलिये जितनाअपनासामर्थ्य उसेयथावतसबपुरुषमिलके परस्परजोराजालोगइनदुष्टोंकाकर्तेहैं उसमेंअपनेभीमरणसे जोशंकानहींकरतेहैं औरयुद्धमें पीठनहींदेखातेहैं अर्थातकभीयुद्धसेभागतेनहींपरमहर्षऔरशूरवीरतासेजोयुद्धकरतेहैं उनकाइसलोकमेंअखण्डितराज्यहोताहै औरमरजांयतोमरनेकेपीछे परमस्वर्गकोप्राप्तहोतेहैं क्योंकिउनराजालोगोंकाजितनाकर्महै सोसबधर्मकेवास्ते हीहै औरशूरवीरतासेउत्साहपूर्वकनिर्भयसमयमेंदेहकाजोछोड़ना सोईस्वर्गजानेकाकारणहै ॥ ५३ ॥ युद्धमेंधर्मसेइतनेनियमराजालोगोंकोअवश्यमाननाचाहिए। नकूटैरायुधैर्हन्याद्युध्यमानोरणेरिपून्। नकर्णिभिर्नापिदिग्धैर्नाग्निज्वलिततेजनैः॥ ५४ ॥ भ० नचहन्यात्स्थलारूढ़न्नक्लीबन्नकृताञ्जलिम् नमुक्तकेशन्नासीनन्नतवास्मीतिवादिनम्॥ ५५ ॥ नसुप्तन्नविसन्नाहंननग्नन्ननिरायुधम्। नायुध्यमानंपश्यन्तंनपरेणसमागतम्॥ ५६॥ भ० नायुध्यव्यसनप्राप्तन्नार्तन्नातिपरीक्षतम् नभीतन्नपरावृत्तंसतांधर्ममनुस्मरन्॥ ५७ ॥ भ० कूटआयुधअर्थातकपट,छल,सेकोईकोकभीयुद्धमेंनमारै रिपुनामशत्रुओंकाकर्णिनामकुटिलशस्त्र विषसेयुक्तशस्त्रसेतथाअग्निसे तपायेइनशस्त्रोंसेशत्रुकोकभीनमारै ॥ ५४॥ जोआसनमेंबैठाहोय नपुंसकहाथकोजोड़ले जिसकेशिरकेबालखुलजांय मैंआपकाहूं मुझकोमतमारोजोऐसाकहै ॥ ५५ ॥ जोसोताहोय जोयुद्धसेभागखड़ाहोय विषादकोप्राप्तभयाहोय वानग्नहोगयाहोय आयुधसरहित किजिसकेहाथमेंशस्त्रनहोय जोयुद्धनकरताहोय वादेखनेको

आयाहोय अथवादूसरेकेसाथआयाहोय मूर्छितहोगयाहोय शस्त्रकेप्रहारसेदुःखितहोगयाहोय औरशस्त्रोंकेलगनेसे शरीरमेंछेदन होगयाहोय भयभीतहोगयाहोय भूमिमेंखड़ाक्लीवनाम नपुंसक औरभयसे हाथजोड़ले इनकोयुद्धमेंराजाकभीनमारै क्योंकिसत्पुरुषराजाओंकायहीधर्महै जोयुद्धकरनेकोआवै शूरवीरतासे उसीकोमारैअन्यकोनहीं किन्तु पकड़केसुखमेंअपनेवशमें उसीवक्तकरले जोस्त्रीऔरबालकहैं उनकोमारनेकीइच्छाभी राजालोगनकरैं क्योंकिजोयुद्धकीइच्छावायुद्धनहीकरतेहैं उनकेमारनेमें बड़ापापहै इस्से कभीइनकोनमारै ॥ ५७ ॥ औरजोराजाकाभृत्यहोय वहयुद्धनकरैवायुद्धसेभागजाय अथवाछल,कपट,रक्खै युद्धमेंउसकोबड़ाभारीपापहोताहै । यस्तुभीतःपराहत्तःसंग्रामेहन्यतेपरैः । भर्त्तुर्यद्दुष्कृतंकिंचित्तत्सर्वंप्रतिपद्यते ॥ ५८ ॥ भ० जोभृत्यभययुक्तहोके युद्धसेभागजाताहै औरभागेहुएकोभीशत्रु लोगमारडालैं तोबड़ीकृतघ्नताउसनेकिया क्योंकिराजानेउसकापालन औरसत्कारकियाथा सोयुद्धकेवास्तेहीकियाथा सोयुद्धउनसेकुछकियानहीं राजाकेकियेकोनाशकरनेसे वहकृतघ्नहोताहै औरजोराजाकाकुछपाप उसकोवहीप्राप्तहोताहै ॥ ५८ ॥ यच्चास्यसुकृतंकिंचिदमुत्रार्थमुपार्जितम् । भर्तातत्सर्वमादत्ते पराहत्तहतस्यतु ॥ ५९ ॥ भ० उसभृत्यमेंजोकुछपरलोककेवास्ते पुण्यकियाथा इससबपुण्यकोराजालेलेताहै औरउसभृत्यकोघोरनरकहोताहैसुखकभीनहीयहीधर्मस्वामी औरसबसेवकोंकाभीहै किजोजिसकास्वामीवाजोजिसकाभृत्य वेपरस्पर हितकरनेहीमेंसदाप्रवृत्तरहैं छलऔरकपटमनसेभीन करैं अन्यथादोनोंअधर्मीहोतेहैं ॥ ५९ ॥ रथाश्वंहस्तिनंछत्रंधनंधान्यंपशून्स्त्रियः । सर्वद्रव्याणिकुप्यञ्चयोयज्जयतितस्यतत् । ६० ॥ भ० रथघोड़ाहाथीछाता,धनधान्यपशुगायछेरी,आदिकस्त्री और वस्त्रादिकसबद्रव्य घीवातेलकाकुप्पा इनकोजोयुद्धकरनेवालाजीते सोईलेवै उनमेंसेराजाकुछनले ॥ ६० ॥ राज्ञश्चदद्युरुद्धारमित्ये-

षावैदिकीश्रुतिः। राज्ञाचसर्वयोधेभ्योदातव्यमपृथग्जितम् ९१ ॥
भ० परन्तु सबभृत्यलोगसोलहवांहिस्साउनद्रव्योंमें सेराजाकोदे-
वें जोराजाऔरसेना मेंमिलकेजीताहो।य द्रव्यमिलाभया उसमेंसे
राजाभीसोलहवांहिस्साभृत्योंकोदेवै इसमेंराजाअधिकवान्यूनता
कभीनकरै क्योंकिइसकेबिनायुद्धमेंउत्साहकभीकोईनकरेगा ९१।
अलब्धमिच्छेद्दण्डेन लब्धंरक्षेदवेक्षया। रक्षितंवर्द्धयेद्वृद्ध्या वृद्धं
दानेननिःक्षिपेत् ॥ ९२ ॥ भ० चारभेदहैंपुरुषार्थकेअलब्धजोरा-
ज्यादिकउनकोदण्डसेग्रहणकरै जोप्राप्तभयाउसकोखूबबुद्धिऔर
प्रीतिसेरक्षाकरै औररक्षितपदार्थोंकाव्याजादिकउपायोंसेबढ़ा-
वै औरजोबढ़ाभयाधन उसकोविद्यादान यज्ञधर्मात्माओंका पा-
लनऔरअनाथोंकेपालनमेंलगावै इनमेंसेभीवेदादिकसत्यशास्त्रों
केपढ़नेऔरपढ़ानेहीमें बहुधाधनखर्चकरै अन्यमें नहीं ॥ ९२ ॥
बकवच्चिन्तयेदर्थान्सिंहवच्चपराक्रमेत् । वृकवच्चावलुम्पेत शशवच्च-
विनिष्पतेत् ॥ ९३ ॥ भ० राजासबअर्थोंकेसंग्रहकरनेमेंअत्यन्तबुद्धि
सेविचारकरै जैसाकिमत्स्यादिकग्रहणकरनेकेवास्ते बकुलाध्याना
वस्थितहोकेविचारकरताहै वैसेराजाध्यानावस्थितहोकेसबअर्थों
काविचारकरै युद्धसमयमेंसिंहकी नांईपराक्रमकरै जिस्से विजय
होवै औरपराजयकभीनहोय आपत्कालमेंअथवादुष्टोंकेनिग्रहक-
रनेकेवास्ते ऐसागुप्तरहै जैसाकिचीतावाभेड़ियाऔरखरहाजैसे
अपनेबिलसेनिकलकेकूदतादौड़ताचलाजाताहै वैसेहीराजाशत्रु
कोसेनासे निकलकेभागजाय वाछिपजाय अथवाकिला तोड़नेमें
औरशत्रुग्रहणकरनेमेंपराक्रमकरै ॥ ९३॥ शरीरकर्षणात्प्राणाः
क्षीयन्ते प्राणिनांयथा । तथाराज्ञामपिप्राणाः क्षीयन्ते राष्ट्रकर्ष-
णात् ॥ ९४ ॥ भ० जैसेशरीरदुर्बलकरनेसेबलादिकजोप्राणवेक्षीण
होजातेहैं वैसेहीराज्यकेनाश अर्थातअरक्षणसे राजालोगोंकेभी
प्राणक्षीणहोजातेहैं अर्थातराज्यसहितनष्टहोजातेहैं॥ ९४ ॥ य-
थाल्पाऽल्पमदन्त्याद्यं वार्योकोवत्सषट्पदाः । तथाल्पाऽल्पोग्रही-

तव्योराष्ट्राद्राजाब्दिकःकरः ।६५॥ भा० जैसेजोंकबछवाऔरभौंरा थोड़ा२रुधिरदूध औरसुगन्धकोग्रिनसेग्रहणकरतेहैं उनकानाश कभीनहींकरतेवैसेहीराजाप्रजासेथोड़ा२करग्रहणकरैसाल२में॥ ६५ ॥ परस्परविरुद्धानांतेषांचसमुपार्जनम् । कन्यानांसम्प्रदानांच कुमाराणांचरक्षणम् ॥ ६६ ॥ भा० जबसबअमात्योंकेसाथवाप्रजास्थपुरुषोंकेसाथकोईव्यवहारकेनिश्चयकेवास्ते राजाविचारकरै उनमें जिसबातमें परस्परविरोधहोय उसमेंसेविरुद्धांशको छोड़ाके सिद्धान्तमें सबकीजबएकताहोय उसबातकाआरंभकरै अन्यकानहीं कन्याओंकासोलहवेंवर्षसेपहिले विवाहकभीनहोनेपावै तथा चौबीसवर्षकेअगेकन्याविवाहकेविनाकभीनरहनेपावै जिसकोकी विवाहकीइच्छाहोय तथाकुमारपुरुषोंका२५वर्षकेपहिले विवाह किसीकानहोनेपावै और४०,४४वा४८,वर्षकेआगेविवाहकेविना पुरुषभीनरहैंतबतककन्याऔरपुरुषोंकोविद्यादानराजाकरै और उनसेकरावै तथाउनकीरक्षाभीराजाकरावै जिस्से किकोईभ्रष्टन होवै औरविद्याहीनभीकोईकन्या वापुरुषनरहै यहीराजालोगों कापरमधर्म औरपरमपुरुषार्थहै जिस्सेसबव्यवहारउत्तमहोतेहैं अन्यथानहीं औरजिसपुरुषवाकन्याको विवाहकीइच्छाहोनहोवै उसकेऊपरराजावाअन्यकाकुछबलनहीं॥ ६६ ॥ दूतसंप्रेषणंचैव-कार्यशेषंतथैवच । अन्तःपुरप्रचारञ्चप्रणिधीनांचचेष्टितम् ६७ । दूतकोभेजना औरउस्से सबयथावतव्यवहारोंकाजानना कार्यशेष नामहूतनाकार्यसिद्धिहोगया औरइतनाकार्यसिद्धनाकोहै उसको विचारसेयथावतपूर्णकरै जिसनगरमेंवाजिसस्थानमेंरहै उनमनुष्योंकायथावतअभिप्रायजानले प्रणिधीनामदूतोंअथवादासीदूतकोभीचेष्टाकोयथावतजानै जिस्से किकोईविघ्ननहोनेपावै ६७ ॥ कृत्स्नंचाष्टविधंकर्मपञ्चवर्गंचतत्त्वतः । अनुरागापरागौचप्रचारंमण्डलस्यच॥ ६८॥ भा० येआठविधजोकर्मराजाअमात्यसेनाकोश औरराज्ययेपांचवर्गहैं जिसमेंउसकर्मकोतत्त्वसेजानै औरउसकी

रक्षाभीकरै अपनेमेंसबकोप्रीति वाअप्रीति तथामण्डलके राजा ओंकाव्यवहार औरउनकेमनकोइच्छाइनकोयथावत्‌राजाजान-तारहै जिस्से आपत्कालअकस्मात्‌कभीनआवै॥ ६८॥ मध्यमस्यप्र-चारञ्च विजिगीषोश्च चेष्टितम्‌। उदासीनप्रचारंच शत्रोश्चैवप्रय-त्नतः॥ ६९॥ अपनेऔरपरराज्यकीसीमामें जोराजाहोय विजि-गीषुनामशत्रुकेतरफसेजोभीतनेकोआवै उदासीनजोअपनेवाशत्रु के पक्षमेंनहोवैऔरशत्रु,इनचारोंकीचेष्टाऔरअभिप्रायकोयथा-वत्‌राजाजानलवै अन्यथासुखकभीनहोगा इस्सेअत्यन्तप्रयत्नपूर्वक राज्यकेमूलजितनेहैं उनकोकहै औरतत्परहोकेजानिजानकेयथा-वत्‌व्यवस्थाकरै॥ ६९॥ इनकोसामअर्थातमिलाप,दानअर्थातधन कादेना भेदनामपरस्परसभोंकोतोड़फोड़रक्खै औरदण्डयेचार राजालोगोंकेसाधनहैं परन्तुउनचारोंमेंसेमिलापउत्तमहै उस्से नीचेदाम औरभेदसबसेकनिष्टदण्डहै इस्से तीनउपायसेजबकार्य सिद्धिनहोवैतबदण्डकरै इनकातत्वयहहै किजिस्से बहुतधर्मात्मा होवैं औरदुष्टनहोवैं ऐसेउपाय विद्यादिकदानोंसे राजासदाक-रतारहैएकतोउत्तप्रकारसेयुवावस्थामेंब्रह्मचर्याश्रमसेविद्याकोप-ढ़केविवाहकाहोना औरपांचवेंवर्षपुत्रवाकन्याको पढ़नेकेवास्ते न भेजें तोउनकेमातापितादिकोंकेऊपरराजाअवश्यदण्डकरै यथा-वत्‌पठनऔरपाठन कीव्यवस्थाकरै जोकोईइसमर्यादाकोभङ्गकरै विद्यादिकगुणग्रहणनकरै तबउसमनुष्यकोशूद्रकाअधिकारदेदे-वै औरशूद्रादिकनीचोंमेंकोईउत्तमहोवै उसकोयथायोग्यद्विजका अधिकारदेवै जैसेकिब्राह्मण,क्षत्रियवावैश्योंकेदुष्टपुत्रवाकन्यामूर्ख होजांय तबउनकोशूद्रकुलमेंरखदे औरशूद्रादिकोंमेंजबद्विजत्यअ-धिकारकेयोग्यहोवैं तबयथायोग्यद्विजकाअधिकारदेवै अर्थातद्विज बनादेवै तबजिसब्राह्मणक्षत्रियवावैश्यकेपुत्रवाकन्या एकदोतीनवा जितनेशूद्रहोगयेहोंय उनकेबदलेपुत्रवाकन्याओंकोराजागिन२के देवै तथाशूद्रादिकोंकोभीक्योंकिजिसकोएकहीपुत्रवाकन्याहै और

वहशूद्रहोगया अथवाशूद्रकोपुत्र वाकन्याद्विजहोगई फिरउनका
वंशतोछिन्नहीहोगया दूसराजालोगोंसेयथायोग्य गिन२केलिये
जांयऔरदियेभीजांयदूसरीबातयहहैकिवेदादिकसत्यशास्त्रोंकाअ-
त्यन्तप्रचारकरै औरजोकोईशास्त्रपुस्तकरचैवापढ़ैपढ़ावै उसकोरा-
जाशिरच्छेदनतकदण्डदेवै जिस्से किकोईमिथ्याशास्त्रपुस्तकनरचै
तीसरीबातयहहैकिजबकोईजितेन्द्रिय,पूर्णविद्यावान,पूर्णज्ञान-
वान,सत्यवादीदयालुऔरतीव्रबुद्धिवालाविवाहकरना औरविरक्त
होनाचाहैउसकोराजायथावत्परीक्षाकरकेआज्ञादेवैऔरकहदे
किआपसत्यविद्यासत्यउपदेशकाप्रचारसंसारमेंकरैंउसकाआकार
स्वभावऔरगुणपत्रमेंलिखेऔरग्राम२नगर२मेंविदितकरदेजिस्से
किकोईपुरुषउसका अपमाननकरै औरउसके वेषवानामसे कोई
फिरनेनपावै चौथीबातयहहैकिकोईमूर्ख,धूर्त्त,अधर्मीऔरमिथ्या
वादीविरक्तनहोनेपावै क्योंकिउसकेविरक्तहोनेसेसबसंसारकोबुद्धि
भ्रष्टहोजातीहैजैसोउसकीभ्रष्टबुद्धिहोगीवैसाहीउपदेशकरेगाअ-
च्छाकहांसेकरेगाइस्सेऐसापुरुषविरक्तनहोनेपावैजोविरक्तहोयतो
उसकोपकड़केदण्डदे पांचवीबातयहहैकिजोकोईकर्मकाण्डकाअ-
धिकारीहोय उसकोकर्मकाण्डमेंरक्खै सोकर्मकाण्डवेदोक्तलेना
तन्त्रवापुराणकोएकबातभीनलेनी पूर्वमीमांसाअर्थातजैमिनिजो
व्यासजीकेशिष्यकेकियेसूत्रोंकेअनुसार कर्मकाण्डकीव्यवस्थाराजा
नित्यरक्खै संध्योपासन,अग्निहोत्रसेलेकेअश्वमेधतककर्मकाण्डहै
उसकेदोभेदहैं एकतोसकामदूसरानिष्काम सकाम यहकहताहै
किविषयभोगऐश्वर्यकेवास्ते कर्मकाकरना औरनिष्कामयहहैकि
कर्मोंसेमुक्तिहीकाचाहना उस्से भिन्नपदार्थोंकोचाहनानहींउ-
समेंवेदकेजोमन्त्रहैंवेहीदेवहैं इनसेभिन्नकोईदेवनहींऔरमन्त्रों
के कहनेवाले परमेश्वरपरमदेवहैं ऐसाहीनिश्चय पूर्वमीमांसा-
दिकों औरनिरुक्तादिकोंमेंकियाहै दूसराउपासनाकाण्डहैसोभी
वेदोक्तहीलेना उसकेव्यवस्थाकेनिमित्तपातञ्जलिमुनिकेसूत्रऔर

उसके ऊपर व्यासमुनिजीकाकियाभाष्य तथादशउपनिषदइन्होंको रक्खे इनमेंजैसी उपासना की व्यवस्थाहै उसी पूर्वक आप और अपनीप्रजाकोचलावै पाषाणादिकमूर्त्ति पूजनादिक उपासनाको नहीं इस्से इसकोछोड़नाछोडानाहीउचितहै तीसराज्ञानकाण्ड है उसमेंपृथ्वीसेलेकेपरमेश्वरपर्यन्त पदार्थोंकायथावत्तत्त्वज्ञान काहोना इसकाविधानवेदशउपनिषदऔरव्यासजीकाकिया शा-रीरकसूत्रउनकीरीतिसेज्ञानदण्डकीव्यवस्थाकरै उसमेंआपराजा चलै औरप्रजाकोभीचलावैऔरजितनेपूर्वोक्तशैववैष्णवशाक्तादिक पाखण्डलिखेहैं उनकोकभीनप्रचलितकरै क्योंकियेसबपाखण्डहैं तीनोंकाण्डमेंनहींहैं उनमेंविरुद्धहीहैं इनपाखण्डोंकेचलनेमेंराजा औरराज्यनष्टहोजातेहैं सोअत्यन्तप्रयत्नोंसेइनपाखण्डोंकाअंकुर माचभीनरहनेपावै जैसेकिआजकालआर्यावर्त्तदेशमें मण्डलीको मण्डलीफिरतीहैं लाखोंपुरुषोंमेंविरक्तताधारणकियाहै यहमि-थ्याजालहीहै इनलाखोंमेंकोईएकपुरुषविरक्तताकेयोग्यहै और सब पाखण्डमेंरहेहैं इनकोराजा यथावत्परीक्षाकरै सत्यवादी, जितेन्द्रिय,सबविद्याओंमेंनिपुण औरशान्त्यादिकगुणजिसमेंहोय उसकोतोविरक्तहीरहनेदे इस्से जितनेविपरीतहोंय उनकोयथा-योग्य हलग्रहणादिककर्मोंमें राजालगादेवै इसव्यवस्थाको अ-वश्यकरै अन्यथाकभी सुखनहोगा ॥ सन्धिंचविग्रहंचैव यानमा-सनमेवच । द्वैधीभावंसंश्रयञ्च षड्गुणांश्चिन्तयेत्सदा ॥ ६५ ॥ स-न्धिनाममिलापविग्रहनामविरोधयाननामयात्रा किशत्रु केऊपर चढ़ना आसननामयुद्धकानकरना औरअपनेराज्यकाप्रबन्धकरके घरमेंबैठरहनाद्वैधीभावनामदोप्रकारकाबलअर्थातसेनारचलेना इनछःगुणोंका विचारकियाहै सोमनुस्मृतिमें विचारलेना और भीबहुतप्रकारकेराजकर्मोंकाउसीमेंविचारकियाहैसो देखलेवैं॥ प्रमाणानिचकुर्वीततेषांधर्म्यान्यथोदितान्। रत्नैश्चपूजयेदेनंप्रधा-नपुरुषैःसह ॥ ६६ ॥ स० जिसराजाकोजीतलेउस्से नियमकरदे कि

जबहमतुमकोबोलावें वाजैसीआज्ञाकरैंउसकोयथावतकरनाऔ-रमेरेअमात्यकेतुल्यहोके यथोक्तमेरीआज्ञाकरो यथावततुमधर्मसेसबकामकरोअन्यायमतकरोपराजयकेशोकनिवारणकेनिमित्तराजाऔरराजाकेसबपुरुषमिलके उनकोरत्नादिकदेके उसराजाकोप्रसन्नकरैं जिस्से किउसकोपराजयसेदुःखभयाहोय उसकासत्कारसेनिवारणहोजाय फिरउनकोयथावतआजीविकाकरदे जिस्से उनके भोजनादिकोंका निर्वाहहोसके उतनो जीविका करदे औरजोराजाधर्मसेराज्यकरै विद्या,बुद्धि,वल,पराक्रम, औरजितेन्द्रियहोय उस्से नयुद्धकरै नउस्से राज्यलेनेकोइच्छाकरै किन्तु उसकोबन्धुऔरमित्रवतजानै॥ ६६ ॥ प्राज्ञंकुलीनंशूरंचदक्षंदातारमेवच। कृतज्ञंधृतिमन्तञ्च कष्टमाहुररिंबुधाः॥ ६७॥ भ० पण्डित, कुलीन, शूर,वीर, चतुर, दाता,कृतज्ञ और धैर्यवान पुरुषसेवैरकभीनकरै जोकभीवैरकरैगा तोउसको दुःखहीहोगा ऐसेपुरुषकापराजयकभीनहींहोसक्ता॥ ६७॥ एवंसर्वमिदंराजासहसंमन्त्र्यमन्त्रिभिः। व्यायाम्याप्लुत्यमध्यान्हेभोक्तुमन्तःपुरंविशेत्॥ ६८॥ भ० इसप्रकारसेसर्वराजसम्बन्धीजोकर्मउसकाविचारमन्त्रियोंकेसाथकरकेव्यायामनामदण्डमुद्गरकरकेसिंहकीनांईअथवानटकीनांईअभ्यासकरकेमध्यान्हसमयकेपहिलेभोजनकरैभोजनकरकेन्यायघरमेंजाके सबन्यायोंकोयथावतकरैजितनोराजसम्बन्धीबातेंलिखीहैंये सबमनुस्मृतिसप्तमाध्यायकीहैं यहांतोसंक्षेपसेलिखीहैं विस्तारसे देखाचाहैतोवहांदेखलैएकयहबातअवश्यहोनीचाहिए कि जोमनुष्य राजाहो उसीकी आज्ञामें चलैं यह वातठीकनहीं क्योंकिराजातोप्रतिष्ठा औरमानकेवास्ते सर्वोपरि है परन्तुविचारकरनेकोएकपुरुषसमर्थनहींहोताजितनेदेशवाअन्यदेशमेंबुद्धिमानपुरुषहोवेंउनसबकोराजाएकसभारक्खैउससभामेंआपभीरहैफिरसबपुरुषोंकेविचारसेजोबातठीक२ठहरेउसबातकोसबकरैं इस्सेक्याआयाकिजोराजाअन्यायकारीहोजाय तोउस-

कोनिकालबाहरकरैं औरउसीकेस्थानमेंउत्तमलक्षणवालेक्षत्रियको बैठादेवैं क्योंकिराजातोप्रजाकेभयसेअन्यायनकरसकेगा औरप्रजा राजाकेभयसे अन्यायनकरसकैगी राजाजबअन्यायकरैतबउसको यथावत्दण्डदेदे॥कार्षापणंभवेद्दण्डोयत्रान्यःप्राकृतोजनः। तत्रराजाभवेद्दण्ड्यःसहस्रमितिधारणा ६९॥ भ० जिसअपराधमेंप्रजास्थ पुरुषकेऊपरएकपैसादण्डहोय उसीअपराधकोजोराजाकरैउसकेऊपरहजारपैसादण्डहोय यहकेवलउपलक्षणमात्रहै किप्रजासे हजारगुनोदंडराजाकेऊपरहोय क्योंकिराजाजोअधर्मकरेगा तो धर्मकापालनकौनकरेगा कोईभीनकरेगाइस्सेदोनोंकेऊपर दण्ड कीव्यवस्थाहोनीचाहिए ॥ ६९॥ अष्टापाद्यन्तुशूद्रस्यस्तेयेभवतिकिल्विषम्। षोडशैवतुवैश्यस्यद्वात्रिंशतक्षत्रियस्यच ॥ ७० ॥ ब्राह्मणस्यचतुःषष्टिःपूर्णंवापिशतंभवेत्। द्विगुणावाचतुःषष्टिस्तद्दोषगुणविद्धिसः ७१॥ जितनापदार्थकोईचोरावैवहमूर्खवाबालकनहोय किन्तु गुणऔरदोषोंकोजानताहोवै सोजोशूद्रचोरहोयतोउस्से आठ गुणदण्डले वैश्यसेसोलहगुण,क्षत्रियसे३२गुण,और१०० वा१२८ गुणदण्डराजाब्राह्मणसेलेवै क्योंकिश्रेष्ठहोकेनीचकर्मकरै उसको अधिकहीदण्डहोनाचाहिए॥ ७१ ॥ पिताचार्यःसुहृन्माताभार्यापुत्रःपुरोहितः। नादण्ड्योनामराज्ञोस्तियस्स्वधर्मेनतिष्ठति ७२ ॥ भ० पिताआचार्यविद्यादातासुहृत्नाममित्रमाता भार्यानामस्त्री पुत्रऔरपुरोहितजब२अपराधकरैं तब२कभीदण्डकेबिनानछोड़ै क्योंकिराजाकेसामनेकोई अपराधीअदण्ड्यनहीं क्योंकिस्वधर्ममें स्थितनरहै॥ ७२॥ अदण्ड्यान्दण्डयन्राजादण्ड्यांश्चैवाप्यदण्डयन्। अयशोमहदाप्नोतिनरकंचैवगच्छति ७३॥भ०जोराजाअन्याय करनेवालेकोदण्डनहींदेता औरअनपराधीकोदण्डदेताहै उसकोबडीअपकीर्तिहोतीहै औरनरककोभी वहजाताहै इस्से राजा कोअवश्यचाहिएकिपक्षपातकोछोड़के यथावत्दण्डव्यवस्थारक्खै किसीकापक्षपातकभीनकरै इस्से क्याआयाकि किसीनेंमनुष्य ति

वाअन्यजनसेऐसेश्लोकप्रक्षिप्तकियाहोय किब्राह्मणवासन्यासीआदि-
कोदण्डनदेनाउसकोसज्जनलोगमिथ्याहीमानैं ॥ ७३ ॥ क्योंकि
धर्मोविद्धस्त्वधर्मेणसभांयत्रोपतिष्ठते । शल्यंचास्यनकृन्तन्तिविद्धा-
स्तत्रसभासदः ॥७४॥ म० धर्मऔरअधर्मसेविद्धअर्थातघायलभया
राजाऔरसभासदोंकेपासधर्मऔरअधर्मदोनोंआवैंफिरउसध-
र्मकाजोघावउसकोराजाऔरसभासदननिकालैंजसेकिघावकोऔ-
षध्यादिकयत्नोंसेअच्छाकरतेहैंवैसेहीधर्मात्माकासत्कारऔरदुष्टों
केऊपरदण्ड जिससभामें यथावत नहोगा उससभाके राजाऔर
सभासदसबमनुष्योंकोंमुरदाहोजानना तथाजहां२शिष्टपुरुषोंको
अथवासत्यासत्य निश्चयकेवास्तेसभाहोवै फिरजिससभामेंसत्यका
स्थापननहोयऔरअसत्यकाखण्डनवेभीसबसभासदमूढ़होहैं और
मुरदेक्योंकि ॥७४॥ सभांवानप्रवेष्टव्यंवक्तव्यंवासमंजसम् । अब्रु-
वन्विब्रुवन्वापिनरोभवतिकिल्विषी ॥ ७५ ॥ म० पुरुषप्रथमतोस-
भामेंप्रवेशहीनकरै औरजोसभामेंप्रवेशकरै तोसत्यहीकहै मिथ्या
कभीनकहै क्योंकिजानताभयापुरुषसत्यासत्यकोनकहै अथवाजैसा
जानताहोय उससे विरुद्धकहैतोभीवहमनुष्यपापीहोजाताहै इससे
क्याआयाकिजैसाजोपुरुष हृदयसेजानताहोय वैसाहीकहै उससे
विरुद्धकभीनकरै क्योंकिसत्यबोलनाहीसबधर्मोंकामूलहै औरअ-
सत्यअधर्मकामूलहै इसमेंमहाभारतकाप्रमाणहै नसत्याद्विपरो-
धर्मोनानृतात्पातकंपरम् । इसकायहअभिप्रायहैकिसत्यबोलनेसे
बढ़करकोईधर्मनहींऔरमिथ्याबोलनेसेबढ़करकोईपापनहीं इससे
सत्यभाषणहीसदाकरनाचाहिए मिथ्याकभीनहीं ॥ ७५ ॥ यत्रध-
र्मोह्यधर्मेणसत्यंयत्रानृतेनच । हन्यतेप्रेक्षमाणानांहतास्तत्रस-
भासदः । ७६ ॥ म० जिसराजाकीसभामें धर्म अधर्मऔरसत्यका
राजातथाअमात्योंकेदेखतेभी अनृतनाशकरताहै फिरवेन्यायन-
करैं तथासर्वसभामें उनकोभीसज्जनलोग नष्टहोजानैं क्योंकि
॥ ७६ ॥ धर्मएवहतोहन्तिधर्मोरक्षतिरक्षितः । तस्माद्धर्मोनहन्त-

र्य्योमानोधर्मोंहतोवधीत्॥ ७७॥ भ० जोपुरुषधर्मकानाशकरता है अर्थातधर्मकोछोडके अधर्मकरताहै उसकोअवश्यही धर्ममार डालताहै उसअधर्मीकीरक्षाकरनेको ब्रह्मादिकदेवभीसमर्थनही औरपरमेश्वरभीअपनीआज्ञाकोअन्यथानहींकरते क्योंकिपरमेश्वरतोसत्यसङ्कल्पहीहै इस्से जैसीआज्ञाविचारकेयथावतकियाहै वहीरहतीहै किअधर्मकरैसो अधर्मकाफलपावै औरधर्मकरैसो धर्मका औरजोपुरुषधर्मकोरक्षाकरताहै उसकीधर्मभीसदारक्षा करताहैउसकानाशकरनेकोतीनोंलोकमेंकोईभीसमर्थनहीं इस्से सबसज्जनलोगधर्मकानाशऔरअधर्मकाआचरणकभीनकरैं ७७ वृषोहिभगवान्धर्मस्तस्यय:कुरुतेह्यलम्। वृषलन्तंविदुर्देवास्तस्माद्धर्मंनलोपयेत्॥७८॥ भ० जोमनुष्यधर्मकालोप अर्थातधर्मको छोड़केअधर्मकरताहै वहीशूद्रवाभंड़ुवाहै क्योंकिवृषनामधर्मका है औरभगवान्भीतीनोंलोकमेंधर्महीहै जोआज्ञाकरनेवालाहै सोआज्ञासेभिन्ननहीं क्योंकिउसकेआत्मरूपहीआज्ञाहै उसधर्म कोजोत्यागकरताहै उसकोदेवनाम विद्वानलोगशूद्रवा भंड़ुवाको नांईजानतेहैं इस्से धर्मकात्यागकभीनकरनाचाहिए॥ ७८॥ एक एवसुहृद्धर्मो निधनेप्यनुयातिय:। शरीरेणसमंनाशं सर्वमन्यद्धिगच्छति॥ ७९॥ भ० देखनाचाहियेकिसबजगतमेंएकधर्महीसब मनुष्योंकामित्र है अन्यकोईनहीं क्योंकिधर्ममरनेकपीछेभीसाथदेताहै औरधर्मसेभिन्न जितनेपदार्थहैं वेशरीरकेछोड़नेके साथही छूटजातेहैं परन्तु धर्मकासंगसदाबनारहताहै इस्सेधर्मकोकोईकभीनछोड़ै॥ ७९॥ पादोधर्मस्यकर्त्तारं पाद:साक्षिणमृच्छति। पाद:सभासद:सर्वान्पादोराजानमृच्छति॥ ८०॥ भ० जिससभा मेंअन्यायहोताहै उससभामेंयहबातहोतीहै किजोअधर्मकोकरता है उसकोअधर्मकाचौथाहिस्साप्राप्तहोताहै उसकेजोमिथ्यासाक्षी हैं उनकोअधर्मकाचौथियांशमिलताहै जितनेसभासदहैं किराजा केअमात्य उनकोएकअंशअधर्मका राजाकोमिलताहै अर्थातउस

अधर्मकेचारहिस्से होजातेहैं औरचारोंकोउक्तप्रकारसेएक२हिस्सामिलजाताहै ॥ ८० ॥ राजाभवत्यनेनास्तु मुच्यन्तेचसभासदः । एनोगच्छतिकर्त्तारंनिन्दार्होयत्रनिन्द्यते ॥ ८१ ॥ म० जिससभामें धर्मऔरअधर्मकाविवेकयथावतहोताहै कियथावतपक्षपातकोछोड़केसत्य२हीन्यायहोताहै उससभाकेराजासाक्षी औरअमात्यसब धर्मात्माहोजातेहैं औरजिसनेअधर्मकिया उसीकेऊपरसबअधर्म होताहैकिन्तुवहीअधर्मकाफलभोगताहै राजादिकआनन्दसेपुण्य काफलभोगतेहैं दुःखकभीनहीं इससे राजाअमात्यऔरसाक्षी पक्षपातसेअन्यायकभीनकरें ॥ ८१ ॥ बाह्यैर्विभावयेल्लिंगैर्भावमन्तर्गतंनृणाम् । स्वरवर्णेङ्गिताकारैश्चक्षुषाचेष्टितेनच ॥ ८२ ॥ म० जबकोईवादीप्रतिवादीकान्यायकरनेलगे तबबाहरकेचिन्होंसे भीतरकेभावकोजानलेवे उसकाशब्दरूप इङ्गितनाम सूक्ष्महृदयऔरनाड़ीकीचेष्टाआकृतितथानेत्रकीचेष्टाऔरबाह्यअंगोंकीभीचेष्टा इनसेसत्य२निश्चयकरले किइननेअपराधकियाहै औरइननेंनहीं किया एकबातयहभी परीक्षाकीहै जो हाथकेमूलमें धमनीनाड़ी औरहृदयउनकोवैद्यकशास्त्रकीरीतिसे स्पर्शकरकेयथावतपरीक्षा करै फिरयथावतदण्ड औरअदण्डकरै इन१८अठारहस्थानोंमें विचारकीव्यवस्थाहै ॥ ८२॥ तेषामाद्यमृणादानंनिःक्षेपोस्वामिविक्रमः । संभूयचसमुत्थानंदत्तस्यानपकर्मच ॥ ८३ ॥ वेतनस्यैवचादानंसंविदश्चव्यतिक्रमः । क्रयविक्रयानुशयो विवादःस्वामिपालयोः ॥ ८४ ॥ सीमाविवादधर्मश्च पारुष्ये दण्डवाचिके । स्तेयंचसाहसंचैवस्त्रीसंग्रहमेवच ॥ ८५ ॥ स्त्रीपुंधर्मोविभागश्चद्यूतमाह्वयएवच । पदान्यष्टादशैतानि व्यवहारस्थिताविह ॥ ८६ ॥ एषुस्थानेषुभूयिष्ठं विवादंचरतान्नृणाम् । धर्मंशाश्वतमाश्रित्य कुर्यात्कार्यविनिर्णयम् ॥ ८७ ॥ म० ऋणका लेना औरदेना १ निःक्षेपकेदोभेदहैं जोगिनकेतौलके वाकिसीकेपासपदार्थरक्खै उसकानामनिक्षेपहै दूसरामुहरबांधकेकिसीकेपासधरावटरक्खो और

आधे२धनसे व्यवहारकरना २ अस्वामिविक्रयनाम अन्यकापदार्थकोईबेचले वाकिसीकापदार्थकोईदबाले३ संभूयसमुत्थाननाम धर्मार्थयज्ञार्थ वा दक्षिणाकेवास्ते धनदियाजाय इनमें विवादका होनावाअन्यथाकरना ४ औरदियेभयेपदार्थकोछिपाले ५ नौकरीकाटदेनावानदेना अथवानलेना ६ प्रतिज्ञाकाभंगकरना ७ बेचनाऔरखरीदना ८ पशुओंकास्वामीऔरउनकेपालनेवालेमेंविवादकाहोना सीमामेंविवादकाहोना १० कठोरवचन औरबिना विचारे दण्डदेना ११ चोरी १२ साहसनामपरस्परस्त्रीपुरुषोंका व्यभिचारऔरडांकूपना १३ किसीकोस्त्रीकोबलसेवाफुसलाकरले लेना १४ स्त्रीऔरपुरुषोंकेपरस्परनियमउनकाभंगकरना १५ दायभाग १६ द्यूतनामजूवा १७ और जोप्राणिअर्थातस्त्रीपुत्रकुटुम्बगाय हस्ती,अश्वादिकपशुओंकोदबाकरद्यूतकाकरना उसकानामसमाह्वयहै १८ इनअठारहव्यवहारोंमें प्रजामेंअत्यन्तविवादहोता है इनकाउक्तलक्षणदूतसे सुन औरपूछनेसेराजायथावत्न्यायकरै इनन्यायोंकाविधानयथावत्मनुस्मृतिके अष्टमाध्याय औरनवमाध्यायकीरीतिसेकरनाचाहिये॥ ८७॥ दातव्यंसर्ववर्णेभ्योराज्ञाचौरैर्हृतंधनम्। राजातदुपयुञ्जानश्चौरस्याप्नोतिकिल्बिषम् ८८॥ जोप्रजामेंचोरीहोयतोउसमेंजितनेपदार्थचोरीजांयउनसबपदार्थों कोचोरोंकानिग्रहकरके जोजिसकापदार्थ चोरीगयाहोय उसको चोरोंसेलेकेपदार्थकेस्वामीकोराजादेदे औरजोचोरनपकड़ाजाय औरपदार्थनमिलै तोअपनेपाससेराजादेदेक्योंकिइसीवास्ते राजा काहोनाआवश्यकहै प्रजानित्यराजाकोदेतीहैइसवास्ते किअपना पालनराजायथावत्करै जोयथावत्पालननकरेगाऔरप्रजासेधनलेगातोवहीराजाचोरऔरडाकूकेपापकाभागीहोगाजोचोरोंसे मिलके चोरीकेधनकोग्रहण करनेकीइच्छाकरै वहराजानहींहै किन्तु वहोचोरऔरडांकूहै ॥ ८८॥ यादृशाधनिभिःकार्याव्यवहारेषुसाक्षिणः। तादृशान्संप्रवक्ष्यामियथावाच्यमृतंचतैः ॥ ८९ ॥

भ० राजा और धनिकलोगों को जिसप्रकार के साची व्यवहारों में करना चाहिए उनको यथावत कहते हैं और साचियों को जैसा सत्य २ ही कहना चाहिए ॥ ८९ ॥ गृहिणः पुत्रिणो मौलाः चचविट्शूद्रयोनयः । अर्थ्युक्ताः साच्यमर्हन्ति न ये केचिदनापदि ॥ ९० ॥ भ० गृहस्थ पुत्रवाले और वे उदार होवें फिर चत्रिय, वैश्य, शूद्र, शूद्रवर्णों में से कार्यवाला पुरुष जिनको कहै कि ये मेरे साची हैं और कोई आपत् काल के बिना न होय ॥ ९० ॥ आप्ताः सर्वेषु वर्णेषु कार्याः कार्येषु साचिणः । सर्वधर्मविदोऽलुब्धा विपरीतांस्तु वर्जयेत् ॥ १०० ॥ भ० ब्राह्मणादिक सब वर्णों में जो आप्त बड़ा धर्मात्मा, सत्यवादी और जितेन्द्रिय होवें तथा सर्वधर्म को जानता होय और काम, क्रोध, लोभ, मोह, भयशोकादिक दोष जिसमें न होवें सत्यबोलने ही का जिसका नियम होय ऐसे ही को राजा और प्रजा साची करैं इनसे विपरीत मनुष्यों को कभी साची न करैं ॥ १०० ॥ नार्थसम्बन्धिनो नाप्ता न सहाया न वैरिणः । न दृष्टदोषाः कर्तव्या न व्याध्यार्त्ता न दूषिताः ॥ १०१ ॥ भ० जितने परस्पर व्यवहार से सबन्ध रखते होंय अनाप्त नाम जिन में काम क्रोध, लोभ, मोह, भयमूर्खत्वादि दोष होवें सहायकारी होवें वा शत्रु होवें जो वादी प्रतिवादी के दोष वा गुणों को जानता होय रोग से आर्त होय वा दुष्टकर्म को करनेवाले इस प्रकार के मनुष्यों को राजा वा प्रजा साची कभी न करैं ॥ १०१ ॥ न साची नृपतिः कार्यो न कारुककुशीलवौ । न श्रोत्रियो न लिंगस्थो न संगेभ्यो विनिर्गतः ॥ १०२ ॥ भ० राजा कारुक नाम शिल्पी कुशीलव नाम कुटारी से आजीविका करने वाले श्रोत्रिय नाम वेद पढ़ानेवाला लिंगस्थ ब्रह्मचारी और वानप्रस्थ संगेभ्यो विनिर्मुक्त नाम सन्यासी इनको भी राजा वा प्रजा साची न करैं क्योंकि कारुक और कुशीलव तो मूर्ख हैं राजा न्याय करनेवाला होता है वेदपाठी, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और सन्यासी इनको साची करने से पढ़ना पढ़ाना तप और विचार में विघ्न होगा इस से इनको साची न करना चाहिये। १०२ ॥ नाध्यधीनो न वक्तव्यो न दस्युर्न विकर्मकृत् ।

नष्टोनशिष्युनैंकोमान्योनविकलेन्द्रियः ॥ १०३ ॥ भ० पराधीनवक्तव्यनाम लिखाने सेसाक्षीहोवै डाकू विरुद्ध कर्मकरनेवाला वृद्ध बालकनीचऔरअजितेन्द्रिय तथाएकहीपुरुषसाक्षी इनकोराजावाप्रजाकभीसाक्षीनकरैं ॥ १०३ ॥ नार्त्तोनमत्तोनोन्मत्तोनक्षुत्तृष्णोपपीडितः । नश्रमार्त्तोनकामार्त्तोनक्रुद्धोनापितस्करः ॥ १०४ ॥ भ० दुःखीमत्तनाम भांगमद्यादिकपीनेवाला उन्मत्तनामपागल क्षुधा औरतृषासे जोपीडितहोवै श्रमकरकेदुःखीहोवै कामातुर क्रोधीऔरचोर इनकोराजाऔरप्रजासाक्षीकभीनकरैं ॥ १०४ ॥ स्त्रीणांसाक्ष्यंस्त्रियःकुर्युर्द्विजानांसदृशाद्विजाः । शूद्राश्चसन्तःशूद्राणामन्त्यानामन्त्ययोनयः ॥ १०५ ॥ भ० विद्यासत्यभाषणजितेन्द्रियजोस्त्रियांहोवैं वस्त्रियोंकोसाक्षीहोवैं द्विजोंकेसदृशसत्यवादी द्विज शूद्रोंकेसत्यवादीशूद्र चांडालादिकोंकेसत्यवादी चांडालादिकसाक्षीहोवैं अन्यकोईनहीं औरभीमनुस्मृतिकेअष्टमाध्यायमेंविस्तार सेसाक्षीकाविधानलिखाहै जोदेखाचाहैसोदेखले ॥ १०५ ॥ साहसेषुचसर्वेषुस्तेयसंग्रहणेषुच । वाग्दण्डयोश्चपारुष्येनपरीक्षेतसाक्षिणः ॥ १०६ ॥ जितनेबलात्कारकेकर्मचोरीपरस्त्रीसेव्यभिचारवा ग्रहणकठोरबचनवा विनाविचारेदण्डकादेना इनकर्मोंमेंसाक्षीकीपरीक्षाहीराजानकरै किन्तु यथावत्विचारकरके इनकोदण्ड देना उचित है ॥ १०६ ॥ सत्येनपूयतेसाक्षी धर्मःसत्येनवर्द्धते । तस्मात्सत्यंहिवक्तव्यंसर्ववर्णेषुसाक्षिभिः ॥ १०७ ॥ भ० सत्यबोलने सेसाक्षी पवित्र और मिथ्या बोलने से महापापी होता है धर्म भीसत्यबोलनेहीसे बढ़ताहै इससे सबमनुष्यों कोसत्यही साक्षी देनीचाहिएमिथ्याकभीबोलनानहीं ॥ १०७ ॥ आत्मैवह्यात्मनःसाक्षीगतिरात्मातथात्मनः । मावमंस्थाःस्वमात्मानंनृणांसाक्षिणमुत्तमम् ॥ १०८ ॥ भ० साक्षीसेपूछनाचाहिये कितेरेआत्माकासाक्षीतूंहीहै औरतेरीसद्गतिकाकरनेवालाभीतूंहीहै क्योंकिजोतूं सत्यबोलेगातोतुझकोकभीदुःखनहीगा औरमिथ्याबोलनेसेसदातूं

दुःखीहोरहेगा इसमेंकुछसन्देहनहीं इससे हेमित्रसबसाक्षियोंमें सेउत्तमजोसाक्षीअपनाआत्मा उसकामिथ्याबोलनेसे अपमानतू मतकर औरजोतू अपमानआत्माकाकरेगा तोकिसीप्रकारसेतेरीसद्गतिनहींहोगी किन्तु असद्गतिहीहोगी इससे सत्यहीसाक्षीबोले मिथ्याकभीनहीं ॥ १०८ ॥ ब्रह्मघ्नोयेस्मृतालोकायेचस्त्रीबालघातिनः । मित्रद्रुहःकृतघ्नस्य तेतेस्युर्ब्रुवतोमृषा ॥ १०९ ॥ म० ब्रह्मघ्न नामब्रह्मवित्पुरुषोंकामारनेवाला औरवेदोक्तकर्मोंकात्यागीस्त्री और बालकोंकामारनेवाला मित्रकाद्रोही कृतघ्नइनकोजैसेकुम्भीपाकादिकदुःखरूपीलोकऔरजन्मप्राप्तहोतेहैं वेतुझकोसबहोवेंजो तूसत्यनबोले ॥ १०९ ॥ जन्मप्रभृतियत्किंचित्पुण्यंभद्रत्वयाकृतम् । तत्तेसर्वंशुनोगच्छेद्यदिब्रूयास्त्वमन्यथा ॥ ११० ॥ हेभद्रहेसाक्षिन् जोतूमिथ्याकहेगा तोतैनेंजितनापुण्यजन्मभरकियाहैवहसबतेरा पुण्यकुत्तेकोप्राप्तहोय इससे तूसत्यबोले ॥ ११० ॥ एकोऽहमस्मीत्यात्मानंयत्त्वंकल्याणमन्यसे । नित्यंस्थितस्तेहृद्येषपुण्यपापेक्षितामुनिः ॥ १११ ॥ हेकल्याणतूजानताहैकिमैंएकहीहूं ऐसातूमतजान क्योंकिन्यायकारीसर्वज्ञजोपरमेश्वरसबजगतमेंव्यापीनित्यस्थितहै सोईतेरेहृदयमेंभीव्यापकहै तेराजोपापवापुण्यइनसबकोयथावत्जानताहै इससे तूपरमेश्वर औरअधर्मसे भयकरकेसत्यहीबोल ॥ १११ ॥ यमोवैवस्वतोदेवोयस्तवैषहृदिस्थितः । तेनचेदविवादस्ते मागंगांमाकुरून्गमः ॥ ११२ ॥ म० जो यमनाम यथावत् न्यायसेव्यवस्थाकरनेवाला वैवस्वतनामसूर्यादिकसबजगत्काप्रकाशकरनेवाला देवनामस्वप्रकाश स्वरूपसर्वान्तर्यामी तेरेहृदयमें भीनित्यस्थितहै उसपरमेश्वरसे शत्रुतावाविवाद तुझकोनकरना होय तोतूसत्यहीबोलऔरजोतूंपरमेश्वरहीसेविरोधरक्खेगातो तुझकोकभीसुखनहोगा औरजोतूसत्यहीबोलेगा तोगङ्गावाकुरुक्षेत्रमेंप्रायश्चितकरना वाराजदण्डमेंदण्ड अथवापरलोक परजन्म मेंनरकादिकसबदुःखोंकीप्राप्तितुझकोकभीनहोगी इससे तुझकोअ-

वश्यसत्यहीबोलनाचाहियेमिथ्याकभीनहीं ॥ ११२ ॥ यस्यविद्वान् हिवदतःक्षेत्रज्ञोनाभिशंकते । तस्मान्नदेवाःश्रेयांसंलोकेऽन्यंपुरुषंविदुः ॥ ११३ ॥ भ० जिसपुरुषकाक्षेत्रज्ञजोहृदयस्थआत्मा विद्वाननाम सबपापपुण्यकोजाननेवाला सोईअपनाआत्माजिसकर्ममेंशंकानहींकरताहै जिसमेंभयशङ्का औरलज्जाहोवै उसकर्मको कभीनहींकरता किसत्याचरणऔरसत्यवचनहीबोलताहै उससेअधिकअन्यधर्मात्मापुरुषकोईनहीं ऐसादेवनामविद्वान्लोगनिश्चितजानतेहैं औरभीमनुस्मृतिकेअष्टमाध्यायमें बहुतसाविस्तारलिखाहै सोदेखलेना व्यवहारोंकोनिश्चयकरनेकेवास्तेदूतकाभेजना औरउक्तप्रकारोंसेयथावत्निश्चयहीसत्ताहै अन्यथानहीं ॥ ११३ ॥ उपस्थमुदरंजिह्वाहस्तौपादौचपञ्चमम् । चक्षुर्नासाचकर्णौचधनंदेहस्तथैवच । ११४ ॥ भ० उपस्थनामलिंगेन्द्रिय, उदर, जिह्वा, हस्त पाद, चक्षु, नासिका, कान, धनऔरदेहयेदशदण्डदेनेकेस्थानहैं इन्हीं में दण्डका स्थापनहोताहै ॥ ११४ ॥ वाग्दण्डंप्रथमंकुर्याद्धिग्दण्डंतदनन्तरम । तृतियंधनदण्डन्तुवधदण्डमतःपरम् ॥ १०५ ॥ भ० प्रथम तो वाग्दण्ड करै कि ऐसा काम कोईदुष्ट न करै दूसराधिक्दण्ड कितुझकोधिकारहै दुष्टतैंनेंनीचकर्मकिया तीसरा धनदण्डकिउससे धनलेलेना चौथावधदण्डकिउसकोमारडालना ॥ ११५ ॥ अनादेयस्यचादाना दादेयस्यचवर्जनात् । दौर्बल्यंख्याप्यतेराज्ञःसप्रेत्येहचनश्यति ॥११६॥ राजाजोनलेनेकीवस्तुहोउसकोकभीनले औरलेनेकाअपनाजोकरउसमेंसेएककौड़ीभीनछोड़े क्योंकिइससे राजाकी दुर्बलताजानीजातीहै उसराजाकाइसलोकवापरलोकमें नाशहोहोताहै इससे क्याआयाकि राजाअपने अंशोंकोप्रजासेयथावत्लेताहै औरप्रजाकेअंशकोकभीग्रहणनहींकरता सोईराजाश्रेष्ठहै ॥ ११६ ॥ यस्त्वधर्मेणकार्याणिमोहात्कुर्यान्नराधिपः । अचिरात्तंदुरात्मानंवशेकुर्वन्तिशत्रवः ॥ ११७ ॥ भ० जो राजा अन्याय तथा मोहसे कार्यों को करताहै उसराजाका

शीघ्रहोनाशक्यहोजाताहै क्योंकिउसकोबहुलोग शीघ्रहीवशमें कर
लेतेहैं ॥ ११७ ॥ संभोगोदृश्यतेयत्र नदृश्येतागमःक्वचित्। आगमः
कारणंतत्रनसंभोगइतिस्थितिः ॥ ११८ ॥ ग्रामोंमेंभोगनानाप्रकार
का देखपड़े उसको राजा विचारकरै किआमदनी इनकोकहां
से होती है जोआमदनी निश्चितहोय तोकुछ चिन्तानहीं और
जोनौकरीव्यापारवाकुछउद्यमनकरै औरभोगनानाप्रकारकाक-
रताहोय उसकोपकड़केराजादण्डदे क्योंकिअवश्ययहचौर्यादिक
कुकर्मकरताहोगा इसकेपासधनकहांसेआया भोगकाकारण
आगमहीहै औरसंभोगकाकारण संभोगकभीनहीं ऐसीमर्यादा
है इसकोराजाअवश्यपालनकरै ॥ ११८ ॥ धर्मार्थंयेनदत्तंस्यात्क-
स्मैचिद्याचतेधनम्। पश्चाच्चनतथातत्स्यान्नदेयंतस्यतद्भवेत् ११९ ॥
भ० किसीनेकिसीकोपठनपाठनअग्निहोत्रादिकयज्ञसुपात्रोंकोदेने
केवास्तेवाअपनेभोजनादिकनिर्वाहकेनिमित्तधनदियागया किइ-
तनेकामकेहेतु हमआपको धनदेतेहैं सोआपइतनाही कामइससे
करैं औरपुण्यकेवास्ते दानदियाहोय फिरवहवैसाकर्मनकरै कि
वेश्यागमन,वानशादिकप्रमादउसधनसेकरै तोउससे सबधनलेलि-
याजाय जिसनेकिदियाथावहलेलेऔरजोउसकोवहनदेतोराजा
उसकोपकड़केदण्डसेदिलादे ॥ ११९ ॥ धनुःशतंपरीहारोग्रामस्य-
स्यात्समन्ततः। शम्यापातास्त्रयोवापित्रिगुणोनगरस्यतु ॥ १२० ॥
भ० गांवकेचारोंओर१००सौधनुष्य परिमाणसेमैदानरक्खे धनु-
ष्यहोताहै साढ़ेतीनहाथका अथवाकोईबलवानपुरुषएकदण्डाको
लेके खूबबलसेफेंके जहांवहदण्डपड़े उससे फिरफेंके उसस्थानसेभी
तीसरीबारफेंके जहांवहदण्डाजाय वहांतकमैदानरक्खै इसमेंसौ
धनुष्यसेकुछअधिकमैदानहोगा औरनगरकेचारोंओरत्रिगुणमै-
दानरक्खै क्योंकिग्रामवानगरमें वायुशुद्धरहेगा इससे रोगथोड़े
होंगे औरपशुओंकोसुखहोगा इसवास्तेअवश्यइतनामैदानरख-
नाचाहिए१२०॥ परमंयत्नमातिष्ठेत्स्तेनानांनिग्रहेनृपः। स्तेना-

णांनिग्रहादस्ययशोराष्ट्रंचवर्द्धते १२१॥ म० चोरोंकेनिग्रहमेंराजा
अत्यन्तयत्नकरै क्योंकिचारोंऔरदुष्टोंके निग्रहसेराजाकीकीर्त्ति
औरराज्यनित्यबढ़तेचलेजातेहैं अन्यथानहीं ॥ १२१ ॥ रक्षन्धर्मे-
णभूतानि राजावध्यांश्चघातयन् । यजतेऽहरहर्यज्ञैः सहस्रशतद-
क्षिणैः ॥ १२२ ॥ म० औरराजाधर्मनामन्यायसेसबभूतोंकीरक्षाक-
रताहै औरदुष्टोंकोदण्डसेमारताहै वहराजासहस्रोंवासैकड़ोंरु-
पैयोंसे अर्थात्लक्षऔरकोटिरुपैयोंसेजानों किनित्ययज्ञहीकरता
है क्योंकिराजाकामुख्यधर्मयहीहै श्रेष्ठोंकापालनऔरदुष्टोंकाता-
ड़नकरना ॥ १२२ ॥ अरक्षितारंराजानं बलिषड्भागहारिणम् ।
तमाहुःसर्वलोकस्यसमग्रमलहारकम् ॥ १२३ ॥ म० जोराजाधर्म
सेयथावत्प्रजाकापालननहींकरता औरप्रजासेधान्यमें षष्ठांशइ-
त्यादिककरोंकोलेताहै वहराजाकरक्यालेताहैकिसबसंसारकेम-
लोंकोखाताहै औरसबकेजैसेविष्टादिकोंकोशुद्धिकरताहैचांडाल
वैसाहीवहराजाहै ॥ १२३॥ निग्रहेणचपापानांसाधूनांसंग्रहेणच ।
द्विजातयइवेज्याभिःपूयन्तेसततंनृपाः ॥ १२४ ॥ म० जोराजापापी
पुरुषोंको अत्यन्तउग्रदण्डदेताहै औरश्रेष्ठोंकोरक्षा तथासन्मान
करताहैवहराजासदापवित्रहैऔरस्वर्गकाभागीहैजैसेकिद्विजाति
लोगविद्या,तपऔरयज्ञोंसेपवित्ररहतेहैं ॥ १२४ ॥ यःक्षिप्तोमर्षय-
त्यार्त्तैस्तेनस्वर्गेमहीयते । यस्त्वैश्वर्यान्नक्षमतेनरकंतेनगच्छति ॥
१२५ ॥ म० जोराजाआर्त्तनामदुःखीलोगगालीतकभीदें तोभीस-
हनकरताहै सोईराजास्वर्गमेंपूज्यहोताहै औरजोऐश्वर्यकेअभि-
मानसेकिसीकासहननहींकरता इसीसेवहराजा नरककोजाता
है क्योंकिजोसमर्थहै उसीकोसहनकरनाचाहिए औरजोनिर्बलहै
सोतो अपनेहीसेसहनकरेगा ॥ १२५ ॥ राजभिर्धृतदण्डास्तु कृ-
त्वापापानिमानवाः । निर्मलाःस्वर्गमायान्तिसन्तःसुकृतिनोयथा
॥ १२६ ॥ म० जिनकेऊपरअपराधकरनेसेराजाओंकादण्डहोता
है फिरवेइसलोकमें आनन्दपातेहैं औरमरनेकेपीछे उत्तमस्वर्ग

कोप्राप्तहोतेहैं जैसेकिधर्मात्मासुकृतिलोग ॥ १२६ ॥ येनयेनयथांगेनस्तेनोनृषुविचेष्टते । तत्तदेवहरेत्तस्य प्रत्यादेशायपार्थिवः ॥ १२७॥ भा० जिस२अंगसेजैसा२कर्ममनुष्योंकेबीचमेंकरें चोरलोग उसअंगको अर्थातनेत्रसे चोरीकरनेकेवास्ते चेष्टाकरें उसकानेत्र निकालदें जोजीभसेचोरीकाउपदेशकरैतोउसकोजीभकाटले पग औरहाथसे किसीकीवस्तुउठावे तोराजाउसकापग,हाथ काटले क्योंकिएककोदण्डदेनेसे सबलोगउसदुष्टकर्मको छोड़देतेहैं दण्ड जोहोताहै सोसबजगत्‌केमनुष्योंकेवास्ते उपदेशहै ॥ १२७ ॥ अनेनविधिनाराजाकुर्वाणस्तेननिग्रहम् । यशोऽस्मिन्प्राप्नुयाल्लोकेप्रेत्यचानुत्तमंसुखम् ॥ १२८ ॥ भा० इसविधिसेचोरोंकानिग्रहकरता है वहराजाइसलोकमेंअत्यन्तकीर्त्तिकोप्राप्तहोताहै औरमरकेअत्यन्तउत्तमस्वर्गकोप्राप्तहोताहै इससे चोरोंकानिग्रह अत्यन्तप्रयत्नसेराजाकरै ॥ १२८ ॥ वाग्दुष्टात्तस्कराच्चैव दण्डेनैवचहिंसतः । साहसस्यनरःकर्ता विज्ञेयःपापकृत्तमः ॥ १२९ ॥ भा० जोपुरुष दुष्टवचन कहना सिखलाता वा चोरीका उपदेश करताहै और किसीकोमरवाडालताहै छलकपटसेवहसाहसिक पुरुषकहाताहै जैसेकिगुंडेऔरवैराग्यादिकसंप्रदायवाले वेसबपापियोंमेंभी बड़े पापीहैं क्योंकिपापीतो आपहीदुष्टहोताहै औरजितनेदुष्टउपदेश करनेवालेहैं वेसबजगत्‌कोदुष्टकरदेतेहैं इससे ॥ १२९॥ नमित्रकारणाद्राजा विपुलाद्वाधनागमात् । समुत्सृजेत्साहसिकान्सर्वभूतभयावहान्॥ १३०॥ भा० जितनेपुरुषसाहसिकनाम दुष्टकर्मकरने औरकरानेवालेहोंय अर्थातअधर्मकाउपदेश,चोरी,परस्त्री,वेश्यागमनऔरजूवाइनकोकरनेवालेसबसाहसिकगिनलेनाउनकोमित्रकारणसे औरउनसेबहुतधनलाभहोताहोय तोभीइनकोराजा नछोड़ै क्योंकिसबभूतोंकोभय देनेवालेवेहीहैं ॥ १३० ॥ गुरुंवाबालवृद्धौवाब्राह्मणंवाबहुश्रुतम्। आततायिनमायान्तंहन्यादेवाविचारयन् ॥ १३१ ॥ गुरूवापुत्रअथवापितावालकवावृद्धवाब्राह्म-

थ कि सब शास्त्रोंको पढ़ाहुआ और बहुश्रुत नाम सब शास्त्रकोसुननेवाला वहजो आततायीनामधर्मकोछोड़के अधर्ममेंप्रवृत्तभयाहोय तोइनपुरुषोंको मारडालना उचितहै इसमेंकुछविचारनकरना क्योंकिदण्डहोनेसे सबशिष्टहोजातेहैं बिनादण्डकोईनहीं इससे सबकेऊपरदण्डकाहोना उचितहै किकोईअपराधीपुरुषदंडकेबिनारहनेनपावै ॥ १३१ ॥ परदाराभिमर्षेषु प्रवृत्तान्नृन्महीपतिः । उद्वेजनकरैर्दण्डैश्छिन्दयित्वाप्रवासयेत् ॥ १३२ ॥ म० जोपुरुषपरस्त्रीगमनमेंप्रवृत्तहोवै वाअन्यपुरुषोंसेस्त्रीलोगगमनकरैं उनकेललाटमेंचिन्हकरकेदेशबाहरनिकालदे जोपहिलेचोरीकरै उसकेललाटमें कुत्ते केपंजाकोनांई लोहेकाचिन्ह अग्निमेंतपाकेलगादे किमरणतकवहचिन्हनबिगड़े फिरजोदूसरीबार वहीपुरुषचोरीकरै तोहाथवापगउसकाराजाकाटडालै औरफिरभीचोरीकरैवाकरावै तोपहिलेदिननाककाटले दूसरेदिनकान तीसरेदिनजीभ चौथेदिननखनिकालले पांचवेंदिनआंखछठवेंदिनशिरच्छेदनकरदे सबमनुष्योंकेसामनेजिस्से कि फिरचोरीकीइच्छाभीकोईनकरैऔरजोपरस्त्रीवावेश्याकेपासगमनकरै अथवापरपुरुषोंसेस्त्रीलोगगमनकरैंउनकेललाटमेंपुरुषकेलिंगइन्द्रियकाचिन्हअग्निमेंतपाकेलगादे जिस्से कि मरणतक लज्जाऔरअप्रतिष्ठा उनकोहोवै उनकोदेखकेऔरकोईइनकर्मोंमेंप्रवृत्तनहोयक्योंकि ॥ १३२ ॥ तत्समुत्थोहिलोकस्यजायतेवर्णसंकरः। येनमूलहरोधर्मःसर्वनाशायकल्पते ॥ १३३ ॥ म० इन्होंकर्मोंसेप्रजाके मनुष्यवर्णसंकर औरपापीहोजातेहैं जिस्से किमूलसहित धर्मनष्टहोजाताहै इस्से इनकेनिग्रहमेंराजाअत्यन्तयत्नकरै ॥ १३३ ॥ भर्त्तारंलंघयेद्यातुस्त्रीज्ञातिगुणदर्पिता । तांश्वभिःखादयेद्राजासंस्थानेबहुसंस्थिते ॥ १३४ ॥ म० जोस्त्रीजातिऔरगुणोंकेअभिमान अथवामूर्खतासे बिवाहितपुरुषकोछोड़के अन्यपुरुषसेव्यभिचारकरतीहै उसकोनगरग्रामवादेशकीस्त्रियोंऔरपुरुषोंकेसामनेकुत्तोंसेचिथवाडालै इसरीतिसेउस-

कामरणहोजाय जिस्से किअन्यकोईस्त्रीऐसाकामकभीनकरै १३४॥ पुमांसंदाहयेत्पापं शयनेतप्तआयसे । अभ्यादध्युश्चकाष्ठानि तत्र दह्येतपापकृत् ॥ १३५ ॥ भ० जोपुरुषपरस्त्रीसेगमनकरै उसकोलोहेके पर्यंक अग्निसेतपा औरनीचेकाष्ठोंसे अग्निकरके व्यभिचार रूपपापकरनेवालेपुरुषकोसोलादे उसीकेऊपरउसकाशरीरदग्ध होजाय और मरजाय यह भी कर्म सबपुरुष और स्त्रियोंके सामनेही होना चाहिए जिस्से कि सबको भय होजाय फिर ऐसा कामकोईपुरुषनकरै ॥ १३५ ॥ यस्यस्तेनःपुरेनास्तिनान्यस्त्रीगोनदुष्टवाक् । नसाहसिकदण्डघ्नौसराजाशक्रलोकभाक् ॥ १३६ ॥ भ० जिसराजाकेपुर वाराज्यमें चोर परस्त्रीगामी दुष्टवचनकाकहनेवाला साहसिकऔरदण्डघ्नअर्थातजोदण्डकोनमानै येसबनहींहैं वहराजाशक्रलोकअर्थातस्वर्गकेराज्यकाभागीहोताहै अन्यथानहीं ॥ १३६ ॥ एतेषांनिग्रहोराज्ञः पंचानांविषयेस्वके । साम्राज्यकृत्सजात्येषुलोकेचैवयशस्करः ॥ १३७ ॥ भ० जिसराजाकेराज्यमें पूर्वोक्तपांचदुष्टपुरुषनहींहोते वहराजासबराजाओंके बीचमें सम्राट्चक्रवर्त्तीहोनेकेयोग्यहै औरलोगोंमेंबड़ीकीर्तिकाकरनेवालाहै ॥ १३७ ॥ दास्यंतुकारयन्लोभाद्ब्राह्मणःसंस्कृतान्द्विजान् । अनिच्छतःप्राभवत्याद्राज्ञादण्ड्यःशतानिषट् ॥ १३८ ॥ भ० जोब्राह्मणभीद्विजलोगोंसेसेवाकरातेहैंउनकोइच्छाकेबिनाउनकोराजाछःसैमुद्रादण्डकरै क्योंकिसेवाकरनाबुद्धिमान् श्रेष्ठलोगोंकाधर्म नहीं वहव्यवहार शूद्रकोकाहै क्योंकिजोमूर्खपुरुषहै वहअन्यका कामबिनासेवाकेक्याकरेगा १३८॥ अहन्यहन्यवेक्षेतकर्मान्तान्वाहनानिच । आयव्ययौचनियतावाकरान्कोषमेवच ॥ १३९ ॥ भ० नित्य २ राजा सबराज कर्मोंमें अपने अधिकारी अमात्य चेष्टावाकर्मवाहन, हस्ती,अश्व,रथ, औरनौकादिक आयनाम पदार्थोंकाआना व्ययनामपदार्थोंकाखर्च पदार्थोंकासमूहखानोंका समूहऔरधनकाकोश इनकोयथावत्देखतारहै किकोईपदार्थवा

कोईकर्मनष्टवाअन्यथानहोय ॥ १३९ ॥ एवंसर्वानिमान्राजाव्यवहारान्समापयन्। व्यपोह्यकिल्विषंसर्वंप्राप्नोतिपरमांगतिम् १४०॥ भ० इसप्रकारसेसबव्यवहारोंको न्यायपूर्वकजोराजाकरताहै वह सबपापोंसेछूटके परम गतिजोमोक्ष उसको प्राप्त होता है जिस व्यवहारको कियाचाहै उसकोसम्यक् विचारकेकरै जिस्से किवह कार्यपूर्णहोजाय अपूर्ण कभीनरहै ॥ १४० ॥ अनंशौक्लीवपतितौजात्यंधबधिरौतथा। उन्मत्तजड़मूकाश्च येचकेचिन्निरिन्द्रियाः॥ १४१ ॥ भ० क्लीवनामनपुंसकपतितनामपापीजन्मसेअंध तथाबधिरउन्मत्तनामपागलजड़नाम मूर्ख,मूकऔरजोविद्याहीनवाअजितेन्द्रिय,काम,क्रोधादिकोंमेंये सबदायभागनपावें क्योंकियेदाय भागपावेंगे तोसबपदार्थोंकाव्यर्थनाशकरदेंगे इस्से राजाकोयह बातअवश्यकरनीचाहिए अपनेपुत्र वाप्रजाके सन्तानोंको जितने पदार्थराज्यऔरधनादिकउनमेंसेकुछनदिलावै औरजोकोईमूर्खतावामोहसेउनकोदायभागदेवै तोउसकोराजादण्डदे औरनपुन्सकादिकोंसेदियेहुएपदार्थकोलेकेयथावत्रक्षाकरै क्योंकिमूर्खोंकेहाथपदार्थवा अधिकारआवेगा तोशीघ्रसबकानाशकरके आप छोटरिद्रबनजांयगे फिरराजाकेराज्यमेंसबदरिद्रताछायजायगी फिरराजाकोभीकुछप्राप्तिप्रजासेनहोसकेगी इस्से राज्यऔरधनादिकजितनेप्रजाओंकेपदार्थहैं उनपदार्थोंकोराजाकभीनदे और नदिलावै जोसम्यक्विद्या,बुद्धिऔरविचारमे उनपदार्थोंकोरक्षा मेंयोग्यहोय उसकोसम्यक्परीक्षाकरके उनपदार्थोंकास्वामीउसकोकरदेअन्यथानहीं ॥ १४१ ॥ सर्वेषामपितुन्याय्यंदातुंशक्त्यामनीषिणा। ग्रासाच्छादनमत्यन्तंपतितोह्यददद्भवेत् ॥ १४२ ॥ परन्तु उननपुंसकादिकोंकोअपनेसामर्थ्यकेयोग्य वहदायभागलेनेवाला भोजन,वस्त्रऔरउनकास्थानादिकसेयोगक्षेमयथावत्करै जोवह भोजनादिकभीउनकोनदेतोपतितहोजाय औरराजाउसकोदण्ड भोदे इस्से क्याआयाकिभोजनऔरवस्त्रादिकोंकेविनावेदुःखीनर-

हैं औरजोउनकापुत्रयोग्यहोयतोउसकेपिताकेदायभागकोराजा दिलावै इसबातकोराजाप्रयत्नसेकरै अन्यथाराज्यवृद्धिनहींहोगी राजाअपनीप्रजाकोरक्षा औरहितमें सदाप्रवृत्तरहै औरप्रजाभी राजाकोरक्षातथाहितमेंप्रवृत्तरहै जोप्रजाकोआपत्कालआवै तो राजासबप्रयत्नोंसेप्रजाकीरक्षाकरै अर्थातराजाकोआपत्कालकि-सीप्रकारकाआवै तोप्रजाऔरसबमनुष्यराजाकासबप्रकारसेसहाय करैं क्योंकिप्रजाराजाकेपुत्रकीनाईंहोतीहै पिताकोअवश्यचाहि-एकिअपनीप्रजाकीसदारक्षाकरै तथाप्रजापुत्रकीनाईंजैसेकिपिता कोपुत्ररक्षाकरताहै वैसोराजाकी प्रजारक्षाकरै औरजिसबातसे प्रजाकोपीड़ाहोय उसबातकोराजाकभीनकरै तथाराजाकोजिस बातमे दुःखहोय उसबातको प्रजाकभीनकरै जैसेकिजिनपशुओं वाजिसपदार्थोंसे सबप्रजाकाउपकारहोताहै उसकाराजाकभीवि-नाशनकरै जैसेकिगाय,भैंस,छेरी,बैलऔरऊंटतथागधादिकइ-नकोकभीनमारै औरनमरवावै क्योंकिदुग्ध,घृत,अन्नादिकऔर सबव्यवहारइन्होंसे सब मनुष्योंकाचलताहै तथा राजाकाभी इ-नका मारना दोनों को अनुचितही है राजा भृत्य तथा युद्ध से निवृत्तकभीनहोवै क्योंकियुद्धसे निवृत्तहोगा तोउसीवक्तशत्रुलोग सबपदार्थोंकोछीनलेंगे तथामारडालेंगेवाअत्यन्तदुःखदेंगे जब युद्धकासमयआवै तबराजाजल,अन्न,मनुष्य,शस्त्र,यानसबपदार्थों कीपूर्त्तिरक्खै जिससे कि किसीपदार्थकेविना दुःखकिसीकोनहोवै औरयुद्धमेंयुद्धकाआचारविचाररक्खै युद्धकरतेभीजांयऔरखाते पीतेभीजांय कुछ शंका न रक्खै उस वक्त जूते, वस्त्र, शस्त्र, धा-रणकियेरहैं युद्धऔरभोजनभीकरतेजांय ऐसानकरैंकिवस्त्र,जूतेश-स्त्र इत्यादिक सबछोड़के हाथगोड़धोके भोजन करैं तबतक शत्रु लोगमारडालैं देखनाचाहिएकियुधिष्ठिरजीकेराज्यसूय औरअ-श्वमेधयज्ञमें सबसमुद्रपार टापूभूगोलकेसबराजाआयेथे वेसब ब्राह्मण,क्षत्रियोंकेसाथ एकपंक्तिमें भोजनकरतेथे औरविवाहभी

उनकापरस्परहोताथा जैसेकिकाबिलकन्धारकीकन्या गान्धारी,धृतराष्ट्रसेबिवाहोगईथी तथामद्रोईरानदेशकीराजाकीकन्या पांडुसेविवाहोगईथी अर्जुनकेसाथनाग अर्थातअमेरीकाके लोगोंकी कन्या विवाही गई थी इत्यादिक व्यवहार महाभारतमें लिखेहैं औरशूद्रहीसवब्राह्मणऔरक्षत्रियादिकोंकेघरमें पाककरानेवाले थे जिनकानामसूदऐसाप्रसिद्धथा जोशूद्रपाककरनेवालाहोताहै उसकोसूदऐसीसंज्ञाहोतीथी क्योंकिब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,वेतोविद्यापठन और पाठन तथा नाना प्रकार के पुरुषार्थ और शिल्पविद्यासे पदार्थोंका रचन इन्होंमें सदा प्रवृत्त रहें रसोई आदिकसेवासवलोगोंकीशूद्रहीकरें अर्थातब्राह्मण,क्षत्रिय,औरवैश्यइनको भोजन एकताही होनी चाहिए जिस्से कि परस्पर प्रीति होवै औरभोजनकेवड़े २ वखेड़े हैं वेसबनष्टहोजांय कोईपरदेशकोजाताहै तबपाचादिकोंकाभारगधेकीनांईउठायाकरताहै तथा मांजनाऔरचौकादेना अन्न,काष्ट,अग्न्यादिकको अपनेहाथसेले आना औरबनाना गमनसेबड़े पीड़ितहोकेआये फिरभीसमयके ऊपरभोजनकानहोना इस्से बड़े दुःखहोतेहैं इस्से ब्राह्मण,क्षत्रिय, औरवैश्यइनकेएकभोजनहोनेसेकिसीकोकिसीप्रकारकादुःखनहीं होगा क्योंकिशूद्रहीसबकरदेगा औरखिलावैपिलावैगा परन्तुब्राह्मणादिकोंहीके पदार्थसबपाचादिकहोवैं शूद्रकेघरकेनहीं शुद्धहोकेबनावे औरब्राह्मणादिकविद्यादिकश्रेष्ठपदार्थोंकी उन्नतिकरें जिस्से किसबसुखहोवैं इस्से इसबातको राजालोग अवश्यकरें इसकेबिनाउनकोउन्नतिनहींहोनीहै देखनाचाहिएभोजनकेपाखण्डोंसेआर्यावर्त्त देशकानाशहोगया ब्राह्मणादिक चौकादेनेलगे ऐसाचौकादिया कि राज्य,धन और स्वतन्त्रादिक सुखोंके ऊपर चौकाहीफेरदिया किसबआर्यावर्त्त देशको सफाचटकरदिया इस्से राजालोगोंकोचाहिएकिव्यर्थपाखण्डप्रजामेंनहोनेदेवैं विवाहकाजिसकालमेंजैसापूर्वनियमलिखाहै औरपरीक्षाउसीप्रकारसे

राजाकरवावै ब्रह्मचर्याश्रमकन्या वा पुरुषकाजबहो।जाय तभीवि-
वाहकोआज्ञाराजादे कियहीसब सुख औरधर्मका मूलहै अन्य-
नही सबदेशदेशान्तरस्थपुरुषोंसेभोजनविवाह औरपरस्परप्रीति
रक्खैं प्रजामें जितनेधर्मात्मा,बुद्धिमान्,पक्षपातरहितऔरसबवि-
द्याओंमेंपूर्ण इनकीसम्मतिसेसबकामऔरसबनियमकियाकरें कि
जिसकेऊपर सबप्रजाप्रसन्नहोवें वहोराजाहोय उसदेशकेसबप्र-
जा उसराजाको प्रसन्नरक्खैं ऐसेसबपरस्पर विद्या और सबगु-
णोंकीउन्नतिकरैं अर्थात्राजाऔरसभाकीसम्मतिकेविना प्रजामें
कुछकर्मनहोवै औरप्रजाकीसम्मतिकेविनासभाऔरराजाकुछकर्म
नकरैं किन्तुदोनोंकीसम्मतिकेविनाकुछराजकार्यनहोनेपावै क्यों-
किइसकेहोनेसे उसदेशमेंकभीदु:खके दिननआवेंगे सदाआनन्द
होरहेगा ॥ १४२ ॥ चोरदोप्रकारकेहोतेहैं एकतोप्रसिद्धदूसराअ-
प्रसिद्ध प्रसिद्धवेहोतेहैं किडाटधारीडाकू औरपाखण्डी जैसेकिवै-
राग्यादिक मन्दिररचके सबमनुष्योंसेफुसलाने वादुष्टउपदेशबु-
द्धिभ्रष्टकरके धनादिकपदार्थोंकोहरणकरलेतेहैं यहांतककिमनु-
ष्योंकोमूड़केचेलाबनालेतेहैं इनकोराजादण्डसेनिवृत्तकरदे पूर्व-
पक्षइनकोदण्डनदेनाचाहिए क्योंकिवतोप्रसन्नतासेधनदेतेऔर
लेतेहैं औरप्रसन्नतासेउनको देतेहैं इनकेऊपरदण्डकाहोनाउ-
चितनहीं उत्तर इनकोअवश्यदण्डदेनाचाहिए क्योंकिजैसेकोई
पुरुषछोटेबालककोफुसलाके वाकुछपुष्पफलवाखानेंकोचीजहाथ
मेंदेके वस्त्र,आभूषण,वाधनादिक पदार्थोंको प्रसन्नतासेलेलेता
है औरबालकभीउसकोप्रसन्नतासेदेदेताहै फिरलेकेवहभागजा-
ते फिरउसकेऊपरराजादण्डकरताहीहै वैसेहीजितनेप्रजामेंवि-
द्या, बुद्धि औरविचारहीनपुरुषहैं वेबालककीनांईहैं उनमेंसेभी
प्रसादचरणोदक,कण्ठी,माला,छापाऔरतिलक एकादश्यादिक
महात्मसुनाना तीर्थनामस्मरण औरस्तोत्र,पाठइत्यादिकोंकोसु-
नाना इत्यादिकछलधनादिसेकपदार्थोंकोलेतेहैं फिरउनकेऊप-

रदण्डक्योंनकरनाचाहिए किन्तुअवश्यहीकरनाचाहिए जोरा-
जाइनकोदण्डनदेगा तोउसकोप्रजासबभ्रष्टहोजायगी औरराज्य
काभीनाशहोजायगा क्योंकिवेअधर्मकरतेहैंऔरकरातेहैं नामर-
खतेहैंधर्म और वेदका चलातेहैं पाखण्डको इस्से इसगालको
राजाअवश्यछेदनकरदे किकोईउसकेदेशमेंपाखण्डीनरहैऔरन
होनेपावै वेपाषाणादिकोंकोमूर्त्तियोंकोवनाऔरमन्दिरकोरचके
उनमेंउनमूर्त्तियोंकोवैठाके उनकानामशिवनारायणादिकरखते
हैं कलावत्तुझूठेवा सच्चे आभूषणोंकोपहिराके फिरघड़ी, घंटा,
नगारा, रणसिंघाऔरशंखइत्यादिकोंकोवजाके मूर्खोंकोमोहित
करके सवधनादिकपदार्थोंको हरणकरलेतेहैं जैसेकिडांकूलोग
नगारादिकवजाकेप्रसिद्धधनहरलेतेहैं इनठगोंकोदण्डकेविनाक-
भीनछोड़नाचाहिए क्योंकि ॥ अज्ञोभवतिवैबालः पिताभवतिम-
न्त्रदः। अज्ञंहिबालमित्याहुःपितेत्येवचमन्त्रदम् ॥ १४३ ॥ म०
इसमेंमनुभगवान्काप्रमाणहै किजोअज्ञानीहैसोईबालकहै और
ज्ञानीअर्थात्सत्यउपदेश औरविचारकाकरनेवालासोईपिताहो-
ताहै इस्से क्याआयाकिजोअज्ञानीहै उसकोबालककहनाचाहि-
ए ॥ १४३ ॥ जितनेदुकानदारप्रसिद्धचोरउनकेऊपरभीराजाअत्य-
न्तदृष्टिरक्खै किवेप्रसिद्धचोरीकभीनकरनेपावें ॥ तुलामानंप्रती-
मानंसर्वंचस्यात्सुलक्षितम्। षट्सुषट्सु चमासेषुपुनरेवपरीक्षये-
त् ॥ १४४ ॥ म० तुलानामतराजूकोदण्डीऔरतराजूकीपरीक्षाक-
रै पक्ष२मास२वाछटहे२मास क्योंकिदुकानदारलोगवीचकासूत
औरदोनोंपल्ले दण्डीकेवीचमें छेदकरके पाराभरदेतेहैं उस्से लेते
हैं तवअधिकलेलेतेहैं औरदेतेहैं तवन्यूनदेतेहैं जवबुद्धिमान्आय
तवऔरभाव जवमूर्खआयतवऔरभावऐसाकरकेमूड़लेतेहैं प्रती-
मानअर्थातप्रतिमानाम छटांकआदिकउसकोघटावढ़ालेतेहैं उ-
स्से भीअधिकलेतेहैंऔरन्यून देतेहैं फिरमहाजनऔरसाहूकार
वनेरहतेहैं परन्तु वेवड़े ठगहैं जैसेकिव्यासअर्थात्एकादशीभाग-

व्रतादिकोंकीकथाकरनेवाले औरमन्दिरोंकेपूजारीऔरसम्प्रदाय
वाले,वैरागी,शैव,वाममार्गी,आदिकपण्डितमहात्मा औरसिद्ध
बनतोऊपरसेबनेरहतेहैं परन्तुउनकोसबजगत्केठगनेवालेजानना
वैश्यऔरयेसबप्रसिद्धचोरहैं इनकोदण्डसेराजाउपदेशकरदे ऐसा
दण्डदे किकोईइसप्रकारकामनुष्य प्रजामेंनरहनेपावै तभीराजा
औरप्रजाकीउन्नतिहोगी अन्यथानहीं पुराणशब्द विशेषणवाची
शब्दहै जैसेकिपुरातनप्राचीनसनातनशब्दहैं इनकेविरोधीनवीन
अद्यतनअर्वाचीनइदानीन्तनशब्दविशेषणवाचीहैं कियहयोजन-
योहै अर्थात्पुरानीनहीं ऐसेपरस्परविशेषणविरोधसेनिवर्तकहो-
तेहैं तथा देवालय,देवमन्दिर,देवागार,देवायतन इत्यादिकनाम
यज्ञशालाकेहैं क्योंकिजिसस्थानमेंदेवोंकोपूजाहोय उसीकेएनाम
हैं देवहैंवेदकेसबमन्त्र औरपरमेश्वर क्योंकिपरमेश्वरसबकाप्र-
काशकहैऔरवेदकेमन्त्रभीसबपदार्थविद्याओंकेप्रकाशनेवालेहैं इ-
ससेइनकानामदेवहैसोईशास्त्रमेंलिखाहै ॥ यत्रदेवतोच्यतेतत्रतल्लि-
ङ्गोमन्त्रः। यहनिरुक्तकावचनहै इसकायहअभिप्रायहैकिजहां२
देवताशब्दआवैवहां२मन्त्रहीकोलेना परन्तु कर्मकांडमेंउपासना
और ज्ञानकांडमें परमेश्वरहीदेवहै जैसेकिअग्निमीलेपुरोहित
मित्यादिकऋग्वेदकेमन्त्रहैं तथाअग्निर्देवताइत्यादिकयजुर्वेदकेम-
न्त्रहैं इसमेंअग्निदेवताहै इससे अग्निशब्ददेवताविशेषणपूर्वकजिस
मन्त्रमेंहोगा उससे जो अग्निशब्दवालामन्त्रहोवै उसको लेना
जैसाकि अग्निमीलेपुरोहितमित्यादिक यहीबातव्यासजीकेशिष्य
जैमिनीने कर्मकांडके ऊपर पूर्वमीमांसा एकदर्शन शास्त्रबनाया
है उसमेंविस्तारसेलिखीहैकिमन्त्रहीदेवहैं औरकोईनहीं उसमें
इसप्रकारकेदोषलिखेहैं जैसे ॥ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिध-
र्माणिप्रथमान्यासन्। इत्यादिकमन्त्रोंसेभिन्नजोब्रह्मादिकदेव उ-
नकेभीपूजनकाअत्यन्तनिषेधकियाहै सोठीकहीकियाहै क्योंकिब्र-
ह्मादिकभीनित्यपञ्चमहायज्ञ औरअग्निष्टोमादिकयज्ञोंकोकरते

हैं तबवेयजमानहोतेहैं फिरउनसेअन्यदेवकौनहै किब्रह्मादिकोंके
यज्ञमेंजिनकीपूजाकीजाय वाभागलेवैंउनकेसिवायअन्यकोईदेवदे
हधारीनहींहै औरकोईकहेकिउन्होंसेअन्यदेवहैं तोउनसेपूछाजा-
ताहै किवेजबयज्ञकरेंगेतबउनसेआगेभीतीसरेदेवमानेंजांयगेतौ-
सरेजबयज्ञकरैंगेतबचौथेइनसेआगेदेवमानेंजांयगे ऐसेहीअनव-
स्थाउनकेमतमेंआवेगी इससेपरमेश्वरऔरमन्त्रोंहीकोदेवमानना
चाहिए औरअन्यकोनहीं जबब्रह्मादिकविद्या,सिद्धज्ञान,योगऔर
सत्यवचन,गुणवालोंकानिषेध जैमिनोजीनेकिया तोपाषाणादिक
मूर्त्तियोंकीपूजाकानिषेधअत्यन्तहोगया क्योंकिपाषाणादिकमूर्त्ति
योंमेंजोदेवभावकरनाहै सोतोअत्यन्तपामरपनाहै इसबातमेंकुछ
सन्देहनहीं औरजोकहेकिवेहैतोपाषाणादिक परन्तु मेरेभावसे
देवहोजातेहैंऔरफलभीदेतेहैं तोउनसेपूछनाचाहिए किआपका
भावसत्यहैवामिथ्याजोवेकहैं किसत्यहैतोदुःखकाभावऔरसुखका-
अभाव कोईनहींचाहता फिरउनकोदुःखकाभाव औरसुखकाअ-
भावक्योंहोताहै जोअन्यपदार्थमेंअन्यकाभावकरनाहै सोमिथ्याही
है जैसेकिअग्निमेंजलकाभावकरकेहाथडाले तोहाथजलहीजाय-
गा इससे ऐसाभावमिथ्याहीहै औरजोपाषाणादिकोंको पाषाणा-
दिकमानना औरदेवोंको देवमानना यहभावतोसत्यहै जैसाकि
अग्निकोअग्निमानना औरजलकोजल इससे क्याआयाकि जोजै-
सापदार्थहै उसकोवैसाहीमाननाअन्यथानहीं फिरउनसेपूछना
चाहिएकिआपलोगभावसे पाषाणादिकोंकोदेवबनालेतेहो और
उनसेअपनीइच्छाकेयोग्यफललेलेतेहो तोउसभावसेआपहीदेव
क्योंनहींबनजाते औरचक्रवर्त्यादिक राज्यरूपफलको क्यों नहीं
पातेतथासबदुःखोंकानाशरूपफलक्योंनहींहोता फिरवेऐसाकहैं
कि सुखवादुःखऔरचक्रवर्त्यादिक राज्योंकापाना कर्मोंकाफल
है यहबाततोआपलोगोंकोसत्यहै किजैसाकर्मकरैवैसाहीफलहो-
ताहै फिरआपलोगोंनेकहाथाकिपाषाणादिकमूर्त्तियोंसेफलमि-

लताहै यहबातआपलोगोंकीझूठीहोगई पूर्वपक्ष जबतकवेदमन्त्रों सेप्राणप्रतिष्ठानहींकरते तबतकतोवेपाषाणादिकहीहैं औरप्राण प्रतिष्ठाकेकरनेसे देवहोजातेहैं उत्तर यहबातभी आपलोगोंकी मिथ्याहै क्योंकिवेद वाऋषिमुनियोंकेकिये शास्त्रोंमें प्राणप्रतिष्ठा कापाषाणादिक मूर्त्तियोंमें एकअक्षरभीनहीं तोमन्त्र कैसेहोंगे जिस २ मन्त्रसेप्राणप्रतिष्ठाकर्तेकरातेहो उस२मन्त्रकाआपलोग अर्थभीनहींजानते जैसाकि प्राणदा, अपानदा, चक्षुर्व्यास्थाम्ने, इससे लेकेओम् प्रतिष्ठयहांतकएकमन्त्रहै सहस्रशीर्षापुरुषः शन्नोदेवी-रभिष्टय प्राणंददातीतिप्राणदःपरमेश्वरः। इत्यादिकअर्थ मन्त्रों काहै इनपाषाणादिक मूर्त्तियोंमेंप्राण प्रतिष्ठाकरना इसकालेश मात्रभीसम्बन्धनहीं औरप्राणाइहागच्छन्तुसुखंचिरंतिष्ठन्तुस्वा-हा।यहतोमिथ्यासंस्कृतकिसीनेरचलियाहै औरवेदोंकेमन्त्रमेंभी आपलोगोंकेकहनेकीरीतिसेदोषआतेहैं किवेदकेमन्त्रोंसेतोप्राण प्रतिष्ठाकीजाय फिरप्राणोंका मूर्त्तिमें लेशभी नहीं देखपड़ताहै इससेयहबातभीनकरनीचाहिएक्योंकिजोप्राणमूर्त्तिमेंआतेतोमूर्ति चेतनहोबनजातीसोतोजैसीपूर्वजड़थीवैसीहीजड़सदारहतीहैपा-षाणादिकमूर्त्तियोंमेंप्राणकेजाने औरआनेकाछिद्रभीनहींपरंतुमनु-ष्यजोमरजाताहैउसकेशरीरमेंसबछिद्रमार्गप्राणकेजानेऔरआने केयथावत्हैं उसमेंप्राणप्रतिष्ठाकरकेक्योंनहींजिलालेतेहैं किकोई मनुष्यकभी मरनेहीनपावैऐसाकिसीकाभीसामर्थ्य नहीं इससे यह बातअत्यन्तमिथ्याहै पूजानामसत्कारहै देवपूजाहोमहीसे होती है अन्यप्रकारसेनहीं क्योंकिमनुआदिकऋषिलोगोंकेग्रन्थोंमेंऔर वेदमेंयहीबातलिखीहै॥स्वाध्यायेनार्चयेतर्षीन्होमैर्देवान्यथाविधि इसपूर्वोक्तश्लोकसेहोमहीसेदेवपूजायथावत्करनीचाहिएऐसासि-द्धभयाकिहोमजोहैसोईदेवपूजाहै औरजिनस्थानोंमेंहोमहोवै उ-न्हींकादेवालयादिकनामजानना॥ यद्दिक्तंयज्ञशीलानांदेवस्वंत-द्विदुर्बुधाः। अयज्वनान्तुयद्वित्तमासुरस्वंप्रचक्षते॥ म० जोयज्ञकी

कोनित्यकरताहै उसकाजोधन सोदेवशब्दवाच्यहै जोकोई यज्ञके
वास्ते अन्यपुरुषोंसेधनलेके भोजनछादनादिकउस्से करै औरयज्ञ
कोनकरै उसकानामदेवलहै ॥ कुत्सितोदेवलोदेवलकःकुत्सितइ-
त्यनेनकन्प्रत्ययः। जोयज्ञकेधनकीचोरीकरके भोजन,छादनादिक
करै उस्से परस्त्रीगमनवावेश्यागमनभीकरै उसकोदेवलककहतेहैं
यहदेवलसेभीदुष्टहै इनदोनोंकाश्राद्धकर्मोंमें देवपितृकर्मादिक
यज्ञोंमेंनिषेधहै किइनकोनिमन्त्रणवाअधिकारकभीनदेना ऐसे-
हीनामस्मरणएकादशीइत्यादिककाल काश्यादिकदेश, इनकाजो
महात्म्यजिसकिसीनेलिखाहै वहसबमिथ्याहीहै क्योंकिवेदादिक
सत्यशास्त्रोंमेंइनकाकुछभीलेखनहीं देखनेमेंआता औरयुक्तिसेभी
यहप्रतिमापूजनादिकमिथ्याहीहै ऐसेव्यवहारोंमेंराजाऔरप्रजा
कोभ्रमहीसक्ताहै इसनिमित्त लिखागयाकि राजाऔरप्रजाइन
भ्रमोंमेंप्रवर्तनहोवें नकिसीकोहोनेदें जितनीयुद्धकीविद्या उसको
यथावत्जानैं औरप्रजाकोजनावें नानाप्रकारकीपदार्थविद्या तथा
शिल्पविद्याकाभीराजा औरप्रजासदाअत्यन्तप्रकाशरक्खें युद्धवि-
द्याकेदोभेदहैं एकशस्त्रविद्या,दूसरीअस्त्रविद्या शस्त्रविद्यायहकहा-
तीहै कितलवारबंदूकतोपलकड़ीपाषाण औरमल्लविद्याकिकोंका
यथावत्जानना औरचलानादूसरेकेशस्त्रोंकानिवारणकरना औ-
रअपनीरक्षाकरनी तथाशत्रुकोमारना औरअस्त्रविद्यायहकहा-
तीहै किजोपदार्थोंकेपरस्परमेलन औरगुणोंसेहोतीहै जैसाकि
अग्नेयास्त्र ऐसेपदार्थोंकारचनकरैं किवायुकेस्पर्शसे उस्से अग्नि
उत्पन्नहोवै फिरउसकोफेंकनेसजोपदार्थउसकेसमीपहोय उसको
वहभस्मकरदेताहै जैसेदीपसलाकाकोघसनेसे अग्निउत्पन्नहो-
ताहै वैसेहीसबअस्त्रविद्याजाननी इसप्रकारकीआर्यावर्तमें पूर्व-
कृतपदार्थरचनेकीउन्नतिथी जैसेकिविशल्याएकऔषधिराजालो-
गरचलतेथे कैसाहीघावशस्त्रसेहोजाय परन्तु उसकोघसकेलगा-
या उसीवक्तवहघावपूरजाय औरउसमेंपीड़ाभीकुछनहीहोतीथी

तथाविमानअर्थातआकाशयान बहुतप्रकारोंके और जहाजसमुद्र पारजानेकेनिमित्त तथाद्वीप, द्वीपान्तरमेंजाते और आतेथे यहमहाभारततथावाल्मीकीरामायणमेंलिखीहै आर्यावर्त्त केराजाओं कीआज्ञा औरराज्यसबद्वीपद्वीपान्तरमेंथा क्योंकियुधिष्ठिरादिकों केराजसूयतथाअश्वमेधमें सबद्वीपद्वीपान्तर केराजाआयेथे यहसभाऔरआश्वमेधिकपर्वमेंमहाभारतमेंलिखीहै जैनऔरमुसल्मानोंनेबहुतसे इतिहासनष्टकरदिए इससेबहुतबातयथावत् मिलती भीनहीं बड़े बलवान्तथाविद्यावान् इसदेशमेंहोतेथे इसीदेशमें भूगोलमेंविद्यावाआचारसबमनुष्यसीखतेथे सबस्त्रियांभीआर्यावर्त्त मेंविद्यावानहोतींथीं सोआजकालआर्यावर्त्तदेशवालोंकी जैसीमूर्खताऔरदशाहै ऐसीकोई देशकोनहोगी फिरभीवेदादिक सत्यविद्याओंकोयथावत्पढ़ैं औरपढ़ावैं धर्माचरण औरश्रेष्ठआचारराजाऔरप्रजाकीपरस्परप्रीति तथापरस्परगुणग्रहणकरैं तभीमनुष्योंकोआनन्दहोगाअन्यथानहीं ब्रह्मचर्याश्रम४८,४४.४०, ३६,३०,२५, वर्षतकहोगा सबविद्याओंकाग्रहणकरना वीर्यका निग्रहजितेन्द्रियताऔरयथावत्न्यायकाकरना पक्षपातछोड़केयहीसबसुखोंकेमूलहैं मनुस्मृतिकेसप्तमअष्टमऔरनवम अध्यायोंमें राजाऔरप्रजाकेधर्मविस्तारसेलिखाहैमहाभारतऔरवेदादिकों मेंभीबहुतप्रकारसेलिखाहै राजाऔरप्रजाओंकाधर्मजोदेखाचाहै सोदेखले इसमेंतोहमने संक्षेपसेलिखाहै इसकेआगेईश्वरऔर वेदविषयमेंलिखाजायगा ॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते षष्ठः समुल्लासः संपूर्णः ॥ ६ ॥

अथेश्वरवेदविषयंव्याख्यास्याम: ॥ हिरण्यगर्भ:समवर्त्तताग्रे
भूतस्यजात:पतिरेकआसीत् सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मै-
देवायहविषाविधेम ॥ १ ॥ अग्रे नामजबकुछजगत् उत्पन्नहीनहीं
भयाथा तबएकअद्वितीयसच्चिदानन्दस्वरूपनित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभा-
वहिरण्यगर्भ अर्थातपरमेश्वरहीथा सोसबभूतोंकाजनकऔरपति
है दूसराकोईनहीं सोईपरमेश्वरपृथिवीसलेकेस्वर्गपर्यन्त जगत्
कोरचके धारणकरताभया तस्मै एकस्मै परमेश्वरायदेवायहवि-
नामप्राण चित्तमनादिकोंसेस्तुतिप्रार्थना औरउपासनाहमलोग
नित्यकरैं ॥ १ ॥(पूर्वपक्ष)ईश्वरकीसिद्धि किसीप्रकारसेनहीहोसक्ती
औरईश्वरकेमाननका प्रयोजनभीकुछनहीं क्योंकिहल्दीचूनाऔर
जलकेमिलानेसेएकरोरीपदार्थहोजाताहै ऐसेहीपृथिव्यादिकसू-
क्ष्मभूत तथाइनकेपरमाणुऔरजीवपरस्परमिलनेसेसबपदार्थोंकी
उत्पत्तिहोतीहै जैसेकिमिट्टीजलचाकऔरदण्डादिकसामग्रीसे कु-
लालघटादिकपदार्थोंकोरचलेताहै इनसेभिन्नपदार्थकी अपेक्षा
नहीं वैसेहीजीव औरपृथिव्यादिक भूतोंसेभिन्न कोईश्वर उसके
माननेकाकुछ आवश्यकनहीं स्वभावहीसेसबजगत्होताहै और
जगत्नित्यभीहै कभीइसकानाशनहीहोता फिरजगत्रूपकार्यको
देखकेकारणजोईश्वरउसकाअनुमानकरतेहैं सोव्यर्थहोगया औ-
रप्रत्यक्षईश्वरकाकोईगुणनहीं है इससेप्रत्यक्षभीईश्वरकेविषयमेंन-
हींबनता जबईश्वरप्रत्यक्षनहीतोउपमानकैसेबनसकेगा किइस-
केतुल्यईश्वरहै जबतीनप्रमाण नहींबनते तबशब्दप्रमाण कैसाब-
नेगा शब्दप्रमाणमनुष्यलोगऐसेही परंपरासेकहतेऔरसुनतेच-
लेआतेहैं किसीनेकिसीसेकहाकि मैनेंवन्ध्याकापुत्र सींगवालादे-
खा ऐसाअन्योंसेकहाअन्योंनेंअन्यपुरुषोंसेकहा ऐसेहीअन्धपरंप-
रावत्कहतेऔरसुनतेचलेआतेहैं इससे ईश्वरकीसिद्धिकिसीप्रका-
रसेनहींहोसक्ती(उत्तरपक्ष)ईश्वरकीसिद्धियथावत्होतीहै क्योंकि
जोस्वभावसेजगत्कीउत्पत्तिमानेगा उसकेमतमें यहदोषआवेगा

जगत्में जितने पदार्थ हैं उनके विलक्षण २ संयोग आकृति तथा गुण और स्वभाव देखपड़ते हैं जैसे कि मनुष्य और वानर आम का और बबूर का वृक्ष इत्यादिकों में विलक्षण २ गुण और आकृति देखपड़ती हैं इन नियमों का कर्त्ता कोई न होगा तो ये नियम कभी न बनेंगे क्योंकि जड़पदार्थों में तो मिलने वा जुदा होने की यथावत् समर्थता नहीं किंतु नमें ज्ञानगुण ही नहीं जो ज्ञानगुणवाला होता है वही यथावत् नियम कर सक्ता है अन्य नहीं जो जीव है सो ज्ञानवाला तो है परन्तु जीव का उतना सामर्थ्य ही नहीं इस से कोई पृथिव्यादि भूत और जीव से भिन्न पदार्थ अवश्य है जो सब जगत् का करता और नियमों का नियन्ता ईश्वर अवश्य है। किन्तु स्वभाव से जगत् की उत्पत्ति जो मानता है उस के मत में एक दोष आवेगा यह पृथिवी स्वभाव से जो होती तो इस का करता और नियन्ता न होता इस पृथिवी से भिन्न दूसरी अन्तरिक्ष में दूसरी आप से आप पृथ्वी बन जाती सो आजतक नहीं बनी इस से जाना जाता है कि जीव और सब भूतों से सर्वशक्तिमान् सब जगत् का कर्त्ता और नियन्ता परमेश्वर उसी को ईश्वर कहते हैं। दूसरा दोष कि जितने परमाणु पृथिव्यादिक भूतों के हैं वे सब मिल गए अथवा इन से बिना मिले भी हैं जो कहै कि सब मिल गए तो त्रसरेणु आदिक हम को प्रत्यक्ष देखपड़ते हैं इस से वह बात मिथ्या होगई और जो कहै कि कुछ मिले कुछ नहीं मिले भी हैं तो उन से पूछना चाहिए कि सब क्यों नहीं मिले अथवा पृथक् २ क्यों न रहे तथा एक प्रकार के रूपवाले सब पदार्थ क्यों नहीं हुए भिन्न २ संयोग और रूप के होने से सब जगत् का कर्त्ता और नियन्ता अवश्य सिद्ध होता है तीसरा दोष उस के मत में यह है कि कोई कर्म कर्त्ता के बिना होता है वा नहीं जो वह कहै कि बनादिकों में घासादिक पदार्थ आपही से होते हैं उन का कर्त्ता और निमित्त कोई नहीं देखपड़ता उस से पूछना चाहिए कि पृथिव्यादिक सब भूत निमित्त हैं और सब बीज बिना कर्त्ता और नियन्ता के कभी नहीं बन सक्ते क्योंकि आम के बीज में जैसा परमाणुओं का मेलन कर्त्ता ने किया है वैसे ही

अङ्कुर पत्र पुष्प फल काष्ठ और स्वाद देखने में आते हैं उस से भिन्न जो कद-लीउसके अवयव वा स्वाद आमसे कोई नहीं मिलते क्योंकि सब पदार्थों में परमाणु तो वेही हैं फिर रचनेवाले के बिना भिन्न२ पदार्थ कैसे होंगे इस से जाना जाता है कि सब जगत का रचनेवाला कोई पदार्थ है जो चू-ना, हल्दी और जल के मिलाने से रोरी होती है उसका मेलन करनेवा-ला जब मिलाता है तब वे मिल के रोरी होती है वे आपसे आप तो नहीं मिलते इस से वह दृष्टान्त मिथ्या होगया कुम्हार का जो दृष्टान्त दि-या सो कौं हारस्थानी आपने जीवको रक्खा क्योंकि ईश्वर को तो आप मानते हो नहीं सो जीव सर्वशक्तिमान् नहीं क्योंकि परमाणु आदिकों का संयोग वा वियोग जीव कभी नहीं कर सक्ता जो जीव कर सक्ता तो चाहता तो सूर्य, चन्द्रादिक लोकों को रच लेता सो रच सक्ता नहीं इ-स से जाना जाता है कि सब जगत् का कर्ता और नियन्ता कोई अवश्य है जब जगत् रचा गया है तो नित्य कभी नहीं हो सक्ता क्योंकि जब तक नहीं रचा था तब तक नहीं था और जो रचने से भया है सो कभी मिट भी जायगा विना कर्ता वा कारक के कर्म वा कार्य नहीं होता तो यह ना-ना प्रकार की रचना और इतना बड़ा कार्य जगत् कभी नहीं हो सक्ता इस से तीन प्रकार जो अनुमान है सो ईश्वर में यथावत् घटता है कि का-रण के बिना कार्य कभी नहीं हो सक्ता कार्य से कारण अवश्य जाना जा-ता है और कर्ता के बिना कर्म नहीं होता इस से पूर्ववत् शेषवत् और सामान्यतो दृष्ट तीन प्रकार का अनुमान ईश्वर को यथावत् सिद्ध कर-ता है ईश्वर के सर्वशक्तिमत्व दयालुता और न्यायकारित्वादिक गुण जगत् में प्रत्यक्ष देख पड़ते हैं स्वाभाविक गुण और गुणी का नित्य संबंध होता है जैसा कि रूप और अग्नि का सो जैसे अग्नि का रूप देख पड़ता है और अग्नि नेत्र से नहीं देख पड़ता परन्तु हम लोग ज्ञान से अग्नि को प्रत्यक्ष देखते हैं क्योंकि अग्नि को बुद्धि से प्रत्यक्ष हम लोग न देखते तो अग्नि को लेआने और अग्नि में जितने व्यवहार होते हैं उन में प्रवृ-त्त कभी न होते इस से जैसा अग्नि हम को प्रत्यक्ष है गुण और गुणी के

ज्ञानसे वैसे ज्ञानसे परमेश्वर भी प्रत्यक्ष है जो धर्मात्मा और योगी पुरुष होते हैं उनको परमात्मा जीव और परमेश्वर भी यथावत् प्रत्यक्ष होते हैं जो कोई इसमें संदेह करै सो करके देखले उपमानप्रमाणतो परमेश्वर में नहीं होसक्ता क्योंकि परमेश्वर के सदृश कोई पदार्थ नहीं जिसकी उपमा परमेश्वर में होसकै परन्तु परमेश्वर की उपमा परमेश्वर ही में होसक्ती है ऐसा जगत् में व्यवहार देखने में आता है कि आप के तुल्य आपही होवैं वैसे हम लोग भी कह सक्ते हैं कि परमेश्वर के तुल्य परमेश्वर होहै और कोई नहीं जब तीन प्रमाणों से ईश्वर की सिद्धि होगई तो शब्द प्रमाण भी अवश्य होगा सो शब्दप्रमाण इस प्रकार का लेना ॥ दिव्यो ह्यमूर्त्तः पुरुषः सबाह्याभ्यन्तरो ह्यजः । अप्राणो ह्यमनाः शुभ्रो ऽक्षरात्परतः परः ॥ २ ॥ दिव्य नाम सब जगत् का प्रकाशक अमूर्त्त निराकार और सदा अशरीर पुरुष नाम सब जगत् में पूर्ण सो ई बाहर और भीतर एकरस अज कभी जिसका जन्म नहीं होता अप्राण नाम किसी प्रकार की चेष्टा वा लीला नहीं करता अमना नाम रागद्वेष संकल्प विकल्पादिक दोष रहित अक्षर जो जीव उससे परे जो प्रकृति उससे भी परमेश्वर सूक्ष्म और पर है ॥ २ ॥ न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः । तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥ ३ ॥ मन्त्र० उस परमेश्वर में सूर्य चन्द्र, तारे, बिजली, और अग्नि एक कुछ भी प्रकाश नहीं कर सक्ते किन्तु सूर्यादिकों को परमेश्वर ही प्रकाशते हैं सब जितना जगत् है उसके प्रकाश से प्रकाशित होता है परमेश्वर का प्रकाशक कोई नहीं ॥ ३ ॥ अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः । स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं पुराणम् ॥ ४ ॥ मन्त्र० । परमेश्वर निरंकार है परन्तु उसमें शक्तियां सब हैं हाथ परमेश्वर को नहीं है परन्तु हाथ की शक्ति ऐसी है कि सब चराचर को पकड़के थांभ रक्खा है तथा पाद नहीं है परन्तु सबसे वेगवाला है नेत्र नहीं है परन्तु चराचर को यथावत् सब काल में देख रहा है कान नहीं है पर-

न्तु चराचरकोजानसुनताहै मन,बुद्धि,चित्तऔरअहङ्कारतोनहीं है परन्तुमननिश्चयऔरस्मरण अपनेस्वरूपकाआपहीजाननेवालाहै औरवहसबकोजानताहै परन्तुउसकोकोई नहींजानसक्ता कि इतनाबड़ावाइसप्रकारका वाइतनासामर्थ्यउसमेंहै ऐसाकोई नहीजानसक्ताउसपरमेश्वरकोज्ञानीऔरशास्त्रसर्वोत्कृष्टपूर्णऔर सनातनकहतेहैं ॥ ४ ॥ अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययंतथारसन्नित्यमगन्धवच्चयत्। अनाद्यनन्तंमहतःपरंध्रुवंनिचाय्यतंमृत्युमुखात्प्रमुच्यते ॥ ५ ॥ भ० वहपरमेश्वरअशब्दअर्थातकहने औरसुनने मात्रसेनहींजानाजाता बिनाउसके आज्ञापालन विज्ञानप्रीति औरयोगाभ्यासकेस्पर्श रूपरसऔरगन्धपरमेश्वरमेंनहीं इस परमेश्वरकाज्ञानसहस्रों पुरुषोंमेंकिसीकोहोताहै सबकोनहींवह कैसाहै अनादिऔरअन्तजिसकाआदिकारण अथवाअन्तकोकोई नहींदेखसक्ता क्योंकिउसकामरण वाअन्तनहीं है तोकैसेकोई देखसकै परमेश्वरबुद्धिसेभीसूक्ष्मऔरपरेहै जोकोईपरमेश्वरको जानताहै सोजन्ममरणादिक सबदुःखोंसेछूटके परमेश्वरकोप्राप्त होताहै फिरकभीउसकोदुःखलेशमात्रभीनहींहोता ॥ ५ ॥ समाधिर्धूतमलस्यचेतसोनिवेशितस्यात्मनियत्सुखंभवेत्। नशक्यतेवर्णयितुंगिरातदास्वयंतदन्तःकरणेनगृह्यते ॥ ६ ॥ भ० जिसपुरुष काधर्माचरणविद्या औरसमाधियोगसेचित्तशुद्धहोजाताहै उसकाचित्तपरमेश्वरकेज्ञानमें औरप्राप्तिकेयोग्यहोताहै जबसमाधि योगमेंचित्त औरपरमेश्वरका योगहोताहै उसवक्तऐसा आनन्द उसजीवकोहोताहै किकहनेमेंभीनहींआता क्योंकिवहजीवअपने अन्तःकरण अर्थातबुद्धिहीसेग्रहणकरताहै वहांतीसराकोईनहीं है किजिससे कहैं किफिरजाग्रतावस्थाकहनेमेंभीनहींआता क्योंकि वहपरमेश्वरउसकाआनन्द औरउसकोजाननेवालाजीवतीनोंचेतनपदार्थहैं इससे वहसबआनन्दकहनेमेंनहींआता ॥ ६ ॥ आश्चर्योऽस्यवक्ताकुशलोऽस्यलब्धा। आश्चर्योऽस्यज्ञाताकुशलानुशिष्टः

॥ ७॥ मन्त्र० परमेश्वरकावक्ताऔरप्राप्तिहोनेवालादोनोंआश्चर्य पुरुषहैं क्योंकिआश्चर्यजोपरमेश्वर उसकोजाननेवालाभी आश्चर्य होहोताहै जिसकोब्रह्मवित्पुरुषोंकाउपदेशकुशलहोय औरअपने भीसबप्रकारसेविद्यावान्शुद्धऔरयोगीतबपरमेश्वरकोजानसक्ता है सोभीआश्चर्यहैअन्यथानहीं ॥ ७॥ सर्वेवेदायत्पदमामनन्ति तपांसिसर्वाणिचयद्वदन्ति यदिच्छन्तोब्रह्मचर्यंचरन्तितत्ते पदंसंग्रहे-णब्रवीम्योमेतत् ॥ ८ ॥ जिसपदअर्थात्परमेश्वर सबवेदअभ्यास पुनःपुनः उसीहीकाकथनकरतेहैं अर्थात्वेपरमेश्वरहीकोकहते हैं औरउसकेवास्तेहोहै जिसकोप्राप्तिकोइच्छासेमनुष्यलोगब्रह्म-चर्यसेयथावत्विद्यापढ़तेहैं किहमलोगपरमेश्वरकोजानें उसकी प्राप्तिकेबिना अनन्तसुखऔरसबदुःखकी निवृत्तिनहीं होती यही बातयमराजनचकेतासेकहतेहैं किहेनचकेताजो ओंकारकाअर्थ हैसोईपरब्रह्महै ॥ ८ ॥ एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढ़ःसर्वव्यापीसर्वभूता-न्तरात्मा । सर्वाध्यक्षःसर्वभूताधिवासःसाक्षीचेताकेवलोनिर्गुण-श्च ॥ ९ ॥ मन्त्र एकजोअद्वितीयपरमेश्वरब्रह्महै सोईसबभूतोंमेंगूढ़ है अर्थात्गुप्तकिसबजगत्में प्राप्तहै फिरमूढ़लोगउसको नहींजा-नते सबभूतोंकाअन्तरात्मा किनिकटसेभीनिकटसबसंसारकावही है अध्यक्षनामस्वामीऔरसबभूतोंकानिवासस्थानसबमेंस्थ सब-बकेऊपरविराजमानसबकासाक्षी किकोईकर्मजीवकाउनसेबिना जानानहींरहताकिन्तुसबजानतेहैं चेतनस्वरूपऔरकेवलअर्थात् उसमेंकुछभीनहींमिलताहै एकरसचेतनस्वरूपहीहै जैसादूधमें जलमिलारहताहै वैसानहीं जितनेअविद्या जन्म,मरण, हर्ष, शोक,क्षुधा,तृषा, तमोरजः औरसत्त्वगुणादिकजगत्केहैं उनसे सदाभिन्नहोनेसेपरमेश्वरनिर्गुणहै औरसच्चिदानन्दसर्वशक्तिम-त्त्वदयालुन्यायकारित्व औरसर्वज्ञादिक गुणोंसेसदासगुणहै ९ ॥ नतस्यकार्यंकरणंचविद्यतेनतत्समश्चाभ्यधिकश्चादृश्यते। परास्यश-क्तिर्विविधैवश्रूयतेस्वाभाविकीज्ञानबलक्रियाच १० ॥ मन्त्र परमेश्व-

रसदाकलतल्यहै उसकोकर्तव्यकुछनहीं किइसकोकरनेकेविनाइ-
मकोसुखनहीहोगा ऐसानहींकरनाजैसाकिचक्षुकेविनाकूपनहीं
देखसक्ता ऐसाभीपरमेश्वरमेंनहीं किन्तुविविधशक्ति स्वाभाविक
अनन्तसामर्थ्यपरमेश्वरकासुनाजाताहै किअनन्तज्ञान,अनन्तब-
लऔरअनन्तक्रियापरमेश्वरमेंस्वाभाविकहोहै इसमेंकुछसन्देह
नहीं क्योंकिपरमेश्वरकेतुल्यवाअधिककोईनहीं ॥ १० ॥ एषसर्वे-
षुभूतेषुगूढ़ात्मानप्रकाशते। दृश्यतेत्वग्र्ययाबुध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शि-
भिः ॥ ११ ॥ मन्त्र यहजोपरमेश्वरसबभूतोंमेंसूक्ष्मव्यापकऔरगुप्त
है इससे मूढ़जोविज्ञानऔरयोगाभ्यासहो उनकोबुद्धिमेंनहींप्रका-
शितहै जितनेसूक्ष्मदर्शीयथावत् विद्यावान्उनकीशुद्धि औरसूक्ष्म
जोबुद्धि,विद्या,विज्ञान,योगाभ्यास सेहोताहै उससे परमेश्वरको
वेयथावत्जानतेहैं अन्यथानहीं ॥ ११ ॥ तदेजतितन्नैजतितद्दूरे-
तद्वन्तिके। तदन्तरस्यसर्वस्यतदुसर्वस्यास्यबाह्यतः ॥ १२ ॥ मन्त्र
सोईपरमेश्वर प्राणादिकोंको चेष्टाकरताहै औरआपअचलहीहै
वहअधर्मात्माऔरमूढ़ पुरुषोंसेअत्यन्तदूरहै औरधर्मात्माविज्ञान
वालेपुरुषोंसेअत्यन्तनिकट अर्थातउनकाअन्तर्यामीहीहै सोईब्रह्म
सबजगत्के बाहरभीतर औरमध्यमेंपूर्णहै ॥ १२ ॥ अनेजदेकम्म-
नसोजवीयोनैनदेवाआप्नुवन्पूर्वमर्षत्। तद्धावतोन्यानत्येतितिष्ठ-
त्तस्मिन्नपोमातरिश्वादधाति ॥१३॥ मन्त्र यहब्रह्मनिष्कंपनिश्चलहै
परन्तुमनसेभीवेगवालाहै इसब्रह्मकोदेव अर्थात् चक्षुरादिक इ-
न्द्रियांप्राप्तनहींहोतो क्योंकिइन्द्रियऔर मनकावहीआत्माहै सो
आत्माकावाह्यजोशरीर सोउसकोकभीनहींदेखसक्ता वहआत्मा
तोसबकोदेखसक्ताहीहै औरमनवेगसेजहां२जाताहै वहां२व्या-
पकहोनेसे परमेश्वरआगेदेखपड़ताहै सोपरमेश्वरजितनेवेगवा-
लेहैं उनकोउल्लङ्घनकरलेताहै अर्थात्परमेश्वरकेकोईगुणकेतुल्य
वाअधिककिसीकागुणसामर्थ्यनहीं सोपरमेश्वरस्थिरव्यापकऔर
चेतनउसके सत्तासे उसमेंठहराभया मातरिश्वा अर्थात्माताजो

आकाशउसमेंचलनेऔररहनेवाला जोप्रमाणसेचेष्टादिकसबक-
र्मोंकाकर्ताहैअन्यथानहीं १३ ॥ यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्वि-
जानतः। तत्रकोमोहःकःशोकएकत्वमनुपश्यतः १४ ॥ मन्त्र जिसप-
रमेश्वरकेजाननेसेसबभूतप्राणिमात्रआत्माकेतुल्यहोजातेहैं किकि-
सीभूतसेनरागऔरनद्वेषउसकोकभीरागऔरनहींहोतेक्योंकिवह
एकजोअद्वितीयउसपरमेश्वरमेंस्थिरज्ञानवालाजोपुरुषउनकोकि-
सीमेंमोहवाकिसीसेक्याशोकअर्थात्उसकोकभीमोहवाशोकहोता
हीनहीं १४ ॥ वेदाहमेतंपुरुषम्महान्तमादित्यवर्णन्तमसःपरस्ता-
त्। तमेवविदित्वातिमृत्युमेतिनान्यःपन्थाविद्यतेयनाय १५ ॥ मन्त्र
जोब्रह्मवित्पुरुषउसकायहअनुभवहै किपूर्णसबसेबड़ाप्रकाशस्व-
रूप औरसबकाप्रकाश जन्ममरणसुखदुःख औरअविद्या जोतम
उससेभिन्नउसपरमेश्वर कोजानताहूं सबदुःखसेछूटकेपरमानन्द
उसकोजाननेसे यथावत् प्राप्तभयाहूं उसीकोजानके अतिमृत्यु
जोपरमेश्वर किजिसमेंजन्ममरणादिकदुःखोंकालेशमात्रभीनहीं
अर्थात्मोक्षपदकोप्राप्तहोताहै औरकोईइससे भिन्नमोक्षकामार्ग
नहीं ॥ १५ ॥ सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरंशुद्धमपापवि-
द्धम्। कविर्मनीषीपरिभूःस्वयंभूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वती-
भ्यःसमाभ्यः ॥ १६ ॥ मन्त्र सोपरमेश्वरसबपदार्थोंमें एकरसअ-
द्वितीयपूर्णहै सबजगत्कर्तास्थूलसूक्ष्म औरअकायअर्थात् जागृत
और सुषुप्ति इनतीन शरीर रहित शुद्ध निर्मल सर्वदोष रहित
जिसकोपापकालेश मात्रभीसम्बन्धनहीं सर्वज्ञसर्वविद्वान् अनन्त
जिसकाविचारऔरज्ञान सबकेऊपरविराजमान स्वयंभूनामजि-
सकोकभीउत्पत्तिनहोय आपसेआपहोसदासनातनहोवै जिन्नेवे-
दरूपसर्वज्ञ विद्याकाहिरण्यगर्भादिक शाश्वतनामनिरन्तरप्रजा
ओंकोअर्थोंकाअर्थात्वेदोंका यथावत्उपदेशकियाहै उसपरमे-
कोस्तुतिप्रार्थनाऔरउपासनाकरनीचाहिए इतनासंक्षेपसेसंहि-
ताऔरब्राह्मणोंकेमन्त्रोंसे शब्दप्रमाणलिखदियासोजानलेना पू-

बंधन/परमेश्वर रागी है वा विरक्त वा उदासीन जो रागी होगा तो दुःखी वा असमर्थ होगा सदा जो विरक्त होगा तो कुछ भी न करेगा और संसार का धारण भी न होगा और जो उदासीन होगा तो अपने स्वरूप स्थ मात्र ही वर्त्तेगा अर्थात् बद्ध जो ईश्वर होगा तो कभी रचसकेगा नहीं मुक्त होगा तो जगत् को ही रचेगा नहीं इस से ईश्वर की सिद्धि नहीं होती। उत्तर। परमेश्वर रागी नहीं क्योंकि अपने से उत्तम कोई पदार्थ नहीं है कि जिस में राग करै अपने स्वरूप में अपना राग कभी नहीं बनता १. व्यापी के होने से अप्राप्त पदार्थ ईश्वर को कोई नहीं तथा सर्वशक्तिमान् के होने से भी राग ईश्वर में नहीं बन सक्ता विरक्त भी ईश्वर नहीं क्योंकि पहिले जो बद्ध होता है सो ईबन्धन के छूटने से विरक्त कहाता है सो ईश्वर को बन्धन तो नीं काल में भी नहीं भया फिर उस को विरक्त कैसे कह सकें उदासीन भी वह होता है कि पहिले बन्धन में होय पीछे ज्ञान के होने से उदासीन हो जाय ऐसा ईश्वर नहीं ईश्वर की अचिन्त्यशक्ति है कि सब में रहै और किसी का भी लेशमात्र संग दोष न लगे इस से ऐसी शंका जीव के बीच में घटसक्ती है ईश्वर में नहीं। पूर्वपक्ष जितने पदार्थ हैं वे सब सन्देहयुक्त होते हैं निश्चय यथावत् एक का भी नहीं होता उत्तर आपने यह बात कही सो निश्चित है वा नहीं जो कहो कि निश्चित है तो सब पदार्थ सन्देहयुक्त नहीं भये आप को बात निश्चित होने से और जो आप कहैं कि यह मेरी बात भी निश्चित नहीं तो आप की बात का प्रमाण ही नहीं हुआ क्योंकि लक्षणप्रमाणाभ्यां पदार्थसिद्धिः। लक्षण और प्रमाणों के बिना किसी पदार्थ की निश्चित सिद्धि नहीं होती आपने सब पदार्थों में सन्देह सिद्ध कहा सो किस प्रमाण से उसकी सिद्धि होती है कि सो प्रमाण से सन्देह की आप सिद्ध किया चाहोगे तो उस प्रमाण में भी आप का निश्चय नहीं होगा क्योंकि आप सब पदार्थों को सन्देहयुक्त कह चुके हैं इस से आप का सन्देह ही सन्देह नष्ट होगया फिर आप किसी व्यवहार में प्रवृत्त न हो सकोगे जैसे कि गमन भोजन, छादन, देखना सुनना इत्यादिक भी सन्देहयुक्त होने से प्रवृ-

भिभी इनमें नहीं होनी चाहिए प्रवृत्ति तो आपकी हीहैं इस्से आपको कहा कि सब व्यवहार और सब पदार्थ सन्देहयुक्त होवैं यह बात आप की मिथ्या हो गई इस्से क्या आया कि लक्षण और प्रमाणों से जो निश्चित पदार्थ होता है उसको निश्चित ही मानना चाहिए इसमें सन्देह करना व्यर्थ ही है सो प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से ईश्वर की यथावत् सिद्धि होती ही है उसको मानना ही चाहिए (प्रश्न) पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, इन चारों के मिलने से चेतन भी उसमें होता है जब वे पृथक् २ हो जाते हैं तब सब कला विगड़ जाती हैं फिर उसमें कुछ नहीं रहता इस्से जगत् का रचनेवाला कोई नहीं आप से आप ही जगत् और जीव होता है (उत्तर) आप भी इन चारों को मिला के जीव और जीव के जितने गुण उनको देखला देवैं सो कभी नहीं देख पड़ेंगे क्योंकि पहिले ही से सब स्थूल भूतों में सब सूक्ष्म भूत मिले रहते हैं फिर उनमें ज्ञानादिक गुण क्यों नहीं देख पड़ते इस्से जीव पदार्थ इन भूतों से भिन्न ही है-जिसके ये गुण हैं इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिङ्गम्। यह गौतम मुनि का सूत्र है इसका यह अभिप्राय है कि इच्छा कि सो प्रकार का चाहना जिसके गुणों को जानता है उसकी प्राप्ति की चाहना करता है जिसमें दोषों को जानता है उसमें द्वेष अर्थात् चाहना नहीं करता प्रयत्न नाना प्रकार की शिल्पविद्या से पदार्थों का रचना शरीर तथा भार का उठाना इसका नाम प्रयत्न है सुख नाम अनुकूल का चाहना और जानना दुःख प्रतिकूल का जानना और छोड़ने की इच्छा करना ज्ञान जैसा जो पदार्थ है उसका तत्त्वपर्यन्त यथावत् विवेक करना इसका नाम जीव है ये गुण पृथिव्यादिक जड़ों के नहीं किन्तु जीव ही के हैं लिंग शरीर बुद्धि जिस्से जीव निश्चय करता है (बुद्धिरुपलब्धिर्ज्ञानमित्यनर्थान्तरम्) यह गौतम जी का सूत्र है बुद्धि उपलब्धि और ज्ञान ये तीनों नाम एक ही पदार्थ के हैं मन जिस्से एक पदार्थ को विचार के दूसरे का विचार करता है ॥ युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिंगम्। यह गौत० जिस्से एक पदार्थ ही को एक काल में ग्रहण करता है एक को ग्रहण करके

दूसरे का दूसरे काल में ग्रहण करता है एक काल में दोनों का नहीं इसका नाम मन और चित्त जिससे कि जीव पूर्वापर का स्मरण करता है जो कि पहिले देखा और सुना था इसका नाम चित्त है अहङ्कार जिससे अभिमान जीव करता है ये चार मिल के अन्तःकरण कहाता है इससे जीव भीतर मनोराज्य करता है ये चारों एक ही हैं परन्तु व्यापार भेद से चार भिन्न २ नाम हैं वाह्यकरण जिससे कि बाहर जीव व्यापार करता श्रोत्र जिससे शब्द सुनता है त्वचा जिससे स्पर्श जानता है नेत्र जिससे रूप को जानता है जिह्वा जिससे रस को जानता है नासिका जिससे गन्ध को जानता है ये पांच ज्ञान इन्द्रियां हैं इनसे जीव बाह्य पदार्थों को जानता है वाक् जिससे शब्द बोलता है पाद जिससे गमन करता है हस्त जिससे ग्रहण करता है वायु जिससे मल का त्याग करता है लिंग जिससे मूत्र और विषयभोग करता है ये पांच कर्मेन्द्रिय हैं इनसे जीव बाह्य कर्म करता है प्राण जिससे ऊर्द्ध चेष्टा करता है अपान जिससे अधो चेष्टा करता है व्यान जिससे सब सन्धियों में चेष्टा करता है उदान जिससे जल और अन्न को कण्ठ से भीतर आकर्षण कर लेता है समान जिससे नाभिद्वार सब रसों को सब शरीर में प्राप्त कर देता है ये पांच मुख्य प्राण कहाते हैं नाग जिससे डकार लेता है कूर्म जिससे नेत्र को खोलता और मून्दता है कृकल जिससे छींकता है देवदत्त जिससे जम्भाई लेता है धनञ्जय जिससे शरीर को पुष्टि करता है और मरे पीछे शरीर को नहीं छोड़ता जो कि सूरदे को फुलाता है ये पांच उपप्राण हैं ये दश एक ही हैं परन्तु क्रियाभेद से दश नाम भये हैं ये २४ तत्त्व मिल के लिंगशरीर कहाता है कोई उपप्राण को नहीं मानता उसके मत में २९ होते हैं और कोई पांच सूक्ष्मभूत जो कि परमाणुरूप हैं और पूर्वोक्त चार भेद अन्तःकरण के इन नव तत्त्वों को लिंगशरीर कहाता है इस लिंगशरीर में जो अधिष्ठाता कर्ता और भोक्ता उसको जीव कहते हैं जो कि एक काल में सब बुध्यादिकों के किये कर्मों का अनुभव करता है चेतनस्वरूप है उसका नाम जीव है उसकी अधिक व्याख्या सुक्ति के प्रकर्ण में किई जायगी सो

जीवभिन्नपदार्थहीहै चारोंकेमिलानेसे जीवकेगुण औरजीवकभी
नहींउत्पन्नहोता इस्से यहबातकहीथी किचारोंकेमिलनेसे जीव
भीहोताहै यहबातखण्डितहोगई(प्रश्न)ईश्वर,सर्वज्ञऔरत्रिकाल
दर्शीहै जैसाईश्वरनेअपनेज्ञानसेनिश्चितकियाहै वैसाहीजीवपाप
वापुण्यकरेगा फिरजीवको दण्डक्योंहोताहै क्योंकिउस्से अन्यथा
जीवकुछनहींकरसक्ता जोअन्यथाजीवकरेगातो ईश्वरकासर्वज्ञा-
पननष्टहोजायगा इस्से जैसाईश्वरनेपहिलेहीनिश्चयकररक्खाहै वै-
साजीवकरताहै ईश्वरजानताभीहै फिरआपसेउसकोनिष्टत्तक्यों
नहींकरदेता जोनिष्टत्तनहींकरदेता तोदण्ड क्योंदेताहै(उत्तर)
ईश्वरहै अत्यन्तदयालु जबजीवोंकोईश्वरनेरचा तबविचारकरके
सबकोस्वतन्त्रऔररखदियेक्योंकिपरतन्त्ररखनेसेकिसीकोकभीसु-
खनहींहोता जैसेकिकोईअपनीइच्छासे मरणतकएकस्थानमेंर-
हताहै तोभीइसमेंउसकोकुछदुःखनहींमालूमहोता उसकोजो
कोईएकघड़ीभरभीपराधीनबैठायरक्खै तोबड़ाउसकोदुःखहोता
है इस्सेपरमेश्वरनेसबजीवस्वतन्त्ररक्खे हैंजोचाहतातोपरतन्त्रभी
रखसक्ता परन्तुपरमेश्वरबड़ादयालु औरकृपासागरहै इस्से सब
स्वतन्त्ररक्खे हैं परन्तुआज्ञा ईश्वरकीहै किजोजैसाकर्म करेगा
वहवैसाफलभोगेगा सोआज्ञाउसकोसत्यहीहै इस्से क्याआयाकि
कर्मोंकेकरने औरपुण्योंके फलभोगनेमेंजीवस्वतन्त्रहै)औरपापों
केफलभोगनेमेंपराधीनहैं जीवकर्मोंकेकरनेवाले औरभोगनेवाले
हैं जैसाजीवकर्मकरेगा वैसाहीईश्वरने ज्ञानसेनिश्चय पहिलेही
कियाहै औरभोक्तावहीहै त्रिकालज्ञानमेंईश्वरस्वतन्त्रऔरअपने
कर्मोंकेकरनेमेंतथाभोगनेमेंजीवस्वतन्त्रहैं(प्रश्न)जीवकानिजस्वरू-
पक्या॥(उत्तर)विशिष्टस्यजीवत्वमन्वयव्यतिरेकाभ्याम्। यहकपिल
मुनिजीकासूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किजैसाअयनामिट्टीसेव-
नताहै परन्तु शुद्धकेहोनेसे जोउसकेसाम्हनेपदार्थहोगा सोउसमें
यथावत् देखपड़ेगा अथवालोहेकोअग्निमेंरखनेसेअग्निकेगुणवा-

ला होता है उनदोनोंमें प्रतिबिम्ब वा अग्निभिन्न है क्योंकिउनसे पृथक् भीवे देख पड़ते हैं औरहो भी जाते हैं इससे दर्पण और लोहेसेव्यतिरिक्त हैंअर्थात्जुदे हैं औरजोकेवलजुदे होते तोउनके गुणदर्पण औरलोहेमें नहोते इससे उनमें अन्वयभी उनकादेख पड़ताहै वैसेही लिंगशरीरजोहै उसकाअधिष्ठाताहै सोईजीवहै दर्पणकेतुल्य अन्तःकरणशुद्ध है स्थूलदेहबाहरकाहै औरजिसमें मठमिश्राहोताहै सत्व रजोऔरतमोगुणमिलकेप्रकृतिकहातीहै जिसकानामअव्यक्तपरमसूक्ष्मभूत औरप्रधानभीहै वहकारणश- रीरकहलाताहै सोसबप्राणियोंकाव्यापकके होनेसेएकहीहैदोनों केबीचमेंमध्यस्थलिंगशरीरहै चेतनएकजीवऔरदूसरापरमेश्वर हीहै तीसराकोईनहीसोपरमेश्वरहै विभुव्यापकसर्वचएकरसज- हां२लिंगशरीर विशिष्टजीव रहताहै वहां२परमेश्वरहीपूर्णहै सोलिंगशरीरमेंउसकासामान्यप्रकाशहैऔरविशेषप्रकाशचेतन होकाजीवहैजैसेदर्पणमेसूर्यकाविशेषप्रकाशहोताहै सोपरमेश्वर कासदासंयोगरहताहै वियोगकभीनहीं इससेपरमेश्वरके अन्वय होनेसेवहचेतननहींहैवहजीवकहलाताहै औरलिंगदेहसेपरमे- श्वरभिन्नकेहोनेसेपृथक्भीहै क्योंकिलिंगशरीरसेयुक्तजीवस्वर्गन- र्कजन्मऔरमरणइत्यादिकोंमेंभ्रमणकरताहै परन्तुपरमेश्वरनि- श्चलहै उसकेसाथभ्रमणनहींकरतेहैं औरउसकेगुणदोषोंकेभोग वासंगोकभीनहींहोतेहैंकारणशरीरकेज्ञानलोभ औरक्रोधादि- कगुणजीवमेंआतेहैं औरस्थूलशरीरकेशीतोष्णक्षुधा तृषादिक गुणभीजीवमेंआतेहैं क्योंकिदोनोंशरीरकेमध्यस्थवर्तीजीवहै इससे दोनोंशरीरोंकेगुणकाभीसंगजीवकताहै इसकास्पष्टव्याख्या- नमुक्तिऔरबन्धकेविषयमेंकियाजायगा प्रश्न ईश्वरव्यापकनहीहोस- क्ता क्योंकिजितने परमाणवादिकपदार्थहैं वेजहांरहतेहैं उतने अवकाशको ग्रहणअवश्यकरतेहैं फिरउसीअवकाशमें दूसरेपर- माणवाईश्वरकोस्थिति कभीनहींहोसक्ती औरउसकेबीचमेंअन्य

पदार्थभीरहैं तोवहपरमाणुहीनहीं क्योंकिबहुतपदार्थोंकेसंयोग
सेविनासंधिवापोलउसमेंनहींहोसक्ता सबवियोगकीअन्तावस्था
जोहै उसकोपरमाणुकहतेहैं किफिरजिसकाविभागहोसके (उ-
त्तर) ईश्वरव्यापकहैक्योंकिपरमाणुसेभीसूक्ष्महै जैसेचिसरणुकेआ-
गेसंयोगवावियोग बुद्धिसेहमलोगजानतेऔरकरतेहैं वैसेहीपर-
माणुकावियोग भीबुद्धिसेकरसक्तेहैं औरईश्वरकीविभुताभीज्ञान
सेजानसक्तेहैं क्योंकिपरमेश्वरविभुनहोतेतोपरमाणुकारचनसं-
योगवियोग औरधारणभीनकरसक्ते फिरपरमाणुकाधारणभी
कैसेहोता जैसेपुष्पमेंगन्ध दूधमेंघृतघृतमेंस्वाद औरगन्धऔरउन
सबपदार्थोंमें आकाशनाम पोलयेसबव्यापकहैं उनरपदार्थोंमें
वैसेपरमेश्वरभीपरमाणुऔरप्रकृत्यादिकतत्त्वोंमेंव्यापकहीहै (प्रश्न)
अच्छा ईश्वरसिद्ध औरव्यापकभीहै। परन्तुउसको उपासनाप्रा-
र्थनाऔरस्तुतिकरनीआवश्यकनहीं क्योंकिकोईव्यवहारईश्वरके
सम्बन्धकाप्रत्यक्षनहींदेखपड़ता इससे ईश्वरअपनी ईश्वरतामेंरहे
औरहमजीवलोगअपनीजीवतामेंरहैं (उत्तर) ईश्वरकीउपासना
प्रार्थनाऔरस्तुति अवश्यसबजीवोंकोकरनीचाहिए जैसेकिकोई
किसीकाउपकारकरै उसकाप्रत्युपकार उसकोअवश्यकरनाचा-
हिए जोप्रत्युपकारनहीकरता सोअवश्यकृतघ्नहोताहै क्योंकिउ-
सनेउसकेसाथभलाईकिया औरउसनेउसकेसाथबुराईकी जैसा
उसनेसुखदियाथा फिरउसनेउसकोसुखकुछनहींदिया वाउसने
विरोधहीकरलिया इससे वहपुरुष कृतघ्नहोताहै जैसेमातापिता
औरकोईस्वामी जिसकापालनकरतेहैं वेकेवलअपने उपकारके
हेतुकतेहैंकियहभीमेरापालनसमर्थहोकेकरैगा जबवहपुत्रवाभृत्य
यथावत्पालननहींकरता संसारमेंसज्जनलोगउसकोकृतघ्नकहते
हैं जोमाताऔरपिताअथवास्वामीउनकापालनकरतेहैं जिनप-
दार्थोंसेवेघृतजलपृथिवी औरअन्नादिकसबपरमेश्वरकेरचेहैं जो
जिसकोरचताहै वहीउसकामातापिता औरमुख्यस्वामीहोताहै

उनपदार्थों से अपनेबा पुत्रादिकों का पालनवे करते हैं जैसे किसी ने अपने भृत्यसे कहा कि तू इसको सेवा करवा मेरे इस पदार्थ को लेके उस को देआ जबवह सेवा वा पदार्थ को प्राप्त होवै तब पदार्थ दाता स्वामी के ऊपर वह प्रीति करैवा भृत्य के किन्तु पदार्थदाता स्वामी ही से प्रीति करेगा भृत्य से नहीं किन्तु जिसका पदार्थ है। वैउसी से प्रीति करना चाहिए जैसे युद्ध में जयवा पराजय राज्य को प्राप्ति अथवा हानि राजा को होती है भृत्यों को नहीं वैसे ही परमेश्वर का जगत है जगत में जितने पदार्थ हैं उनका स्वामी परमेश्वर ही है इस से परमेश्वर को अत्यन्त प्रीति से स्तुति प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी हो चाहिए अन्य किसी की नहीं सेवा तो माता पिता और विद्या का देनेवाला श्रेष्ठ और सुपात्र की भी करनी चाहिए और जो ईश्वर की उपासना न करेगा वह कृतघ्न हो जायगा क्योंकि ईश्वर ने हम लोगों पर अनेक उपकार किए हैं जितने जगत् में पदार्थ रचे हैं वे सब जीवों के सुख के हेतु रचे हैं और जीवों को स्वतन्त्र कर्म करने में रख दिये हैं इसमें यह यजुर्वेद का प्रमाण है॥ कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳ समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ इसका यह अभिप्राय है कि जीव स्वतन्त्र आप ही आप कर्म करता है सो इस संसार में आप ही आप कर्म कर्त्ता हुआ॥ १०० सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करै परन्तु अधर्म कभी न करै सदा धर्म ही करै जो जीव कहेगा कि मरना मुझ को अवश्य है इस से पाप को न करना चाहिए ऐसे जो जीव विचार से कर्म करेगा सो पापों में लिप्त कभी न होगा॥ यन्मनसा ध्यायति तद्वाचा वदति यद्वाचा वदति तत्कर्मणा करोति। यत्कर्मणा करोति तदभिसंपद्यते॥ इस श्रुति का अर्थ पहिले कर दिया है परन्तु इसका यही अभिप्राय है कि जो जैसा कर्म करै वह वैसा ही फल पावै ऐसी ईश्वर की आज्ञा है॥ यथर्तु लिङ्गान्यृतवः स्वयमेवर्तु पर्यये। स्वानि स्वान्यभिपद्यन्ते तथा कर्माणि देहिनः॥ यह मनु का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि जैसे वसन्तादिक ऋतुओं के लिंग अर्थात् शीतोष्णादिक ऋतुओं में प्राप्त होते हैं वैसे

सबजीवअपने२ कियेकर्मों को प्राप्तहोतेहैं १ ॥ जोपुरुषईश्वरकी उपासनानकरेगा वहमहाअज्ञतमहोगा इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न जीवजब विद्यादिकशुद्धगुणऔरयोगाभ्याससे अनिमादिकसिद्धि-वालाहोताहै उसीकोईश्वर माननाचाहिए उससे भिन्नस्वतन्त्र ईश्वरमाननेकाकुछप्रयोजननहीं वहीसिद्धजगत्कीउत्पत्तिस्थिति धारणऔरप्रलयकरेगा इससे सनातनईश्वरकोईनहीं किन्तु साधनोंसे ईश्वरबहुत होजातेहैं उत्तर इनसेपूछनाचाहिए किजब जीवजीवकाशरीरइन्द्रियां औरपृथिव्यादिक तत्त्वोंकोकोईरचेगा तबतोविद्यादिकगुण औरयोगाभ्याससे कोईजीवसिद्धहोगा जोवे ऐसाकहैंकि जन्महीसेकोई सिद्धहोजायगा तोउनकेकहे साधनों सेसिद्धहोतीहै यहबातमिथ्याहोजायगी औरबिनासाधनोंकेसिद्ध होवै तोसबजीवसिद्धक्योंनहींहोते इससे यहबातउनकीमिथ्याहोगी सदासनातनसिद्धसबऐश्वर्यवाला साधनोंसेविनास्वतः प्रकाशस्वरूपईश्वरहै इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न जीवकर्मकरतेहैंऔर ईश्वरकराताहै क्योंकिईश्वरकीसत्ताकेविनाएकपत्ताभीनहींचल सक्ता इससे ईश्वरकेसहायसेजीवकर्मोंकोकरताहै आपसेआपकुछ करनेकोसमर्थनहीं उत्तर जीवआपहीआप स्वतन्त्रकर्मोंको करताहै ईश्वरकुछनहींकराता क्योंकिजोईश्वरकराते तोजीवकभी पापनहींकरता सोजीवपुण्य औरपापकरताहीहै इससे ईश्वर नहींकरता औरजोईश्वरकरता तोजीवसे ईश्वरको अधिकपाप होता जैसेएकमनुष्य चोरीकरताहै औरदूसराकराताहै इसमें करनेवालेसेकरानेवालेको पापअधिकहोताहै क्योंकियहप्रेरणा उसकोनहींकरता तोवहचोरीकभीनकरता सोएकप्रेरणाकरनेवालाअनेकमनुष्योंकोचोरबनादेताहै इस्सेउसकोअधिकपापहोताहै इसवास्ते ईश्वर कभीनहींकरता औरजोईश्वर कराताती जीवकाठकीपुतलीकीनाईंहोता जैसेउसकोनचावैवैसानाचे फिर जीवहीपरतन्त्रतामें जोदोषणकासोईआजाता इससे ईश्वरसबज-

मत्का करनेवाला है। ताहै परन्तु जीवोंकेकर्मोंकोकरनेवाकराने-
वालानहीं प्रश्न जोईश्वरजीवोंको न रचतातोजीव क्योंपापकरते
औरदुःखभीक्योंभोगते जैसेकिसीनेकूंआखोदा उसमेंकोईमनुष्य
भी गिरपड़ताहै जोवह कूंआ नखोदता तोकोईन गिरता वैसे
ईश्वरजीवोंकोनरचतातोजीवक्योंपापकरते(उत्तर)ऐसानकहना
चाहिए क्योंकिजोकोईराजाभृत्योंकोरखताहै औरपुत्रोंकोमनुष्य
उत्पादनकरताहै वागुरुशिष्योंकोशिक्षाकरताहै सोसबइसीवास्ते
करतेहैं किसबधर्मकीरक्षाऔरधर्माचरणकरैं पापकरनेकाअभि-
प्रायइनकानहीं औरजैसेबालकवाभृत्यकेहाथमें लकड़ीशिक्षावा
शस्त्रदेतेहैं सोअपनेशरीरकीऔरस्वामीकीआज्ञा तथाधर्मकीर-
क्षाकेवास्ते देतेहैं ऐसाअभिप्राय उनकानहींहै किउनसेआपअ-
पनेहीको मारकेमरजाय वैसेहीपरमेश्वरनेजीवरचेहैं सोकेवल
धर्माचरणऔरमुक्त्यादिकसुखकेवास्ते रचेहैं औरजोजीवपाप क-
रताहैसोअपनीमूर्खताहीसेकरताहैवैसाहीदुःखभोगताहै हस्ता-
दिकजीवोंकेवास्ते इन्द्रियरचीहैं सोकेवलजीवोंकेव्यवहारसिद्धहो
वें औरउनसे सबसुखकार्योंकोकरैं इनमेंसेकोईअपनेहाथसे अ-
पनीआंख निकाललेताहै वाअपनागलाकाटदेताहै सोकेवलअ-
पनीमूढ़तासेकरताहै मातापितादिकोंकावैसाअभिप्रायनहीं इ-
ससेयहप्रश्नअच्छानहीं प्रश्न ईश्वरसर्वशक्तिमान्हैवानहीं उत्तर सर्व
शक्तिमान्है प्रश्न जोसर्वशक्तिमान्होयतोअपनानाशभीईश्वरकर
सक्ताहैवानहीं उत्तर ईश्वरअविनाशीपदार्थहै अत्यन्तसूक्ष्म जि-
सकाकिसीप्रकारवाशस्त्रसेंनाशनहींहोसक्ता क्योंकिजिसपदार्थका
रूपऔरस्पर्शहोवै उसीकाअग्नि,जल,वायु, अथवाशस्त्रोंसे नाश
होसक्ताहै अन्यथानहीं नाशशब्दकायहअर्थहै किअदर्शनअथवा
कारणमेंमिलजाना सोपरमेश्वरकोइन्द्रियसेदर्शननहीं किफिर
अदर्शनउसकोहोय औरइसकाकोईकारणभीनहीं जिसमेंईश्वर
मिलजाय इससे ईश्वरकेनाशकीशंकाकरनीभी अनुचितहै औरई-

श्वर सर्वशक्तिमान् है परन्तु उसकी शक्ति न्याययुक्त ही है अन्याययुक्त नहीं इस से ईश्वर सदा न्याय ही करता है कि अविनाशी पदार्थ को अविनाशी जानता है और उसके नाश की इच्छा नहीं करता और जो विनाश वाला पदार्थ है उसका नाश न होवे ऐसी भी इच्छा नहीं करता क्योंकि ईश्वर का ज्ञान निर्भ्रम है जो जैसा पदार्थ है उसको वैसा जानता और वैसा ही करता है प्रश्न जो ईश्वर दयालु है तो न्यायकारी नहीं और जो न्यायकारी है तो दयालु नहीं क्योंकि न्याय उसका नाम है कि धर्म करना और पक्षपात का छोड़ना इस से क्या आया कि दण्ड देने के योग्य को दण्ड देना और अदण्ड को कभी दण्ड न देना सो जो दयालु होगा सो तो कभी दण्ड न दे सकेगा क्योंकि दया नाम है करुणा और कृपा का सो सदा अन्य के सुख और उपकार में रहेगा इस से ईश्वर को दयालु मानों तो न्यायकारी मत मानों उत्तर न्यायकारी का तो बहुत स्थानों में अर्थ कर दिया है और दयालु का भी परन्तु न्याय और दयालु इन दोनों का थोड़ा सा भेद है दण्ड का जो देना और जीवों को स्वतन्त्रता का रखना और सब पदार्थ बुद्ध्यादिकों का देना सर्वज्ञ सर्व पदार्थ को जिस में यथार्थ पदार्थ विद्या है उस वेदशास्त्र का प्रकाश करना यह बड़ी ईश्वर की दया है कि जो जैसा कर्म करै वह वैसा ही फल पावै अर्थात् यथावत् जो दण्ड का देना है सो उस के और उस से भिन्न सब जीवों के ऊपर ईश्वर दया करता है कि कोई न पाप करै और न दुःख पावै जैसे राजदण्ड है सो केवल सब मनुष्यों के ऊपर दया का प्रकाश ही है क्योंकि राजा का यह अभिप्राय होता है कि कोई अनर्थ में प्रवृत्त न होवै जो हम दण्ड न देंगे तो सब मनुष्य अधर्म में प्रवृत्त हो जांयगे इस से अपराधी पुरुष के ऊपर अत्यन्त कठिन दण्ड देता है कि सब मनुष्य भयमान होने से अधर्म में प्रवृत्त न होवैं वैसा ही ईश्वर की सब जीवों के ऊपर दया है कि एक को दुःखी देख के अन्य पुरुष पाप में प्रवृत्त न होवै और फिर जीव को यहां तक अधिकार दिया है कि अणिमादिक सिद्धि चिकाल दर्शन और आप जीव ईश्वर संयोग से अनन्त सुख को प्राप्त होवे

किकर्भोगिसकोफिरदुःखनहोवै इससेईश्वरन्यायकारीऔरदयालु है इसमेंकुछविरोधनहीं प्रश्न ईश्वरसर्वशक्तिमानऔरन्यायकारी किसप्रकारसेहै उत्तर देखनाचाहिएकिजितनेजीवहैं उनकोतुल्यपदार्थदियेहैं पक्षपातकिसीकाभीनहींकिया और जैसीव्यवस्था न्यायसे यथायोग्यकरनीचाहिए वैसीहीकियाहै इससे ईश्वरन्याय कारीहै जगत्मेंसूर्य्य,चन्द्र,पृथिव्यादिकभूत.वृक्षादिक,स्थावरऔर मनुष्यादिक चरइनकारचन हमलोगदेखके तथाधारणऔरप्रलयकोदेखकेआश्चर्यअनन्तईश्वरकीशक्तिकोनिश्चितजानतेहैं क्योंकि सर्वशक्तिमान् जोनहोता तोसब प्रकारका विचित्र जगत् न रचसक्ता इससे हमलोग जानतेहैं किईश्वर सर्वशक्तिमान्है इस मेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न ईश्वर विद्यावानहैवानहीं उत्तर ईश्वरमें अनन्तविद्याहै क्योंकिजोविद्यानहोतो तोयथायोग्यजगत्कीरचनाकोनजानता जगत्कीरचनायथायोग्यकरनेसे पूर्णविद्याईश्वर मेंहै प्रश्न ईश्वरकाजन्म होताहैवानहीं उत्तर उसकाजन्म कभी नहींहोता क्योंकि जन्मलेनेका प्रयोजन कुछनहीं जोसमर्थनही होता सोईदूसरेकासहायलेताहै जोसर्वशक्तिमान्है उसको किसी केसहायसे कुछप्रयोजननहीं आपही सबकार्यकी करसक्ताहै प्रश्न राम,कृष्णादिकअवतारईश्वरकेभएहैं यसूमसीहईश्वरकापुत्र औरमहम्मद आदिपुरुषोंको उपदेशकरनेकेवास्ते भेजा यहबात संसारमेंप्रसिद्धहै अपनेभक्तोंकेवास्ते शरीरधारणकरके दर्शनदिया औरनानाविधिलीलाकिई किजिसकोगाकेभक्तलोगतरजाते हैं फिरआपकैसेकहतेहोकि जन्मईश्वरकानहींहोता उत्तर यह बातयुक्तिसेविरुद्धहै औरशास्त्रप्रमाणसेभी क्योंकिईश्वर अनन्तहै जिसकादेशकाल औरवस्तु सेभेदनहींहै एकरसहै जिसकाखण्ड कभीनहींहोता औरआकाशादिकबड़े स्थूलपदार्थभी परमेश्वर केसामने एकपरमाणुकेयोग्यभीनहीं औरशरीरजोहोताहै सो शरीरसेस्थूलहोताहै जैसेघरमेंरहनेवालोंसे घरबड़ाहोताहै सो

ईश्वरकाशरीर किसपदार्थसे बनसक्ताहै किजिसमेंईश्वरनिवास करै औरजोकिसीमें निवासकरेगा तोअनन्त नरहैगा क्योंकि शरीरसेशरीरछोटाहीहोताहै जबशरीरकेसहायसे रावणवाकं-सादिकोंकोमारै तथाउपदेश भीकरै विनाशरीरसे नकरसकैतो ईश्वरसर्वशक्तिमान्होनहीं औरजोरावणादिकोंको माराचाहै और उपदेश कराचाहै तोसर्वव्यापी औरअन्तर्यामी होनेसेएक क्षणमें सबजगत्कामारडालै औरउपदेशभीकरदेवै तथाअपने भक्तोंको प्रसन्नभीकरदेवै इस्से ईश्वरको ईश्वरतायहीहै किविना सहायसेसबकुछकरसक्ताहै औरजोसहायकेविनानकरसकैतोउ-सकासर्वशक्तित्वही नष्टहोजाय इस्से ईश्वरकाकभी जन्मऔर कि सीकासहायलेताहै ऐसीशंकाकरनीव्यर्थहै प्रश्न जैसेसबजगत्की उत्पत्तिहोतीहै ईश्वरसेवैसेईश्वरकोभीउत्पत्तिकिसीसेहोतीहोगी उत्तर ईश्वरसेकौनबड़ापदार्थहै किजिस्से ईश्वरउत्पन्नहोवै पहि-लेहीप्रश्नकेउत्तरसेइसकाउत्तरहोगया औरजोउत्पन्नहोताहै उ-सकोईश्वरहमलोगनहींमानते किन्तु जिसकीउत्पत्तिकभीनहोवै औरसबसंसारको जिस्से उत्पत्तिहोवै उसीकोवेदादिक सत्यशास्त्र औरसज्जनलोगईश्वरमानतेहैं औरकोनहीं जोकोईईश्वरकोभी उत्पत्तिमानताहै उसकेमतमेंअनवस्थादोषआवैगा किजैसेउसने ईश्वरकी उत्पत्तिमानी फिरईश्वरकेपिताकी भीउत्पत्ति मानना चाहिए औरईश्वरकेपिताके पिताकोभीउत्पत्ति माननीचाहिए ऐसेहीआगे२माननेसे अनवस्थाआजायगी अथवाजिसकीवहउ-त्पत्तिनमानेगा उसीकोहमलोगईश्वरकहतेहैं अन्यकोनहीं प्रश्न ईश्वर साकारहै वानिराकार उत्तर ईश्वर निराकारहै क्योंकि जोनिराकारनहोता तोसर्वशक्तिमान्सर्वव्यापकसबकाधारनेवा-लाऔरसर्वान्तर्यामी औरनित्यकभीनहोता इस्से ईश्वरनिराकार हीहै प्रश्न ईश्वरचेतनहैअथवाजड़उत्तर जोजड़होतातोसबजगत् की रचना और ज्ञानादिक अनन्त गुण वाला कभी न होता

इससे ईश्वर चेतन है यह थोड़ासा ईश्वर के विषय में लिख दिया इसके आगे वेद विषय में लिखा जायगा) उसी ईश्वर ने सर्वज्ञ सर्वविद्यायुक्त और सत्य२ विचार सहित कृपा करके वेद शास्त्र सब जीवों के ज्ञानादिक उपकार के वास्ते रचा है (प्रश्न) ईश्वर निराकार है उसको मुख नहीं फिर वेद का उच्चारण और रचना कैसे किया (उत्तर) यह शंका असमर्थों में होती है कि विना मुख मुख का काम न कर सकै ईश्वर विना मुख से मुख का काम कर सक्ता है क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है और जो ऐसा न मानेगा उसके मत में यह दोष आवैगा कि हाथ, पांव आंख, शरीर और कान विना जगत् कैसे रचा जैसे विना हाथ आदिक के सब जगत् को रचा तो वेद के रचने में कुछ शंका नहीं (प्रश्न) ओष्ठादिक स्थानों का जिह्वा से वायु को प्रेरणा होने से अक्षर उच्चारण होसक्ते हैं अन्यथा नहीं उत्तर फिर भी वही दोष आवेगा कि ईश्वर सर्वशक्तिमान नहोगा क्योंकि ओष्ठादिक के स्पर्श और प्राण बिना ईश्वर उच्चारण नहीं कर सक्ता तो ईश्वर पराधीन होजाया और हाथादिकों के बिना ईश्वर ने जगत् भी न रचा होगा जैसा कि ओष्ठादिक स्थान और प्राण बिना उच्चारण नहीं कर सक्ता ऐसी शंका जीव में घट सक्ती है ईश्वर में नहीं प्रश्न लेखनी मसी इन से ककारादिक अक्षर बनते हैं विना इनके नहीं फिर ईश्वर ने कहां से कागद लेखनी मसी छुरि का वा क और पटिया यह सामग्री पाई जिस्से सब अक्षर रचे उत्तर यह बड़ी शंका आपने किया कि ईश्वर को अनीश्वर ही बना दिया अच्छा मैं आप से पूछता हूं कि नासिका, आंख, ओष्ठ, कान, नख, लोम, नाड़ी, और उनका सन्धान तथा आकार बिना सामग्री और साधन शरीर तथा अक्षर भी रच लिए (प्रश्न) फिर यह लिखी लिखाई पुस्तक संसार में कैसे आई और किस पाया आकाश वे गिरी वा पाताल से आगई (उत्तर) आपका मित्र इक्ष, पर्वत और इतनी बड़ी पृथिवी अन्तरिक्ष में कैसे आगए जैसे ये आगए वैसे पुस्तक भी आगई इसमें क्या आश्चर्य कुछ भी नहीं अग्नि, वायु और

आदित्यसृष्टिकेआदिमें भयेथे उन्होंवेदपाये उनसेब्रह्मानेपढ़े ब्रह्मा सेविराटने विराटसेमनुने मनुसेंदशप्रजापतियोंनेपढ़े औरउनसे प्रजामेंफैलगए(प्रश्न) अग्न्यादिकोंने ईश्वरसेवेदोंकोकैसेपढ़े (उत्तर इसमेंदोबातहैं ईश्वरनेउनको आकाशवाणीकोनांई सबशब्दसब मन्त्र उनकेस्वरअर्थऔरसम्बन्धभीसुनादिए इससेवेदोंकानामश्रु-तिरक्खाहै अथवाउनकेहृदयमें ईश्वरअन्तर्यामीहै उसनेउसीहृ-दयमें वेदोंकाप्रकाशकरदिया फिरउनोंनेअन्योंसे परप्रकाशकर दिए॥(योब्रह्माणंविदधातिपूर्वं योवैवेदांश्चप्रहिणोतितस्मै तंहदेव-मात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वैशरणमहंप्रपद्ये) यहवेदकाप्रमाणहै इस-कायहअभिप्रायहै किजोईश्वरब्रह्मादिकदेव औरसबजगतका र-चनकर्त्ताभया इससे पहिलेही वेदोंकोरचके ब्रह्माकोअग्न्यादिदेव नाम हिरण्यगर्भादिद्वाराजनादिये क्योंकिविद्याकेविना सबजीव अन्धेहोतेहैं कुछनही जानसक्ते जैसेपशु इससे परमेश्वरने वेदका प्रकाशकरदिया सबमनुष्योंकोसबपदार्थ विद्याजाननेकेहेतु(प्रश्न) ई-श्वरनेउनदेवअर्थातविद्वानोंकेहृदयमें प्रकाशवेदोंकाकिया सोलो-गोंनेबातबनालियाहै किपरमेश्वरनेवेदबनाएहैं ऐसाहमलोगक-हेंगे तोवेदोंमेंसबलोगअश्रुद्धाकरेंगे औरउनकाप्रमाणभीकरें-गे परन्तुअनुमानसे यहनिश्चतजानाजाताहै किउनअग्न्यादिक देव विद्वानोंनेही वेद बनालिएहैं (उत्तर) परमेश्वरने आकाशसे लेके क्षुद्र,घास,पर्यन्त जगतकोरचकेप्रकाशकरदिया औरसर्वो-त्कृष्टसबपदार्थोंका जिससे निश्चयहोताहै उसविद्याको प्रकाशन करै तो यह परमेश्वरमें दोषआताहै किपरमेश्वर दयालु नही और छली भी है क्योंकि ऐसा अनुमान से जाना जायगा अप-नीविद्याका प्रकाश इसवास्ते नहीकिया किसबजीव विद्यापढ़नें सेज्ञानी औरसुखीहोजांयगे फिरमुझको जानकेअनन्त आनन्द युक्तभी होजांयगे यहदोष परमेश्वरमेंआवेगा जैसेकोई आजी-विका विद्यासेकरताहोय सोपण्डितनही वहऐसीइच्छाकरताहै

जोकोईपण्डितहोगातोमेरीप्रतिष्ठा औरआजीविकान्यूनहोजाय-
गी ऐसाक्षुद्रबुद्धिसेवहमनुष्यचाहताहै औरजोसज्जनलोगहैं वेतो
सदाविद्यादिकगुणोंकाप्रकाशकियाकर्तेहैं सोपरमेश्वरअपनीअ-
नन्तविद्याका प्रकाशक्यानकरेगा किन्तुअवश्यहीकरेगा क्योंकि
एकओरसबजगत्औरएकओरविद्या इनदोनोंमेभीविद्याअत्य-
न्तउत्तमहै सोईश्वरक्याआजीविकाधीन औरप्रतिष्ठाकेलोभसेवि-
द्याका प्रकाशनकरेगा किन्तुअवश्यहीकरेगा इसमेंकुछसन्देह
नहीं औरजोकोईऐसाकहैकि पण्डितोंनेबेदविद्यारचलियाहै उ-
नसेपूछाजाताहै किवेविनाशास्त्रके पढ़नेसे पण्डितकैसेभए और
जो बे कहैं कि अपनी बुद्धि और विचार से हो गये तो आज
कालभी बुद्धि और विचारसे होजांय सो बिना विद्याके पढ़नेंसे
कोईपण्डितनहींहोता क्योंकिजबसृष्टिरचीगई उससमयकोईम-
नुष्यनहींथा बिनापरमेश्वरके फिरवह अनुमानसे जानाजाताहै
वहअनुमानभीयथार्थ कभीनहोसकेगा आजतकबहुतबुद्धिमानप-
दार्थोंका विचारकर्तेहैं सोकिसीपदार्थमें गुणवादोषजानतेहैं प-
रन्तुइतनेइसमें गुणहैं वाइतनेदोषहैं ऐसानिश्चयउनकोनहो
होता जितनीअपनीबुद्धि उतनाहीजानतेहैं अधिकनहीं औरप-
रमेश्वरसबपदार्थोंको यथावत्जानताहै सोअपनाज्ञानऔरवि-
द्या क्यापरमेश्वर गुप्तरक्खैगा ऐसा ईर्ष्यावान परमेश्वर होग-
या किसबजनअपनी विद्याकाप्रकाशनकरै किन्तुदयालुके होनेसे
औरईर्ष्या,कपट,छलादिदोष रहितहोनेसे अवश्यविद्याकाप्रकाश
करैगा इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न वेदकोआपपरमेश्वरसे उत्पत्ति
मानतेहो जैसेजगत्को सोजैसाजगत्अनित्यहै वैसाबेदभीअनि-
त्यहोगा उत्तर वेदकेपुस्तक औरपठनपाठन जबतकजगतरहैगा
तबतकबेदकीपुस्तक औरपठनपाठनभीरहैंगे जबजगत् नष्टहोगा
उसकेसाथयेतोनभीनष्टहोगें परन्तु वेदनष्टनहींगे क्योंकिवहवि-
द्यापरमेश्वरकीहै जैसेपरमेश्वरनित्यहै वैसेविद्यादिकगुणभी पर-

मेश्वरकेनित्यहैं(प्रश्न)वेदकीरचनाकोईबुद्धिमान होसोरचसक्ताहै क्योंकि ॥ एतद्युष्मंमनातनंविज्ञानीहि एतत्त्वादेवानां देवऋषीणामृषिसु मीनाम्मुनिः। ऐसेश्चौरहवाशब्दकेरचनेसे वेदकोजैसी संस्कृतवैसीमनुष्य पण्डितभीरचसक्ताहै जैसाकियहसंस्कृत हमनेरचलियाहै फिरश्चापकैसे वेदकेरचनेका असम्भव मानतेहैं किपरमेश्वरविनावेदकोकोईनहींरचसक्ता।उत्तरहमलोगसंस्कृतमात्रसे वेदकानिश्चयनहींकतें किपरमेश्वरने रचाहै क्योंकिसंस्कृततोजैसीतैसी पण्डितरचसक्ताहै परन्तुपरमेश्वरकेगुणउनसंस्कृतमें नहीदेखपड़ते जोमनुष्यहोगा सोश्चवश्यपक्षपातकिसीस्थानमेंकरैगा औरपरमेश्वरपक्षपात किसीप्रकारसे कभीनकरैगा क्योंकिपरमेश्वरपूर्णानन्दश्चौरपूर्णकामहै सोवेदमेंकिसीप्रकारसे एकअक्षरमें भी पक्षपात देखनेमें नहींआता।फिरदेहधारी सबविद्याओंमेंयथावत्पूर्णकभीनहींहोता सोजबकोईपुस्तकरचेगा तबजिसविद्यामेंनिपुणहोगा उसविद्याकीबातअच्छीप्रकारसे लिखेगा परन्तु जिसविद्याको नहीजानता उसकाविषय जबकुछ आवेगा तबकुछन लिखसकेगा जोलिखेगातो अन्यथा लिखेगा औरपरमेश्वर सबविद्याओंकेविषयोंको यथावत्लिखेगा सोवेदोंमेंसबविद्यायथावत्लिखीहैं मनुष्यजबग्रन्थरचेगाउसमेंकोईबुद्धिमानहोगा तोभीसूक्ष्मदोषआवेंगे किधर्मकाकिसीप्रकारसेखण्डनश्चौरअधर्मकामण्डन थोड़ाभीअवश्यआजायगा परमेश्वरकेलिखनेमें धर्मकाखण्डन वाश्चधर्मकामण्डन किसीप्रकारसेलेशमात्रभीनश्चावेगा सोवेदमें ऐसाहीहै मनुष्य शब्द अर्थ औरसम्बन्ध इनकोजितनीबुद्धिउतनाहीजानेगा अधिकनहीं सोवैसेहीशब्दअपनेग्रन्थमें लिखेगा जिस्से एक,दो,तीन,चारवापांचप्रयोजन जैसे तैसेनिकलसकें औरपरमेश्वरसर्वज्ञकेहोनेसे शब्दअर्थऔरसम्बन्धऐसेरचेहैं किजिनसेअसंख्यातप्रयोजन औरसबविद्यायथावत्आजांय जोपरमेश्वरकाऐसासामर्थ्यहै अल्पज्ञकानहीं सोवैसेवे-

दहीहैं किजिनसेअसंख्यात प्रयोजन औरसबविद्या निकलतीहैं
क्योंकिपरमेश्वरने सबविद्यायुक्तवेदोंकोरचेहैं इससे सबकार्यवेदोंसे
सिद्धहोतेहैं(औरवेदोंकेनामलिखके गोपालतापिनी,रामतापि-
नी, कृष्णतापिनी औरअल्लोपनिषदादिक मनुष्योंनेबहुतग्रन्थर-
चलिएहैं परन्तु विद्वान्यथावत्विचारकरकेदेखे तोउनग्रन्थोंमें
जैसीमनुष्योंकी क्षुद्रबुद्धिवैसीहीक्षुद्रता देखपडतीहै सोपरमेश्वर
औरउनकेवचनोंमें दिनऔररातकाजैसाभेदहै वैसाभेद देखप-
डताहै(प्रश्न)वेदपौरुषेयहै अथवाअपौरुषेय अर्थातईश्वरकारचाहै
वाकिसीदेहधारीका(उत्तर)वेददेहधारीकारचाकभीनहीहै किन्तु
परमेश्वरहीनेरचाहै परन्तु वेदअपौरुषेय औरपौरुषेयभीहै क्यों-
किपुरुषदेहधारीजीवकानामहै औरपूर्णकेहोनेसेपरमेश्वरकाभी
अपौरुषेयतोइससे है किकोईदेहधारीजीवकारचानही औरपौरु-
षेयइसवास्ते है किपूर्णपुरुषजोपरमेश्वरउसनेरचाहै इससे पौरुषे-
यभीहै।औरपरमेश्वरकीविद्यासनातनहैसोईवेदहै इससे भी वेदअ-
पौरुषेयहै क्योंकिपरमेश्वरकी विद्याजोवेद उसकीउत्पत्तिवानाश
कभीनहीहोती परन्तु पुस्तकपठनऔरपाठन इनतीनोंकाजगत्के
प्रलयमेंप्रलयहोजाताहै वेदईश्वरमेंनित्यरहतेहैं इससे वेदकानाश
कभीनहीहोता(प्रश्न)जैसेवेदईश्वरसेउत्पन्नहोताहै वैसाजगत्भीई-
श्वरसेउत्पन्नहोताहै जैसाजगत् विनश्वरहै वैसावेदभी विनश्वरहै
औरजोवेदनित्यहोगा तोजगत्भीनित्यहोगा(उत्तर) जगत्जोहैसो
प्रकृतिपरमाणुऔरउनकेपरस्परमिलानेसे परमेश्वरसेउत्पन्नभ-
याहै सोकभीकारणजोपरमेश्वर उसमेंकार्यरूपजगत्नष्टहोजाय-
गा परन्तु वेदजगत्जैसाकार्यहैवैसानहीं क्योंकिवेदतो परमेश्वर
कीविद्याहै सोजोनाशहोजायतोपरमेश्वरविद्याहीनहोनेसे अवि-
द्वान्हो होजाय सोपरमेश्वर अविद्वान् कभीनहीहोता सदापूर्ण
ज्ञानऔरपूर्णविद्यावान रहताहै सोजैसाक्रम परमेश्वरकी वि-
द्यामेंहै वैसाहीक्रमसम्बन्धयुक्तसम्बन्ध औरसंहिताभीआनुपूर्वी-

परमन्त्रोंका सम्बन्ध जो मन्त्र जिस्से पूर्व आगेपीछे लिखना चाहिए सो सब परमेश्वर होने के वक्ष हैं इस्से कुछ सन्देह नहीं जैसा जगत्‌का संयोग वा वियोग होता है वैसा वेदविद्याका संयोग वा वियोग कभी नहीं होता क्योंकि परमेश्वर और परमेश्वरके विद्यादिक सब गुण भी नित्य हैं इस्से वेदविद्या नित्य होहै जो ऐसा न मानेगा उसके मतमें अनवस्था दोष आवेगा किकोई विद्या पुस्तक स्वयंभू और ईश्वरकारचा न मानेगा तो सब पुस्तकोंके सत्य वा असत्य का निश्चय कैसे करैगा क्योंकि एक पुस्तक स्वतः प्रमाण होगा और उसके प्रमाण से वा अप्रमाण से सत्य वा मिथ्या पुस्तकका निश्चय होसक्ता है और जो कोई पुस्तक स्वतः प्रमाण होन होगा तो कोई पुस्तकका निश्चय नहीं होसकेगा क्योंकि एक मनुष्यने अपनी बुद्धिकी कल्पना से पुस्तक रचा दूसरे ने उसका अपनी बुद्धि से खण्डन कर दिया दूसरे का तीसरे ने तीसरे का चौथे ने ऐसे ही किसी पुस्तकका प्रमाण न होगा फिर अनवस्था भ्रम के होने से सदा रहैगो इस्से वेदपुस्तक स्वतः प्रमाण होने से परमेश्वर ही का रचा है अन्यथा नहीं क्योंकि ऐसी सुगम संस्कृत ललितपद सत्यार्थयुक्त अनेक प्रयोजन और अनेक विद्यासहित स्वल्प अक्षर सुगम वेद ही की पुस्तक है अन्य नहो और जगत्‌के किसी पदार्थका कुछ भिन्न मनुष्य अपनी बुद्धि से कर सक्ता है परन्तु ईश्वर स्वरूप और उसके न्यायकारित्वादिक अनन्त गुण वेदपुस्तक में जैसे लिखे हैं वैसा लेख कोई संस्कृत वा भाषा पुस्तक में नहीं है क्योंकि किसीको वैसी बुद्धि नहीं होसक्ती कि परमेश्वर का स्वरूप और यथावत् गुण लिख सकै सो ऐसा ही जानना चाहिए कि हम लोगों पर अत्यन्त कृपा से परमेश्वर ने अपना स्वरूप और अपने सत्यगुण वेदपुस्तक में प्रकाश कर दिए हैं जिस्से कि हम लोग भी परमेश्वर का स्वरूप और गुण वेदपुस्तक से जानके अत्यन्त आनन्दयुक्त होते हैं सो पक्षपात को छोड़ के यथावत् विद्यायुक्त पुरुष अत्यन्त वेदार्थका विचार करैगा सो ई अनन्त सुख को पावेगा अन्यथा नहीं प्रश्न ऐसे ही सब मनुष्य एक २ पुस्तकको परमेश्वरकी

मानतेहैं वैसेकि बाबिल, इञ्जील और कुरान् वैसे आपलोगोंको
भीवेदमें आग्रहहै जिस्से कि अत्यन्त स्तुति करतेहैं जो वेद परमेश्वरका
रचा होगा तो वे पुस्तक परमेश्वरके रचे क्यों नहीं इसमें क्या प्रमाण
है कि वेदही ईश्वरका रचाहै और अन्यपुस्तक नहीं उत्तर सबम-
नुष्योंका प्रमाण नहीं होसक्ता क्योंकि सब मनुष्य पूर्णविद्यावाले आप्त
और पक्षपातरहित नहीं होते जिस्से कि सब मनुष्योंके कहनेका प्र-
माणहोजाय जो आप्त और पक्षपात रहित होवैं उन्हीका प्रमाण
करनायोग्यहै अन्यका नहीं क्योंकि जो मूर्खों का हम लोग प्रमाण
करैं तो बड़ाभारी दोष आजायगा वे अन्यथा भाषण करतेहैं और अ-
न्यथाकर्मभी करतेहैं इस्से आप्त लोगोंका प्रमाण करना चाहिए और
वेद के सामने इञ्जील और कुरानादिकी कुछ गणनाही नहीं
होसक्ती किन्तु उनमें विद्याकी बाततो कुछ नहीं है। जैसोकि कहा-
नी होयवैसे वे पुस्तक हैं प्रश्न आप्तका निश्चय कैसे होसक्ता है वेदवाले
कहतेहैं कि हमारी बात सत्य है अन्यमतवाले कहतेहैं कि हमलोगोंकी
बात सत्यहै इसमें क्या प्रमाणहै कि यही बात सत्यहै अन्य नहीं उत्तर
इसका समाधान तृतीयसमुल्लासमें कहदियाहै कि ऐसा लक्षणवा-
ला आप्त होताहै और प्रत्यक्षादिक प्रमाणोंसे सत्य वा असत्यका यथा-
वत् निश्चयभी होताहै उनसे निश्चय करके सत्यको मानना चाहिए अ-
सत्यको नहीं प्रश्न वेद किसी देशविशेष और भिन्नदेशमें रहनेवाले
मनुष्योंके हेतुहैं वा सबमनुष्योंके हेतुहैं उत्तर वेद सबमनुष्योंकेवा-
स्तेहैं क्योंकि जो विद्या और सत्यबात होतीहै सो सबके हेतु होतीहै
और वेदमें कहीं नहीं लिखा कि इस देशवा उन मनुष्योंके हेतु वेदब-
नायागया और अधिकार भी इनकाहै और इनका नहीं जैसे कि बा-
बिल, मूसा और इसराईल कुलादिकोंकेवास्ते पुस्तक आई और मु-
हम्मदादिकोंके हेतु कुरान् यह बात मनुष्योंको होतीहै अपने देशवा-
लेके ऊपर प्रीति और अन्यके ऊपर नहीं जो ईश्वरका वचन सो तो
सर्वज्ञ और सबजगत्का स्वामीहै इस्से तुल्यकृपा और तुल्यदृष्टि और-

रहैगा अन्यथा नहीं ऐसोपुस्तक वेदही थाहै अन्यनहीं क्योंकि अन्यपुस्तकोंमें ऐसीविद्यानहीं औरकहानीकोनांई उनमें कथाहै औरपक्षपात बहुतसेहैं इस्से वेदपुस्तकही ईश्वरकृतहै अन्यनहीं इसमेंकिसीकोजो सन्देहहोय तोपक्षपातकोछोड़के तीनोंपुस्तकों काविद्याप्रीति औरसज्जनतासे विचारकरैं तबयहीनिश्चयहोगा किवेदपुस्तकही ईश्वरकृतहै अन्यनहीं प्रश्न वेदोंकासबमनुष्योंको पढ़नेऔरपढ़ानेका अधिकारहैवानहीं उत्तर इसकाविचार तृतीयसमुल्लासमें वर्णाव्यवस्थाके कथनमें कियागयाहै वहांजानलेना इसप्रकारसेवहांलिखाहै किजोमूर्खहैवहशूद्रहै उसकापढ़ना वाउसको पढ़ाना व्यर्थहै क्योंकिउसको बुद्धि न होनेसे कुछ विद्यानआवेगी अन्यव्यवस्थाचतुर्थ समुल्लासमेंदेखलेनो प्रश्न शूद्रादिकोंकावेदसुन्नेकाअधिकारहैवानहीं उत्तर जिसकोकानइन्द्रियहै औरउसकेसमीपजोशब्दहोगा उसकोअवश्यसुनेगा सोवेदकाशब्दअथवाअन्यशब्दहोवैवहसबकोसुनेगापरन्तुशूद्रमूर्खहोनेसे सुनकेभीकुछनकरसकेगा इसहेतुजहांतहांनिषेधलिखाहै किशूद्रकोवेदनपढ़नाचाहिए किउसकोकुछआतानहीं प्रश्न वेदव्यासजीनेवेदरचेहैं इस्से उनकानाम वेदव्यासपड़ाहै यहबातभागवतमेंलिखीहै फिरआपकैसा बातकहतेहैं किवेदईश्वरनेरचेहैं उत्तर यहबातअत्यन्तमिथ्याहै क्योंकिव्यासजीनेंभी वेदपढ़ेथे औरअपने पुत्रशुकदेवादिकोंको पढ़ायेथे औरउनकापितापराशर उसका पितामहशक्ति और प्रपितामह वशिष्ठब्रह्मा औरबृहस्पत्यादिकोंनेभीपढ़ेथे जोव्यासकेबनाये वेदहोते तोवकैसेपढ़ते क्योंकि व्यास जीतो बहुतपीछेभयेहैं औरजो उनकानाम वेदव्यास पड़ाहै सो इसरीतिसेपड़ाहै कि । वेदेषुव्यासोविस्तारोनामविस्तृतावुद्धिर्यस्यासवेदव्यासः ॥ व्यासजीनेवेदोंकोपढ़के औरपढ़ायेहैं जिस्से सब जगत्में वेदकापठनऔरपाठनफैलगया औरउनकीबुद्धि वेदोंमें विस्तारथी कियथावत्शब्दअर्थऔरसम्बन्धसे वेदोंकोजानतेथे इ-

से इनकानामवेदव्यासरक्खागया पहिले इनकानाम कृष्णद्वैपायनथा वेदव्यासनाम विद्याकेगुणसेभयाहै इसे भागवतमें जोबातलिखीहै सोवेदोंकीनिन्दाकेहेतुलिखीहै उसकायह अभिप्रायथा वेदोंकीनिन्दामें किजिसनेवेदरचेहैं उसीनेभागवतभीरचाऔरवेदोंकेपढ़नेसे व्यासजीकोशान्तिभीनभई किन्तुभागवतके रचनेसेउनकोशान्तिभई औरभागवत वेदोंकाफलहै अर्थातवेदोंसेभीउत्तमहै सोयहबातदुर्बुद्धिजीवोपदासउसकीकहीहै क्योंकि व्यासजीकेनामसे उसनेसब भागवतरचाहै इसहेतुकि व्यासजीके नामलिखनेसे सबलोगप्रमाणकरें औरवेदोंकीनिन्दासे मेरेग्रन्थकी प्रवृत्तिकेहोनेसे सम्प्रदायकीवृद्धि औरधनका लाभहोय इसे सज्जनलोग इसबातकोमिथ्याहीमानें प्रश्न वेदईश्वरनेसंस्कृतभाषामेंक्योंरचे क्याईश्वरकी भाषासंस्कृतहीहै जोदेशभाषामेंरचते तोसबमनुष्यपरिश्रमकेविना वेदोंकोसमझलेते औरसंस्कृतजाननेकेहेतु व्याकरणादिक सामग्रीपढ़नी चाहिए इसकेविना वेदोंकाअर्थ कभीमालूमनहोगा उत्तर संस्कृतमेंइसहेतुवेदरचे गयेहैं किछोटेपुस्तकमें सबविद्याआजांय औरजोभाषामेंरचते तोवड़े२ ग्रन्थहोजाते औरएकदेशहीका उपकारहोता सबदेशोंकानहीं औरजितनीदेशभाषाहैं उनमेंरचतेतबतोपुस्तकोंकापारावारहीनहीहोता इसे ईश्वरनेसर्वसभाषामेंवेदरचेहैं कि किसीदेशकी भाषानरहै औरसबभाषा जिस्सेनिकलें क्योंकिसंस्कृत किसीदेशकीभाषानहीं जैसेईश्वरकिसीदेशकानहीं किन्तुसबदेशोंकास्वामीहै वैसेहीसंस्कृतभाषाहैकिकिसीएकदेशकीनहीं प्रश्न देवलोग औरआर्यावर्त्तदेशकी प्रथमभाषासंस्कृतथी इसीकोमनुष्यानलोग जिसभाषाकहतेहैं क्योंकिजैसेप्रवृत्ति संस्कृतकीपहिलेआर्यावर्त्तमेंथी वैसीकिसीदेशमेंनथी जिसदेशमेंकुछप्रवृत्तिभईहोगी सोआर्यावर्त्तहीसे भईहोगी अबभीआर्यावर्त्तमेंअन्य देशोंसेसंस्कृतकीअधिकप्रवृत्तिहै इसे यहनिश्चयहोताहै किसंस्कृ

तभाषाआर्यावर्त्तकीमुख्यभाषाथी उत्तर यहदेवलोगकीभाषानहीं क्योंकि बृहस्पतिःप्रवक्ताइन्द्रआध्येता। यहमहाभाष्यकावचनहै इन्द्रनेबृहस्पतिमेंसंस्कृतपढ़ी औरबृहस्पतिनेअङ्गिराप्रजापतिसे, उन्नेमनुसे, मनुनेविराटसे, विराट्नेब्रह्मासे ब्रह्मानेहिरण्यगर्भादिकदेवोंसे, उन्नेईश्वरसे, जोदेवलोगकीभाषाहोती तोवेक्योंपढ़तेऔरपढ़ाते क्योंकिदेशभाषातोव्यवहारसेपरस्परआजातीहै इससे देवलोगकीसंस्कृतभाषानहीं औरजबब्रह्मादिकोंकी भाषानहीं तोआर्य्यावर्त देशवालोंकी कैसे होगी कभीनहीं परन्तु ऐसा जानाजाताहै किआर्य्यावर्तदेशमेंपहिलेप्रवृत्तिअधिकथी सबऋषिमुनिऔरराजालोग आर्य्यावर्तदेशवासीलोगोंने परम्परासेसंस्कृतपढ़ा औरपढ़ायाहै इससेआर्यावर्त्त देशकीभी संस्कृतभाषानहीं औरजोमुसल्मानलोगइसकोजिन्नभाषाकहतेहैं सोतोकेवलईर्ष्यासेकहतेहैं जैसेकिआर्यावर्तदेशवासियोंकानामहिन्दूरखदिया सो यहसंस्कृतजिन्नभाषाभीनहीं क्योंकिजिन्नतोभूतप्रेत पिशाचोंहीका नाम है भूतप्रेतऔरपिशाचहोतेहीनहीं औरजोहोतेहोंगे तोलोकलोकान्तरमेंहोतेहोंगे यहांनही फिरउनकीभाषा यहां कैसेआसकेगी इससे यहबातअत्यन्तमिथ्याहै क्योंकिउनकोऐसीपदार्थविद्या औरधर्माधर्मविवेककीबुद्धिहीनहीं फिरयेसंस्कृतविद्यासर्वोत्तमकोकैसेकहसक्ते वारचसक्ते हैं औररचतेहोतेतोअन्यदेशोंमेंभीरचलेतेतथाकिसीपुरुषसेअबभीकहते इससे ऐसीबात सज्जनलोगोंको नमाननाचाहिए प्रश्न देशभाषाभिन्न२ सबकैसें बनगई औरकिससे बनी उत्तर सबदेशभाषाओंका मूलसंस्कृतहै क्योंकिसंस्कृत जबबिगड़तीहै तबअपभ्रंशकहाताहै फिरअपभ्रंशसेदेशभाषासेहोतीहै जैसेकिघटशब्दसेघड़ा घृतशब्दसेघीदुग्धशब्दसेदूधनवीतशब्दसेनैनू अक्षिशब्दसेआंखकर्णशब्दसेकान नासिकाशब्दसेनाकजिह्वाशब्दसेजीभ मातरशब्दसेमादरयूयंशब्दसेयू वयंशब्दसेवी गूढशब्दकागोड़ इत्यादिकजानलेना औरएकपदार्थकेब-

कृतनाम हैं जैसे कि गौः नाम गाय. ग्मा, ज्मा, क्ष्मा, क्षा, क्षमा, क्षोणी, क्षिति, अवनी, उर्वी, पृथ्वी, मही, रिपः, अदितिः, इडा निर्ऋतिः, भूः, भूमिः, पूषा:, गातुः, गोत्रा, ए २१ नाम पृथिवी के नाम हैं सो भिन्न २ देशों में भिन्न २, २१ नामों में से भिन्न २ का अपभ्रंश होने से भिन्न २ भाषा बन जाती है और एक नाम बहुत अर्थों का होता है जैसे कि सिंह, वानर, घोड़ा, सूर्य्य, मनुष्य, देव और चोर इत्यादिक का नाम हरि है इस्से भी भिन्न २ देश में भिन्न २ भाषा होती है क्योंकि किसी देश में सिंह नाम से उस पशु का व्यवहार किया किसी देश में हरि शब्द से बानर का ग्रहण किया किसी देश में हरि शब्द से घोड़े को लिया किसी देश में हरि शब्द से सूर्य्य को लिया किसी देश में हरि शब्द से चोर को लिया इस हेतु देश भाषा भिन्न २ हो गई और मनुष्यों का उच्चारण भेद से भिन्न २ भाषा हो जाती है जैसे कि ज्ञ यह दोनों प्रकार में मिलने से अक्षर यह ज्ञ होता है सो आजकाल इसका लेख ऐसा हो गया है ज्ञ इस एक अक्षर के अन्यथा उच्चारण से तीन भेद हो गये हैं गुजराती लोग गकार और नकार का उच्चारण करते हैं महाराष्ट्रादिक दाक्षिणात्य लोग द और नकार का उच्चारण करते हैं और अन्य लोग गकार और यकार का उच्चारण करते हैं तथा तालव्य श मूर्द्धन्य ष और दन्त्य स इन तीनों के स्थान में बंगाली लोग तालव्य शकार का उच्चारण करते हैं मध्य और पश्चिम देश वाले तीनों के स्थान में दन्त्य सकार का उच्चारण करते हैं तथा किसी को जीभ कठिन होती है वह प्रायः शब्दों को अन्यथा उच्चारण करती है और जिस देश में विद्या का लेश भी न होय उस देश में सङ्केत व्यवहार करने के हेतु शब्दों का कर लेते हैं कि इस शब्द से इसको जानना और इस शब्द से इसको जानना जैसे दाक्षिणात्य लोगों ने घी का नाम तूप रख लिया और उत्तर देश पर्वतवासियों ने घी का नाम घोखार रख लिया और गुजरातियों ने चावल का नाम घोखा रख लिया इस्से भी देश देशान्तर की भाषा भिन्न २ हो गई है इसी प्रकार के अन्य कारणों को भी विचार लेना ॥ प्र० ॥ वेद में अश्वमेधादिक यज्ञों की क्रिया लं

लिखोहै सोजैसीबालकोंकीबातहोय कुछबुद्धिजानपनेकीनहीदी-खती क्योंकिघोड़े को सबजगह फिराते हैं उसकोकोई जोबांधले उस्से फिरयुद्धकर्तेहैं सोव्यर्थयुद्धबनालेतेहैं मित्रमेंभीऐसीबातसेवैर होजाताहै इत्यादिकऐसीरबुरीबात जिसमेंलिखीहै वहवेदईश्व-रकाबनायाकभ नहोगा उत्तर येसबबातमिथ्याहैं वेदमेंएकभीन-हींलिखोहैं किन्तुलोगोंनेकहानी बनालियाहै प्रश्न ईश्वरनेऐसा क्योंनहीकिया किबिनापढ़ने औरसुननेसे सबमनुष्योंकोयथावत् आजाते तबतोईश्वरकी दयालुताजानपड़ती अन्यथाक्यादयालु-ता किबड़े परिश्रमसे वेदकेअर्थोंको मनुष्यलोगजानतेहैं उत्तर फिरभीस्वतन्त्रताहानि दोषआजाता क्योंकिपरमेश्वरकेप्रेरणा सेवेदउनकोआजांय अपनेपरिश्रमऔरस्वतन्त्रतासेनहो औरजो परीश्रमबिनापदार्थमिलताहै उसमेंप्रसन्नताभीनहींहोती बिना परीश्रमकुछभी कामनहींहोता जैसेकीखानापीना उठनाबैठना कहनासुननाआनाऔरजाना इत्यादिकपरीश्रमहीसेहोतेहैं अ-न्यथानहीं परीश्रमकेबिनाकुछनहीहोता औरइतनीबड़ीजोपदा-र्थविद्यासोकैसेहोगी जीवकोकानआदिकइन्द्रिय बुद्धिऔरप्राणक-हने औरसुननेकासामर्थ्य भीदियाहै औरविद्याकाप्रकाशभी कर दियाहै इससे ईश्वरदयारहितकभीनहीहोते औरजीवकोजोस्व-तन्त्ररखदियाहै यहीबड़ोदयाईश्वरकीहै औरकोईभीनहीं शंका करैउसकासमाधान बुद्धिमान्लोगविचारकरकेदेखैं ईश्वरऔ-रवेदकेविषयमेंसंक्षेपसेकुछथोड़ासालिखदिया औरजोविस्तारसे देखाचाहै सोवेदादिकसत्यशास्त्रोमेंदेखलेवै इसकेआगेजगत्कीउ-त्पत्तिस्थितिऔरप्रलयकेविषयमेंलिखाजायगा ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वतीस्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते सप्तमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ ७ ॥

अथ जगदुत्पत्ति प्रलयविषयान्व्याख्यास्यामः ब्रह्मविदाप्नोति परं तदेषाभ्युक्ता सत्यंज्ञानमनंतं ब्रह्मयोवेदनिहितंगुहायांपरमेव्योमन् प्रतिष्ठितासोऽश्नुतेसर्वान्कामान्ब्रह्मणासहविपश्चितेतितस्माद्वाएत स्मादात्मनआकाशः संभूतः आकाशाद्वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यः पृथिवी पृथिव्या ओषधयः ओषधिभ्योन्नंअन्नाद्रेतः रेतसःपुरुषः स वाएषपुरुषोन्नरसमयः ४ तैत्तिरीयशाखाकीश्रुतीहै सदेवसौम्येदम ग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंतदैक्षत बहुःस्यांप्रजायेयेति यहछांदोग्यउप निषदकीश्रुतीहै नासदासीन्नोसदासीत्तदानीन्नासीद्रजोनव्योमा परोयत् किमावरीवःकुहकस्यशर्मन्नम्भः किमासीद्गहनंगभीरं यह ऋग्वेद की श्रुति है आत्मावाइदमग्रआ सीन्नान्यत् किंचनमिषत् सईक्षतलोकान्नुसृजाइति यहऐतरेयब्राह्मण कीश्रुतिहै इत्यादिक वेदादि कीश्रुतियों से यहनिश्चित जानाजाताहै किएकअद्वितीय सच्चिदानन्दरूप परमेश्वरही सनातनथा औरजगत् लेशमात्रभी नहोथा उसनेसबजगत्कोरचा सोइन मंत्रोंमेंजितनेनामहैं वेसब परमेश्वरकेहीहैं इनकाअर्थ प्रथम समुल्लास मेंकरदियाहै वहांदेख लेना उसपरब्रह्मकोजो मनुष्यजानताहै उसअनन्तपंडित परमेश्व रकेसाथ मिलके उसके सबकामपूर्णहोजातेहैं वह परमेश्वर एक अद्वितीयथा दूसराकोईनहोथा उन्नें जगदुत्पत्तिकीइच्छाकिईकिब हुतप्रकारकी प्रजाओंमेंउत्पन्नकरूं उसीक्षणमें नानाप्रकारकोप्र जाउत्पन्नहोगई सोइसक्रमसे पहले आकाशको उत्पन्नकिया कि जोसबजगतका निवासकरनेकास्थान सोआकाश अत्यन्तसूक्ष्म प- दार्थहैजाकिअनुमानसेभीकठिनतासेसमझनेमेंआताहै उससे स्थूल द्विगुणवायुउत्पन्नभया उससे अग्नि त्रिगुणभया त्रिगुणअग्निसे चतु- र्गुणजलभया और जलसेपंचगुणभूमिभई भूमिसेओषधि ओषधि योंसेवीर्यवीर्यसेशरीर इसप्रकारआकाशसेलेकेतृणपर्यन्तपरमेश्वर नेसृष्टिरचलिई सोशब्दऔर संख्यादिकगुणवालाआकाशरचाफि र वायुआदिक चारोंके परमाणुरचे परमाणुसाठ मिलाकेएकत्र

णुरचा दोअणुमे एकद्व्यणुक और तीनद्व्यणुकसे एक त्रसरेणु और अनेकत्रसरेणुकोमिलाके यहजोदेखपडताहै सबजगत इसकोरच दिया (प्रश्न) परमेश्वरको क्याप्रयोजनथा किजगत्‌कोरचा (उत्तर) इस्से पूछनाचाहिये कि प्रयोजनक्याकहाताहै यमर्थमधिकृत्यप्रवर्त्तते तत्प्रयोजनम् यह गोतममुनिजीकासूत्रहै इसकायहअभिप्राय है किजिसपदार्थकी अधिकमानके जीवप्रवृत्तहोवे उसको कहनाप्रयोजन सो परमेश्वरपूर्णकामहै उसको कोईप्रयोजन अधिक नहीहै क्योंकि उस्से कोईपदार्थ उत्तम वाअप्राप्तनही फिर प्रयोजनका जोप्रश्नकरनासोअयुक्त है (प्रश्न) जगत्‌केरचनेकोइच्छाकिईसो बिनाप्रयोजनसे इच्छानहीहोसक्ती (उत्तर) इच्छाकेजगत्‌मेंतीन कारणदेखपडतेहैं पदार्थकीअप्राप्ति और वहउत्तमहोवे तथा अपनेसेभिन्नहोवे परमेश्वरमें तीनोंमेसेएकभीनहीं क्योंकिसर्वशक्तिमान्‌केहोनेसे कोईपदार्थकी अप्राप्तिकभीनहीहोगी तब परमेश्वरसे कोईपदार्थ उत्तमभीनही और सर्वव्यापकके होनेसे अत्यन्त भिन्न कोईपदार्थनही इस्से इच्छाकीघटना ईश्वरमेंनहोहोसक्ती (प्रश्न) जगत्‌रचनेकी प्रवृत्तिबिनाप्रयोजन वाइच्छाके कभीनहीहोसक्ती (उत्तर) अच्छा इच्छा तोनहीबनसक्ती तथा प्रयोजन भीनहीबनसक्ता परन्तु इच्छा और प्रयोजन मानोतो जगत्‌काहोना वहीइच्छा और प्रयोजनमानलेओ इस्से भिन्नइच्छा वा प्रयोजन कोईनही क्योंकि जोऐसामानैंकि अपनेआनन्दकेवास्ते जगत्‌को रचा उस्से हमलोगपूछतेहैं किजबतक जगतनहीरचाथा तबपरमेश्वर क्यादुःखीथा जोकिआनन्दकेवास्ते जगतकोरचासो दुःखका परमेश्वरमें लेशमात्रभीसंबन्धनही जो आपऐसेपूछनेमेंआग्रहकरैं किजगतकेरचनेमें औरभीकुछप्रयोजनहोगा तोआपसेमैं पूछताहूं किजगतके नहीरचनेमें क्याप्रयोजनहै जोआपकहैंकिजगतकेरचनेमेंजगतकीलीलादेखनेसेआनन्दहोताहोगा और जगतकेजोवभक्तिकरैं तोजबतकजगतकी लीलानहीदेखीथी औरजग

त्कोजीवभक्तिभी नहींकरतेथे तबपरमेश्वर अवश्यदुःखीहोगा इसलिऐ-
माप्रश्नव्यर्थहोताहै इसमेंआग्रहनहींकरनाचाहिये रचनासेईश्वरके
सामर्थ्यकासफलहोनाहीरचनाकाप्रयोजनहै प्रश्न ईश्वरनेजगतर
चासोजगतरचनेकी सामग्रीथीअथवाअपनेमेंसेहीजगतरचावाअ
पनेहीसबजगतरूपबनगया उत्तर इसकाविचार अवश्यकरनाचा
हिये किबिनासामग्रीसेकोईपदार्थ नहींबनसक्ता क्योंकि कारणके
बिनाकिसीकार्यकी उत्पत्तिहमलोगनहींदेखते सोकारण तीनप्र
कारकाहोताहै एकउपादानदूसरानिमित्त औरतीसरासाधारण
सोउपादानयहकहाताहैकि किसीसेकुछलेकेकोईपदार्थबनानासो
कार्यऔरकारणका इसमेंकुछभेदनहींहोता दोनोंएकहीरूपहोत
हैं जैसेमट्टीकोलेकेघडेकोबनालेतेहैं कपासकोलेकेवस्त्र सोनेकोले
केगहना लोहेकोलेकेशस्त्रऔर काष्ठकोलेकेकिवाडआदिक सोघ-
डादिकजितनेहैं वेमृत्तिकादिकोंसेभिन्नवस्तुनहींहैं किन्तुवहीवस्तु
है इसप्रकारकाउपादानकारणजानना दूसरा निमित्तकारणजो
किउनकुलालादिकशिल्पीलोग नानाप्रकारके पदार्थोंकोरचनेवा
लेनिमित्तकारणमेंजानना क्योंकिमृत्तिकादिकोंका ग्रहणकरकेअ
नेकपदार्थोंकोरचतेहैं किन्तु अपनेशरीरसेपदार्थलेकेनहींरचते इ
ससेऐसानिमित्तकारणहोताहै किजोपदार्थबनावेउससे भिन्नसदा
रहै औरउसपदार्थकोरचले तीसरा साधारणकारणहोताहै जै-
साकिप्राण कालदेशचक्र औरसूत्रादिक क्योंकि येसब कर्त्ताकेआ
धीनऔरहेतुरहतेहैं इससे अवश्यविचारकरनाचाहिये परमेश्वर
इसजगत्का तीनोंकारणोंमेंसे कौनकारणहै अर्थात्तीनोंकारन
हैजोउपादानकारणहोवै तो क्षुधा तृषा शीतोष्ण भ्रम जन्मऔ
र मरणादिक दोष ईश्वरमें आजायेंगे क्योंकि उपादानसे उपादे
य भिन्ननहींहोता अर्थात् ईश्वरसे जगत भिन्ननहीं होगा इससे
उक्तदोष अवश्यही आवेंगे इसमें जोकोई ऐसाकहै किजैसे स्वप्ना
वस्थामें मिथ्यापदार्थ अनेक देखपडतेहैं और रज्जुमेंसर्प बुद्धिहो

तीहै इत्यादिक सब कल्पित भ्रान्तपदार्थहैं उनसे वस्तु में कुछदो-
षनहीआसक्ता स्वप्नसेजीवकी कुछहानि नहीहोती और सर्पसर-
ज्जुकी उनसे पूंछना चाहिये सर्प कीभ्रान्ति रज्जु में और स्वप्नमें
हर्षशोकादिक दुःख किसकोभये जोवह कहैकि ब्रह्मकोहीभयेफि
र वह ब्रह्म शुद्धनही रहा तथा ज्ञानस्वरूप नहीरहा क्योंकि भ्र
म जो होताहै सो अज्ञानसेही होताहै बिना अज्ञानसेनही फि
र वेदोंमें सर्वज्ञ सदाभ्रान्ति रहित ब्रह्मको लिखाहै उसको क्या
गतिहोगी तथा बन्धमोक्षादिक दोषभी ब्रह्ममेंआजांयगे जोवहक
हैकि भ्रमसेबन्ध और मोक्षहै वस्तु मेनही फिर भी नित्यशुद्ध बुद्ध
मुक्तस्वभाव परमेश्वरको वेदमेंलिखाहै सोबात झूठीहोजायगी य
हबडा दोषहोगा और(जो बद्धहोगा सो जगतको कैसेरचसकेगा
और जोमुक्तहोगा सोजगतरचनेकोइच्छाहीनकरेगा)फिरपरमे
श्वरसे जगतकैसेबनेगा औरजोकोईकेवलनिमित्तकारणमानै तो
जगतकासाक्षातकर्तानहीहोगा किन्तुशिल्पीवत्होगा अथवाउस
को महाशिल्पीकहो और उसकेपास सामग्रीभी अवश्यमाननी
चाहिये फिरजो सामग्री मानेंगे तोजगतभी नित्य होगा क्योंकि
जिस्से जगतबनाहै वहसामग्रीईश्वरके पाससदारहतीहीहै फिर
एक अद्वितीय जगतकी उत्पत्तिके पहिले परमेश्वर था जगतलेश
मात्रभीनहीथा यहवेदादिक शास्त्रोंकाप्रमाणोंसे कहनावहव्यर्थ
होगा)इस्से उननिमित्त कारण माननेसेभीवह दोषआवेगा और
जोसाधारणकारणमानैं तोभीजडपराश्रितरचनेमें असमर्थईश्वर
होगा जैसेकुलालादिकके बिना घटादिकार्य्य पराधीनहोतेहैं क्यों
किजैसेचक्रादिकके बिना कुलालादिक घटादिकनहीरचसक्तेहैंफि
रवहईश्वरपराधीनहोनेसे सर्वशक्तिमान नहीरहेगा क्योंकि(कोई
कासहायकिसीकाममेंनले औरअपनीशक्तिसे सबकुछकरै उसको
कहतेहैंसर्वशक्तिमान्)सोसाधारणकारणजबमानाजायगा तोसर्व
शक्तिमान्ईश्वरकभीनरहेगा इस्से तीनोंप्रकारसे दोषआतेहैं ।

इसवास्ते अत्यन्तविचारकरनाचाहिए जिसमेंकिकोईदोषनआवै इसमेंयह विचारहै किईश्वर सर्वशक्तिमान्है जो सर्वशक्तिमान् होताहै ~~उसमेंअनन्तसामर्थ्य~~ सामग्री ~~होती~~है सोवहसामग्रीस्वाभाविकहै जैसाकिस्वाभाविकगुणगुणीकासम्बन्धहोताहै वहदूसरापदार्थनहींहै औरएकभीनहीं उससामग्रीसेसबजगत्कोपरमेश्वरनेबनाया।(प्रश्न)जोगुणकीनांईस्वाभाविकसामग्रीहै सोगुणीसे भिन्नकभीनहोहोती क्योंकिस्वाभाविकजोगुणहै सोगुणीसे भिन्न कभीनहींहोता इस्से क्याआयाकिसामग्रीसहितपरमेश्वर जगत् रूपबनगया (उत्तर) ऐसानकहनाचाहिए क्योंकिजोजिसकापदार्थहोताहै वहउसीकाकहाताहै।सोपरमेश्वरका अनन्तसामर्थ्य स्वाभाविकहीहै अन्यसेनहींलिया वहसामर्थ्य अत्यन्तसूक्ष्महै औरस्वाभाविकहोनेसे परमेश्वरका विरोधभीनहीं किन्तुउसीमें वहसामर्थ्य रहताहै उस्से सबजगत्कोईश्वरनेरचाहै इस्सेक्याआया किभिन्न पदार्थनलेके जगत् के रचनेमे उपादान कारणजगत् का परमेश्वरही हुआ क्योंकि अपने से भिन्न दूसरा कोई पदार्थ नही है कि जिसेलेके जगत् को रचे सो अपने स्वाभाविक सामर्थ्य गुणरूपसे जगत् कोरचा इस्से सब जगत्का उपादानकारणपरमेश्वरहीहै।परन्तुआप जगत्रूपनहीबना तथा अपनीशक्तिसे नानाप्रकारके जगत् रचनेसे दूसरेके सहायबिना इस्से जगत्कानिमित्त कारणईश्वरहीहै अन्यकोईनहीं तथासाधारणकारणभीजगत्काईश्वरहै क्योंकिकिसीअन्यपदार्थकेसहायसेजगत्कोईश्वरनेनहीरचा किन्तुअपनीसामर्थ्य सेजगत्कोरचाहै इस्से साधारण कारणभी जगत्काईश्वरहै अन्यकोई नहीं औरजोअन्यकोईहोता तोविरुद्धकार्यजगत्मेंदेखपड़ते विरुद्धकार्योंकोहमलोगजगत्मेनहीदेखतेहैं इस्सेजगत्केतीनों कारणपरमेश्वरहीहै अन्यकोईनहीं।(प्रश्न)परमेश्वरनिराकारऔरव्यापक है अथवानही(उत्तर)परमेश्वरनिराकारऔरव्यापकहीहै क्यों-

किनिराकारनहोता तोएकदेशमेंरहताऔरकहीं देखभीपड़ता सोएकदेशमेंनहीहै औरकहींदेखभीनहींपड़ता इस्से निराकार होईश्वरकोजाननाचाहिए औरजोनिराकारनहोतातोसर्वव्यापकनहोता तोसर्वात्मा औरसबजगत्का अन्तर्यामी नहोता सो सबजगत्का आत्मासर्वान्तर्यामीके होनेसेव्यापकहो ईश्वरहै अन्यथानहीं(प्रश्न) सबजगत्कारचनऔरधारणईश्वरकिसप्रकारसे करताहै उत्तर जैसाजगत्मेंहमलोगदेखतेहैं वैसाहीईश्वरनेजगत्रचाहै परन्तु इसमें यहप्रकारहै किआकाशतोपरमाणुसेभी सूक्ष्महै औरवायुकेपरमाणुकायहस्वभावदेखनेमेंआताहै किनीचेऊंचेऔरसमदेशमेंगमनकरनेवालेपरमाणुहैं क्योंकिजोत्वचा इन्द्रियसेप्रत्यक्षस्पर्शवायुको हमलोगवैसाहीस्वभाववालादेखते हैं कभीऊर्द्धकभीनीचेऔरकभीतिरछाचलताहै इस्से हमलोगपरमाणुकाअनुमानकरतेहैं इसमेंअन्यभीबहुतकारणहैं क्योंकिवायुमें अनेकतत्वमिलेहैं परन्तु हमलोगमुख्यकोगणनामेंइसबातकोलिखतेहैं तथाअग्निकाऊर्द्ध जलकेतथानीचेऔरपृथिवीकासमताअनेकविधिगतिकोदेखकेपरमसूक्ष्मपरमाणुरूपजोतत्व उनकाभीअनुमानकरतेहैं किवेभीइसीप्रकारकेहैं सोपरमेश्वरनेपृथिवीमेंअनेक तत्वोंकामेलनकियाहै क्योंकिजोमेलनहोता तोतत्वोंकेस्वाभाविकगुणपृथिवीमेंनदेखपड़ते जैसेकिवायु नहोतातोपृथिवीमेंस्पर्शभीनहोता तथाअग्नि,जल औरआकाशनहोते तोरूपरस और गन्धभीनदेखपड़ते इस्से क्याजानाजाताहै किसबमें सबतत्वमिले हैं सोपृथिवीऔरजलकेपरमाणु अधोगामीस्वभावसेहैं अग्निऊर्द्ध गमनऔरवायुतिरछेगमनकरनेवालाहै उनसबकेपरमाणु भी वाअधिकन्यूनमिलनेसे स्थिरतावागमनपदार्थोंकेहोतेहैं जैसेकि पृथिवीऔरजलनीचेजातेहैं औरअग्नितथावायुऊपर औरअनेकविधिचलतेहैं फिरमिलाभयापदार्थकहींनहींजासक्ता वाअधिकन्यूनतातत्वोंकेमिलानेसेजितनीजिसकीगति परमेश्वरनेरचीहै

उतनी होहै।तौहै अन्यथानहीं औरसबसे बलवान्वायुहै वायुके आधारसेसबलोगोंकोहमलोगदेखतेहैं जैसेकिइसपृथिवीकेचारों ओरवायुअधिकहैतथावायुमेंअन्यतत्वभीमिलेहुएदेखपड़तेहैंऔर बहवायु४९वा५०कोसतकअधिकहैउसकेऊपरथोड़ाहै सोज्योतिषविद्याकी गणनासेप्रत्यक्षहै उसवायुका आधारआकाशऔर आकाशादिकसबपदार्थोंका आधारपरमेश्वरहै सोजोसर्वव्यापकनहोता तोआकाशादिकोंकासबजगत्मेंधारणकैसेकरतीइससेपरमेश्वरव्यापकहै व्यापककेहोनेसेसबकाधारणबनताहै अन्यथानहींऔरजोसाकारएकदेशस्थपरमेश्वरकोमानेगा उसकेमतमेंधारण सबजगत्कानहोवैगा इत्यादिकबहुतदोषआवेंगे फिरदोप्रकारकाव्यवहारहमलोगदेखतेहैं किएकतोलघुवेग औरगुरुत्वादिकगुणऔरआकर्षणभीपदार्थोंमेंहै क्योंकिजोहलकापदार्थ होताहै सोऊपरहीचलताहै औरगुरुनीचेकोचलताहै जैसेकिजलकेपात्रमें तेलकोधाराजबदेतेहैं सोलघुकेहोनेसे तैलजलके ऊपर होआजाताहै कभीनीचेनहीरहता इसकायहकारणहै किजिसमेंछिद्रअधिकहोगा उसमेंपोलऔरवायुअधिकहोगा वहलघुहोगाऔरजिसमेंपोलऔरवायुथोड़ाहोगा वहगुरुहोगा जोकिसमो परअत्यन्तजुटजायगा वहीगुरुहोगा औरजोमिलेगापरन्तु उसके भीतरकुछअत्यन्तसूक्ष्मछिद्ररहैंगे जैसे किलोहाऔरकाठ दोनों काभारतोतुल्यहोताहै परन्तु जलमेंदोनोंकोडारनेसे काठतोऊपररहैगा औरलोहानीचेचलाजायगा तथाबहुभीगनेसेनीचेचलाजाताहै उसकायहकारणहै किउसकेछिद्रोंमें जलऊपरचला जाताहै सोऊपरसेजलकाभार औरसूतकाअधिकबटना औरपृथिवीके आकर्षणसे नीचेचलाजाताहै तथाकोईकाष्ठभी अत्यन्त भीगने औरबसरेखादिकके अत्यन्तमिलनेसे वहनीचे चलाजाताहै औरवेगभीपदार्थोंमेंदेखपड़ताहै जैसेमनुष्य,घोड़ा,हरिण वायुअग्न्यादिकमेंहैं तथाअग्निऔरसूर्य्य,पदार्थोंके अवयवोंको

भिन्न२ कर देते हैं और जल तथा पृथिवी ये पदार्थों से मिलने और मिलानेवाले हैं सो जहां जिसका अधिक बल होगा वहां उसका कार्य्य होगा जैसे कि वायु सूक्ष्म और लघु होके ऊपर जाता है तब चारों ओर को पृथिवी जल, त्रसरेणुयुक्त जिस स्थान से वायु ऊपर चढ़ा उस स्थान में चारों ओर से गुरु वायु गिरता है वही अधिक चलने और आंधी का कारण है और वही वृष्टि का जल के ऊपर आकर्षण के होने से कारण है क्योंकि सूर्य्य और अग्नि सब रसों का भेद करते हैं फिर एजलादि कारस सब ऊपर चढ़ते हैं परन्तु उनमें अग्नि, वायु और पृथिवी के भी परमाणु मिले हैं और जल के परमाणु अधिक हैं फिर जब अधिक ऊपर जलादिकों के परमाणु चढ़ते हैं तब गुरु होते हैं अर्थात अधिक भार होता है फिर वायु धारण उनको नहीं कर सक्ता वहां का वायु जल के संयोग से शीतल चलता है उससे जलादिकों के परमाणु मिल के बादल हो जाते हैं जब वे वायु से बीच में परस्पर चलते हैं वायु बन्द होने से उष्णता होती है फिर वे परस्पर भिड़ते हैं और घिसते हैं इससे गर्जन और बीजली उत्पन्न होती है फिर उष्णता और बिजली के होने से जल पृथिवी के ऊपर गिरता है तथा वायु के वेग और ठोकर से बिजली नीचे गिरती है और अग्नि का ऊपर वेग तथा जल का नीचे होता है सो जल को पात्र में रख के ऊपर रखने और अग्नि को नीचे रखने से जब उस जल में अग्नि प्रविष्ट होता है तब उसमें वेग और बल होता है यही रेल आदिक पदार्थों का कारण है तथा बिजली अङ्क विद्या और नाना प्रकार के यन्त्रों से तार विद्या भी होती है ऐसे ही विद्या से अनेक प्रकार की पदार्थविद्या बन सक्ती है ग्रन्थ अधिक हो जाय इस हेतु हम अधिक नहीं लिखते हैं क्योंकि शास्त्रों में लिखा है सो बुद्धिमान् लोग विचार लेंगे जो थोड़ी२ विद्या से मनुष्य लोग अनेक प्रकार के पदार्थ रच लेते हैं फिर सर्वशक्तिमान् अनन्तविद्यावाला जो ईश्वर अनेक प्रकार के पदार्थों को रचे इसमें क्या आश्चर्य है इस प्रकार से जगत् को रचता है ईश्वर की अपनी नित्य शक्ति और गुण उनसे आकाश अव्यक्त अव्याकृ-

तप्रकृति और प्रधान ए सब एकही के नाम हैं इनको रचता है आकाश से वायु आदि के परमाणु बनाता है उन साठ परमाणु से एक अणु बनता है दो अणु से एक द्व्यणुक बनता है सो वायु द्व्यणुक है इस से प्रत्यक्षरूप नहीं देख पड़ता वायु से त्रिगुण स्थूल अग्नि रचा है इस से अग्नि में रूप देख पड़ता है उस से चतुर्गुण जल और जल से पंचगुण पृथिवी रची है तथा उस परमाणु के मेलन से वृक्ष, घास और वनस्पत्यादिकों के बीज रचे हैं उन में परमाणु के संयोग इस प्रकार के रक्खे हैं कि जिन से विलक्षण २ स्वाद पुष्प, पत्र, फल और काष्ठादिक होते हैं सो प्रसिद्ध जगत् के पदार्थों को देखने से हम लोग परमेश्वर को रचना का अनुमान करते हैं और साधारण सब जगत् में व्यापक होने से सब जगत् का धारण करते हैं तथा एक के आधार दूसरा और परस्पर आकर्षण से भी जगत् का धारण होता है परन्तु सब आकर्षणों का आकर्षण और धारण करने वालों का धारण करने वाला परमेश्वर ही है अन्य कोई नहीं प्रश्न इसी लोक में इस प्रकार की सृष्टि है वा सब लोकों में ऐसी सृष्टि है उत्तर सब लोकों में सृष्टि अनेक प्रकार की है जैसी कि इस लोक में क्योंकि इस लोक में हम लोग पृथिव्यादिक पदार्थ प्रयोजन के हेतु रचे हुए देखते हैं इन में एक पदार्थ भी व्यर्थ नहीं देखते इस से हम लोग अनुमान करते हैं कि कोई लोक परमेश्वर ने व्यर्थ नहीं रचा है किन्तु सब लोकों में अनेक विधि मनुष्यादिक सृष्टि रची है क्योंकि परमेश्वर का व्यर्थ कार्य कभी नहीं होता प्रश्न कितने लोक परमेश्वर ने रचे हैं उत्तर सूर्य, चन्द्र और जितने तारे देख पड़ते हैं तथा बहुत भी नहीं देख पड़ते ए सब लोक ही हैं सो असंख्यात हैं प्रश्न ये सब लोक स्थिर हैं वा चलते हैं उत्तर सब लोक अपनी २ परिधि और अपने २ वेग से चलते हैं सो अनेक विधि गति है स्थिर तो एक परमेश्वर ही है और कोई नहीं प्रश्न जब परमेश्वर ने पहिले सृष्टि रची तब एक २ दो २ मनुष्यादिक जाति में रचे अथवा अनेक रचे थे उत्तर एक २ जाति में परमेश्वर ने अनेक २ रचे हैं एक २ वा दो २ नहीं क्योंकि तिब्बटो आदिक जा-

ति एक द्वीप में एक२ दो२ रचते तो द्वीपान्तरमें वे कैसे जास-
कौं इत्यादिक और भी विचार आपलोग करलेना प्रश्न परमे-
श्वरने सब पदार्थ शुद्ध२ रचे हैं याकोई पदार्थ अशुद्धभी रचा है
उत्तर परमेश्वर सब पदार्थ अपने२ स्थान में शुद्धही रचे हैं अ-
शुद्ध कोई नहीं परन्तु विरुद्ध गुणवाले परस्पर मिलने वा मि-
लानेवाले अशुद्ध कहते हैं अपने२प्रतिकूल के होनेसे जैसेकिदू-
धऔरनोंनजबमिलते हैं तबवेदोनों नष्टगुणहोजाते हैं क्योंकिदो-
नोंका स्वादबिगड़जाता है परन्तु उनोंदोनोंको पदार्थविद्याकी
युक्तिसे तृतीयपदार्थकोईरचले फिरभीवहउत्तमहोसक्ता है जैसे
सर्पमक्खीवेभी अपनेस्थानमेंशुद्ध हैं क्योंकिवैद्यक शास्त्रकीयुक्तिसे
इनकीभीबहुत औषधियांबनती हैं अनुकूलपदार्थों में मिलानेसे
परन्तुवेमनुष्यआदिकिसीकोकाटैं अथवाभोजनमें खालेनेसेदोषकर-
नेवालेहोजाते हैं ऐसेहीअन्यपदार्थोंकाविचारकरलेना प्रश्न जब
इसजगत्का प्रलयहोता है तोकिसप्रकारसे होता है उत्तर जिस
प्रकारसेसूक्ष्मपदार्थोंसे रचनास्थूलकी होती है उसीप्रकारसेप्र-
लयभीजगत्काहोता है जिससे जोउत्पन्नहोता है वहसूक्ष्महोकेअ-
पनेकारणमेंमिलता है जैसेकिपृथिवीकेपरमाणुऔरजलादिकोंके
परमाणुसे यहस्थूलपृथिवीबनी है इनपरमाणुकाजबवियोगहोता
है तबस्थूलपृथिवीनष्टहोजाती है वैसेहीसबपदार्थोंका प्रलयजा-
नना आकाशसेपृथिवीपञ्चगुणी है जबएकगुणीघटेगी तबजलरू-
पहोजायगी जलऔरपृथिवीजबएक२गुणघटेंगे तबअग्निरूपहो
जांयगे जबवेतीनोंएक २ गुणघटेंगे तबवायुरूपहोजांयगे जबवे
भिन्न२होजांयगे तबसबपरमाणुरूपहोजांयगे परमाणुकीजबसू-
क्ष्मअवस्थाहोगी तबसबआकाश रूपहोजांयगे औरजबआकाश
कीभी सूक्ष्मअवस्थाहोगी तबप्रकृतिरूपहोजायगा जबप्रकृतिलय
होती है तबएकपरमेश्वरऔरसबजगत्काकारण जोपरमेश्वरका
सामर्थ्य औरगुणपरमेश्वरकेअनन्त सत्यसामर्थ्य वालाएकअद्वि-

तीयपरमेश्वरहीरहेगा औरकोईनहीं सोयहसब आकाशादिक जगत्परमेश्वरकेसामनेकैसाहै किजैसाआकाशकेसामनेएकअणु भीनहीं इससेकिसीप्रकारकादोष उत्पत्तिस्थितिऔरप्रलयमे परमेश्वरमेंनहींआता इससे सबसज्जनलोगोंको ऐसाहीमानना उचितहै(प्रश्न)जन्मऔरमरणादिककिसप्रकारसेहोतेहैं उत्तर(लिंगशरीरऔरस्थूलशरीरका संयोगसेप्रकटकाजोहोना उसकानामजन्महै)औरलिंगशरीर तथास्थूलशरीरकेवियोगहोनेसे अप्रकटकाजोहोना उसकानाममरणहै)सोइसप्रकारसे होताहै कि जीवअपनेकर्मोंके संस्कारोंमेघूमताहुआ जलवाकोईऔषधिमें अथवावायुमेंमिलताहै फिरजैसाजिसके कर्मोंकासंस्कार अर्थात्सुखवादुःख जितनाजिसकोहोनाअवश्यहै परमेश्वरकी आज्ञा केअनुकूल वैसेस्थानऔरवैसेहीशरीरमें मिलकेगर्भमें प्रविष्टहोताहै फिरजिसमें वहमिला उसकेअवयवोंको आकर्षणसे शरीर बनताहै जैसीकीपरमेश्वरने युक्तिरचीहै जिसकेशरीरका वीर्य्य होगा उसवीर्य्य मेंउसकेसबअङ्गोंसेसूक्ष्मअवयवआतेहैं क्योंकिसबशरीरकेअवयवोंमे वीर्य्य कीउत्पत्तिहोतीहै फिरउसवीर्य्य केअवयवोंमेंउसशरीरके अवयवमिलतेजातेहैंउनसेशिर,नेत्र,नासिका,हस्त,पादादिक,अवयव बढ़तेचलेजातेहैं जबतकशरीर,नख औरशिखापर्यन्तपूर्णबनजाताहैं तबतकजीवशरीरमें सबअवयवों सेचेष्टाकरताभया शरीरसहितप्रकटहोताहै फिरभोअन्नपानादिक बाहर के पदार्थों के भोजन करने से शरीर के अवयवों कीवृद्धिहोतीहै सोछःविकारवालाशरीरहै अस्तिनामशरीरहै १ जायतेनामजन्मकाहोना २ वर्द्धतेनामबढ़ना ३ विपरिणमतेनामस्थूलकाहोना ४ अपक्षीयतेनामक्षीणहोना ५ विनश्यतेनाम नष्टकाहोना नाममृत्युकाहोना ६ एछःविकारशरीरकेहैं फिर जबमरणहोताहै तबस्थूलऔरलिंगशरीरकावियोगहोताहै सो स्थूलशरीरसेलिंगशरीरनिकलके बाहरकाजोवायुउसमें मिल-

ता है फिर वायु के साथ जहां तहां घूमता है कभी सूर्य्य के किरणों के साथ ऊंचे और चन्द्र की किरणों के साथ नीचे आजाता है अथवा वायु के साथ नीचे ऊपर और मध्य में रहता है फिर उक्त प्रकार से शरीर धारण कर लेता है (प्रश्न) स्वर्ग और नरक लोक हैं वा नहीं- उत्तर सब कुछ है क्योंकि परमेश्वर के रचे असंख्यात लोक हैं उन में से जिन लोकों में सुख अधिक है और दुःख थोड़ा उन को स्वर्ग कहते हैं तथा जिन लोकों में दुःख अधिक और सुख थोड़ा है उन को नरक कहते हैं और जिन लोकों में सुख और दुःख तुल्य है उन को मर्त्य लोक कहते हैं इस प्रकार के स्वर्ग, मर्त्य और नर्क लोक बहुत हैं उन में भी अनेक प्रकार के स्थान और पदार्थ हैं कि जिन में सुख वा दुःख अधिक वा न्यून है सो इसी हेतु परमेश्वर ने सब प्रकार के स्थान और पदार्थ रचे हैं कि पापी पुण्यात्मा और मध्यस्थ जीवों को यथावत् फल मिले अन्यथा न होय जैसे कि राजा के उत्तम मध्यम और नीच स्थान हैं। ते हैं जिन से उत्तम मध्यम और नीचों को यथावत् व्यवहार की व्यवस्था होती है परमेश्वर का यथावत् अखण्डित संपूर्ण जगत् में राज्य है और यथावत् न्याय से जिस की व्यवस्था है फिर परमेश्वर के राज्य में स्वर्ग नर्क और मर्त्य लोकादिकों की व्यवस्था कैसे न होगी किन्तु अवश्य ही होगी प्रश्न मरण समय में यमराज के दूत आते हैं उस जीव को जाल में बांध लेते हैं बांध के मारते २ यमराज के पास ले जाते हैं और यमराज यथावत् न्याय से दण्ड देते हैं यह बात सत्य है वा मिथ्या है उत्तर यह बात मिथ्या है क्योंकि जीव अत्यन्त सूक्ष्म है जाल से बांधने में कभी नहीं आता और गरुड़ पुराणादिकों में लिखा है कि पिण्ड देने से जीव का शरीर बन जाता है और वैतरणी नदी के तरने के हेतु गोदानादिक करना चाहिए और यम के दूतों का काज्जल के पर्वत की नांई शरीर लिखा है वे नगर के मार्ग और घर के दरवाजे भीतर जीव के पास कैसे आसकेंगे चिवंटी आदिक सूक्ष्म छिद्र में एक काल में अनेक जीव मरते हैं वहां कैसे जायंगे तथा वन वा नगरादिकों में अग्नि के लगने और युद्ध में एक पल में बहु-

तजीवोंकामरणहोताहै एक२जीवकोपकडनेकेहेतु बहुतदूतजाते हैं उतनेदूतकहांरहतेहैं तथाउनकाहोनाकैसेबनसकै सोयहबात अत्यन्तमिथ्याहै औरजोवेदादिक सत्यशास्त्रोंमें यमराज,तथा धर्मराज नामलिखेहैं वेपरमेश्वरकेहैं औरवायुतथासूर्य्य केभीहैं इसमें क्याआयाकि जैसीव्यवस्थाजीनेऔरमरनेमें परमेश्वरनेरची है वैसीहीहोतीहै सोवायुऔरसूर्य्यकेआधारसे सबजीवोंकाजानाऔरआनाहोताहै तथा यहीपरमेश्वरकीआज्ञाहै किजैसाजो कर्मकरै वहवैसाफलपावै येजोबात लिखीहैं उनमेंये प्रमाण हैं उत्पत्तिकेविषयमेंतो कुछश्रुतिलिखदियाहै परन्तुफिरभीलिखतेहैं। यतोवाइमानिभूतानिजायन्ते येनजातानिजीवन्तियत्प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति तद्विजिज्ञासस्वतद्ब्रह्म ॥ १ ॥ यह यजुर्वेदकी तैत्तिरीयशाखाकीश्रुतिहै। अथातोब्रह्मजिज्ञासा ॥ २ ॥ जन्माद्यस्ययतः ॥ ३ ॥ एदोव्यासजीकेसूत्रहैं इनकायहअभिप्रायहै कि जिसपरमेश्वरसेसबभूत अर्थातसबजगतउत्पन्नहोताहै उत्पन्नहोकेउस परमेश्वरके धारणऔरसत्तासेसबजगतजीताहै औरप्रलयमेंउसीपरमेश्वरमें लीनहोजाताहैवहीब्रह्महै उसब्रह्मकोजाननेकीइच्छाहै भृगोतूं करयहीदोनोंसूत्रकाभीअर्थहै। सविताप्रथमेऽहनि, इत्यादिकमन्त्रयजुर्वेदको संहितामेंलिखेहैं इनकायहअभिप्रायहै किजोवजब शरीरछोडताहै तबसूर्य्य वावायुमेंमिलता है फिरजैसापूर्वलिखा वैसेहीजाताऔरआताहै सोसबबातवहां लिखीहै देखाचाहै सो देखले। अन्नेनसोम्यसुङ्गेनापोमूलमन्विच्छअद्भिः सोम्यसुङ्गेनतेजोमूलमन्विच्छतेजसासोम्यसुङ्गेनसन्मूलमन्विच्छसन्मूलाःसोम्येमाःप्रजा। इत्यादिकसामवेदकीछान्दोग्यकीश्रुतीहैं इनकायहअभिप्रायहै किजैसीआकाशादिक क्रमसेउत्पत्तिजगतकीहोतीहै वैसेहीक्रमसेप्रलयभी होताहै सुङ्गनामकार्यका पृथिवीरूपजोकार्य उसकामूलजलहै सोजबपृथिवीका प्रलय होताहै तबपृथिवीजलरूप कारणमें लयहोतीहै तथाजल,अग्नि

मेंअग्निवायुमें वायुआकाशमें औरआकाशपरमेश्वरमें सोजिस प्रकारसे प्रलयकोलिखा उसीप्रकारसे होताहै औरहिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेइति यहमन्त्रपहिलेलिखाहै औरइसकाअर्थभीलिख दियाहै सोपरमेश्वरही सबजगत्काधारणकर्त्ताहै अन्यकोईनहीं इससे ऐसासिद्धभयाउत्पत्तिधारण औरप्रलयपरमेश्वरहीकेआधीनहैं यहसंक्षेपमें जगतकीउत्पत्ति स्थिति औरप्रलयकेविषयमेंलिखा औरजोविस्तारसे देखाचाहै सोवेदादिक सत्यशास्त्रोंमें देख लेवै इसकेआगे विद्या,अविद्याबन्ध औरमोक्षकेविषयमें लिखा जायगा॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते अष्टमः समुल्लासः सम्पूर्णः॥ ८ ॥

अथविद्याऽविद्याबन्धमोक्षान्व्याख्यास्यामः। वेत्तियनयायथार्थान्पदार्थान्साविद्या विद्याइसकानामहै किजोजैसापदार्थहै उसकोवैसाहीजानना नवेत्तियनयायथार्थान्पदार्थान्साअविद्या जैसापदार्थहै उसकोवैसा नजानना उसका नाम अविद्या है ज्ञानविवेकऔरविज्ञान इत्यादिक विद्याके नामहैं अज्ञान भ्रम और अविवेक इत्यादिक सब अविद्याकेनाम हैं। अनित्याशुचिदुःखानात्मसुनित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या॥ १ ॥ यहपतञ्जलिमुनिका योगशास्त्रमेंसूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किअनित्य अशुचिदुःख औरअनात्मायेजैसेहैं वैसेनजानना किन्तु इनमेंनित्यशुचिसुखऔरआत्माकोबुद्धिहोतीहै जैसेकि,अमरानिर्जरादेवा इत्यादिकवचनोंसे नित्यनिश्चयकाजोकरना किस्वर्गादिलोकऔर ब्रह्मादिकदेवनित्यहैं ऐसाअज्ञान बहुतमनुष्योंकोहै परन्तुवेविचारकरकेदेखैं किजिनकीउत्पत्ति होतीहै वेनित्यकैसेहोंगे कभी

नहीं क्योंकि बहुतपदार्थों केसंयोगसेजोपदार्थहोताहै सोउनपदा-
र्थों केवियोगसे वहजोसंयोगसे बनाथा सोअवश्यनष्ट होजायगा
ब्रह्मादिकोंकेशरीरऔरस्वर्गादिक सबलोकसंयोगसेबनेहैं उनका
वियोगसेअवश्यनाशहोताहीहै फिरजोइनअनित्यपदार्थों में नि-
त्यनिश्चयहोता औरनित्यजोपरमेश्वर तथापरमेश्वरके नित्यगुण
धर्मऔरविद्याउनको नित्यनजानना कभीउनकेजाननेमें इच्छाभी
नहोनी यहअविद्याकाप्रथमभागहै औरअनित्यपदार्थोंको अनित्य
जानना तथानित्यपदार्थोंकोनित्यजानना यहविद्याकाप्रथमभा-
गहै अशुचिअपवित्रनाम अशुद्धपदार्थों में शुद्धकानिश्चय होना
औरशुचिजोपवित्रअर्थात्शुद्धपदार्थमें अशुद्धकानिश्चयहोना जै-
सेकियहशरीरइससबमार्गों से मलहीनिकलताहै कान, आंख,
नाक, मुखतथानीचेकेछिद्र औरलोमोंकेछिद्रोंसेभीदुर्गन्धही नि-
कलताहै परन्तु जिनकोविषयासक्तिहोतीहै वहशुद्धबुद्धि होउ-
समें करताहै तथास्त्रीभीपुरुषके शरीरमेंशुद्धबुद्धि करतीहै ऊपर
केचामको देखकेमोहितहोजातेहैं फिरअपनाबल, बुद्धि, पराक्रम
तेज, विद्या, औरधनउसकेहेतुनाशकरदेतेहैं जोउनकीउसमें प्रवृ-
त्तबुद्धिनहोती तोऐसेकाममें प्रवृत्तनहोते सोबड़े २ राजाऔरबड़े २
धनाढ्यऔरमहात्मालोगतथामिथ्याविरक्तलोगजोहैं वेइसकाममें
नष्टहोजातेहैं कभीउनकेहृदयमेंइसबातकाविचारभीनहीं होता जैसे
अग्निमेंपतङ्गगिरकेनष्टहोजातेहैं वैसेवेभीऐश्वर्यसहितनष्टहोजा-
तेहैं औरपवित्रजोपरमेश्वरविद्या औरधर्मइनमें उनकीबुद्धिकभी
नहींआती यहअविद्याकादूसराभागहै औरजोशुद्धकोशुद्धजानना
औरअशुद्धकोयथावत्अशुद्धजानना यहविद्याकादूसराभागहै दुः-
खमें सुखबुद्धिकाकरना औरसुखमें दुःखबुद्धिकाहोना जैसेकिका-
म, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक औरविषयोंकीसेवा इनमें जीव
कोशान्तिकभीनहींआती जैसेकिअग्निमें घीडालनेसे अग्निबढ़-
ताजाताहै वैसेउनकीतृष्णा बढ़तीजातीहै परन्तु उसदुःखमें

बहुतजीवोंकोसुखबुद्धिदेखनेमें आतीहै क्योंकिजरुदुःखमें, सुखबुद्धिनहोतो तोवेइसमें फसते नहीं यहअविद्याका तीसरा भाग है औरजोपुरुषार्थ सत्यधर्मकाअनुष्ठानसत्यविद्याकाग्रहण जितेन्द्रियताकाकरना तथासत्संगसद्विद्या औरपरमेश्वरकीप्राप्तिका उपायअर्थातमोक्षकाचाहना इनमें इनकोबुद्धि लेशमात्रभीनहीं आती इनकेविनाजीवकोकभीसुखनहींहोता परन्तु विपरीतबुद्धि केहोनेसेदुःखहीमें फसेरहतेहैं सुखमेंकभीनहींआते यहअविद्या कातीसराभागहै औरसुखमें सुखबुद्धिकाहोना औरदुःखमें दुःखबुद्धिकाहोना सोविद्याकातीसराभागहै तथाअनात्मामें आत्म बुद्धि औरआत्मामें अनात्मबुद्धिकाहोना जैसेकिशरीरादिक सब अनात्मपदार्थहैं इनमेंआत्माकीनांईबहुतमनुष्योंकीबुद्धिहै जबदेहादिकोंमें दुःखहोताहै तबइनकीबुद्धिमें यहीहोताहै किमैंमरा औरमैंबड़ादुःखीहूं मैंदुबलाहोगया मैंपुष्टहूं मैंरूपवान्हूं मैंकुरूपहूं इत्यादिकनिश्चयलोकमेंदेखपड़ताहै औरजोआत्मा औरपरमाण्वादिक जिनसेकिशरीरबनाहै औरपरमेश्वरइननित्यपदार्थोंमें इनकोबुद्धिकभीनहीआती नित्यसुखजोमोक्ष इसको इच्छाभीकभीनहींहोती इसमे जन्म, मरण, क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण हर्षऔरशोक, इसदुःखसागरसे कभीनहींनिकलते यहअविद्या का चौथाभागहै औरआत्माको आत्मा जानना अनात्मा को अनात्माजानना यहविद्याकाचौथाभागहै इसमें क्याआयाकि अनित्याशुचिदुःखानात्मसुनित्याशुचिदुःखानात्मबुद्धिः तथानित्यशुचिसुखात्मसुनित्यशुचिसुखात्मबुद्धिर्विद्या। अथान्यथाचाविद्येति विज्ञातव्याअन्यथा नाममिथ्या जोज्ञान किजैसेको तैसा नजानना इसकानाम अविद्याहै औरनिर्भ्रम यथार्थज्ञान काहोना सोविद्याकहातीहै विद्याअविद्याकीउत्पत्ति विषयासक्त्यादिदोषोंसेहोतीहै जबयहजीव विद्याहीनहोके बाहरकेपदार्थोंको सुखकेहेतु चा हताहै तबमनकोबाहरकोओरप्रेरताहै फिरवहमनइन्द्रियों

को बाहर केपदार्थों में लगाके प्रवृत्त कर देता है सो जैसे कोई पुरुष निशाने में तीर वा गोली लगाया चाहता है तब वह भीतर से बाहर की ओर ध्यान करता है सो नेच को बन्दूक के मुख से लगा के निशाने में लगा देता है वैसेही जो२ व्यवहार जीव किया चाहता है तब उसी प्रकार का व्यवहार जीव में भी होता है फिर बाहर और भीतर के पदार्थों को यथावत् न जानने से जीव भ्रमयुक्त होके अन्यथा जान लेता है उससे फिर दृढ़ संस्कार अन्यथा होने से अविद्या कहाती है सो न अपने स्वरूप का कभी ध्यान करता है न परमेश्वर का तथा न विद्या का किन्तु जैसे वे मिथ्या संस्कार उसके हैं उसी में गिरा रहता है क्योंकि जैसा जिसका अभ्यास करेगा वैसा ही उस जीव को भासता रहेगा फिर जबतक यह अविद्या जीव में रहैगी तबतक उसको विद्या कभी नहीं होती परन्तु जबकभी अच्छा संग और सद्विद्या का अभ्यास तथा विचार और धर्म का अनुष्ठान तथा अधर्म का त्याग कभी नहीं वह जीव करसक्ता और यथार्थ तत्त्वज्ञान पदार्थों का उसको कभी नहीं होता जबतक यह अविद्या जीव को रहती है तबतक विद्या का साधन और विद्या प्राप्त नहीं होती क्योंकि जब जीव सुविचार करता है तब उसको कुछ२ विवेक उत्पन्न होता है कि सत्य को सत्य और असत्य को असत्य जानना फिर अविद्या के गुण और उनके कार्य उनमें वैराग्य होता है अर्थात् उनको छोड़ता है और विद्यादिक जो सत्यार्थ उनमें प्रीति करता है इनमें यह कारण है कि जबतक पदार्थों का दोष नहीं जानता तबतक उनके त्याग करने की बुद्धि जीव को कभी नहीं होती क्योंकि त्याग का हेतु दोषों का यथावत् देखना ही है तथा पदार्थों के गुण का जो ज्ञान होना सोई प्रीति का हेतु है फिर वह जीव धर्माधर्म का यथावत् निश्चय करके अधर्म का त्याग और धर्म का ग्रहण करेगा फिर उसका मन ग्लानि होगा कि विद्या, धर्म, सत्सङ्ग, सत्पुरुषों का संग, योगाभ्यास, जितेन्द्रियता, सत्पुरुषों का आचार, मोक्ष और परमेश्वर इन्हीं में मन प्रीतियुक्त होके स्थिर हो जायगा इनसे विरुद्ध अविद्या अधर्म कुसंग कि कुपु-

कर्षोंकासंगविषयोंकाअत्यन्तअभ्यास अजितेन्द्रियता दुष्टपुरुषोंका
आचार जिसमें नहोय औरपरमेश्वरकोछोड़के उपासनाप्रा-
र्थनाऔरस्तुतिकाकरना इनसेउसकामनहटजायगा इसकाना-
मशमहै फिरसबइन्द्रियांस्थिरहोजांयगी इसकानाम दमहै फिर
अविद्यादिकजितनेदुष्टव्यवहार उनसेउनकानामपृथकहोजायगा
अर्थातउनमें कभीन फसेगा उसकानाम उपरतिहै फिरशीत,
उष्ण,सुख,दुःख,हर्ष,शोच,औरक्षुधा,तृषादिकइनकासहनअर्था-
तइनमें हर्ष वाशोक नकरेगा इसकानाम तितिक्षाहै फिरवि-
द्यादिकउत्तमगुणोंमें अत्यन्तश्रद्धाअर्थात् प्रीतिजीवकीहोतीहै अ-
विद्यादिकदोषोंमेंसदाअप्रीतिइसकानामहै श्रद्धाफिरमनबुद्धिचि-
त्त,अहङ्कार,इन्द्रियऔरप्राण एसबउसकेवशीभूतहोजांयगे उन-
कोजहांस्थिरकरेगा वहांसबस्थिररहैंगे औरअविद्यादिक अनर्थ
में कभीनजांयगे इसकानाम समाधानहै एछः गुणजीवमें उत्प-
न्नहोंगे फिरजैसेक्षुधातुर पुरुषकोइच्छा अन्नहीमें रहतीहै वैसे
उसकामनमुक्तिहीमेंरहैगा किमेरीमुक्तिकबहोगी इससे भिन्नव्य-
वहारोंमें उसकामनलगहीगानहीं इसकानाममुमुक्षुत्वहै येनव
विवेकादिकगुणजबजीवमें होतेहैं तबवहब्रह्मविद्याका अधिकारी
होताहै फिरवहसबसत्यशास्त्रोंका जोसत्य२पदार्थ विद्यारूप वि-
षयउसकोयथावतजानेगा फिरशास्त्रजिनपदार्थोंकेप्रतिपादनक-
रतेहैं उनपदार्थोंकेसाथशास्त्रोंकाप्रतिपाद्य प्रतिपादकसम्बन्धको
वहजीवयथावत्जानलेगा इसकानामसम्बन्धहै फिरवहयथावत्
विद्याओंकाश्रवणकरेगा श्रवणकरकेज्ञाननेचसेउनकायथावतवि
चारकरेगा इसकानाममननहै औरफिरउनपदार्थोंको यथावत्
प्रत्यक्षजाननेकेहेतु योगाभ्यास अर्थातपातञ्जलदर्शन की रीति से
करेगा इसकानामनिदिध्यासनहै फिरपृथिवीसेलेकेपरमेश्वरप-
र्यन्त सबपदार्थोंकाज्ञाननेचसेप्रत्यक्षज्ञानकरेगा उसीसमयइस-
काजोप्रयोजन किसबदुःखोंकीनिवृत्ति औरपरमानन्द परमेश्वर

कीप्राप्ति इसकानाम, योजनहै सोजवयहविद्याहोगी तवअवि-द्यादिकसवदोषनष्टहोजांयगे जैसेसूर्य्यकेप्रकाशसे अन्धकारनष्ट होजाताहै विद्याऔरअविद्या यहदोनोंअन्धकारऔर प्रकाशकी नाईं परस्परविरोधीपदार्थहैं इनकाफलितार्थयहहै किजोविद्या-वान्होगा सोअधर्मादिक दोषोंको कभीनकरेगा औरजो अवि-द्यावान्गा उसकोनिश्चितवुद्धि धर्मादिकके अनुष्ठानमें कभीनल-गेगी प्रश्न विद्याकीपुस्तककोईसनातनहै वामनुष्योंनेरचीगईहैं उ सव चारवेदोंकोछोड़करचीगईहैं प्रश्न जैसेअन्यसवशास्त्ररचेगए हैं वैसेवेदभीरचागयाहोगा उत्तर ऐसामतकहोजोऐसाकहोगे तोआपकेमतमेंयहअनवस्थादोषआजायगा क्योंकिकोईपुस्तक स-नातननठहरनेसे किसीपदार्थ अथवापुस्तककासत्य वा असत्यनि-श्चयकभीनहोसकेगा जोकोईपुस्तकरचेगा उसकाप्रमाणकैसेहोगा क्योंकिजोसनातनपुस्तकहोतो तोउसपुस्तकसेऔरोंका सत्यासत्य जीवलोगजानसकें फिरउसकाखण्डनकरके दूसराकोईग्रन्थरच-लेगा ऐसेदूसरेका करकेतीसरा ऐसेहोअनवस्थाआजायगी प्रश्न जैसेअन्यपुस्तककाप्रमाणवेदसेहोताहै वैसे वेदकाप्रमाण किसपु-स्तकसेहोगा उत्तर ऐसाकहनेसे तोअनवस्थादोषआजायगा क्यों-किवेदकेप्रमाणकेहेतु कोइअन्यपुस्तकरक्खीजाय तोफिरउसपुस्त-ककेप्रमाणकेहेतु कोईतीसरीभी मानीजायगी ऐसेहीर आगेर अनवस्थाआजायगी इससेअवश्यएकपुस्तकसनातनमाननाचाहि-ए जिससे किअन्यपुस्तकोंकोव्यवस्थासत्यरहै सोवेदकेसनातनहो-नेमेंपहिलेलिखदियाहै वहीविचारलेना प्रश्न छःदर्शनोंमें बड़े२ विरोधहैं किपूर्वमीमांसावाला धर्माधर्मऔरकर्महीपदार्थहैं इ-नसेजगत्कीउत्पत्तिमानताहै तथावैशेषिकदर्शनऔरन्यायदर्शन में परमाणुसेजगत्कीउत्पत्तिमानीहै औरपातंजलदर्शनतथासां-ख्यदर्शनमें प्रकृतिसेजगत्कीउत्पत्तिमानीहै औरवेदान्तदर्शनमें परमेश्वरसे सवजगत्कीउत्पत्तिमानीहै यहबड़ापरस्परविरोधहै

सब शास्त्रोंमें इसका व्याख्यान है उत्तर वेदान्तमें प्रथम सृष्टिका व्याख्यान है कि उससे पहिले जगत् था होनहीं और जब अत्यन्त सबका प्रलय होगा तब परमेश्वर हीमें लय होगा अन्यमें नहीं सो यह आदि सृष्टि है क्योंकि पहिले नहीं थी और फिर उत्पन्न भई इससे इस सृष्टिके आदि होनेसे सादि कहाती है और मीमांसादिक शास्त्रोंमें अनादि सृष्टिका व्याख्यान है क्योंकि प्रकृति परमाणु और धर्म धर्मी इनका नाश प्रलयमें भी नहीं होता इसका नाम महाप्रलय है इसमें प्रकृति परमाणु आदिकोंके मिलनेसे जितना स्थूल जगत् होता है वह सब परमाणु आदिकोंके वियोगसे सब नष्ट हो जाता है परन्तु प्रकृति और परमाणु आदिक बने रहते हैं फिर भी जब ईश्वर उनको मिलाके जगत्को रचता है तब यह स्थूल सब होजाता है फिर उनसे स्थूल जगत् उत्पन्न होता है फिर जब नष्ट होता है तब प्रकृति और परमाणु रूप होता है फिर उनसे स्थूल जगत् उत्पन्न होता है ऐसे ही अनेकबार उत्पत्ति और अनेकबार जगत्का प्रलय होता है परन्तु प्रकृति और परमाणु इस स्थूलका जो कारण सो नष्ट नहीं इससे महाप्रलयमें आदि इस जगत्की नहीं देखपड़ती क्योंकि इसका कारण प्रकृति और परमाणु सदा बने रहते हैं इससे जगत् अनादि कहाता है कभी कारण रूप होजाता है कभी कारणसे स्थूल जगत् उत्पन्न होता है ऐसे ही प्रवाह रूप उत्पत्ति और प्रलयके होनेसे अनादि जगत् कहाता है सो यह जगत् कब उत्पन्न भया ऐसा कोई नहीं कह सक्ता इससे यह आया कि पांच शास्त्रोंमें महाप्रलयकी व्याख्या है इसमें भी अनेक भेद हैं कि च महेश्वरतक जब प्रलय होता है तब धर्म और धर्मी कुछ२ प्रसिद्ध रहता है इस प्रलयकी व्याख्या मीमांसामें है और जब अणुपर्यन्तका नाश होता है तब परमाणुमात्र जगत् रहता है सो भी महाप्रलय भेद है यह व्याख्या वैशेषिक दर्शन और न्यायदर्शनमें है और जब परमाणुको भी सूक्ष्मावस्था होती है तब अत्यन्त सूक्ष्म जो प्रकृति सो रहजाती है और परमाणुका भी लय होजाता है क्योंकि शब्दादिक तन्मात्राओंको भी सां-

व्यशास्त्रमें उत्पत्तिलिखीहैं औरप्रकृतिकीनहीं इससे यहअनुमान् सेजानाजाताहै किप्रकृतिपरमाणुसेभीसूक्ष्महै सोयहव्याख्यानपातंजलदर्शन औरसांख्यदर्शनमें कियाहै औरवेदान्तमें प्रकृत्यादिकोंकीउत्पत्तिलिखीहैं औरप्रकृतिकालयभी परमेश्वरमें होताहै इससे उत्पत्तिकेविषयमें भिन्न२पदार्थोंकेव्याख्यानहोनेसे कुछविरोधपरस्परइनमें नहीहै(प्रश्न)पूर्वमीमांसा औरसांख्यमें ईश्वरकोनहींमानाहै औरअन्यशास्त्रोंमें मानाहै इससे विरोधआताहै (उत्तर)इसमें भीकुछविरोधनहीं क्योंकिमीमांसामें धर्म औरधर्मीदोपदार्थमानेहैं इससे होईश्वरधर्मी औरईश्वरके सर्वज्ञादिकधर्मअवश्य मानलियाहै इसमें कुछ सन्देहनहीं औरवेदकोजैमिनीजीनित्यमानतेहैं सोवेदशब्दज्ञानरूपकेहोनेसेगुणहै सोगुणीकेविनागुणकिसमें रहैगा इससे ईश्वरको उसनेअवश्यमानाहै औरसांख्यमें ईश्वरासिद्धे: ॥ १ ॥ प्रमाणाभावन्नतत्सिद्धि: ॥ २ ॥ सम्बन्धाभावान्नानुमानम् ॥ ३ ॥ उभयथाप्यसत्करत्वम् ॥ ४ ॥ मुक्तात्मन:प्रशंसोपासासिद्धस्यवा ॥ ५ ॥ एपांचसांख्यशास्त्रमें कपिलजीकेकिएसूत्रहैं यहीअनीश्वरवादकाकारणहै इनकोयथावत्नजानके चार्वाक औरबौद्धादिक बहुतअनीश्वरवादी होगएहैं इनकेअभिप्रायनहींजाननेसे इनकायहअभिप्रायहै किईश्वर की सिद्धिनहीहोती किन्तु एकपुरुष औरप्रकृतिदोनोंनित्यहैं अन्यनहीं ॥ १ ॥ क्योंकिप्रत्यक्षप्रमाणनहोनेसे ईश्वरसिद्धनहींहोता प्रत्यक्षप्रमाणसेजोसिद्धहोतातोईश्वरमानाजाता अन्यथानहीं २ ॥ लिंगऔरलिंगीअर्थातचिन्ह औरचिन्हवालेकानित्यसम्बन्ध होताहै सोलिंगकेदेखनेसेलिंगीकाअनुमानहोताहै फिरईश्वरकालिंगनामचिन्हकोईजगत्में देखनहीपड़ता इससे ईश्वरमें अनुमानभीनहींबनता ३ ॥ ईश्वरजोमोहितहोगा तोअसमर्थकेहोनेसजगत्कोकभीनहोरचसकेगा औरजोमुक्तहोगा तोउदासीनकेहोनेसे जगत्करचनेमें ईश्वरको इच्छाभी नहोहोगी इससे ईश्वरमें

शब्दप्रमाणभीनहीं बनता॥ ४॥ फिरवेदमें सईश्वर इत्यादिकश्रुतिईश्वरकेव्याख्यानमें लिखीहैं उनकी क्यागति होगी वेतवश्रुति विद्याऔरयोगाभ्यासऔरधर्ममेंसिद्धजोयोगी वहहोताहै किअणिमादिकऐश्वर्यवाला उसकीप्रशंसाऔरउपासनाकीवाचकहै इससे ईश्वरकीसिद्धि किसीप्रकारसेनहीं होती ऐसेअर्थकोविपरीतजानके मनुष्योंकीबुद्धिभ्रमयुक्तहोगईहै परन्तु कपिलजीकायहअभिप्रायहै किपुरुषहीईश्वरहै औरवहीचेतनहै सर्वज्ञादिकगुणभी पुरुषमेंहैं उसपुरुषचेतनसे भिन्नकोईईश्वरनहीहै पुरुषकानामही ईश्वरहै इससेयहआयाकि पुरुषहीको ईश्वरमानना चाहिए दूसराकोई नहीं इससे जोकोईकहताहैकिजैमिनीऔरकपिलजीनिरीश्वरवादीथे यहउसकाकहना मिथ्याजानना वेदादिकजितने पुस्तकहैं उनकापठनपाठनविद्याकासाधनहै औरविद्यातथाअविद्याकीपरीक्षा उनकेपढ़नेऔरपढ़ानेके बिनाकभीनहींहोती विद्यापढ़नेवाले तथानहीं पढ़नेवाले इनमेंसेपढ़ने वालोंकाजोभाषण और ज्ञानादिकव्यवहारअच्छाहीदेखनेमेंआता इससे ग्रन्थोंकाजोपढ़ना सोविद्याकीप्राप्ति करनेवालाहोताहै अन्यथानहीं परन्तुविद्वानवहीहै जोकिसर्वथाअधर्मकात्यागकरै औरधर्मका ग्रहणकरै अन्यथापढ़नाऔरपढ़ानाव्यर्थहीहै। अन्धन्तमःप्रविशन्तियेविद्यामुपासते ततोभूयइवतेतमोयउविद्यायारताः॥ १॥ विद्याञ्चाविद्यांचयस्तद्वेदोभयसह अविद्यया मृत्युंतीर्त्वाविद्ययाऽमृतमश्नुते॥ २॥ अन्यदेवाहुर्विद्ययाअन्यदाहुरविद्ययाः इतिशुश्रुमधीराणांयेनस्तद्विचचक्षिरे॥ ३॥ यजुर्वेदकीसंहिताकेमन्त्रहैं इनकायहअभिप्रायहै किजोपुरुषअविद्यामेंफसेहैं वेअत्यन्तअन्धकारअर्थातजन्म,मरण,हर्ष, औरशोकादिकदुःखसागरमेंप्रविष्टरहतेहैं इससे पृथक नहींहोसके औरविद्याअर्थात् नानाप्रकारके कर्मोंसे विषयभोगोंकोचाहनाकरना तथायोगाभ्यास,तप और संयमसेअणिमादिकसिद्धियोंमेंफसकेप्रतिष्ठासंसारमें औरअभि-

मानादिकदोषोंसेयुक्तहोनाइसमेंजोरतरहतेहैंवेउनकर्मोंलोगों
मेंभी अत्यन्तअन्धकारमेंफसजातेहैं फिरउनकानिकलनाउनसेबहु-
तकठिनहोताहै ॥ १ ॥ परन्तु विद्याऔरअविद्याकोएकसाथगिन
लेना क्योंकिबन्धकोकरनेवालीदोनोंहैं इनमें दोनोंकानाम अवि-
द्याहै जोकर्मधर्मयुक्तऔरयोगाभ्यासजोउपासना इनकेअनुष्ठान
सेमृत्यु जोमोह औरभ्रमादिकदोषउनसेपृथक्मन औरजीवहोके
शुद्धहोजातेहैंफिरयथार्थपदार्थोंकाज्ञानऔरपरमेश्वरकोजोप्रा-
प्ति इसविद्यासेअमृतजोमोक्षउसकोप्राप्तहोताहै फिरदुःखसागर
मेंकभीनहींगिरता॥२॥ इसविद्याजोनिर्भ्रमज्ञानइसकाफलभि-
न्नहैअर्थातमोक्षहै औरजोपूर्वोक्तअविद्याजोकिभ्रमात्मकज्ञानउ-
सकाभीफलअन्यहै नामबन्धहै सोविद्याऔरअविद्याका फलभि-
न्न२है एकनहीं ऐसाहमनेज्ञानियोंकेमुखसेसुनाहै जोकियथार्थ
वक्ता उननेहमारेसाम्हने यथावतव्याख्याकरदीहै इससेहमको इ-
नमेंभ्रमनहीहै ॥ ३ ॥ सोसबमनुष्योंकोयहउचितहै किसबपुरुषा
र्थसेविद्याकोइच्छाकरैं औरअत्यन्तप्रयत्नसेअविद्याकोछोड़ैं क्यों-
किइससंसारमेंविद्याकेतुल्यकोईपदार्थनहीं तथाविद्याकेविनाइस
लोकवापरलोकमें कुछसुखनहीहोता औरअनेकजन्मधारणकर्ता
उनमेंअत्यन्तपीड़ाहोतीहै कभीपरमेश्वरकी प्राप्तिनहींहोती
सकोप्रातिकेउपायब्रह्मचर्यादिकपूर्वसबलिखदियेहैं उनकोनाम
ात्रयहांगणनाथोड़ीसीकरतेहैं प्रथमसबउपायोंकामूल ब्रह्मचर्या-
ामजबतकपूर्णविद्यानहोय तबतकजितेन्द्रियहोके यथावत्विद्या
ाहणकरैं औरसबव्यवहारोंकोयथावत्जानें फिरविवाहकरैं प-
न्तुविद्याभ्यासकोनछोड़ैं औरनित्यगुणग्रहणकोइच्छारक्खैं अ-
ान्तपुरुषार्थ औरनम्रतापूर्वक सबसज्जनोंसेमिलैं मिलकेउनको
ापूर्वकगुणग्रहणकरैं आपभोजितनोबुद्धि उतनानित्य२विचार
रैं उसमेंपक्षपात रहितहोके सत्यकोग्रहणकरैं औरअसत्यको
ोड़ैं एकान्तसेवनसेअपनीं इन्द्रियां,मनऔरशरीर सदाधर्मा-

नुष्ठानमें निश्चित रक्खें अधर्म में कभी न हों। यथा खनन् खनित्रेण नरो वार्य्यधिगच्छति तथा गुरुगतां विद्यां शुश्रूषुरधिगच्छति॥ यह मनु का श्लोक है इस का यह अभिप्राय है कि जो पुरुष अभिमानादिक दोषरहित और नम्रतादिक गुणयुक्त हो के सेवा से दूसरे का चित्त प्रसन्न कर देता है सो ही श्रेष्ठ गुणों को प्राप्त होता है अन्य नहीं इस में यह दृष्टान्त है कि जैसे भूमि को खोदता २ कुदाली से नीचे चला जाय फिर वह जल को प्राप्त होता है वैसे ही शुश्रूषु अर्थात् कपटादिक दोषरहित और दूसरे पुरुष को परिक्षा जानता होय कि इस में गुण हैं वा नहीं फिर यथावत् गुणों का बुद्धि में निश्चय कर ले कि इस में ए सत्य गुण हैं पीछे जिस प्रकार से वे गुण मिलें उन सेवादिक प्रकारों से गुणों को अवश्य ग्रहण करें ग्रहण कर के गुणों को प्रकाश कर दे और जो कोई उन गुणों को ग्रहण किया चाहे उस को प्रीति से निष्कपट हो के यथावत् गुणों को दे दे क्योंकि गुणों को गुप्त करना कोई मनुष्य को उचित नहीं और जो गुणों को गुप्त रखता है वह बड़ा मूर्ख पुरुष है और धर्म तथा परमेश्वर का अत्यन्त विरोधी है वह कभी सुख न पावैगा इत्यादिक विद्या की प्राप्ति के हेतु हैं और यही अविद्या नाश के हेतु हैं अन्य भी अनेक प्रकार के हेतु हैं उन को विचार लेना और (इस के आगे बन्ध और मुक्ति का व्याख्यान किया जाता है)। पराञ्चि खानि व्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मात्पराङ् पश्यति नान्तरात्मन् कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्। यह कठवल्ली की श्रुति है इस का यह अभिप्राय है कि पराञ्चि खानि अर्थात् बहिर्मुख इन्द्रिय जिस की होती हैं वह जीव बाहर के पदार्थों ही को देखता रहता है और भीतर के पदार्थों को वा अपने स्वरूप को कभी नहीं बिचारता अथवा परम सूक्ष्म जो परमेश्वर उस के बिचार में कभी जीव का चित्त नहीं जाता इस से जीव को पदार्थों का यथार्थ ज्ञान तो नहीं होता किन्तु अत्यन्त दृढ़ भ्रम होता है उस से आप से आप ही बद्ध होता है फिर ऐसा मोह उस को होता है कि जिस का छूटना बहुत कठिन है उस से फिर मिथ्या ज्ञान होता है कि जो पुरु

धन, राज्यादिकों की में सुखमानलेता है फिरउनकेसुधरनेमें अत्यन्तहर्षितहोता है और विगड़ने से शोकयुक्तहोता है इसकालमेंगिरके अनेकजन्ममरण जीवकेहोते हैं और अत्यन्त दुःखपाता है प्रश्न जन्मएक होता है अथवा अनेक उत्तर अनेक जन्महोते हैं प्रश्न जो अनेकजन्महोते हैं तोपूर्वजन्मोंकाहमको स्मरणक्यों नहीं होता उत्तर पूर्वजन्मोंकास्मरणनहीं होसक्ता क्योंकिपूर्वजन्मज्ञानकेजोनिमित्तहैं वेसबनष्टहोजाते हैं इस्से पूर्वजन्मका स्मरणनहीं होसक्ता प्रश्न कौनवेनिमित्तहैं और निमित्तकिसकोकहते हैं उत्तर निमित्तइसकानामहै किजोदूसरेकेसंयोगसे उत्पन्नहोता है जैसेकिजल शीतलहै और अग्निउष्णहै जबअग्निकासंयोगजलमेंहोता है तब जलउष्णहोजाता है परन्तुजबअग्निसे जलपृथककियाजाता है तब फिरभीवहशीतल होजाता है इसकानाम नैमित्तिकगुणहै जोकि जबतकउसकानिमित्तरहता है तबतकवहरहता है और जबनिमित्तनहीं रहता तबउसकानिमित्तसे उत्पन्नभयाजोकिगुणसोभीनष्ट होजाता है जैसेसूर्य्य और नेत्रसे रूपकाग्रहणहोता है जबसूर्य और नेत्रनहीं रहतेतबरूपकाभीग्रहणनहीं होता क्योंकिनिमित्तकेविना नैमित्तिकगुणनहीं होता इस्सेक्याआयाकिपूर्वजन्मजिसदेशजिसकालमें और जोशरीर तथाउसशरीरकेसम्बन्धीसबपदार्थनष्टअर्थात उनकावियोगहोनेसे वहांकाजोउनकोज्ञानथासोभीनष्टहोजाता हैं और इसीजन्ममेंजो२बाल्यावस्थामें व्यवहारकियाथाउस्से सुखवा दुःखपायाथा उसकाभीयथावतस्मरण वृद्धावस्थामेंनहींरहता और जिससमयकिसीसेकिसीकीबातहोतीहै तबउसबातमेंअनेकअक्षर, पद, वाक्य, स्कन्धकहैं और सुनेजाते हैं परन्तु उसके उत्तर कालमें स्मरणकहनावासुनना यथावत्नहींवनता और कोईबात कण्ठस्थ करलेता है फिरकालान्तरमें उसकोभीभूलजाता है एकबातमेंजब जीवकाचित्तहोता तबदूसरेमेंनहीं जाता दूसरेमेंजबजाता है तब पहिलेकोभूलजाता है जबऐसीबातहैतोजन्मान्तरकेस्मरणमेंशंका

जोकरतेहैंउनकोशंकाव्यर्थहोहै प्रश्न जीवऔरबुद्धिआदिकपदार्थतो वेहीहैं फिरपूर्वजन्मका ज्ञानक्योंनहींहोता क्योंकिजोकुछदेखता वासुनताहै सोबुद्धिहीसे ग्रहणकरताहै फिरउनकाज्ञान अवश्य होनाचाहिएसोनहींहोता इस्से पूर्वजन्मनहींहै उत्तर इसकाउत्तरतोपूर्वप्रश्नकेउत्तरहीसेहोगया क्योंकिइसबाल्यावस्थासलेकेवृद्धावस्थातक वहीजीवऔरबुद्ध्यादिकहैं फिरकहेवासुने व्यवहारोंमें अक्षर,पद,औरउनकेअर्थादिकोंका यथावत्स्मरणक्योंनहींहोता इसव्यवहारकोहमलोगप्रत्यक्षदेखतेहैं किजबहमलोगपरस्पर बातकहते औरसुनतेहैं तबकुछकालकेपीछेबहुत२बातोंके सुनने वाकहनेमेंआनुपूर्वीसेयथावतस्मरणनहींरहता फिरजन्मान्तरके स्मरणमेंशंकाकरनीव्यर्थहोहै औरदेखनाचाहिए किजागृतावस्था मेंवेहीजीवऔरबुद्ध्यादिकव्यवहारकरतेहैं यहमेराघर,द्वार,पिता,पुत्र,स्त्री,बन्धु,शत्रु,औरमित्रादिकहैं ऐसाउसजीवको यथावत स्मरणहै औरफिरजबस्वप्नावस्थाहोतीहै तबइनकाउसीसमयविस्मरणहोजाताहैफिरजबसुषुप्तिहोतीहैतबदोनोंकाव्यवहारविस्मृतहोजाताहै वेहीजीव और बुद्ध्यादिकहैं परन्तु किञ्चित २ देश औरकालकेभेदहोनेसे पूर्वकाव्यवहारविस्मृतहोजाताहै फिरपूर्वजन्मदेशकाल और शरीरादिकपदार्थ सबछूट जातेहैं फिरउनके स्मरणकीशंकाजोकरतेहैं सोविचारवाननहींहैं प्रश्न यहजन्मजोहोताहै सोएकबारहीहोताहै दूसरीबारनहींक्योंकियहदूसराजीवहै सोनया२उत्पन्नहोजाताहैऔरशरीरधारणकरताहैजोकिपहिले शरीरधारणकियाथा सोजीवफिरनहींआता उत्तर यहबातमिथ्याहै क्योंकिजोदूसराजीवहोता तोउसकोपूर्वके संस्कारनहींदेखपड़ते जैसेकिजिसपदार्थकासाक्षात अनुभवबुद्धिमें अवश्यआता है फिरसंस्कारसेस्मृतिउत्पन्नहोतीहै औरस्मृतिसेप्रवृत्तिवानिवृत्तिहोतीहै जैसेकिकोईसंस्कृतकोपढ़ै औरकोईअंगरेजीकोजोजिसकोपढ़ताहै उसकोउसकाअक्षरादिक्रमसेबुद्धिमेंसबसंस्कारहो-

तेहैं साक्षात्‌देखने और सुननेमें अन्यकानहीं फिरकालान्तरमें कोईव्यवहारअथवापुस्तककोदेखताहै सोएूर्वदृष्टवाश्रुतकेसंस्कारसेस्मृतिहोतीहै है कियहपकार वायकारहै औरइसका यहअर्थ है क्योंकिमैंनेपूर्वइसकाअर्थ ऐसापढ़ावासुनाथा विनासंस्कारकेस्मृतिकभीनहींहोती औरविनास्मृतिसेयहऐसाहोहै वानहीं ऐसीप्रवृत्तिवानिवृत्ति कभीनहींहोती सोएकहाजन्महोता तोजन्मसमयसेलेके बालकोंकेअनेकप्रकारकेव्यवहारदेखनेमेंआतेहैं जैसे क्षुधाकाज्ञानऔरदुग्धादिकोंसेक्षुधाकीनिवृत्तिकेहेतु इच्छाफिर दुग्धपीनेकीयुक्ति औरतृप्तिहोनेसेदूधपीनेकीनिवृत्तितथामलमूत्रादिकोंकेत्यागकीयुक्ति औरकोईउसकोकुछमारै अथवाडरावै फिरउससेरोदनादिककोप्रवृत्तिऔरप्रीतिवाला उनसेहासऔरप्रसन्नताकीप्रवृत्तिइत्यादिकप्रवृत्तिऔरनिवृत्ति रूपव्यवहार विनापूर्वजन्मकेसंस्कारसेकभीनहींहोसक्ताइससे पूर्वजन्मअवश्यमाननाचाहिए प्रश्न एसबव्यवहारस्वभावसेहोतेहैं जैसेकिअग्निऊपरचलता है औरजलनीचेकोवैसेहीवेसबजीवकोज्ञानस्वरूपकेहोनेसे होतेहैं उत्तर जोस्वभावसे मानोगेतोपूर्वकहे अनुभव संस्कारऔरस्मृतितथाप्रवृत्तिवानिवृत्तिइनकोछोड़देओ औरजोछोड़ोगेतोकोईव्यवहारआपलोगोंकासिद्धनहोगा फिरपढ़नापढ़ानाबुरीबातोंकेछोड़नेकाउपदेश तथाअच्छीबातोंकाउपदेशक्योंकरते औरकरातेहो औरजोस्वभावसेमानोगेतोउसकोनिवृत्तिकभीनहींहोगी जैसेकिअग्निऔरजलकेस्वभावकीनिवृत्तिनहींहोती वैसेप्रवृत्तिकोस्वभावसेमानोगेतो निवृत्तिकभीनहींहोगी जोनिवृत्तिकोस्वभावसेमानोगेतोप्रवृत्ति कभीनहींहोगी औरजोदोनोंका मानोगेतो क्षणभंगऔरअनवस्थाहोगी फिरआपलोगोंमें उन्मत्तादोष आजायगा क्योंकिअग्निकीनीचे चलनेमेंप्रवृत्तिकभीनहींहोती तथा जलकीस्थूलकेहोनेसेऊपरकोप्रवृत्तिकभीनहींहोती वैसेहीस्वभावसबजानो प्रश्न ईश्वरनेजैसाजिसकास्वभावरचाहै वैसाहैहोता

है उत्तर यहबातभीठीकनहीं जोईश्वरकारणहोताहै इनव्यवहा-रोंमेंतोईश्वरकेदयालुहोनेसे सबओषधियोंकाज्ञानऔरपरमेश्व-रपर्यन्तपदार्थोंकाबोध तथाधर्ममेंप्रवृत्तिऔरअधर्मसेनिवृत्ति ई-श्वरनेसबजीवोंमेंस्वभावसेक्योंनहीरक्खी औरईश्वरअन्यायकारी भीहोजायगा क्योंकिकिसीकोराजाऔरधनाढ्यकेघरमें जन्मऔर किसीकोअसमर्थ औरदरिद्रके घरमें जन्म तथाएककोबुद्धि बहुत अच्छीऔरदूसरेकोजड़बुद्धिदताहै तथाएकरूपवान्‌और एककुरूप तथाएकबलवान् औरदूसरानिर्बलएकपण्डितऔर दूसरामूर्खहो-ताहै सोबिनाअच्छेकर्मोंसेउत्तमपदार्थोंकादेना औरबिनाअप-राधसेभ्रष्टपदार्थोंकादेना इससे ईश्वरमेंपक्षपातआवेगा पक्षपात केआनेसेईश्वरअन्यायकारी होजायगाऔर कृतहानिरकृताभ्या-गमश्च। एदोदोष आजायेंगे क्योंकि अबजो कुछ किया जाता है उसको हानि होजायगी फिर जन्मके नहो होने से जो शरीर, इन्द्रियां, प्राण, और मन के नहो होने से पाप पुण्यों का फल कभीनहीभोगसक्ता औरजोपूर्वजन्मनमानेंगेतो विनाकिए सुख औरदुःखकोप्राप्तिकैसेहोगी वैषम्यऔरनैर्घृण्य,एदोदोषईश्वरमें आजायेंगे किविनाकारणसे किसीकोसुखदेदे औरकिसीकोदुःख यहविषमता ईश्वरमेंआवेगी औरजीवोंकोदुःखीदेखकेजिसकोघृ-णानाामदयानहींआतोइससेईश्वरकादयाजोगुणसोनष्टहोजायगा औरजोपूर्वतथा उत्तरजन्महोगातोईश्वरमेंकोईदोषनहीआवेगा क्योंकिजैसाजिसकापुण्यवापापवैसाउसकोसुखवादुःखहोगा इससे ईश्वरन्यायकारीऔरदयालुभीयथावत्‌रहेगाइससेपूर्वऔरपरजन्म अवश्यमाननाचाहिए सोपूर्वजन्मोंकी संख्यानहींहैं क्योंकिजबसे सृष्टिउत्पन्नभईहै तबसेअनेकजन्मधारणकरतेर चलेआतेहैं और जबतकमुक्तिनहोहोगी तबतकस्थूलशरीरअवश्यधारणकरेंगे प्रश्न सुखवादुःखराजाऔरदरिद्रकोतुल्यहीदेखपड़ताहै क्योंकिजोरा-जाको सुखव दुःखहैं वेदरिद्रोंकोभीहैं विचारकरकेदेखें तोसुख

वा दुःखसबको तुल्य होके दीखपड़ता है उत्तर ऐसा कहना योग्य नहीं क्योंकि इच्छाके अनुकूल पदार्थों की प्राप्तिका होना सुखकहाता है और इच्छाके प्रतिकूल पदार्थोंकी प्राप्तिका होना दुःखकहाता है सो हर्ष और प्रसन्नता सुखके पर्याय हैं और शोक तथा अप्रसन्नता दुःखके पर्याय हैं जबराजादिक धनाढ्योंके गर्भवासमें जीवआता है उसीदिनसे अनुकूल पदार्थों का सेवन होता है फिर जन्म जब होता है तब अनेक औषधादिक व्यवहारोंकी प्रीति होती है और बिना इच्छाके भी अनेक पदार्थ अनुकूल प्राप्त होते हैं वहजब दूध पीनेकी इच्छा करता है तबबिना इच्छासेभी मिष्ट और सुगन्धादिकसे युक्त दूध यथेष्ट मिलता है और जबवहकुछ अप्रसन्न वा रोने लगता है तब अनेक सेवक परिचारकलोग मधुरवचन और खिलौनेसे शीघ्र हो प्रसन्नकर देते हैं और फिर जबवह बड़ा होता है तबजिसके ऊपर दृष्टिकरता है वह हाथजोड़के अनुकूलवचन तथा अनुकूल व्यवहार करता है सदा प्रसन्न उसको सबलोग रखते हैं और वह रहता है फिर जब कभीदुःखीभी होता है तब अनुकूल वचन और औषधादिकोंसे उसको प्रसन्न कर देते हैं और जो विद्यावानोंके गर्भवासमें आता है उसको भी अधिक सुख होता है परन्तु कोई कभी उनमें से नष्टबुद्धिके होनेसे दुःखी होजाता है सो पूर्वजन्मके पापोंसे और इसजन्मके दुष्टव्यवहारों से पीड़ित होता है और जो मूर्ख वा दरिद्रके गर्भवासमें जीव आता है उसी समयसे उसको दुःख होने लगते हैं जबवह स्त्री घास व लकड़ी को काटने लगती है तब गर्भमें प्रहारके होनेसे जीव पीड़ित होता है और कभी क्षुधातुर रहती है कभी वह तकुत्सित अन्नको खालेती है उससे भी उसजीवको अत्यन्त पीड़ा होती है फिर जबजन्म होता है तबकोई प्रकारका औषध वा सुनियम तथा कोई परिचारक उससमय नहीं रहता किन्तु मार्ग वन वा खेत में प्रायः पाषाणकी नांईं गर्भसे बालक गिरपड़ता है फिर वह स्त्री उसको पोंछ पांछके वस्त्र में बांधके पीठमें बांधलेती है फिर कभी उस स्त्री को घास व लकड़ी व बनेको शीघ्रता

होतीहै उससमयबालक दूधपीनेकेहेतुरोताहै सोदूधतो उसको
नहींमिलता परन्तु वहस्त्रीउसबालककोथपेड़ामारतीहै फिरअ-
धिक२ जबरोताहै तबअधिक२ मारतीहै फिररोतारहताहै पर-
न्तु दूधनहींपिलाती फिरवह जबकुछबड़ाहोताहै तबउसकोयथा-
वत्खानेकोभी समयकेऊपरनहींरहता फिरवहमजूरीकरताहै
तोभीउसकोयथावतइच्छाकेअनुकूलनहींमिलता औरसदाउस-
कोसुखकीतथाउत्तमपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाहोतीहै परन्तु प्रा-
प्तिकनहींहोनेसेसदादुःखीरहताहै जोऐसाकहताहैकिसुखवादुः
खसबकोतुल्यहैसोपुरुषविचारवाननहींहै क्योंकिसुखवादुःखप्रत्य-
क्षहीअधिकवान्यूनदेखपड़तेहैं (प्रश्न) जबपहिले२हीसृष्टिभईथी तब
उससे पूर्वजन्मतोकिसीकानहींथा फिरक्यूंउससमय अधिकवान्यून
राजा अथवादरिद्रादिकक्योंभएथे इससे जानाजाताहै किजैसेप-
हिलेजन्ममेंभयेथे इससे आजकालपहिलाहीजन्महै सोअधिकन्यू-
नपनजाओ परन्तु एक२जन्महीविचारमेंआताहै बहुतजन्मनहीं
(उत्तर) आदिसृष्टिमेंसबमनुष्यउत्पन्नभएथे नकोईराजानकोईप्रजा
नमूर्खनपण्डितइत्यादिकभेदनहींथे इससे आदिसृष्टिमें दोषनहीं
आया (प्रश्न) जैसेआदिसृष्टिमेंदुग्धपानादिकव्यवहार सुखऔरदुः-
खआदिक प्रवृत्तिवानिवृत्तिभईथी वैसेआजकालभीहोतीहै फिर
वहजोआपनेकहाकि अनुभवादिकोंकेविनाप्रवृत्तिवानिवृत्ति नहीं
होती सोबात विरुद्धहोगई (उत्तर) विरुद्धनहींहोती क्योंकिआदि
सृष्टिमेंगर्भवासमेंउत्पत्तिनहींभईथी औरकिसीको बाल्यावस्थाभी
नथी किन्तु सबस्त्रीऔरपुरुषोंकीयुवावस्थाहीईश्वरनेरचीथी फिर
वेउससमयअच्छा वा बुराकुछनहींजानतेथे जहांजिसकानेत्रवा
अथवाबुद्ध्यादिक जिसबाह्यपदार्थमेंयुक्तभए उसकोटक२ देखतेथे
परन्तु यहअच्छोवाबुरी ऐसानहींजानतेथे परन्तु प्राण,शरीरअ-
थवा इन्द्रियइनमें चेष्टागुणथा ऐसानहींजानतेथेकि ऐसे चेष्टा
करनीवानकरनी फिरचेष्टाहोनेलगी बाह्यपदार्थों केसाथ सु-

आदिकव्यवहारहोनेलगे उनमेंसेकिसीनेकुछपत्तावाफलवाघास स्पर्शकिया वाजीभकेऊपररक्खा तथादांतोंसे चबानेलगे उसमें सेकुछभीतरचलागया कुछबाहरगिरपड़ा उसकोदेखकेदूसराभी ऐसाकरनेलगा फिरकतैर२व्यवहारवढ़ताचला तथासंस्कारभीहो तचले होते२मैथुनादिकव्यवहारभीहोनेलगे सोपांचवर्षतकउस समयकिसीकोपापवापुण्यनहोलगताथा वैसेहीआजकालभीपांच वर्षतकबालकोंकोपापपुण्यनहीलगता फिरव्यवहारकतैर२अच्छा बुराभीकुछ२जाननेलगे फिरपरस्परउपदेशभीकरनेलगे कियह अच्छाहैयहबुराहै औरपरमेश्वरनभीउनपुरुषोंकेद्वाराबेदविद्या काप्रकाशकिया वेवरद्वारामनुष्योंको उपदेशभीकरनेलगे उनके उपदेशको किसीनेसुना औरकिसीनेनसुना सुनकेभीकिसीनेबि- चाराओरकिसीनेनविचारा परन्तुबहुतमनुष्य कुछ२अच्छाबुरा जाननेलगे फिरआगेर२मैथुनिसृष्टिहोनेलगी फिरउनबालकोंको भी उपदेशऔरसंस्कारहोनेलगे सोआजतकअनेकप्रकारकेपापपु- ण्योंसेव्यवहारभिन्न२होतेआएहैं सोहमलोगप्रत्यक्षदेखतेहैं इ- ससे आगेकेसंस्कारोंकाअनुमानकरलेतेहैं औरपीछेजोरसंस्कारों सेव्यवहारहोंगे उनकाभी अनुमान हमलोगकरतेहैं इसमध्यस्थ व्यवहारकोप्रत्यक्षदेखनेसे प्रश्न परमेश्वरमेंविषमतादोषतोआता है क्योंकिआदिसृष्टिमें बहुतजीवोंकोमनुष्यशरीरदिए बहुतोंको पश्वादिकेशरीरदिए सोमनुष्योंकाशरीरतोउत्तमहै औरपश्वा- दिकोंकानीच औरआदिसृष्टिमें मनुष्योंनेएककर्म क्योंनकिया भिन्न२कर्मकरनेसेभी यहजानाजाताहै किजैसेप्रथम शरीरोंकेदे- ने औरकर्मोंकेकरनेमें विषमताभईथी वैसेआजकालभीहोतीहैं इससे ईश्वरपक्षपातीनहीहोता औरईश्वरकेऊपरकोईनहीहै इ- ससे जैसीउसकोइच्छावैसाकरताहै औरजोवहकरताहै सोअच्छा हीकरताहै परन्तुहमारीबुद्धिछोटीहै इससे समझनेमेंनहींआता उत्तर अपने२स्थानमेंसबशरीरअच्छे हैंकोईपदार्थपरमेश्वरनेबु-

रानहीं रचा परन्तु उनके परस्पर मिलने से कहीं गुण होजाता है कहीं दोष होता है सो जिस समय आदि सृष्टि भई थी उस समय मनुष्यों और पश्वादिकों में कुछ विशेष नहीं था विशेष तो पीछे से भया है सो जितने शरीर रचे हैं वे सब जीवों के कर्म भोग करने के हेतु रचे हैं सो ईश्वर नरचता तो वे शरीर कैसे होते इस से प्रथम हो ईश्वर ने सब व्यवस्था कर रक्खी है कि जैसा जो कर्म करै सो वैसा ही जन्म सुख वा दुःख को प्राप्त हो वैसे और एक २ बार बिना संस्कारों से भी मनुष्य का शरीर मिलेगा क्योंकि सब शरीरों से मनुष्य का शरीर उत्तम है और मनुष्य ही के शरीर में पाप और पुण्य लगता है अन्य शरीर में नहीं और जो यह मनुष्य का शरीर है सब जीवों के लिए है क्योंकि सब को प्राप्त होता है वैसे ही सब कीट पतंगादिकों के शरीर भी हैं जब मनुष्य शरीर में जीव अधिक पाप करता है और पुण्य थोड़ा तब नरकादिक लोक और पश्वादिकों के शरीरों को प्राप्त होता है जब उसका पाप और पुण्य तुल्य होते हैं तब मनुष्य का शरीर प्राप्त होता है और जब पुण्य अधिक करता है और पाप थोड़ा तब देवलोक और देवादिकों का शरीर उस जीव को मिलता है उस में जितना अधिक पुण्य उसका फल जो सुख उसको भोग के जब पाप पुण्य तुल्य रह जाते हैं तब फिर मनुष्य का शरीर धारण करता है इन कर्मों में तीन भेद हैं एक मन से दूसरा वाणी से और तीसरा शरीर से कर्म करता है इन तीनों में से एक २ के तीन भेद हैं सत्व रज और तमो-गुण के भेद से सो जब मन में सत्त्वगुण कि शान्त्यादिक गुणों से युक्त होके उत्तम कर्म करता है तब देव मनुष्य और पश्वादिकों में वह जीव रहता है परन्तु मन में प्रसन्नता ही उसको रहती है और रजोगुण से युक्त होके मन से जब पुण्य वा पाप करता है तब देव मनुष्य पश्वादिकों में मध्यम ही वह होता है उत्तम नहीं किन्तु उत्तम तो सत्वगुण वाला होता है क्योंकि रजोगुण के कार्य लोभ इत्यादिक होते हैं तमोगुण प्रधान जिस पुरुष को होता है उसको मोह, आलस्य, प्रमाद, क्रोध और विषादादिक दोष होते हैं वह प्रायः पाप वा पुण्य अधम ही करेगा इस से देवम-

नुष्य और पश्वादिकों में नीचशरीर में प्राप्त होगा और जो वचन से पाप करेगा तो पक्षी मृगादिकयोनि को प्राप्त होजायगा फिर सदा वह दुःखों से व्याकुल होरहेगा क्योंकि जो जिस से पाप करता है वह उसी से भोग करता है जब शरीर से जीव पाप करते हैं वे वृक्षादिक स्थावर शरीर को प्राप्त होते हैं इसमें मनुभगवान के श्लोक लिखते हैं सो जान लेना॥

मानसं मनसैवायमुपभुङ्क्ते शुभाशुभम्। वाचा वाचाकृतं कर्म कायेनैव च कायिकम्॥१॥ भ० यह जीव मन वाणी और शरीर से शुभ नाम पुण्य अशुभ नाम पाप करता है सो जिस से करता है उसी से भोग भी करता है॥१॥ शरीरजैः कर्मदोषैर्याति स्थावरतां नरः। वाचिकैः पक्षिमृगतां मानसैरन्त्यजातिताम्॥२॥ भ० जब शरीर से पाप करता है तब वृक्षादिक स्थावर शरीर को प्राप्त होता है वचन से किए पापों से पक्षी और मृगादिक योनि को प्राप्त होता है और मन से किए पापों से नीच चाण्डालादिक योनि को प्राप्त होता है॥२॥ यो यदैषां गुणो देहे साकल्येनातिरिच्यते। स तदा तद्गुणप्रायं तं करोति शरीरिणम्॥३॥ भ० जो गुण जिसके शरीर में प्रधान होता है उस से युक्त होके जीव उस गुण के योग्य कर्म को करता है और गुण भी उसको कराता है॥३॥ सत्त्वं ज्ञानं तमोऽज्ञानं रागद्वेषौ रजः स्मृतम्। एतद्व्याप्तिमदेतेषां सर्वभूताश्रितं वपुः॥४॥ भ० सत्वगुण का कार्य ज्ञान है तमोगुण का कार्य अज्ञान और रजोगुण का कार्य राग और द्वेष है ए तीन गुण और इनके तीन कार्य सब भूतों में व्याप्त हैं क्योंकि इसी का नाम प्रकृति और कारण शरीर है॥४॥ तत्र यत्प्रीतिसंयुक्तं किंचिदात्मनि लक्षयेत्। प्रशान्तमिव शुद्धाभं सत्त्वं तदुपधारयेत्॥५॥ भ० जिस पुरुष का चित्त जब प्रसन्नतायुक्त रहै तथा प्रशान्त की नांई और शुद्ध की नांई तब उसको सत्वगुण और सत्वप्रधान पुरुष को जानना॥५॥ यत्तु दुःखसमायुक्तमप्रीतिकरमात्मनः। तद्रजोऽप्रतिघं विद्यात्सततं हारि देहिनाम्॥६॥ भ० जिसका चित्त दुःख युक्त रहै हृदय में प्रसन्नता भी न होवै सदा चित्त चंचल हो। य विषयों के ओर

दौड़नेलगे औरवशीभूतनहीं वहरजोगुणप्रधानपुरुषहै।ताकि ६ ॥ यत्तुस्यान्मोहसंयुक्त मव्यक्तं विषयात्मकम्। अप्रतर्क्य मविज्ञेयं त-मस्तदुपधारयेत ॥ ७ ॥ म० जोचित्तमोहसंयुक्तरहै हृदयमेंकुछ विचारभीसत्यासत्यकानहोय विषयकोसेवामेंफसारहै ऊहापोह जिसमेंनहो।य औरजैसाअन्धकारमेंपदार्थ वैसाकुछज्ञाननेमेंभी नआवै उसजीवकोतमोगुण प्रधानऔरतमोगुण जानना ॥ ७ ॥ त्रयाणामपिचैतेषां गुणानांयःफलोदयः। अग्र्यो मध्योजघन्यश्च तं-प्रवक्ष्याम्यशेषतः ॥ ८ ॥ म० इनतीनगुणोंका उत्तममध्यम और नीचजोफलोदयउसकेआगेकहतेहैं यथावत् ॥ ८ ॥ वेदाभ्यासस्त-पोज्ञानं शौचमिन्द्रियनिग्रहः धर्मक्रियात्मचिन्ताच सात्विकंगु-णलक्षणम् ॥ ६ ॥ म० वेदाभ्यास,तपनाम योगाभ्यास,ज्ञान,स-त्यासत्यविचार,जितेन्द्रियता, धर्मकाअनुष्ठान,आत्माका विचार तथापरमेश्वरकाभ जिसमेंगुणहोवें उत्तमसात्विकपुरुषऔरसत्व गुणकालक्षणहै ॥ ६ ॥ आरम्भरुचिताधैर्य्य मसत्कार्यपरिग्रहः। विषयोपसेवाचाजस्रं राजसंगुणलक्षणम् ॥१०॥ म० कार्योंकेआ-रम्भमेंअत्यन्तरुचिअधैर्यअसत्कार्योंकास्वोकार औरनिरन्तरवि-षयसेवामेंफसारहै यहरजोगुणअधिकपुरुषवालेकालक्षणहै १० ॥ लोभःस्वप्नोधृतिःक्रौर्यन्नास्तिक्यंभिन्नवृत्तिता। याचिष्णुताप्रमा-दश्च तामसंगुणलक्षणम् ॥ ११ ॥ म० अत्यन्तलोभअत्यन्तनिद्राधैर्य कालेशनहीं क्रूरतानामदयारहित नास्तिक्यनामविद्याधर्मऔर ईश्वरकोनहींमाननाभिन्नवृत्तितानामछिन्नभिन्नजिसकीबुद्धिनि-त्यदानदक्षिणाऔरभिक्षाग्रहणमेंप्रीति औरप्रमादनामनानाप्र-कारकाउपद्रवकरना यहतमोगुण औरतमोगुणपुरुषवालेकाल-क्षणहै औरइसरूपसेआगेतीनोंगुणोंके लक्षणकहेजातेहैं ॥ ११ ॥ यत्कर्मकृत्वाकुर्वंश्च करिष्यँश्चैवलज्जति । तज्ज्ञेयंविदुषासर्वं ता-मसंगुणलक्षणम् ॥ १२ ॥ म० जिसकर्मकोकरकेकरताभया और करनेकीइच्छामें लज्जाऔरभयहोताहै वहपुरुषऔरकर्मतमोगु-

शोहैं क्योंकिपापहीमेंरहेगा ॥ १२ ॥ येनास्मिन्कर्मणालोके ख्या-
तिमिच्छतिपुष्कलाम् । नचशोचत्यसंपत्तौ तद्विज्ञेयन्तुराजसम् ॥
१३ ॥ भ० लोकमेंकीर्तिकेहेतुइच्छासेभाटआदिकपुरुषोंकोपदार्थ
देना औरऐसाकामकैंकरूं किसमे किमेरेदूसलोकमेंप्रशंसाहोय
सोमिथ्याप्रशंसाकाचाहना अन्यायमेंऔरधनमेंभनतथापदार्थके
नाशहोनेमकुछसोचविचारनकरनायहरजोगुणोपुरुषहै यहघोर
दुःखमेंसदापड़ारहताहै॥१३॥ यत्सर्वेणेच्छतिज्ञातुं यन्नलज्जति-
चाचरन् । येनतुष्यतिचात्मास्य तत्सत्वगुणलक्षणम् ॥१४॥ भ० जो
पुरुषसबप्रकारोंसेऔरउत्तमपुरुषोंसेजाननेकोचाहताहै तथाधर्म
केआचरणमेंकोईहानिवानिन्दाहै य ताभीजिसकोंलज्जावाभयन
होय औरजिसकर्मसेंअपनाआत्माप्रसन्नहोय अर्थातधर्माचरणसे
उनकोकभीनछोड़ै यहसात्विकपुरुषकालक्षणहै ॥ १४ ॥ तमसो-
लक्षणंकामो रजसस्त्वर्थउच्यते । सत्वस्यलक्षणंधर्मः श्रैष्ठमेषां-
यथोत्तरम्॥१५॥ भ० जोकाममेंफसारहताहै वहतमोगुणीपुरु-
षहै तथाधनादिकअर्थहीकोपरमपदार्थमानताहै वहरजोगुणीहै
औरजोधार्मिकअर्थात्धर्मकोंमें जिसकोनिष्ठाहै वहसत्वगुणीपु-
रुषहै तमोगुणीसेरजोगुणीरजोगुणीसेसत्वगुणवालापुरुषश्रेष्ठहै॥
१५ ॥ इनमेंसत्वगुणवालाधार्मिकहोकेपुण्यहीकरेगा रजोगुण-
वालापापपुण्यदोनोंकरेगा तथातमोगुणवालापापहीकरेगा इ-
नको जैसे२ जन्म और सुख वा दुःख होते हैं सो लिखा जाता
है ॥ देवत्वंसात्विकायान्ति मनुष्यत्वंचराजसाः । तिर्यक्त्वंताम-
सानित्य मित्येषात्रिविधागतिः ॥ १६ ॥ भ० जोसात्विकपुरुषहो
तेहैं वेदेवभावकोप्राप्तहोतेहैं अर्थातविद्वानधार्मिकऔरबुद्धिमा-
नहोतेहैं तथाउत्तमपदार्थ और उत्तम लोकोंकोभी प्राप्तहोते हैं
तथाजोरजोगुणीहोतेहैं वेमध्यमलोकमनुष्य व तथाबुद्ध्यादिकप-
दार्थोंको प्राप्तहोकेमध्यमरहतेहैं उत्तमनहीं औरजोतमोगुणी
होतेहैं वेनीचताआदिकशरीर तथाबुद्ध्यादिकोंसेभीनीचभाव र-

रहताहै इनतीनोंकेतीनगुणोंमें उत्तममध्यमऔरनीचतासे एक२ गुणकेतीन२भेदहोतेहैं औरवैसेही उनकोफलमिलतेहैं सोआगे२लिखाजाताहै ॥ १६ ॥ स्थावराःकृमिकीटाश्च मत्स्याःसर्पाश्च कच्छपाः। पशवश्चमृगाश्चैवजघन्यातामसीगतिः ॥१७॥ भ० स्थावर, वृक्षादिक, कृमि, कीट, मत्स्य, तथाकच्छपादिक, जलजन्तु, गायआदिकपशु तथामृगादिकवनकेपशु जिसकोअत्यन्ततमोगुण होताहै वहऐसेशरीरोंकोप्राप्तहोताहै ॥ १७ ॥ हस्तिनश्चतुरंगाश्च शूद्राम्लेच्छाश्चगर्हिताः। सिंहाव्याघ्रावराहाश्च मध्यमातामसीगतिः ॥ १८ ॥ भ० हाथीघोड़े शूद्रजोमूर्ख म्लेच्छनामकसाईआदिक गर्हितनामजोनिन्दितकर्मकरनेवाले सिंहउनसकुछजोनीच होतेहैं वेव्याघ्रवराहनामसूअर जोपुरुषमध्यतमोगुणवालाहोताहै वह ऐसे जन्मोंकोपाताहै ॥ १८ ॥ चारणाश्चसुपर्णाश्च पुरुषाश्चैवदांभिकाः। रक्षांसिचपिशाचाश्चतामसीषूत्तमागतिः ॥ १९ ॥ भ० चारणनामदूतदूती औरगानेवाले जोकिवेश्याओंकेपासगण रहतेहैं सुपर्णजोहंसादिकअच्छेउत्तमपक्षी दांभिकपुरुषअर्थातसमादयवाले मिथ्याउपदेशकरनेवाले तथाअहंकारअभिमानादिकगुणयुक्त राक्षसनाम छल,कपट करनेवाले पिशाचनाम सदामलिनरहैं ऐसेजन्मोंकोप्राप्तहोतेहैं जिनमेंकिथोड़ातमोगुण रहताहै ॥ १९ ॥ झल्लामल्लानटाश्चैव पुरुषाशस्त्रवृत्तयः। द्यूतपानप्रसक्ताश्च जघन्याराजसीगतिः ॥ २० ॥ भ० झल्लानामतड़ाग कूप आदिकखोदनेवाले मल्लानाममल्लाह औरकुश्ती करनेवाले शस्त्रवृत्तिपुरुष जोकिशस्त्रोंकोबनाने औरसुधारने वाले जुआरीलोग औरभांग,गांजा,अफीम तथामद्यपीनेमेंजोफसेरहतेहैं जिनको अत्यन्तरजोगुणहै वेइसप्रकारकेहोतेहैं ॥ २० ॥ राजानःक्षत्रियाश्चैवराज्ञांचैवपुरोहिताः। वादयुद्धप्रधानाश्चमध्यमाराजसीगतिः ॥ २१ ॥ भ० जिनपुरुषोंमेंमध्यरजोगुणहोताहै वेराजाहोतेहैं तथा क्षत्रियहोतेहैं अर्थातशूद्रवीरादिकगुणवालेहोतेहैं राजाओंकेपु-

योंहितवादमें प्रधानजोकिनानाप्रकारवादविवादकरतेहैं वकील आदिकयुद्धमें प्रधानजोकिसिपाहीहोतेहैंयहरजोगुणियोंकीमध्यमगतिहै २१। गन्धर्वागुह्यकायक्षाविबुधानुचराश्चये।तथैवाप्सरसः सर्वाराजसीषूत्तमागतिः। २२॥म०गन्धर्वजोकिगानविद्यामेंकुशल गुह्यकजोकिसिल्प औरवादित्रोंकोबजानेमेंचतुर यक्षनामबड़े धनाढ्यतथाविबुधनामउक्तदेवोंकेगण अर्थातसेवकऔरअप्सराअर्थातरूपादिकगुण औरचतुरस्त्रीजिनमेंबहुतथोड़ा रजोगुणहोता है उनकोऐसेजन्ममिलतेहैं ॥ २२ ॥ तापसायतयोविप्रा येचवैमानिकागणाः । नक्षत्राणिचदैत्याश्च प्रथमासात्विकीगतिः २३ ॥ म० तापसनामकपटछलादिकदोषोंकेबिना कृच्छ्चांद्रायणादिक व्रतऔरयोगाभ्यासकरनेवाले यतिनाम यत्नऔरविचारकरनेमें प्रवीण विप्रनामवेदकापाठअर्थऔरतदुक्तकर्मोंकेजानने औरकरनेवाले वैमानिकगणजोकिआकाशमेंयानोंकोचलानेवालेऔर रचनेवाले नक्षत्रजोकि गणितविद्या जाननेवाले औरनक्षत्रलोकतथानक्षत्रलोकमेंरहनेवाले औरदैत्यजोकिविद्याशान्ति और शूरवीरादिकगुणयुक्तजोथोड़े सात्विकगुणयुक्तहोवें उनमेंऐसेगुण होतेहैं ॥२३॥ यज्वानऋषयोदेवा वेदाज्योतींषिवित्सराः । पितरश्चैवसाध्याश्च द्वितीयासात्विकीगतिः ॥ २४ म० यज्ञकरनेमेंजिनकोअत्यन्तप्रीति ऋषिनाम यथार्थमन्त्रोंके अभिप्रायजाननेवाले देवनाममहादेव औरइन्द्रादिकदिव्यगुणवाले चारोंवेदज्योतिष शास्त्रऔरचन्द्रादिकज्योति लोकवत्सरकालऔरसूर्य्य लोक पितर जोपिताकोनांई सबमनुष्योंकेहितकरनेवाले औरपितृलोकमेंरहनेवाले साध्यजोअभिमानहठादिकदोषरहितहोके धर्मऔरविद्यादिकगुणोंकोसिद्धकरनेवाले तथानारायणऔरविष्णु आदिक देवजोवैकुण्ठादिकमेंरहतेथे जोमध्य सत्वगुणमें ऐसे कर्मकरतेहैं उनकोऐसीगतिहोतीहै ॥ २४ ॥ ब्रह्माविश्वसृजोधर्मो महानव्यक्तमेवच । उत्तमांसात्विकीमेतां गतिमाहुर्मनिषिणः ॥ २५ ॥

म० ब्रह्माब्रह्मस्थानपर्य्यन्तविद्याकोजाननेवाला अथवाब्रह्मलोकका
अधिष्ठाताऔरउसलोककोप्राप्तहोनेवाले प्रजापतिऔरविश्वसृज
जोकिधर्मऔरविद्यासमस्तकपालनकरनेवाले वासिद्धजोकिपरमा-
णुकेसंयोगवावियोगकरनेवाले औरउसविद्यावाले अथवाप्रजाप-
तिलोकके अधिष्ठाता वाउनकोप्राप्तहोनेवाले धर्ममहान्बुद्धि अ-
व्यक्तनामप्रकृति यहसत्वगुणकीउत्तमगतिहै यहांसेआगेकर्मऔ-
रउपासनाकाकोईफलभोगनहीहैसिवायपरमेश्वरके॥२५॥इन्द्रि-
याणांप्रसंगेन धर्मस्यासेवनेनच । पापान्संयान्तिसंसारानविद्वांसो
नराधमाः॥२६॥म०इन्द्रियोंकाप्रसंगअर्थातअत्यन्तविषयसेवामेंफ-
सनेऔरधर्मकेत्यागसे जोजीवअधर्मऔरविद्याहीनहैं अत्यन्तदुःखों
कोपातेहैं दुष्ट२शरीरोंकोप्राप्तहोतेभये इनप्रकारोंसेदुष्टवाश्रेष्ठ
कर्मोंकेकरनेसेसुखवादुःखजीवोंकोहोतेहैं यहोईश्वरकीआज्ञाहै
किजोजैसाकर्मकरैवहवैसाभोगेइससे ईश्वरमेंकुछपक्षपातदोषन-
हींआताक्योंकिजैसाजोकर्मकरताहैउसकोवैसाहीफलमिलताहै
औरईश्वरन्यायकारीहैसोसदान्यायहीकरताहै अन्यायकभीनहीं
इससे जैसाचाहै ऐसाकरनानहींआता ईश्वरमेंक्योंकिवहसत्यसं-
कल्पहै औरनिर्भ्रमउसकाज्ञानहै इससे जैसोव्यवस्थान्यायसेकरनी
उचितथी वैसेहोकियाहै अन्यथानहीं एहदोषसवजीवोंमेंहैं किप-
हिलेकुछऔरव्यवस्थाकरैं पीछेऔरक्योंकिजीवोंमेंभ्रमादिकदो-
षहोतेहैं औरकोईव्यवहारमें निर्भ्रमभीहोतेहैं सर्वत्रनहीं और
सर्वत्रनिर्भ्रमतबजीवहोताहै किजबपरब्रह्मकासाक्षात्विज्ञानहो-
ताहै औरउसीकानित्ययोग अन्यथानहीं सर्वत्रनिर्भ्रमतो सना-
तनएकईश्वरहीहै इससे क्याआयाकि एकजीव अनेकजन्म धारण
करताहै यहसिद्धभया।प्रश्न ईश्वरएकजीवकोअनेकजन्मकीव्यवस्था
क्योंकरताहै क्योंकिईश्वर सर्वशक्तिमान्है नित्यनए२ जीवोंको
उत्पन्नक्योनहीकरसक्ता।उत्तर ईश्वरअवश्यसर्वशक्तिमान्है परंतु
अन्यायकभी नहींकरता जोजीवदूसराशरीर धारणनहींकरेगा

तो एक जन्म में किए पाप वा पुण्य इन का भोग नहीं हो सकेगा फिर उस-
का न्याय भी नहीं होगा कि पाप करनेवाले को दुःख और पुण्य करनेवा-
ले को सुख होना चाहिए सो बिना शरीर में भोग हो नहीं हो सक्ता दूसरे
अनेक जन्म अवश्य मानना चाहिए प्रश्न पाप वा पुण्य का भोग बिना शरी-
र भी हो सक्ता है पश्चात्ताप करने से जीव मन में जितने पाप किए होंगे
उन का भोग मन से शोक करके भोग करलेगा (उत्तर) ऐसा न कहना चा-
हिए क्योंकि पश्चात्ताप जो होता है सो भविष्यत्पापों का निवर्तक होता
है किए भए पापों का नहीं जैसे कोई पुरुष नित्य कूप को दौड़ २ के डांक
जाय फिर कभी कूप के पार को किनारे पर नहीं पहुंचे किन्तु कूप में गिर
जाय उस में उस का हाथ वा गोड़ टूट जाय फिर उस को कोई बाहर नि-
काल ले फिर वह बहुत शोच करै कि मैं ऐसा काम न करता तो मेरा यह
बुरा दशा क्यों होती सो कहै बड़ा मूर्ख हूं दूसरे क्या आता है कि आगे को
वह ऐसा कर्म न करेगा परन्तु जो कर चुका उस की निवृत्ति कभी नहीं
होगी सो पश्चात्ताप जो होता है सो कृत पाप का निवर्त्तक नहीं होता
और जैसे कोई मनुष्य आंख से अन्धा और कान से बहिरा होय उस के
पास सर्प वा व्याघ्र आ जाय अथवा कोई गाली दे वा उस की निन्दा करै
तो भी उस को कुछ दुःख नहीं होता ऐसे ही बिना शरीर धारण में जीव
सुख वा दुःख नहीं भोग सक्ता क्योंकि जब मूर्त्तिमान पदार्थ होता है तब
वह शीत उष्णादिक व्यवहारों का भोग कर सक्ता है अन्यथा नहीं दू-
सरा आया कि पश्चात्ताप में कृत पापों की निवृत्ति नहीं हो सक्ती प्रश्न
जीव जिन कर्मों में सुख होवै वैसा कर्म क्यों नहीं करता उत्तर बिना
विद्यादिक गुणों से कुछ नहीं यथावत् ज्ञान सक्ता विद्यादिक गुण बिना
परिश्रम से नहीं होते एक व्यवहार ऐसा है कि जिस में प्रथम सुख हो-
य और पीछे दुःख सो विषयों में फस के जीव दुःखित होता है क्योंकि अ-
त्यन्त विषयसेवा में बल बुद्धि और धनादिक नष्ट होते हैं और ज्वरादि-
क अनेक रोगों से युक्त होके फिर दुःख ही पाता है दूसरा ऐसा व्यवहार
है कि प्रथम तो दुःख होय और पीछे सुख सो व्यवहार यह है कि जिते-

न्द्रियता, ब्रह्मचर्याश्रम, विद्याकीप्राप्ति, सत्पुरुषोंका संग, और धर्म का अनुष्ठान, इत्यादिकज्ञानलेना इनकीप्राप्तिकेसाधनोंमें प्रथम दुःखहोताहै और जबएप्राप्तहोजातेहैं तबअत्यन्तउसकोसुखहोता है तीसराव्यवहार ऐसाहोताहै कि जिसमें सदादुःखहीरहै सो मोहहै जोधन पुत्रऔर स्त्रीआदिकअनित्यपदार्थोंमेंफसके विद्या-दिकश्रेष्ठगुणोंका त्यागकरताहै वहसदादुःखी रहताहै चौथायह व्यवहारहै कि जिसमेंसदासुखहीरहताहै दुःखकभीनहीं सोमुक्ति है विद्यादिकगुणोंकनहोहोनेसे सुखकेकर्मोंको जानताहीनहीं फिरकैसे करसकेगा कभीनकरसकेगा औरईश्वरका करनासब अच्छाहीहै क्योंकिईश्वरन्यायकारीत्वादिगुणयुक्तरहताहै यहह-मकोदृढनिश्चयहै किईश्वरअन्यायकभीनहीकरता इतनाहमलो-गबुद्धिसेयथावत्जानतेहैं ईश्वर जैसाचाहै वैसानहींकरता जोक-रताहैसोन्याययुक्तहीकरताहै अन्यथानहीं सोइससे यहसिद्धभया कि अनेकजन्महोतेहैं सोजीवअविद्यादिकदोषोंमेयुक्तहोकेविषयमें फसारहताहै इससे जीवको विवेकादिकगुणनहीहोनेसे बन्धनभी इसकानष्टनहीहोता जबयथावत्परमेश्वरपर्यन्त पदार्थविद्याहो-तीहै तबयहसबदुःखोंसेछूटकेमुक्तिकोप्राप्तहोताहै प्रश्न प्रथमआप कहचुकेहैं कि बिनाशरीरसेसुखवादुःखभोगनहीहोसक्ता सोमुक्ति मेंभीजीवकाशरीररहताहोगा औरजोकहैंकिनहीरहतातोमुक्ति काभोगकैसेकरसकेगा औरजोकरसक्ताहै तोहमनेकहाथाकिमन में पश्चात्तापसेपापकाफलभोगलेताहै यहबातमेरो सत्यहोयगो उत्तर जीवहीमुक्तिमेंरहताहै औरशरीरनहीं क्योंकिपहिलेजो लिंगशरीरकहाथा वहीजीवकेसाथ रहताहै सोअत्यन्त सूक्ष्महै औरसबपदार्थोंमेउत्तमऔरनिर्मलहै जैसेअग्निसलोहातप्तहो-ताहै उससेंअग्निसेभीअधिकदाहहोताहै वैसेहीएकअद्वितीय चे-तनपरमेश्वरसर्वव्यापकहै उसकीसत्तासेयुक्तजीवचेतनसदारह-ताहै क्योंकिव्यापकसेव्याप्यकावियोगकभीनहींहोता जैसेआकाश

में सबस्थूलपदार्थोंकावियोगकभीनहीं मनुष्यऔरबायुआदिक जहां२चलतेफिरतेहैं वहां२आकाशकासंयोगपूर्णहीहै वैसेआकाशादिकपदार्थभी परमेश्वरमेंव्याप्यहैं औरपरमेश्वरसबमेंव्यापकहै परमाणुऔरप्रकृति जोकिसूक्ष्मपदार्थोंकीअवधिहै इनसे सूक्ष्मआगेसंसारकेपदार्थकोईनहींहैं परन्तुपरमेश्वरउनसेभीअत्यन्तसूक्ष्म औरअनन्तहै जैसेआकाशकिसीपदार्थके साथचलता फिरता नहीं वैसे परमेश्वरभी पूर्णकेहोनेसेजीवोंकेसाथचलता फिरतानहीं किन्तुजीवसबअपने२कर्मानुसारचलतेफिरतेहैं परमेश्वरकी सत्तासेधारितचेतनहैं ॥ दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापायेतदनन्तरापायादपवर्गः । यहगौतममुनिकासूत्रहै मिथ्याज्ञानजोकिमोहसे अनेकप्रकारकाहोताहै यथावत्विद्याकेहोनेसेजबनष्टहोजाताहै तब । अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाःपञ्चक्लेशाः ॥ यहपतञ्जलिमुनिकासूत्रहै इसका यहअभिप्रायहै किअविद्यातोपहिलेप्रतिपादनकरदियाहै सोई सबदोषोंकामूलहै द्रष्टाजोजीवदर्शनजोबुद्धि इनदोनोंकी एकस्वरूपताहोनीकिमैंबुद्धिहूं ऐसाअभिमान काहोना सोअस्मितादोष कहाताहै ।(सुखानुशयी रागः)॥ ३ ॥ प० जिससुखकापहिलेअनुभवसाक्षात्कियाहोय उसमेंअत्यन्तसदृष्णानामलोभ कियहसुभकोअवश्यमिलनाचाहिए यहदूसरादोषहै क्योंकिअनित्यपदार्थोंमेंअत्यन्तप्रीतिकेहोनेसे नित्यपदार्थमें जीवकीइच्छाकभी नहीं होती (दुःखानुशयीद्वेषः)॥ ४ ॥ प० जिसदुःखकापहिलेअनुभव कियाहोय उसकोस्मृतिकेहोनेसे उसकेहननकीइच्छा औरउससे क्रोधबहद्वेषकहाताहै यहतीसरादोषहै । स्वरसवाहीविदुषोपितथारूढोऽभिनिवेशः ॥ ५ ॥ प० सबप्राणियोंकोयहआशानित्य बनीरहतीहै किमैंसदारहूं औरमेरेयेपदार्थसदाबनेरहैं नाश कभीनहोवै सोक्रमिसेलेकेसबप्राणियोंको औरविद्वानोंकोभी यह आशानित्यबनीरहतीहै यहचौथाअभिनिवेशदोषकहताहै और

अविद्यातोप्रथमदोषहै एपांचदोषऔरइनसेउत्पन्नभए असंख्यात
दोषजीवोंमेंरहतेहैं इससेजीवोंकीमुक्तिभीनहींहोसक्ती परन्तु वि-
वेकादिगुणोंसेजबमिथ्याज्ञाननष्टहोजाताहै तबअविद्यादिकदोष
भीनष्टहोजातेहैं । प्रवृत्तिर्वाग्बुद्धिशरीरारम्भइति ६॥ गोतम० व-
चनबुद्धिऔरशरीरइन्होंसेजोवआरम्भकरताहैसोप्रवृत्तिकहातीहै
परन्तु जिसकेअविद्यादिकदोषनष्टहोजातेहैं वहउनमेंप्रवृत्तनहीं
होता किन्तुविद्यादिकगुणोंमेंप्रवृत्तहोताहै इससेउसकोमिथ्याप्र-
वृत्तिकिपरमेश्वरसेभिन्नपदार्थकीजोइच्छासोनष्टहोजातीहै फिर
वहयोगाभ्यासविचार औरपुरुषार्थसेयुक्तअत्यन्तहोताहै उससे अ-
नेकपरमाणुपर्यन्तसूक्ष्मपदार्थोंकाज्ञान जबसयथावत्साक्षात्का-
रहोताहै फिरअत्यन्तजबविचारऔरयोगाभ्यासकरताहै तबपर-
मानन्दमयव्यापकसर्वाधार जोपरमेश्वरउसकोअपनेहीमें व्याप्त
देखताहै फिरउसकोस्थूलशरीर धारणकरनेका आवश्यकनहीं
किन्तुएकपरमाणुकोभी शरीरबनाकेरहसक्ताहै तबइसका जन्म
मरणादिककारण जोअविद्यादिकदोषउनसेकिएगएथे जोकर्मके
भोगसबनष्टहोजातेहैं औरआगेजोकर्मकिएजातेहैं एसबज्ञानहो
केवास्ते करताहै सोअधर्मकभीनहीं करता किन्तुधर्महीकर-
ताहै उससे ज्ञानफलहीवहचाहताहै अन्यनहीं फिरउनके जन्म
मरणकाजोमूल अविद्यासोज्ञानसेनष्टहोजातीहै फिरवह जन्म
धारणनहींकरता औरउसकोबुद्धि, मन, चित्त, अहङ्कार, प्राण,
औरइन्द्रियएसबदिव्यशुद्धपदार्थजीवकसामर्थ्यरूपरहजातेहैं औ-
रदिव्यज्ञानादिकगुणनित्यउसमेंरहतेहैं औरआपदिव्यशुद्धनि-
र्विकाररहजाताहै । बाधनालक्षणंदुःखम् ॥ ७ ॥ गोतम० जि-
तनीबाधना अर्थातइच्छाभिघात वहसबदुःख कहाताहै ॥ ७ ॥
तदत्यन्तविमोक्षोपवर्गः ॥ ८ ॥ गोतम० दुःखोंकीअत्यन्तजो नि-
वृत्तिउसकोमोक्षकहतेहैं किसबदुःखोंसछूटजाना औरसदाआन-
न्दपरमेश्वरको प्राप्तहोकेरहना फिरलेशमात्रभी दुःखकासम्बन्ध

कभीनहीं होता सोकेवलएकपरमेश्वरकेआधारमें वहजोवरहता है औरकिसीकासम्बन्धउसकोनहीं सोपरमेश्वरकेयोगमेंउसजीव मेंसर्वज्ञत्वकालज्ञान सबपदार्थोंकागुण औरदोषइनका सत्य २ बोधभीसदारहताहै इससेजिसदुःखसागरसंसारमें बड़े भाग्यसेछूटकेपरमानन्दपरमेश्वरकोप्राप्तभयाहै सोयथावतजानताहै किपरमेश्वरकेयोगसेअन्यत्रदुःखहीहै सुखकभीनहीं फिरवहइससेदुःख मेंकभीनहींगिरता।जैसेचंचटो अत्यन्तचञ्चल होतीहै फिरवह नानाप्रकारकेकणोंकोलेर के अपनेबोलमें संचयकरती जाती है उसकोस्थिरतावासन्तोषकभीनहींहोता वहकभीभाग्य औरपुरुषार्थसेमिश्रीकेढलेकोप्राप्तहोय उसकास्वादलेकेआनन्दितहोजातीहै फिरवहअपने घरऔरसंचयकोछोड़के उसीमेंनिवासकरतीहै उसकोखींचनेकासामर्थ्य नहीं सदाउसकोछोड़भीनहींसक्ती उत्तमपदार्थकेहोनेसेवैसेजीवभी परमेश्वरसेभिन्न पदार्थोंमें सदाभ्रमणकरताहै तृष्णाकेवसहोके परन्तु जबपरमेश्वरका उसकोयोगहोताहै तबसबतृष्णादिक दोषउसके नष्टहोजातेहैंफिरपूर्णकामऔरस्थिरहोकेपरमेश्वरहीमेंरहताहै सोमुक्तिमेंपरमेश्वरकाआधारउसकोहोनेसे सदापरमानन्दमुक्तिके सुखकोभोगताहै और निराधारसेविषयसुखवादुःखऔरमुक्तिकाआनन्दभी नहीभोगसक्ता इससे क्याआयाकिबिनास्थूलशरीरधारणसे पापवा पुण्यसंसारमें फलकभीनहीभोगसक्ताऔरपरमेश्वरकेआधारके बिनामुक्तिसुखभीनहीभोगसक्ता सोजोकहताहै किमनहीसेपाप वापुण्यभोगताहै वाएकहीजन्महोताहै यहबातउसकीमिथ्याजानो।प्रश्न वहमुक्तिप्राप्तजीवसदाबनारहताहै वाकभीवहभीनष्टहो जाताहै उत्तर इसकायहविचारहै किपरमेश्वरनेजबसृष्टिरचीहै किजबसंसारकाअत्यन्तप्रलयनहोगा तबभीवेमुक्तजीवआनन्दमेंरहेंगे औरजबअत्यन्त प्रलयहोगा तबकोईनरहेगा ब्रह्मका सामर्थ्य रूपऔरएकपरमेश्वरकेबिना सोअत्यन्तप्रलयतबहोगा किजब

सबजीवमुक्त होजांयगे बीचमें नहीं सो अत्यन्तप्रलय बहुतदूर है सं-भवमात्र होता है कि अत्यन्तप्रलयभी होगा बीचमें अनेकबार महा प्रलय होगा और उत्पत्तिभी होगी इससे सबसज्जनोंको अत्यन्तमुक्ति कीइच्छाकरनी चाहिए क्योंकि अन्यथा कुछसुख नहीं होगा जबतक मुक्ति जीवको नहीं होती तबतक जन्ममरणादिक दुःखसागरमें डूबा हीरहेगा और जो जल्दी मुक्तिकरलेगा सो अतुलआनन्दको पावेगा प्रश्न मुक्ति एक जन्ममें होती है वा अनेक जन्ममें उत्तर इसका नियम नहीं क्योंकि जबमुक्ति होनेका कर्मकरता है तभी उसकी मुक्ति होती है अन्यथा नहीं प्रथमसृष्टिमें भी कोई जीव पहिले ही जन्ममें मुक्त होगया होय इसमें कुछ आश्चर्य नहीं उसके पीछे भी कोई मुक्त भया होगा वा होता है और होवैगा सो बहुत जन्महीमें होगा मुक्त मोक्ष अत्यन्त पुरुषार्थमें होता है अन्यथा नहीं। भिद्यते हृदयग्रन्थि श्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः। क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे ॥ यह मुण्डकश्रुति है इसका यह अभिप्राय है कि हृदयग्रन्थि नाम अविद्यादिक दोष जब जिस जीवके नष्ट होजाते हैं तब विज्ञानके होने से सब संशय नष्ट होजाते हैं और जब संशय नष्ट होजाते हैं तब कर्मभी जीवके नष्ट होजाते हैं कि जीवको फिर कर्तव्य कुछ नहीं रहता मुक्ति होनेके पीछे सो कर्म तीनप्रकार का होता है एक क्रियमाण जो कि नित्य किया जाता है दूसरा सञ्चित जो कि बुद्धिमें संस्काररूपसूक्ष्म रहता है तीसरा प्रारब्ध जो नित्य भोग किया जाता है इस के तीन भेद हैं। सतिमूलेतद्विपाको जात्यायुर्भोगाः ॥ ८॥ पा० इसका यह अभिप्राय है कि कर्मों के फल तीन होते हैं जन्म आयु और भोग परन्तु जबतक कर्मों का मूल अविद्यादिक रहते हैं तबतक कर्मफल भोग भी रहता है सो भी जैसा कर्म वैसा जन्म आयु और भोग उसके अनुसार होते हैं जब जीव पुरुषार्थ से विद्या, धर्म और पातञ्जलशास्त्र की रीतिसे योगाभ्यास करता है तब उसको यथोक्त विज्ञान होता है तब मूलसहित कर्म छूट जाता है क्योंकि उसने मुक्ति के वास्ते सब कर्म किए थे जब मुक्ति होती है

तबउसको फिरकर्तव्यकुछनहीं रहता(प्रश्न) मुक्तिसमयमें जीवपर-
मेश्वरमेंमिलजाताहै जैसेजलमेंजलबा नहीं(उत्तर) जोजीवमिल-
जातातोउसकोमुक्तिकासुखकुछनहींहोता औरमुक्तिकेवास्तेजि-
तनेसाधन किएजातेहैं वेसबनिष्फलहोजांयगे औरमुक्ति क्याभई
किन्तुउसकानाशहीहोगया इससे यहबात मिथ्याहै किजीवब्रह्ममें
मिलजाताहै वहब्रह्मअर्थात्सबसेजोपरेहै औरजोकिअपनेस्वरूप
में व्याप्तहै जितनाउसकोयथावत्साक्षात्जाननेसे सबदुःखोंसेछूट
जाताहै जोभाग्यप्रारब्धऔरदैवकेभरोसेरहताहै औरआलस्यसे
कुछकर्मअच्छानहींकरता वहीजीवनष्टहै औरजोअत्यन्तपुरुषार्थ
केऊपरनिश्चयकरकेउद्यमकरताहै सोईजीवभाग्यशालीहै क्योंकि
पुरुषार्थहीसे मुक्तिहोतीहै औरयथावत विवेकके होनेसे हानिवा
लाभमें शोकवाहर्षरहितहोताहै वहपुरुषार्थी सर्वचसुखीरहता
है क्योंकिवहविद्यासेसबपदार्थोंकोयथावत्जानताहै सोसबसज्ज-
नोंकोयहीउचितहै किसदा पुरुषार्थहीकरना आलस्यकभीनहीं
पुरुषार्थइसकानामहै किजितेन्द्रियता,धर्मयुक्त व्यवहार,विद्या,
औरमुक्तिजिससे होय औरअन्यपुरुषार्थनहीं क्योंकिपुरुषकेअर्थजो
करताहै सोईपुरुषार्थकहाताहै औरजोअन्याययुक्त व्यवहारकर्ते
हैं उसकानामपुरुषार्थनहीं औरपरमेश्वरअत्यन्तदयालुहै जोजी-
वउसकोप्राप्तिकेहेतु तन,मनऔरधनसे श्रद्धापूर्वकपुरुषार्थ करता
है उसकोशीघ्रहीप्राप्तहोताहै कृपासेविद्यादिकपदार्थोंका उसके
पुरुषार्थकेअनुसारप्रकाशहोताहै फिरसदाआनन्दितमुक्तिमेंरह-
तेहैं सोसबपुरुषार्थोंकाफलमुक्तिहै इससे मुक्तिकोचाहना उक्तप्र-
कार से अवश्य सब कों करनी चाहिए यह विद्या अविद्याबन्ध
और मुक्ति के विषय में संक्षेप से लिखा और जो विस्तारसे दे-
खा चाहै सो वेदादिक सत्य शास्त्रों में देख लेवै इसके आगे
आचार अनाचार भक्ष्य और अभक्ष्य के विषय में लिखा जा-
यगा ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते नवमः समुल्लासः सम्पूर्णः॥ ९ ॥

अथआचारानाचारभक्ष्याभक्ष्यविषयंव्याख्यास्यामः॥ श्रुति-स्मृत्युदितंसम्यक् निबद्धंस्वेषुकर्मसु। धर्ममूलंनिषेवेत सदाचार-मतन्द्रितः॥१॥ म० श्रुतिजोवेदस्मृतिजोऋष्यादिक सत्यशास्त्र औरमनुस्मृति उनमेंजोसदाचारउसकोसदासेवनकरें औरजि-तनाअपनाअचारसोसबयुक्तिपूर्वककरें सत्पुरुषोंकेआचरणमेंवि-रुद्धनहीं सोसत्यभाषणादिकआचारधर्मकामूलहै इसकोसदाचा-रप्रमाणोंसेनिश्चयकरकेसदासेवनकरें सबपदार्थशुद्धरक्खें अशुद्ध एकभीनहीं जितनेश्रेष्ठगुणउनकेग्रहणकासदाआचाररक्खें स-त्पुरुषोंकेसंगमेंसदाप्रीति उनसविनयादिक व्यवहारोंकोग्रहण करें जितेन्द्रियता सदारक्खें इनसेविपरीतजोअनाचार उसको छोड़दे जिससेज्ञानवाधर्म तथाविद्याप्राप्तहोय उसकोसदामानैं उक्तप्रकारसेउसकोप्रसन्नरक्खें औरअधर्मीपाखण्डी उनकोकभी नमानैंऔरजितनोसत्क्रिया उनकोयथावत्करें सबप्रयत्नोंसेब्रह्म-चर्याश्रमसे विद्याग्रहणकरैं बाल्यावस्थामें विवाहकभीनकरैंऔर नानाप्रकारकेशल्पऔरपदार्थगुणोंसेरसायन विद्याद्वीपद्वीपान्तर मेंभ्रमण उनमनुष्योंकेअच्छे बुरेआचरणोंकीपरीक्षा औरअच्छे आचरणोंकाग्रहणकरैं औरबुरेकानहीं प्रश्न आर्यावर्त्तवासीलोग इसदेशकोछोड़के अन्यदेशमेंजानेमेंपापगिनतेहैं औरकहतेहैंकि पतितहोजातेहैंउत्तर यहबातमिथ्या है क्योंकिमनुस्मृतिमेंजहां जिसकेऊपर राजाकाकरलिखाहै सोजोसमुद्रपार द्वीपद्वीपान्तर मेंनजातेहोतेतोक्योंलिखते। समुद्रे नास्तिलक्षणम्। इत्यादिकव-चनमनुस्मृतिमेंलिखेहैं सोमहासमुद्रमें जबजहाजजाय तबकुछ

करकानियमनहीं किन्तुद्वीपद्वीपान्तरमेंजाकेव्यापारकरकेपदा-
र्थोंकोबेचकेऔरवहांसेपदार्थोंकोलेके इसदेशमेंआकेबेचे फिर
उनकोजितनालाभहोवे उसमेंसेपूर्वांहिस्साराजाले औरराजा
भीतीनप्रकारकेमार्गकोशुद्धिकरै एकस्थल,जल,औरवनउसमेंजल
केमार्गकेव्याख्यानमें जहाजोंकेऊपरचढ़के द्वीपद्वीपान्तरमेंजावैं
औरसमुद्रहीमेंजहाजोंपरबैठके युद्धकरैं यहक्योंलिखा औरमहा-
भारतमेंलिखीहै किश्रीकृष्णऔरअर्जुन जहाजमेंबैठके समुद्रमें
चलेगए वहांउद्दालकऋषिमिलेऋषिकोयज्ञमेंलेआए औरराजसूय
तथाअश्वमेधमेंसबद्वीपद्वीपान्तरके राजाओंकोयज्ञमेंलेआएथे सो
बिनाजहाजसेद्वीपद्वीपान्तरमेंकैसेजासक्ते औरसगरराजासबठिका
नेभ्रमणकरताथा बिनाजहाजोंसे समुद्रपारकैसेजासक्ता तथाअ-
र्जुन,भीम,नकुल,सहदेव,औरकर्ण सबद्वीपद्वीपान्तरमेंभ्रमणकर्ते
थे बिनाजहाजोंसेकैसेकरसक्ते तथाइक्ष्वाकुसेलेकेदशरथपर्यन्तद्वीप
द्वीपान्तरमें भ्रमण करतेथे सोजहाजोंहीमेंकर्तेथेऔररामभीस-
मुद्रकेपारलंकामेंगएथेसोभीतोएकद्वीपहै इत्यादिकमनुस्मृतिऔर
महाभारतादिक इतिहासोंमेंलिखाहै औरयुक्तिसेबिचारकरके
देखेंतोयहीआताहैकिदेशदेशान्तर औरद्वीपद्वीपान्तरमें जाना
अच्छाहै क्योंकिअनेकप्रकारकेपदार्थप्राप्तहोंगे अनेकप्रकारकेम-
नुष्योंसेसमागमहोगा उनकाव्यवहार भाषागुणऔरदोष बिदित
होतेहैं औरउत्तम२पदार्थोंकोइसदेशमेंलेजानेऔरलेआनेसेब-
हुतलाभहोताहैतथानिर्भयऔरशूर,वीरपुरुषहोनेलगतेहैं यहतो
बड़ाएकअच्छा आचारहै औरजोअपनेहीदेशमेंरहतेहैं औरदेश
मेंजानेसे उनकास्पर्शकरनेमें छूतमानतेहैं वेबिचाररहितपुरुषहैं
देखनाचाहिएकि मुसल्मानवाअंगरेजसे छूनेमेंदोषमानतेहैं और
मुसल्मानोंवाअंगरेजकेदेशकोस्त्रीसेसंगकरतेहैं औरअपनेपासघ-
रमेंरखलेतेहैं उसमें कुछभेदनहींरहता यहबड़ेअन्धकारकीबात
है किमुसल्मानऔरअंगरेज जोभलेआदमी उनसेतोछूतगिनना

औरवैश्यादिकोंमें नहींछूतमानना यहकेवलयुक्तिशून्यबातहैऔर जोउनसेछूतहोमानतेहैं किइनसेशरीरनलगे नवस्त्रस्पर्शहोय इ-सीबातसेतोआर्यावर्त्तदेशकानाशभयाहै क्योंकिएतोआर्यावर्तवा-सी उनकेछूनकेडरसे दूर२भागतेरहतेहैं औरवेसुखसे राज्यसब लेलेतेहैं औरहृदयसेसदाद्वेषहोनेसे अन्यथाबुद्धिरखतेहैं इस्सेपर-स्परसबदुःखपातेहैं यहसबअनाचारहै आचारइसकानामहै कि राग,द्वेषादिकदोषोंकोहृदयसेछोड़देना औरसज्जनताप्रीत्यादि-कोंकोधारणकरलेना यहीआचारपहिलेमनुष्योंकाथा किअम-रिकाकोकन्याअर्जुनसेविवाहीगईथी जोकिनागकन्याकरकेलिखी है फिरऐसीबातजोकहतेहैं किद्वीपद्वीपान्तरमेंजानेमे जातिपतित औरनष्टधर्महोजाय यहबातमिथ्याहै क्योंकिछूतऔरदेशदेशान्त-रमेंनजाना यहबातआर्यावर्तमें जैनोंकेराज्यसेचलीहै पहिलेन-थी क्योंकिजैनबड़ेभीरुहोतेहैं औरछोटे२जीवोंकेऊपर दयारख-तेहैं इसीसे मुखकेऊपर कपड़ाबांधलेतेहैं सोचलने फिरनेमें भी दोषगिनतेहैं फिरजहाजोंमेंबैठकेद्वीपद्वीपान्तरमेंजानाइसमें हिं-साक्योंनहीगिनेंगेऔरब्राह्मणतथासम्प्रदायीलोगइन्होंनेअपनेमत लबकेहेतुसबजालफैलारक्खेहैं क्योंकिअपनाचेलावायजमानद्वीप द्वीपान्तरमेंजायगा तोजीविकाकीहानि होजायगी देशदेशान्तर औरद्वीपद्वीपान्तरमेंजानेसेकोईबुद्धिमानकाअवश्यसमागमहोगा उस्से सत्यअसत्यकाउसकोबोधभीहोगा फिरउसकेसामनेहमारा जालनहींचलेगा औरनित्यशनैश्चरादिग्रहकेनामसे तथाभूतप्रे-तादिकनामसे तथामन्दिरादिकोंमेंआनेजानेसे शिवनारायण दु-र्गादिकेनामसुनानेसे उनकोडराकेलाखहांरुपएछल,कपटसेनि-त्यलियाकरतेहैं सोवहद्वीपद्वीपान्तरमेंचलाजायगा बहुतकालमें आनाहोगा तबतकउनको आजीविकाबन्दहोजातीहै क्योंकिवह उनकेसामनेहीनहीरहेगाफिरउस्सेकोईक्यालेगाफिरभीएकप्रा-यश्चितकाडरलगादियाहैजोकोईजाकेआवैउसकेऊपरबड़े बखेड़े

लगादेतेहैं क्योंकिउसकोदुर्दशादेखके कोईआनेकोइच्छा करता
होय वहभीडरकेनआय इसहेतुकिहमारोआजीविकासदाबनीर-
है यहकेवलउनकीमूर्खताहै क्योंकिवहधनाढ्यवाराजाभी दरिद्र
बनजायगा ऐसेथोरे २ सबदरिद्र औरमूर्खबनजांयगे फिरउनसे
आजीविकाभीकिसीकीनहोगीपरन्तुवेऐसाविचारनहीकरतेक्यों-
किअपनेमतलबमेंफसेहैं औरविद्याभीनहीं इससे कुछनहीं जानस-
क्ते परन्तु सज्जनलोग इसबातको मिथ्याहीजानैं औरकभी देश
देशान्तरवाद्वीपद्वीपान्तरकेजानेमें भ्रमनकरैं क्योंकिजबमनुष्यमि-
थ्याभाषणादिकअनाचारकरेगा तबसर्वत्रअनाचारीहोगा और
जोसत्यभाषणादिकआचारकरेगा वहकभीकिसीदेशमेंअनाचारी
नहीहोताऔरजोऐसाजानतेहैं किबहुतनहाना औरहाथोंकोम-
लना आचारजानतेहैं यहभीबातअयुक्तहै क्योंकिउतनाही शौच
करनाउचितहै किजितनेसेहस्त,पाद,शरीरऔरवस्त्रदुर्गन्धयुक्तन
रहै इससे अधिककरनासोअनाचारहै किन्तुजिससे सबपदार्थगृह
पात्रऔरअन्नादिकशुद्धरहैं उतनाशौचकरना सबकोउचितहै अ-
धिकनहीं अधिकआचारसद्गुणग्रहणमें सदारक्खै औरविद्याकेप्र-
चारकाआचारसदारक्खै इसकानामआचारहै सोईमनुस्मृत्या-
दिकोंमेंलिखाहै औरभक्ष्याभक्ष्य दोप्रकारकेहोतेहैं एकतोवैद्यक
शास्त्रकीरीतिसे औरदूसराधर्मशास्त्रकीरीतिसे सोवैद्यक शास्त्रकी
रीतिसे देश,काल,वस्तु औरअपनेशरीरकीप्रकृति उनसेअनुकूल
विचारकरके भक्षणकरनाचाहिए अन्यथानहीं जिससे बल,बुद्धि,
पराक्रमऔरशरीरमें नैरोग्यबढ़ै वैसापदार्थभक्ष्यहै सोईउक्तवैद्य-
कसुश्रुत शास्त्रमेंलिखाहै । औरअभक्ष्योग्राम्यशूकरोऽभक्ष्योग्रा-
म्यकुक्कुटः । इत्यादिकधर्मशास्त्रसे अभक्ष्यका निर्णयकरना क्योंकि
सूअरगांवकाऔरमुर्गाप्रायः मलहीखाताहै उसीकापरिणाममां-
सहोगा उसकेखानेसेदुर्गन्धशरीरमेंहोगा उससे रोगोत्पत्तिकासं-
भवहै औरचित्तभी अप्रसन्नहोजायगा वैसाहीधर्मशास्त्रकी रीति

सेमद्यअभक्ष्य तथाजितनेमनुष्योंकेउपकारक पशुउनकामांसअ-
भक्ष्यतथाबिनाहोमसे अन्नऔरमांसभीअभक्ष्यहै प्रश्न एकजीवको
मारके अग्निमेंजलाना औरफिरखाना यहकुछअच्छीबातनहीं
औरजीवकोपीड़ादेना किसीकोअच्छानहीं उत्तर इसमें क्याकुछ
पापहोताहै प्रश्न पापहीहोताहै क्योंकिजीवोंकोपीड़ादेके अपना
पेटभरना यहधर्मात्माओंकीरीतिनहीं उत्तर अच्छाएकजीवको
मारनेमेंपीड़ाहोतीहै सोमवव्यवहारोंकोछोड़देनाचाहिए क्यों-
किनचकीचेष्टासेभी सूक्ष्मदेहवाले जीवोंकोपीड़ा अवश्यहोतीहै
औरतुम्हारेघरमें कोईमनुष्यचोरीकरै तोतुमलोगभीअवश्यउस-
कोपीड़ादे ओगेऔरमक्खीआदिक भोजनकेऊपरसे उड़ादेतेहो
इसमेंभीउसकोपीड़ाहोतीहै औरजोकुछतुमखातेपीतेचलतेफि-
रतेऔरबैठतेंहो इसव्यवहारसेभीबहुतजीवोंकोपीड़ाहोतीहै इ-
ससे तुम्हाराकहनाव्यर्थहै किकिसीजीवकोपीड़ानदेना प्रश्न जिसमें
प्रत्यक्ष पीड़ाहोतीहै हमलोगउसमेंपापगिनतेहैं अप्रत्यक्षमेंकभी
नहीं क्योंकिअप्रत्यक्षमेंपापगिनें तोहमाराव्यवहारनबनें उत्तर
ऐसेहीआपलोगजानें किजहांअपनामतलबहोय वहांतोपापन-
हींगिनतेहो यहबातयुक्तिसेविरुद्धहै/औरकोईभीमांसनखाय तो
जानवर,पक्षी,मत्स्यऔरजलजन्तुइतनेहैं उनसेशतसहस्रगुनेहो
जांय फिरमनुष्योंकोमारनेलगें औरखेतोंमें धान्यहीनहोनेपावै
फिरसबमनुष्योंको आजीविकानष्टहोनेसे सबमनुष्य नष्टहोजाय
औरव्याघ्रादिकमांसाहारीजीवभी उनमृगादिकोंकाभक्षणकरतेहैं
औरगायआदिकोंकोभीपरन्तु मनुष्यलोगोंकोयहचाहिए किगाय
बैल,भैंसी,छेड़ी,भेंड़ औरऊंटआदिकपशुओंकोकभीनमारें क्यों-
किइन्होंसे सबमनुष्योंकी आजीविका चलतीहै जितनेदुग्धादिक
पदार्थहोतेहैं वेसबउत्तमहोहोतेहैं औरएकपशुसेबहुतआजीवि-
कामनुष्योंकोहोतीहै मारनेसेजहांसोमनुष्यतृप्तिहोतेहैं उसगाय
आदिकपशुओंकेबोचमेंसेएकगायकीरक्षासेदसहजारमनुष्योंको

रक्खाहै सक्तीहै इससे इनपशुओंकोकभीनमारनाचाहिए प्रश्न इन पशुओंके नहीमारनेसे इनकेबहुतहोनेसे सबपृथिवी भरजायगी फिरभीतोमनुष्योंको हानिहोनेलगैगी उत्तर ऐसानकहनाचाहिए क्योंकिव्याघ्रादिक जीवउनकोमारैगें औरकितनेरोगोंसेभी मरेंगे इससे अत्यन्तनहीहोनेपावेंगेऔरमनुष्योंकेमारनेसेघृतादिकपदार्थऔरपशुओंकीउत्पत्तिभी नष्टहोजातीहैइससे जहांरगोमेधादिकलिखेहैं वहां२पशुओंमेंनरोंकोमारनालिखाहै इससे इस-अभिप्रायसे नरमेधलिखाहै मनुष्यनरकोमारनाकहींनहींक्यों-किजैसोपुष्टि बैलादिकनरोंमेहै वैसीस्त्रियोंमेंनहींहै(औरएकबैलसेहजारहांगैया गर्भवतीहोतीहैं इससे हानि भीनहींहोती)सोई लिखाहै ॥ गौरनुबन्ध्योऽअग्नीषोमीयः । यहब्राह्मणकीश्रुतिहै इस-मेंपुल्लिङ्गनिर्देशसे यहजाना जाताहै किबैल आदिक कोमारना गैयाको नहीं सो भी गोमेधादिक यज्ञों में अन्यत्र नहीं क्योंकि बैल आदिसे भी मनुष्योंका बहुत उपकार होताहै इससे इनकी भीरक्षा करनी चाहिए(औरजोबन्ध्यागायहोतीहै उसकोभीगोमेधमें मारनालिखा है ॥ स्थूलपृषतीमाग्निवारुणीमनड्वाहीमालभेत । यहब्राह्मणकीश्रुतिहै इसमेंस्त्रीलिंगऔरस्थूलपृषतो विशेषणसेबन्ध्यागायलीजातीहै(क्योंकिबन्ध्यासेदुग्धऔरबछड़ादिकोंकी उत्पत्तिहोतीनहीं)औरजोमांसनखायसोघृतदुग्धादिकोंसे निर्वाहकरे क्योंकिघृत दुग्धादिकोंसभी बहुतपुष्टि होतीहै सोजोमांस खायअथवाघृतादिकोंसे निर्वाहकरै वेभीसबअग्निमेंहोमकेबिना नखांय क्योंकिजीवकोमारनेकेसमयपीड़ाहोतीहै उससेकुछपाप भीहोताहै फिरजबअग्निमेंवेहोमकरेंगेतबपरमाणुसेउक्तप्रकार सबजीवोंको सुखपहुंचेगा एकजीवको पीड़ासेपापभयाथा सोभी थोड़ा सा गिना जायगा अन्यथा नहीं/प्रश्न सखरी निखरी अ-र्थात् कच्चा पक्का अन्न और इसके हाथ का भोजन करना इस-के हाथ का खाना और इसके हाथ का न खाना यह बात कै-

भीहै उत्तर इसका यह विचार है भ्रष्टाचार से बनावें अन्नादिकोंका यथावत् संस्कार नजानै तथाविधि नजाने उसका भक्षण नकरना चाहिए क्योंकि उस्से रोगहोतेहैं औरबुद्धिभी मलिनहो जातीहै सखरा औरनिखरा यह मनुष्योंका मिथ्याकल्पनाहै क्योंकि जो अग्निमेंपकायाजाताहै वहसबपक्काहोगिनाजाताहै औरशूद्र ही पाककरनेवाला होनाचाहिए परन्तु वहशूद्र अपने जिसद्विजके घरमेंरहै उसीकेघरकेअन्न औरउसीकेघरकेपात्रोंमें पवित्रहोके बनावे उसकेहाथसे बनेंहुएको सबखांय तोभीकुछ दोषनहीं ॥ नित्यंशुद्धःकारुहस्तः सर्वेवार्थसुत्पन्नः । एतेषामेवर्णानां शुश्रूषामनुसूयया इत्यादिकमनुस्मृतिमें लिखाहै सेवामें बड़ीसेवारसोईकाबनानाहै क्योंकि रसोईके बनानेमेंबड़ा परीश्रमहोताहै और कालभीबहुत जाताहै इस्से रसोईआदिकसेवाका शूद्रहीको अधिकारहै जोब्राह्मण, क्षत्रियऔरवैश्यहैं वेतोविद्यादिकप्रचार प्रजाकाधर्मसेरक्षणव्यापार औरनानाप्रकारकेशिल्प इनकीउन्नतिही मेंपुरुषार्थकरैं क्योंकिजोबुद्धि औरविद्यायुक्तहैं उनकोसेवाकरना उचितनहीं रसोईआदिक जोसेवासो मूर्खपुरुष जोशूद्र उसीका अधिकारहै क्योंकिअग्निकेसामनबैठना लपटेंसांजना अन्नकोशुद्धिकरना नानाप्रकारकेपदार्थबनाना इसमेंबड़ापरिश्रमऔरकाल जाताहै इसकामकेकरनेसेविद्वानकीविद्यानष्टहोजाय इस्से यह कामशूद्रहीकाहै सोमहाभारतमेंलिखाहै किजबराजसूयऔरअश्वमेध युधिष्ठिरादिकराजालोगोंकेयज्ञभएथे उनमेंसबद्वीपद्वीपान्तरऔरदेशदेशान्तरोंके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तथाशूद्रराजाऔरप्रजाआएथेउनकोएकहीपंक्तिहोतीथी औरशूद्रनामशूद्रहीपाक करनेवाले औरपरोसनेवालेथे एकपंक्तिमेंसबकेसाथ सबभोजन कर्तेथे तथाकुरुक्षेत्रकेयुद्धमें जूते, वस्त्र, शस्त्र, औररथकेऊपर बैठे भएभोजनकर्तेथे औरयुद्धभीकर्तेजातेथे कुछशंका उनकोनथी तभी उनकाविजयहोताथा औरआनन्दसेराज्यकर्तेथे औरजोभोजन

मेंबड़े बखेड़े कर्तेहैं वेभूखकेमारेमरजांयगे युद्धक्याकरसकेंगे अब
भोजनमथुरादिकोंकेक्षत्रियलोग नापितादिकोंकेहाथकाभोजनक-
रतेहैं सोबातसनातनहै औरबहुतअच्छीहै तथासारस्वत और
खत्रीलोगोंकाएकहीभोजनहै सोअच्छीबातहै औरगौड़तथाअग-
रवालेबनियोंकाभीएकभोजनप्रायःहै सोभीअच्छीबातहै औरगु-
जराती,महाराष्ट्र,तैलंग,द्राविड़तथाकरनाटक इनमेंभोजनकेब-
ड़ेबखेड़ेहैं इनपांचोंमेंसेगुजरातीलोगोंकेभोजनका बड़ापाखण्ड
है क्योंकिमहाराष्ट्रादिकचारोंद्रविड़ोंकातोएकभोजनहै औरगुज-
रातीलोगोंकाआपसमेंबड़ाभेदहै सबसेभोजनमेंपाखण्डकान्या
कुब्जकाअधिकहै क्योंकिवेजलभीपीतेहैं तोजूतेउतारकेहाथ,पैर
धोकेपीतेहैं तबचौकादेके चनाचबातेहैं सोबड़ेदुःखपातेहैं और
चौकाबरतनहीहाथमेंरहगए औरकुछनहीं औरसर्जूपारीमेंभी
बहुतभोजनमेंपाखण्डहै यहकेवलमिथ्यापाखण्डघाकरसरचलाते
हैं औरसबसेपाखण्डभोजन चक्रांकितादिकबैरागिओंकाअत्यन्त
है ऐसाकोईकानहीं क्योंकिजबजगन्नाथकेदर्शनकोजातेहैं तबचा-
ण्डालादिकोंकाजूठखालेतेहैं फिरअपनीपंक्तिमेंमिलजातेहैं उनका
मिथ्यापाखण्डभीनहींरहा औरहलवाईकेदूकानकादूधदहीऔर
मिष्टान्नादिकखातेहैं वहसबकाउच्छिष्टजानों औरमलिनक्रियासे
भीहोतेहैं तथाबोभीलोग मुसल्मान और अमीरादिकहोतेहैं वे
अपनेघड़ेकाजूठा जलमिलातेहैं फिरउसको सबखातेपीतेहैं और
जानतेभीहैं सोसत्यबातहोकानिर्वाहहोताहै झूंठकाकभीनहींरा-
जादिकधनाढ्य वेश्यादिकोंकोघरमेंरखलेतेहैं उनसेकुछभेदनहीं
रहता उनकोकोईनहींकहता क्योंकिकहेंतबजबकिवेनिर्दोषहोय
सोपरस्परदोषोंको छिपातेजातेहैं औरगुणोंकोछोड़तेजातेहैं यह
सबअनाचारहै औरसत्यभाषणादिकोंका आचरणकरना उसी
कानामअचार युधिष्ठिरकेसाथ बहुतऋषि,मुनि,ब्राह्मण लोगथे
वेसबसूदनाम शूद्रपाककर्तेथे और द्रौपद्यादिक परोसतेथे वेसब

खातेथे सोखानेपीनेसे किसीकाधर्मभ्रष्टनहींहोताहै औरनकोई
पतितहोताहै क्योंकिखानापीनाऔरधर्मकाकुछसम्बन्धनहीं धर्म
जोअहिंसादिकलक्षणसोबुद्धिस्थहै खानापीनाव्यवहारसेबाह्यहै
परन्तु शुद्धपदार्थकाखाना पीनाचाहिए किजिस्से शरीरमेंरोगा-
दिकनहोंय औरजगतकाअनुपकार भीनहोय मद्य,भांग,गांजा,
अफीम,औरजितनेनशेहैं वेसबअभक्ष्यहैं क्योंकिजितनेनशेहैं वेस-
बबुद्ध्यादिकोंकेनाशकरनेवालेहैं इस्सेइनकाग्रहणकभीनकरनाचा-
हिए क्योंकिजितनेनशेहोतेहैं वेबिनागरमीसे नहींहोते फिरग-
र्मीसेसबधातुऔरप्राणतप्तहोजातेहैं औरविषमउनकेसंगसे बुद्धि
तप्तऔरविषमहोजातीहै इस्से नशाकाकरनासबकोवर्जितहै पर-
न्तुऔषधकेहेतु किरोगनिवृत्तिहोताहोय तोचौगुणाजलऔरएक
गुणमद्यग्रहणलिखाहै सुश्रुतादिकवैद्यकशास्त्रमें क्योंकिरोगनि-
वृत्तिकेहेतुअभक्ष्यभीभक्ष्यहोजाताहै औरजिनपशुओंके बछड़े को
दूधनहींदेते औरसबअपनेहीदुहलेतेहैं यहभीअनाचारहै क्योंकि
पशुपुष्ट कभीनहींहोते फिरपुष्टिकेबिना दुग्धादिकथोड़े होतेहैं
औरपशुभीबलहीनहोतेहैं सोएकमासभरजितनावहपीए उतना
देनाचाहिए फिरएकस्तनकादूधदुहले औरसबबछड़ापीए फिर
दोमासकेपीछे जबबहबछिया घास,पात,खानेलगे तबआधादूध
सबदिनछोड़दे औरआधादुहले तोपशुभीपुष्टहोवैं औरदुग्धादि-
कभीबहुतहोवैं फिरउनदुग्धादिकोंसे मनुष्यादिकोंकोपुष्टिभीहु-
आकरै इस्से खानेऔरपीनेमें धर्ममानतेहैं वाधर्मकानाशवेबुद्धि
हीनमनुष्यहैं ऐसातोहैकिसत्यधर्म व्यवहारसेपदार्थोंकोप्राप्तहोय
उनसेखानापीनाकरैतोपुण्यहै औरचोरीतथाछल,कपट,व्यवहा-
रसेखानापीनाकरै तोअवश्यपापहोताहै सोखानपीनेमें जितने
भेदहैं वेविरोधदुःखऔरमूर्खताकेकारणहैं इनबखेड़ोंसेआर्यावर्त
मेंपुरुषऔरस्त्रीलोग विद्या,बल,बुद्धि,पराक्रम,हीनहोगएहैं प्रथम
देशदेशान्तरोंमेंसबवर्णोंमें विवाहआदीहोतोथीपूर्वोक्तवर्णानुक्र-

ममें फिर भोजन में कैसे भेद होगा यह भेद थोड़े दिनसे चला है कि
जबसे नानाप्रकार के मतमतान्तर चले और मनुष्यकी बुद्धिमें परस्पर
विरोध होनेसे प्रीति नष्ट होगई वैर होगया इस से कोई किसीके उप
कारमें चित नहीं देता और अपने देशके मनुष्यों के उपकार के हेतु
कोई प्रवृत्त नहीं होता किन्तु अपने२ मतलब में रहते हैं सो सबका नाश
होता जाता है यह बड़ा अनाचार है और तथा विचार से शुद्ध पदार्थके
खानेसे किसीका परलोक वा धर्म बिगड़ता नहीं परन्तु विद्या और
विचार के नहीं होनेसे इन बखेड़े में मनुष्य लोग पड़के सदा दुःख रह-
ते हैं और जो परस्पर गुणग्रहण करें तो सुखी होजांय और देखना चा-
हिए कि समय के ऊपर भोजन नहीं प्राप्त होता है भोजन के पात्रों को
उठाके लादे फिरते हैं वैलों की नांई दरिद्र लोग और धनाढ्य लोग ब-
हुत रसोंईदार आदिक साथ में रहते हैं उस से मिथ्या धन बहुत खर्च
होजाता है इत्यादिक सब व्यवहार बुद्धिमान लोग विचार लें युक्त२
व्यवहार करें अयुक्त कभी नहीं एदशसमुल्लास में शिक्षा के विषय में लि-
खे (इसके आगे आर्यावर्त वासी मनुष्य जैन मुसल्मान और अंगरेजों
के आचार अनाचार सत्यासत्य मतमतान्तर के खण्डन और मण्डन
के विषय में लिखेंगे इनमें से प्रथम समुल्लास में आर्यावर्त वासी मनु
ष्यों के मतमतान्तर के खण्डन और मण्डन के विषय में लिखा जायगा
(दूसरे समुल्लास में जैनमत के खण्डन और मण्डन के विषय में लिखा
जायगा तीसरे में मुसल्मानों के मत के विषय में खण्डन और मण्डन
लिखेंगे और चौथे में अंगरेजों के मत में खण्डन और मण्डन के विषय
में लिखा जायगा सो जो देखा चाहे खण्डन और मण्डन की युक्ति उन
चारों समुल्लासों में देख ले) दस समुल्लास तक खण्डन वा मण्डन नहीं
लिखा क्योंकि जब तक बुद्धि मनुष्यों की सत्यासत्य विवेक युक्त नहीं हो-
तो तब तक सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग करने में समर्थ नहीं
होते इस हेतु ग्रन्थ के पूर्व भाग में सत्य२ मनुष्यों के हित के हेतु शिक्षा लि-
खी और इस ग्रन्थ के उत्तर भाग में सत्य मत का मण्डन और असत्यम-

नकाखण्डनलिखेंगे संस्कृतमें रचनाकरतेतो सबमनुष्योंकेसम-झमें नहींआता इसहेतुभाषामें कियागया इसग्रन्थको दुराग्रह हठऔरईर्ष्याकोछोड़के यथावत्विचारेगा उसकोसत्य२ पदार्थों केप्रकाशसेअत्यन्तआनन्दहोगा और अन्यथाइसग्रन्थका अभिप्राय भीमालूमनहींहोगा इसहेतुसज्जनलोगोंकोयहउचितहै किइस-कायथावतअभिप्रायविचारकेभूषणवादूषणकरें अन्यथानहींऔर मूर्खतथादुराग्रहीपुरुषके कहेदूषणमाननेकेयोग्यनहीं ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते दशमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ १० ॥

सत्यार्थ प्रकाशस्य प्रथमभागः समाप्तः ॥

———ooo———

अथार्यावर्त्तवासिमतखण्डनमण्डनेविधास्यामः ॥ सरस्वतीदृ-षद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम् । तंदेवनिर्मितंदेश मार्यावर्त्तं प्रचक्षते ॥ १ ॥ म॰ सरस्वतीजोकिगुजरातऔरपंजाबके पश्चिमभागमेंनदी है उससेलेकेनैपालके पूर्वभागकीनदीसेलेके समुद्रतकइननदीयोंके बीचमेंजोदेशहै सोआर्यावर्त्तदेशहै औरवेदेवनदी कहातीहैं अ-र्थातदिव्यदेशके प्रांतभागमेंहोनेसेदे वनदीइनका नामहैं सोदेश देवनिर्मितहै अर्थातदिव्यगुणोंसेरचितहै क्योंकिभूगोलके बीचमें ऐसाश्रेष्ठदेशकोईनहींहै जिसदेशमेंसबश्रेष्ठ उपदार्थ होतेहैं और ऋतुऋतुयथावत् वर्त्तमानहोतेहैं औरकेवलसुवर्णरत्नपैदाहोतेहैं इस देशमें जिसकाराज्यहोताहै वहदरिद्रहोयतोभीधनसंपूर्णहो जाताहै इसीहेतुइसकानामआर्यावर्त्त है आर्य नामश्रेष्ठमनुष्य औरश्रेष्ठपदार्थइनसेयुक्त अर्थातआवर्त्तहै इसहेतुइसदेशकानाम

आर्यावर्त कहते हैं ॥ १ ॥ (एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः । स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥ २ ॥ म०) इस देश में अग्रजन्मा नाम सब श्रेष्ठगुणों से सम्पन्न जो पुरुष उत्पन्न होवै उस से सब भूगोल की पृथिवी के मनुष्य शिक्षा अर्थात् विद्या तथा संसार के सब व्यवहारों का यथावत् विज्ञान करैं इस से क्या जाना जाता है कि प्रथम इस में मनुष्यों की सृष्टि भई थी पीछे सब द्वीपद्वीपान्तर में सब मनुष्य फैल गए क्यों कि पृथिवी में जितने मनुष्य हैं वे इस देश वालों से विद्यादिक शिक्षा ग्रहण करैं और सब देशभाषाओं का मूल जो संस्कृत सो आर्यावर्त्त ही में सदा से चला आता है आज काल भी कुछ २ देखने में आता है परन्तु फिर भी सब देशों से संस्कृत का प्रचार अधिक है जर्मनी और बिलायत आदिक देशों में संस्कृत के पुस्तक इतने नहीं मिलते जितने कि आर्यावर्त्त देश में मिलते हैं और जो किसी देश में संस्कृत के बहुत पुस्तक होंगे सो आर्यावर्त्त ही से लिए होंगे इस में कुछ सन्देह नहीं सो इस देश से मिश्र देश वालों ने पहिले विद्या ग्रहण की थी उस से यूनान देश, उस से रूम फिर रूम से फिरंगस्थान आदि में विद्या फैली है परन्तु संस्कृत के बिगड़ने से गिरीक लाटीन अंगरेज और अरब देश वालों की भाषा बन गई हैं सो इन में अधिक लिखना कुछ आवश्यक नहीं क्यों कि इतिहासों के पढ़ने वाले सब जानते हैं और पता भी ऐसा ही मिलता है एक गोलडुसटकर साहिब ने पहिले ऐसा ही निश्चय किया है कि जितनी विद्या वा मत फैले हैं भूगोल में वे सब आर्यावर्त्त ही से लिए हैं और काशी में बालेरटेन साहिब ने यही निश्चय किया है कि संस्कृत सब भाषाओं की माता है तथा दाराशिको हवादशाह ने भी यह निश्चय किया है कि जो विद्या है सो संस्कृत ही है क्यों कि मैं ने सब देशों की भाषाओं की पुस्तक देखा तो भी मुझ को बहुत सन्देह रह गए परन्तु जब मैंने संस्कृत देखा तब मेरे सब सन्देह निवृत्त हो गए और अत्यन्त प्रसन्नता मुझ को भई और काशी में मानमन्दिर जो रचा है उस में महाराज सवाई मानसिंह जी ने खगोल के कला और यन्त्र ऐसे रचे हैं कि जिस में खगोल

कासबहालदेखपड़ताथा परन्तु आजकालउसकी मरम्मतनहोने से बहुतकलायन्त्रबिगड़गए हैं तोभीकुछ२देखपड़ताहै फिरआज कालमहाराज सवाईरामसिंहजीने कुछमरम्मतस्थानकीकराईहै जोउसयन्त्रकोभीकरावेंगेतोकुछरोजबनारहेगाअन्यथानहींजबसे महाभारतयुद्धभयाउसदिनसेआर्यावर्त्तकोबुरीदशाआईहै सोनि- त्य२बुरीहीदशाहोतोजातीहै क्योंकिउसयुद्धमें अच्छे२विद्यावान राजाऔरब्राह्मणलोगप्राय:मारेगए फिरकोईराजापूर्णविद्यावा- ला इसदेशमें नहींभया जबराजाविद्वान औरधर्मात्मानहींभया तबविद्याकाप्रचारभीनष्टहोताचला फिरकुछदिनकेपीछेआपसमें लड़नेलगे क्योंकिजबविद्यानहींहोतो तबऐसेहीबहुतप्रमादहोते हैं जोकोईप्रबलभया उसनेनिर्बलकाराजछीनकेउसकोमाराफिर प्रजामेंभीगदरहोनेलगा किजहांजिसने जितनापाया उसकावह राजावाजमींदारबनबैठा फिरब्राह्मणलोगोंनेभी विद्याकापरीश्र- मछोड़दिया पढ़नापढ़ानाभीनष्टहोताचला जबब्राह्मणलोगविद्या होनहोतेचले तबक्षत्रिय,वैश्य,शूद्रभीविद्याहीनहोतेचले केवल दम्भ,कपटऔरछलहीसेव्यवहारकरनेलगे फिरजितनेअच्छे का- महोतेथेवेसबबन्धहोतेचले वेदादिकविद्याकाप्रचारभीबहुतथो- ड़ाहोताचला फिरब्राह्मणलोगोंनेबिचारकिया किआजीविकाकी रीतिनिकालनीचाहिए सोसम्मतिकरकेयहीबिचारकिया किब्रा- ह्मणवर्णमें जोउत्पन्नहोताहै सोईदेवहैसबकापूज्यहै क्योंकिपूर्ण विद्यासे ब्राह्मणवर्णहोताहै यहवर्णाश्रमकोसनातनरीतिहै सोई ऋषिमुनियोंकेपुस्तकोंमेंभीलिखीहै(सोविद्यादिकगुणोंसेतोवर्णव्य- वस्थानहींरक्खीकिन्तुकुलमेंजन्महोनेसेवर्णव्यवस्थाप्रसिद्धकरदिया है फिरजन्महीसेब्राह्मणादिकवर्णोंकाअभिमानकरनेलगे) फिरवि- द्यादिकगुणोंमेंपुरुषार्थसबकाछूटाउसकेछूटनेसेप्राय:राजाऔरप्र- जामें मूर्खताअधिक२होनेलगी फिरउन्हसेब्राह्मणलोगअपने चर णऔरशरीरकीपूजाकरानेलगेजबपूजाहोनेलगीतबअत्यन्तअभि-

मानउनमें होनेलगा उनविद्याहीनराजाओंको और प्रजास्थपुरुषोंकोबशीभूत ब्राह्मणोंनेकरलिए यहांतककि सोना, उठनाऔर कोसदोकोसतकजाना वहभोब्राह्मणोंकीआज्ञाकेबिनानहींकरना और जाकोईकरेगा सोपापोहोजायगा फिरग्रहनैश्चर्यादिकग्रहऔरनानाप्रकारके भूतप्रेतादिकोंकाजाल उनकेऊपर फैलानेलगे और बेमूर्खताकेहोनेसे माननेभीलगें फिरराजा लोगोंको ऐसा निश्चयसबलोगोंनेमिलकेकराया किब्राह्मणलोगकुछभीकरैं परन्तु इनकोदण्डनदेनाचाहिए जबदण्डनहोहोनेलगा तबब्राह्मणलोग अत्यन्तप्रमादकरनेलगे औरक्षत्रियादिकभी फिरबड़े२ ऋषिमुनिऔरब्रह्मादिककेनामोंसे स्लोकऔरग्रन्थरचनेलगे उनमेंप्रायः यहीबातलिखी किब्राह्मणसबकापूज्यऔरसदाअदण्ड्यहै फिरअत्यन्तप्रमादऔरविषयासक्तिसे विद्या, बल, बुद्धि, पराक्रम औरशूरबीरतानष्टहोगई औरपरस्पर ईर्ष्याअत्यन्तहोगई किसीको कोई देखनसकै औरकोई२कासहायकारीनरहे परस्परलड़नेलगें यह बातचीनआदिकदेशोंमेंरहनेवाले। जैनोंनेसुनीऔरव्यापारादिककरनेके हेतुइसदेशमें आतेथें सोप्रत्यक्षभी देखोफिर जैनोंने बिचारकिया किइससमयआर्य्यावर्त्त देशमें राज्यसुगमतासेहोसक्ताहै फिरबेआएऔरराज्यभी आर्य्यावर्त्तमेंकरनेलगे फिरथोरे२बोधगयामेंराज्यजमाके औरदेशदेशान्तरमेंफैलानेलगे सो वेदादिकसंस्कृत पुस्तकोंकीनिन्दा करनेलगे औरअपनेपुस्तकोंके पठनपाठनकाप्रचार तथाअपनेमतकाउपदेशभीकरनेलगे सोइसदेशमेंविद्याकेनहोंहोनेसे बहुतमनुष्योंनेउनके मतकास्वीकार करलिया परन्तु कनौजकाशी पर्वतदक्षिणऔरपश्चिमदेशकेपुरुषोंनेस्वीकारनहींकियाथा परन्तु बेबहुतथोड़े होयबेहीबेदादिकपुस्तकोंका पठनऔरपाठनकरतें औरकरातेथे फिरइनोंनेवर्णाश्रम व्यवस्थाऔरबेदोक्तकर्मोंकोमिथ्या२दोषलगाके अश्रद्धाऔरअप्रवृत्तिबहुतकरादिया फिरयज्ञोपवीतादिकक्रमभोप्रायःनष्टहोग-

या और जो२ वेदादिकों की पुस्तक पाया और पूर्वके इतिहासोंका उनका प्राय:नाश करदिया जिस्से कि इनको पूर्व अवस्थाका स्मरणभी नरहै फिर जैनोंका राज्य इसदेशमें अत्यन्त जमगया तब जैनभी बड़े अभिमानमें होगए(और कुकर्म,अन्यायभी करनेलगे)क्योंकि सब राजा और प्रजा उनके मतमें ही होगए फिर उनको डर वा शंका किसीकी न रही अपने मतवालोंको अच्छे२ अधिकार और प्रतिष्ठा करनेलगे और वेदादिकोंको पढ़ें तथा उनमें कहे कर्मों को करें उनको अप्रतिष्ठा करनेलगे अन्यायसेभी उनके ऊपर जालस्थापन करनेलगे अपने मतका पण्डित वा साधु उनको बड़ी प्रतिष्ठा करनेलगे सो आजतक भी ऐसा होता है और बहुत स्थान२ में बड़े२ मन्दिर रचलिए और उनमें अपने आचार्यों की मूर्त्ति स्थापन करदिया तथा उनको पूजाभी अत्यन्त करनेलगे सो जैनोंके राज्य होने से मूर्त्ति पूजन चली इसके आगे नथी क्योंकि जितने ऋषि मुनियोंके किए प्राचीन ग्रन्थ हैं महाभारत युद्धके पहिले जो किरचेगए हैं उनमें मूर्त्तिपूजनका लेशमात्रभी कथन नहीं है इस्से दृढ़ निश्चयसे जानाजाता है कि इस आर्यावर्त्त देशमें मूर्त्तिपूजन नहीं थी किन्तु जैनोंके राज्य होनेसे चला है(एक द्रविड़देशके ब्राह्मण काशीमें आके एक गौड़पाद पण्डित थे उनके पास न्याय करणपूर्वक वेदपर्यन्त बिद्या पढ़ीथी जिसका नाम शङ्कराचार्य था वे बड़े पण्डित भएथे उनने बिचार किया कि यह बड़ा अनर्थ भया नास्तिकोंका मत आर्यावर्त्त देशमें फैलगया है और वेदादिक संस्कृत बिद्याका प्राय:नाश ही होगया है सो नास्तिक मतका खण्डन और वेदादिक सत्य संस्कृत बिद्याका विचार वे अपने मन में ऐसा बिचार करके सुधन्वा नाम राजा था उसके पास चलेगए क्योंकि बिना राजाओं के सहाय से यह बात नहीं होसकेगी सो सुधन्वा राजाभी संस्कृत में पण्डित था और जैनोंकेभी संस्कृत सब ग्रन्थ पढ़ाथा सुधन्वा जैन के मत में था परन्तु बुद्धि और बिद्या के होने से अत्यन्त बिश्वास नहीं था क्योंकि वह संस्कृत भी पढ़ा था और उसके पास जैनमत के पण्डित

भीबहुतथे फिरशंकराचार्यने राजासे कहाकि आप सभाकरावैं
औरउनसेमेराशास्त्रार्थहोय औरआपसुनैं फिरजोसत्यहोय उ-
सकोमाननाचाहिए उसनेस्वीकारकिया औरसभाभीकराई उ-
समेंअपनेपासजैनमतकेपण्डितथे औरभीदूर२सेपण्डितजैनमत
केबोलाए फिरसभाभई उसमेंयहप्रतिज्ञाहोगई किहमवेद और
वेदमतकास्थापनकरेंगे औरआपकेमतकाखण्डनतथाउनपण्डि-
तोंनेऐसीप्रतिज्ञाकिया किवेदऔरवेदमतका हमखण्डनकरेंगे
औरअपनेमतकामण्डन सोउनकापरस्परशास्त्रार्थहोनेलगा उस
शास्त्रार्थमेंशङ्कराचार्यकाविजयभया औरजैनमतवालेपण्डितोंका
पराजयहोगया फिरकोईयुक्तिजैनोंकीनहींचली किन्तुशङ्कराचा-
र्यकीबात प्रमाणोंसेसिद्धभई उसीसमयसुधन्वाराजा बुद्धिमानथा
उसकोजैनमतमेंअश्रद्धाहोगई औरवेदमतमेंश्रद्धाहोगई फिरस-
भाउठगई राजाऔरशङ्कराचार्य जीकाएकान्तमेंविचारभया कि
आर्यावर्त्त मेंबड़ाअनर्थहोगयाहै इससे वेदादिकोंकाप्रचारऔरइन
कर्मोंकाप्रचारहोनाचाहिए तथाजैनोंकाखण्डन सोशङ्कराचार्य
नेकहाकिजैनोंका आजकालबड़ाबलहै औरवेदमतकाबलनहींहै
इससे शास्त्रार्थतोहमकरनेकोतैयारहैं परन्तु कोईउपाधिकरै अथ-
वाशास्त्रार्थहोनकरै तोहमाराकुछबलनहीं इसमेंआपलोग प्रवृ-
त्तहोंय किकोईअन्यायकरै उसकोआपलोग शिक्षाकरैं सोराजा
नेउसबातकास्वीकारकिया किवहहमकरेंगे परन्तु हमारेछःरा-
जासम्बन्धीहैं उनकेपासहमचिट्ठीलिखतेहैं औरआपकोभीभेजेंगे
शास्त्रार्थकरनेकेहेतु फिरवेभीजो मिलजांय तोबहुतअच्छीबातहै
फिरशंकराचार्य उनराजाओंकेपासगए औरसभाभई फिरजैन
मतकेपण्डितोंकापराजयहोगया फिरवेछःभीसुधन्वासेमिलेऔर
सबकीसम्मतिसेसंस्कारभीभया तथावेदोक्तकर्मभीकरनेलगेतबतो
आर्यावर्त्त मेंसर्वत्रयहबातप्रसिद्धहोगई किएकशङ्कराचार्य नामक
सन्यासीवेदादिकशास्त्रोंकेपढ़नेवालेबड़े पण्डितहैं जिनसे बहुतजैन

लोगोंकेपण्डितपरास्त होगए फिर उनसातेराजाओंनेशङ्कराचार्यकी रक्षाकेहेतुबहुतभृत्य तथासेवकऔरसवारीभीरखदिया और सबनेकहाकिआपसर्वत्रआर्यावर्त्त में भ्रमणकरें औरजैनोंकाखण्डनकरें इसमेंकोईजबर्दस्तीकरेगा अन्यायसेउसकोहमलोगसम्भालेंगे फिर शंकराचार्यजीने जहांर जैनोंकेपण्डित और अत्यन्त प्रचारथा वहांर भ्रमणकिया औरउनसेसर्वत्रशास्त्रार्थकिया परन्तु जैनलोगोंकासर्वत्रपराजयहीहोतागया (क्योंकि दोतीनदोषउनकेबड़े भारीथे एकतोईश्वरकोनहींमानना दूसरावेदादिकसत्यशास्त्रोंकाखण्डनकरना औरतीसराजगत्स्वभावहीसेहोताहै इसकारचनेवालाकोईनहीं इत्यादिकअन्यभीबहुतदोषहैं वजैनमतकेखण्डनमण्डनमेंविस्तारसेलिखेंगे फिरजितनीजैनोंके मन्दिर मेंमूर्त्तियीं उनकोसुधन्वादिकराजाओंनेतोड़वाडाली औरकूवांवापृथिवीमेंगाड़दिया औरकोईमूर्त्ति जैनोंनेबिनाटूटीभी भयसेलोनमेंगाड़दिया सोआजतकवटूटीऔरबिनाटूटीमूर्त्ति जैनोंकी पृथिवीखोदनेसे निकलतीहैं परन्तु मन्दिर नहींतोड़े गए क्योंकि शंकराचार्य औरराजालोगोंने बिचारकिया मन्दिरोंकोतोड़ना उचितनहीं इनमेंवेदादिकशास्त्रोंकेपढ़नेकेहेतु पाठशालाकरेंगे क्योंकि लाखहांकरोड़हांरुपैएकोइमारतहै इसकोतोड़नाउचित नहीं औरकुछर गुप्तजैनलोग जहांतहांरहगएथे सोआजतकदेखनेमेंआर्यावर्त्त देशमेंआतेहैं इसकेपीछेसर्वत्र वेदादिकोंकेपढ़ने औरपढ़ानेकीइच्छा बहुतमनुष्योंकोभई (शंकराचार्यऔरसुधन्वादिकराजा तथाऔरआर्यावर्त्तवासीश्रेष्ठलोगोंने विचारकियाकि विद्याकाप्रचार अवश्यकरनाचाहिए वेबिचारहीकरतेरहे इतनेमें ३२, वा, ३३, बरसकीउमरमें शंकराचार्यकाशरीरछूटगया) उनके मरनेसेसबलोगकाउत्साहभङ्गहोगया) यहभीआर्यावर्तदेशवालोंकेबड़े अभाग्यकिशंकराचार्यदशवाबारहबरसभीजीतेतोविद्याका प्रचार यथावत्होजाता फिरआर्यावर्त्तकी ऐसीदुर्दशा कभीनहो

होती क्योंकि जैनोंका खण्डन तो होगया परन्तु विद्याप्रचार यथावत् नहीं भया इस्से मनुष्योंको यथावत् कर्तव्य और अकर्तव्यका निश्चय नहीं होनेसे मनमें सन्देह होरहा कुछ तो जैनोंके मतका संस्कार हृदयमें रहा और कुछ वेदादिक शास्त्रोंका भी यह बात एक ईसवा बाईसमै बरसकी है इसके पीछे २००वा ३०० बरसतक साधारण पढ़ना और पढ़ाना रहा। फिर उज्जयनमें विक्रमादित्य राजा कुछ अच्छा भया उसने राजधर्म कुछ२ प्रकाश किया और बहुत कार्य न्यायसे होने लगे थे उसके राज्यमें प्रजाको सुख भी भया था क्योंकि विक्रमादित्य तेजस्वी बुद्धिमान और शूरवीर तथा धर्मात्मा इस्से कोई और अन्याय नहीं करने पाता था परन्तु वेदादिक विद्याका प्रचार उसके राज्यमें भी यथावत् नहीं भया था उसके पीछे ऐसा राजा नहीं भया किन्तु साधारण होते गए फिर विक्रमादित्यसे ५०० वर्षके पीछे राजा भोज भए उसने संस्कृतका प्रचार किया सो नवीन ग्रन्थोंका रचना और प्रचार किया था वेदादिकोंका नहीं परन्तु कुछ२ संस्कृतका प्रचार भोज राजाने ऐसा कराया कि चाण्डाल और हल जोतनेवाला भी कुछ२ लिखना पढ़ना और संस्कृत बोलने भी थे देखना चाहिए कि कालिदास गडरिया था परन्तु स्लोकादिक रचलेता था और राजा भोज भी नए२ स्लोक रचनेमें कुशल था कोई एक स्लोक भी रचके ले जाता था उनके पास उसका प्रसन्नतासे सत्कार करते थे और जो कोई ग्रन्थ बनाता था तो उसका बड़ा भारी सत्कार करते थे फिर लोभसे बहुत संसारमें मनुष्य लोग नए ग्रन्थ रचने लगे उस्से वेदादिक सनातन पुस्तकोंकी अप्रवृत्ति प्रायः होगई और संजीवनी नाम राजा भोजने इतिहास ग्रन्थ बनाया है उसमें बहुत पण्डितोंकी सम्मति है और यह बात उसमें लिखी है कि तीन ब्राह्मणोंने ब्रह्मवैवर्तादिक तीन पुराण पण्डितोंने रचे थे उनसे राजा भोजने कहा कि और के नामसे तुमको ग्रन्थ रचना उचित नहीं था और महाभारत की बात लिखी है कि कितने हजार स्लोक २० बरसके बीचमें व्यासजीका नाम करके लोगोंने मिला

दिए हैं ऐसे ही पुस्तक बढ़ेगा तो एक ऊंट का भार हो जायगा और ऐसे ही लोग दूसरे के नाम से ग्रन्थ रचेंगे तो बहुत भ्रम लोगों को हो जायगा सो उस संजीवनी ग्रन्थ में राजा भोज ने अनेक प्रकार की बातें पुस्तकों के विषय और देश के वर्त्तमान के विषय में इतिहास लिखे हैं सो वह संजीवनी ग्रंथ बटेश्वर के पास होली पुरा एक गांव है उसमें चौबे लोग रहते हैं वे जानते हैं जिसके पास वह ग्रंथ है परन्तु लिखने वा देखने को वह पण्डित किसी को नहीं देता क्योंकि उसमें सत्य२बात लिखी है उसके प्रसिद्ध होने से पण्डितों की आजीविका नष्ट हो जाती है इस भय से वह उस ग्रंथ को प्रसिद्ध नहीं करता ऐसे ही आर्यावर्त्तवासी मनुष्यों की बुद्धि क्षुद्र हो गई है कि अच्छा पुस्तक वा कोई इतिहास उसको छिपाते चले जाते हैं यह इनकी बड़ी मूर्खता है क्योंकि अच्छी बात जो लोगों के उपकार की उसको कभी न छिपाना चाहिए फिर राजा भोज के पीछे कोई अच्छा राजा नहीं भया उस समय में जैन लोगों ने जहां तहां मूर्ति मन्दिरों में प्रसिद्ध किया और वे कुछ२ प्रसिद्ध भी होने लगें तब ब्राह्मणों ने बिचार किया कि इनके मन्दिरों में नहीं जाना चाहिए किन्तु ऐसी युक्ति रचैं कि हम लोगों को आजीविका जिस्से होय फिर उनने ऐसा प्रपञ्च रचा कि हमको स्वप्न आया है उसमें महादेव, नारायण, पार्वती, लक्ष्मी, गणेश, हनुमान्, राम, कृष्ण, नृसिंह, इनोंने स्वप्न में कहा है कि हमारी मूर्त्ति स्थापन करके पूजा करैं तो पुत्र, धन नैरोग्यादिक पदार्थों की प्राप्ति होगी जिस२ पदार्थ की इच्छा करेगा उस२ पदार्थ की प्राप्ति उसको होगी फिर बहुत मूर्खों ने मान लिया और मूर्त्ति स्थापन करने कोई२ लगा फिर पूजा और आजीविका भी उनको होने लगी एक की आजीविका देख के दूसरा भी ऐसा करने लगा और कोई महाधूर्त्त ने ऐसा किया कि मूर्त्ति को जमीन में गाड़ के प्रातःकाल उठके कहा मुझको स्वप्न भया है फिर उनसे बहुत लोग पूछने लगे कि कैसा स्वप्न भया है तब उनसे उसने कहा कि देव कहता है मैं जमीन में गड़ा हूं और दुःख पाता हूं मुझको निकाल के मन्दिर में

स्थापनकरै औरतूंहीपुजारीमेराहो तोमैंसबकाम सबमनुष्यों
काासिद्धकरूंगा फिरवेविद्याहीनमनुष्य उससे पूछतेभए किवहमू-
र्त्ति कहांहै जोतुम्हारासत्यस्वप्नहोगा तोतुमदिखलाओ तबजहां
उसनेमूर्तिगाड़ीथी वहांसबकोलेजाकेखोदकेउसकोनिकाली सब
देखकेबड़ाआश्चर्यकिया औरसबनेउससे कहाकि तूंबड़ाभाग्यवान्
है औरतेरे परदेवताकी बड़ीकृपाहै से हमलोग धनदेतेहैं इससे
मन्दिरबनाओ इसमूर्त्ति काउसमेंस्थापनकरो तुमइसके पुजारी
बनो औरहमलोगनित्यदर्शनकरेंगे तबतोवहप्रसन्नहोकेवैसाही
किया औरउसकीआजीविकाभीअत्यन्तहोनेलगी उसकीआजीवि-
काकोदेखके अन्यपुरुषभी ऐसीधूर्त्तताकरनेलगे औरविद्याहीन
पुरुषउसकीमाननाकरनेलगे फिरप्राय:मूर्त्ति पूजन आर्यावर्त्तमें
फैला एकमहम्मूदगजनवीइसदेशमेंआया औरबहुतसीमूर्त्ति यां
सोनेऔरचांदियोंकीलूटलिया बहुतपुजारीऔरपण्डितोंको प-
कड़लिए औररातको पिसानपिसावै औरदिनमें गाजहरआदि
कोसफाकरावै औरजहांकोई पुस्तकपाया उसकोनष्टभ्रष्टकरदि-
या ऐसेवहआर्यावर्त्त में बारहदफेआया औरबहुतलूटमारअत्य-
न्तअन्यायउसनेकिया इसदेशकोबड़ी दुर्दशाउसनेकिया यहांतक
किशिरच्छेदनबहुतोंकाकरदिया बिनाअपराधोंसेस्त्री,कन्याऔर
बालककोभीपकड़केदु:खदिया औरबहुतोंकोमारडाला ऐसाउसने
बड़ाअन्यायकियासोजिसदेशमेंईश्वरकीउपासनाकोछोड़केकाष्ठ
पाषाण वृक्ष,घास,कुत्ते ,गधे,औरमिट्टीआदिको पूजासे ऐसाही
फलहोगा उत्तमकहांसे होगा फिरचार ब्राह्मणोंने एकलोहेकी
पोलीमूर्त्ति रचवाई औरउसकोगुप्त कहींरखदिया फिरचारोंने
कहा हमकोमहादेवने स्वप्नदियाहै किहमारा आपलोगमन्दिर
रचैं तोकैलाशकोछोड़के आर्यावर्त्त देशमेंमैंवासकरूं औरसब
कोदर्शनदेऊं ऐसासबदेशोंमेंप्रसिद्धकरदिया फिरमन्दिरसबलो-
गोंनेमिलकेरचवाया उसमेंनीचेऊपरऔरचारोंओर भींतमेंचु-

वज्रपत्थर रक्खे जब मन्दिर पूरा भया तब सब देशों में प्रसिद्ध कर दिया कि उस दिन मध्य रात्रि में कैलाश से महादेव मन्दिर में आवेंगे जो दर्शन करेगा उसका बड़ा भाग्य और मरने के पीछे कैलाश को वह चला जायगा फिर उस समय में राजा, बाबू, स्त्री, पुरुष और लड़के बाले उस स्थान में जुटे फिर उन चारों धूर्त्तों ने मूर्त्ति मन्दिर में कहीं गुप्त रख दिई थी और मेला में ऐसा प्रसिद्ध कर दिया कि महादेव देव है सो भूमि को पग से स्पर्श न करेंगे किन्तु आकाश ही में खड़े रहेंगे ऐसा हम को स्वप्न में कहा है सो जब उस दिन पहर रात्रि गई तब सब को मन्दिर के बाहर निकाल दिए और किवाड़ बन्द कर के वे चारों भीतर रहे फिर उस मूर्त्ति को उठा के मन्दिर में ले गए और बीच में चुम्बक पाषाण के आकर्षणों से अधर आकाश में वह मूर्त्ति खड़ी रही और उन्होंने खूब मन्दिर में दीप जोड़ दिए फिर घण्टा, झल्लरी, शंख, रणसिंघा और नगारा बजाए तब तो बड़ा मेला में उत्साह भया और उन ने दरवाजे खोल दिए फिर मनुष्यों के ऊपर मनुष्य गिरे और मूर्त्ति को आकाश में अधर खड़ी देख के बड़े आश्चर्ययुक्त भए और लाखहां रुपैयों की पूजा चढ़ी अनेक पदार्थ पूजा में आए फिर वे चारों धूर्त्त ब्राह्मण बड़े मस्त होगए और महन्त होगए फिर नित्य मेला होने लगा करोड़हां रुपैयों का माल होगया सो वह मन्दिर द्वारका के पास प्रभास क्षेत्र स्थान में था और उस मूर्त्ति का नाम सोमनाथ रक्खा था फिर महमूद गजनवी ने सुना कि उस मन्दिर में बड़ा माल है ऐसा सुन के अपने देश से सेना ले के चढ़ा सो जब पंजाब में आया तब हल्ला होगया और सोमनाथ की ओर चला तब लोगों ने जाना कि सोमनाथ के मन्दिर को तोड़ेगा और लूटेगा ऐसा सुन के बहुत राजा पण्डित और पुजारी सेना ले २ के सोमनाथ की रक्षा के हेतु इकट्ठे भए सोमनाथ के पास जब वह ढेढ़ सै दो सै कोस दूर रहा तब पण्डितों से राजाओं ने पूछा कि मुहूर्त्त देखना चाहिए हम लोग आगे जाके उन से लड़ें फिर पण्डित लोग इकट्ठे होके मुहूर्त्त देखा परन्तु मुहूर्त्त बना नहीं फिर नित्य मुहूर्त्त ही देखते रहे परन्तु

कोईदिनचन्द्रकोईदिन औरग्रहनहीबनेकोईदिनदिकशूलसम्मु-
खआया कोईदिनयोगिनी औरकोईदिनकालनहींबना सोपण्डि-
तोंकीबुद्धिको कालादिकोंकेभ्रमोंनेखालिया औरराजालोगबिना
पण्डितोंकीआज्ञासे कुछकर्त्तेनहींथे सोप्राय:पण्डित औरराजा
लोगमूर्खहीथे जोमूर्खनहोतेतोपाषाणादिकमूर्त्तिक्योंपूजते औ-
रमुहूर्त्तादिकोंकेभ्रमोंमेंनक्योंहोते ऐसेविचारकर्त्तेहीरहे उस-
कोमेंनदूसरीमंजलपरपहुंचो तबराजालोगोंने पण्डितोंसेकहा
किअबतोजल्दीमुहूर्त्त देखो तबपण्डितोंनेकहाकिआजमुहूर्त्त अ-
च्छानहीं है जोयाबाकरोगे तोतुम्हारापराजयही होजायगा तब
वेब्राह्मणोंसेडरकेबैठेरहे तबमहमूदगजनवीधीरे२पांचछ:कोश
कऊपरआकेठहरा औरदूतोंसे सबखबरमंगवाई किवेक्याकर्त्तेहैं
दूतोंनेकहाकिआपसमेंमुहूर्त्तविचाराकर्त्तेहैं महमूदगजनवीकेपा-
स३०हजारसेनाथी अधिकनहीं औरउनके पास दो,तीन लाख
फौजथी फिरउसकेदूसरेदिनप्रात:काल राजापण्डितपुजारीमि-
लकेमुहूर्त्त विचारनेलगे सोसबपण्डितों नेकहाकि आजचन्द्रमा
अच्छानहो औरभोग्रहक्रूरहैं पुजारीलोग औरपण्डित मूर्त्ति के
आगेजाकेगिरपड़े औरअत्यन्तरोदनकिया हेमहाराज इसदुष्ट
कोखालेओ औरअपनेसेवकोंकासहायकरो परन्तु वहलोहाक्या
करसक्ता है औरसबसेकहनेलगेकि आपलोगकुछचिन्तामतकरो
महादेवउसदुष्टकोऐसेहीमारडालेंगे वाबहमहादेवकेभयसे य-
हांहीसेभागजायगा उसकाक्यासामर्थ्य है किसाक्षात् महादेवके
पासआसके औरसम्मुख दृष्टिकरसके ऐसेसब परस्पर बकरहेथे
फिरकुछलड़ाईभई औरमुसल्मानभोडरे किविजयहोगावापरा-
जय उससमयमेंऔरपुस्तकफैलारकेबहुतसेमन्त्रोंकाजपऔरपा-
ठकर्त्तेथे औरकहतेथे किअबदेवताऔरमन्त्रहमारापाठ सिद्धहो-
ताहै सोबहुतवहांहीं अन्धाहोजायगा सोबड़ीमण्डलीको मण्डली
जप,पाठऔरपूजाकररहीथी औरमूर्त्तिकेसामनेऔंधेगिरकेपुकार

तेथ एकसभालगरहीथी राजाऔरपण्डितविचारतेथे मुहूर्त्तको उससमयमेंउसके निकटएकपर्वतथाऔरमहमूदगजनवीनेएकतो पलगाई औरसभाकेबीचमें गोलामाराउससमयकोईदांतधावन करताथा कोईसोताथाऔरकोईस्नानकरताथाइत्यादिकव्यवहा- रोंसेगाफिलथे सोउसगोलेसे सबपण्डितलोग पोथीपत्राछोड़के भागे औरराजालोगभीभागउठे तथासेनाभीअपने२स्थानोंसेभा- गउठी औरबहमहमूदगजनवी सेनासहितधावाकरके उसस्थान परझटपहुंचा उसकोदेखके सबभागउठे भागेभएपण्डितपुजारी सिपाही तथाराजाओंको उननेपकड़लिया औरबांधलिया और बहुतसोमारपड़ीउनकेऊपर तथामारभीडालाकिसीको औरब- हुतभागगए क्योंकिउनपण्डितोंकेउपदेशसे सोलापहिर कबैठथे औरकथासुनीथीकिमुसल्मानोंकास्पर्शनहोकरनाऔरउनकेदर्श- नसेधर्मजाताहै ऐसोमिथ्याबातसुनकेभागउठे फिरमन्दिरकेचा- रोंओर महमूदगजनवीकीसेनाहोगई औरआपमन्दिरकेपास प- हुंचा तबमन्दिरकेमहंत औरपुजारीहाथजोड़केखड़े भए उनमे पुजारियोंने कहाकिआपजितनाचाहैं उतनाधनलेलिजिए परन्तु मन्दिरऔरमूर्त्तिकोनतोड़िए क्योंकिइससे हमलोगोंकी बड़ीआ- जीविकाहै ऐसासुनके महमूदगजनवीबोलाकि हमबुतबेचनेवाले नहीं किन्तु उनको तोड़नेवालेहैं तबतोबडरे औरकहाकि एक करोड़रुपैया आपलेलिजिए परन्तु इसको मततोड़िए ऐसेकहते सुनतेतोनकरोड़तककहापरन्तुमहमूदगजनवीनेनहींमाना और उनकोमुसकचढ़ालिया फिरउनकोलेकेमन्दिरमें गयाऔरउनसे पूछाकि खजानाकहांहैसोकुछतोउसनेबतलादियाफिरभीउसको लोभआयाकि औरभीकुछहोगा फिरउनकोमारापीटा तबउनने सबखजानाबतलादिया फिरमन्दिरमेंआकेसबलीलादेखी फिर महन्तऔरपुजारियोंसेकहाकि तुमनेदुनियाकोऐसो धूर्त्ताकर- केठगलिया क्योंकिलोहेकीतोमूर्त्ति बनाईहै इसकेचारोंओरचुम्ब-

कपाषाणरखनेसे आकाशमें अधरखड़ीहै इसकानामरखदियाहै महादेव यहतुमनेबड़ीमूर्त्ताकियाहै फिरउसमन्दिरकाशिखर उननेतोड़वादिया जबवहचुम्बक पाषाणअलगहोगया तबमूर्त्ति जमीनमें चुम्बकपाषाणमेंलगगई फिरसबभीतें तोड़वाडाली सब चुम्बककेनिकलनेमे मूर्त्तिजमीनमेंगिरपड़ी फिरउसमूर्त्तिकोम-हमूदगजनवीने अपनेहाथमेंलोहेकेघनको पकड़केमूर्त्तिकेपेटमे मारा, उससे मूर्त्ति फटगई उससे बहुतजवाहिरातनिकला क्योंकि होराआदिकअच्छे२ रत्नवेपातेथे तबमूर्त्ति होमेंरखदेतेथें फिर उनमहंतऔरपुजारियोंकोखूबतंगकिया औरफुसलायाभी फिर उननेभयसेसबबतलादिया उनसेकहाकिजोतुम सबसच्चर२ बतला-देओगे तोतुमकोहमछोड़देंगे तबउननेसोना, चांदोके पात्रोंको भोबतलादिए जोकुछथा औरउसने सबलेलिया सोअठारह क-रोडकामालउसमन्दिरसेउसनेपाया फिरबहुतसीगाड़ीऊंटऔ रमजूरउसकेपासथें औरभोवहांसेपकड़लिए उनकेऊपरसबमा-लकोलादकेअपनेदेशकोओरचला सोथोड़ेसेथोड़े पण्डितमहंत औरपुजारोतथाक्षत्रिय, वैश्य, ब्राह्मण औरशूद्रतथास्त्रीबालकदश हजारतकपकड़केसंगलेलिएथेंउनकायज्ञोपवीततोड़डालामुखमें थूकदिया औरथोड़े२सूखेचनेनित्यखानेकोदेताथा औरजाजरूर सफाकरवावे पिसवावे घासछिलवावे औरघोड़ोंकोलीदउठवावे औरमुसल्मानोंकेजूठेबरतनमजवावे औरसबप्रकारकीनीचसेवा उनसेलेऐसेकराता२ जबमक्काकेपासपहुंचा तबअन्यमुसल्मानोंने कहाकिइनकाफरोंकायहांरखनाउचितनहीं फिरउनकोबुरोट-शासेमारडाला क्योंकिउनकेकुरानमें लिखाहै किकाफरोंकोलूट ले उनकीस्त्रोछीनले झूठफरेबसेउनकासबमाललेर२ औरउनको मारडाले तोभोकुछदोषनहीं (किन्तु उसमुसल्मानको बिहिस्तअ-र्थात्उसकोस्वर्गवासमिलताहै) वहखुदाकेघरमेंबड़ामान्यहोताहै फिरकाफरवहकहाताहै जोकिमुहम्मदके कलमाकोनपढ़ै और

कुरानकेऊपरविश्वासनलेआवै उसकोबिगाड़नेऔररमरनेमेंकु-
छदोषनहीं ऐसामुसल्मानोंकेमतमेंलिखाहै इससे उनको अन्याय
करनेमेंकुछभयनहींहोता औरजोकुछपापहोताहै सोतौबाशब्दसे
छूटजाताहै इससे वेपापकरनेमेंभयक्योंकरेंगे ऐसेहीबारहदफेवह
आयाहै औरदोतीनबारमथुराकीभीदुर्दशाऐसीकिईथी औरजहां
२वहगयाथा वहां२ऐसीही उसदेशकीदुर्दशाकिईथी औरडांकू
कौनाईवहआताथा मारकेजोकुछपाताथा सोअपनेदेशमेंलेजाता
था उसदिनसेमुसल्मान्लोगदरिद्रसेधनाढ्यहोगएहैं सोआर्यावर्त
प्रतापसेआजतकभीधनचलाआताहै औरआर्यावर्त्त देशअपनेहीं
दोषोंसेनष्टहोताजाताहै सोहमकोबड़ाअपशोचहैकिऐसाजोदेश
औरइसप्रकारकाधनजिसदेशमेंहै सोदेशबाल्यावस्थामेंबिवाहबि-
द्याकात्याग मूर्त्तिपूजनादिक पाखण्डोंकीप्रवृत्ति नानाप्रकार के
मिथ्यामजहबोंकाप्रचार विषयासक्तिऔरवेदविद्याकालोपजबतक
एदोषरहेंगे तबतकआर्यावर्त्त देशवालोंकी अधिक२दुर्दशाहीहो-
गी औरजोसत्यविद्याभ्यास तथासुनियम,धर्मऔरएकपरमेश्वर
कीउपासना इत्यादिकगुणोंकोग्रहणकरैं तोसबदुःखनष्ट होजांय
औरअत्यन्तआनन्दमेंरहैं फिरचारब्राह्मणोंनेबिचारकियाकिकोई
क्षत्रियराजाइसदेशमें अच्छानहींहै इसकाकुछउपायकरनाचा-
हिए वेब्राह्मणचारोंअच्छेथे क्योंकिसबमनुष्योंकेऊपरकृपाकरके
अच्छीबातबिचारी यहअच्छे पुरुषोंकाकाम है तोचकानहीं फिर
उननेक्षत्रियोंकेबालकोंमेंसे चारअच्छे बालकछांटलिए औरउन
क्षत्रियोंसेकहाकि तुमलोग खानेपीनेकाप्रबन्ध बालकोंकारखना
उननेस्वीकारकिया औरसेवकभीसाथरखदिए वेसबआबूराजप-
र्वतकेऊपरजाकेरहे औरउनबालकोंको अक्षराभ्यासऔरअच्छेव्य-
वहारोंकीशिक्षाकरनेलगे फिरउनकायथाविधि संस्कारभीउनने
किया सन्ध्योपासन औरअग्निहोत्रादिक वेदोक्तकर्मोंकी शिक्षा
उननेकिया फिरव्याकरणछःदर्शनकाव्यालङ्कारसूत्रऔरसनातन

कोश यथावत्पदार्थविद्याउनकोपढ़ाई फिरवैद्यकशास्त्रतथा गान विद्या, शिल्पविद्या, औरधनुर्विद्या अर्थात्युद्धविद्या भीउनकोअ-च्छीप्रकारसेपढ़ाई फिरराजधर्मजैसाकिप्रजासेवर्तमानकरनाऔ-रन्यायकरना दुष्टोंकोदण्डदेना श्रेष्ठोंकापालनकरना यहभोसब पढ़ाया ऐसेपसोचवा २६ वरसकी उमरउनकीभई और उनप-ण्डितोंकेस्त्रियोंनेऐसेहीचारकन्या रूपगुणसम्पन्नउनकोअपनेपास रखकेव्याकरण, धर्मशास्त्र, वैद्यक, गानविद्या, तथा नानाप्रकारके शिल्पकर्मउनकोपढ़ाए औरव्यवहारकी शिक्षाभीकिया तथायुद्ध विद्याकीशिक्षा गर्भमेंबालकोंकापालन औरपतिसेवा काउपदेश भीयथावत्किया फिरउनपुरुषोंकोपरस्परचारोंकायुद्धकरना औ-रकरानेकायथावत्अभ्यासकराया ऐसेचालीस२वर्षके वेपुरुषभए बीस२वर्षकीवेकन्याभईं तबउनकीप्रसन्नता औरगुणपरीक्षासेएक सेएककाविवाहकराया जबतकविवाहनहींभयाथा तबतकउनपु-रुषोंकीऔरकन्याओंकी यथावत्रक्षाकिईगईथी इससेउनकोविद्या बल, बुद्धि, तथापराक्रमादिकगुणभी उनकेशरीरमेंयथावत्भएथे फिरउनसेब्राह्मणोंनेकहाकि तुमलोगहमारीआज्ञाकरो तबउन सबोंनेकहाकि जोआपकीआज्ञाहोगी सोईहमकरेंगे तबउननें उनसेकहाकि हमनेतुम्हारेऊपरपरीश्रमकियाहै सोकेवलजगत् केउपकारकेहेतुकियाहै सोआपलोगदेखोकि आर्यावर्त्तमेंगदर मचरहाहै सोमुसल्मान्लोग इसदेशमेंआकेबड़ीदुर्दशा करतेहैं औरधनादिकलूटकेलेजातेहैं सोइसदेशकीनित्यदुर्दशाहोतीजा-तीहै सोआपलोगयथावत्राजधर्मसेपालनकरो औरदुष्टोंको य-थावत्दण्डदेओ परन्तु एकउपदेशसदाहृदयमेंरखना किजबतक वीर्यकीरक्षा औरजितेन्द्रिय रहोगे तबतकतुमारा सबकार्यसिद्ध होताजायगा औरहमनेंतुम्हाराविवाहअबजोकरायाहै सोकेवल परस्पररक्षाकेहेतुकियाहै कितुमऔरतुमारीस्त्रियां संग२रहोगे तोबिगड़ोगेनहीं औरकेवलसन्तानोत्पत्तिमात्रविवाहकाप्रयोजन

जानना और मनसे भी परपुरुष वा परस्त्री का चिन्तन भी नहीं करना और विद्या तथा परमेश्वर की उपासना और सत्यधर्म में सदा स्थित रहना जबतक तुमारा राज्य न जमै तबतक स्त्रीपुरुष दोनों ब्रह्मचर्याश्रम में रहो क्योंकि जो क्रीडामक्त होगे तो बलादिक तुम्हारे शरीर से न्यून नहीं जायेंगे तो युद्धादिकों में उत्साह भी न्यून न होजायगा और हम भी एक२ के साथ एक२ रहेंगे सो हम और आप लोग चलें और चलके यथावत् राज्य का प्रबन्ध करें फिर वे वहां से चले वे चार इन नामों से प्रख्यात थे चौहान पवांर सोलंकी इत्यादिक उनने दिल्ली आदिक में राज्य किया था कुछ२ प्रबन्ध भी भया था जब राज्य करने लगे कुछ काल के पीछे सहाबुद्दीन गोरी एक मुसल्मान था सो भी उसी प्रकार इस देश में आया था कनोज आदिक में उस समय कनोज का बड़ा भारी राज था सो इसके भय के मारे अपने ही जाके उनको मिला और युद्ध कुछ भी नहीं किया फिर अन्य चवह युद्ध जहां तहां किया सो उसका विजय भया और आर्यावर्त वालों का पराजय भया फिर दिल्ली वालों से कोई वक्त उसका युद्ध भया उस युद्ध में पृथिराज मारा गया और उसने अपना सेनाध्यक्ष दिल्ली में रक्षा के हेतु रख दिया उसका नाम कुतुबुद्दीन था वह जब वहां रहा तब कुछ दिन के पीछे उन राजाओं को निकाल के आप राजा भया उस दिन से मुसल्मान लोग यहां राज्य करने लगे और सबने कुछ२ जुलुम किया परन्तु उनके बीच में से अकबर बादशाह अच्छा भया और न्याय भी संसार में होने लगा सो अपनी बहादुरी से और बुद्धि से सब गदर मिटा दिया उस समय राजा और प्रजा सब सुखी थे परन्तु आर्यावर्त्त के राजा और धनाढ्य लोग विक्रमादित्य के पीछे सब विषयसुख में फंस रहे थे उस्से उनके शरीर में बल, बुद्धि, पराक्रम और शूरवीरता प्रायः नष्ट होगई थीं क्योंकि सदा स्त्रियों का संग गाना बजाना, नृत्य देखना, सोना अच्छे कपड़े और आभूषणों को धारण करना नानाप्रकार के अतर और अञ्जन नेत्र में लगाना इस्से उनके शरीर बड़े कोमल होगए थे कि थोड़े से ताप वा शीत अथवा वायु का

सहननहीं होसक्ताथा फिर वे युद्ध क्याकर सकेंगे क्योंकि जो नित्य स्त्रि-योंका संग करेंगे और बिषयभोग उनका भोशरीर प्रायः स्त्रियोंकी नाईं होजाता है वे कभी युद्ध नहीं कर सक्ते क्योंकि जिनके शरीर दृढ़ रोग रहित बल, बुद्धि और पराक्रम तथा वीर्यकी रक्षा और बिषयभोगमें नहीं फसना नानाप्रकारकी विद्याका पढ़ना इत्यादिकके होनेसे सब कार्य सिद्ध होसक्ते हैं अन्यथा नहीं फिर दिल्लीमें औरंगजेब एक बादशाह भयाथा उनने मथुरा, काशी, अयोध्या और अन्यस्थानमें भी जा२के मन्दिर और मूर्त्तियोंको तोड़डाला और जहां२ बड़े२ मन्दिरथे उस२ स्थानपर अपनी मसजिद बनादिया जब वह काशीमें मन्दिर तोड़नेका आया तब बिश्वनाथ कूएमें गिरपड़े और माधव एक ब्राह्मणके घरमें भागगए ऐसा बहुतमनुष्य कहते हैं परन्तु हमको यह बात झूठ मालूम पड़ती है क्योंकि वह पाषाण वा धातु जड़पदार्थ कैसे भागसक्ता है कभी नहीं सो ऐसा भयाकि जब औरंगजेब आया तब पुजारियोंने भयसे मूर्त्ति उठाके और कूएमें डालदिया और माधवकी मूर्त्ति उठाके दूसरेके घरमें छिपादिया कि वह न तोड़सके सो आजतक उसकूंएका बड़ादुर्गन्ध जल उसको पीते हैं और उसी ब्राह्मणके घरमे माधवकी मूर्त्तिको आजतक पूजा करते हैं देखना चाहिए कि पहिले तो सोना, चांदीकी मूर्त्तियां बनाते थें तथा हीरा और माणिककी आंख बनाते थे सो मुसल्मानों के भय से और दरिद्रतासे पाषाण, मिट्टी, पीतल, लोहा, और काष्ठादिकोंकी मूर्त्तियां बनाते हैं सो अबतक भी इनसत्यानाश करनेवाले कर्मको नहीं छोड़देते क्योंकि छोड़ेंतो तब जो इनकी अच्छी दशा आवै इनकी तोड़न कर्मों से दुर्दशा होहोनेवाली है जबतक कोई इनको नहीं छोड़ते और महाभारत युद्धके पहिले आर्यावर्त्त देशमें अच्छे२ राजा होते थें उनकी विद्या, बुद्धि, बल, पराक्रम तथा धर्मनिष्ठा और शूरबीरादिक गुण अच्छे२ थ इससे उनका राज्य यथावत् होताथा सो इक्ष्वाकु, सगर, रघु, दिलीप आदिक चक्रवर्त्ती हुएथे और किसीप्रकारका पाखण्ड

उनमें न होथा सदाविद्याकीउन्नति और अच्छे२ कर्मआपकरतेथे तथाप्रजासेकरातेथे औरकभीउनका पराजयनहींहोताथा तथा अधर्मसेकभोनहींयुद्धकरतेथेऔरयुद्धसेनिवृत्तनहोहोतेथ उससमय सेलेकेजैनराज्यकेपहिलेतकइसोदेशके राजाहोतेथे अन्यदेशकेन- हीं सोजैनोंने औरमुसल्मानोंने इसदेशको बहुत बिगाड़ाहै सो आजतकबिगड़ताहीजाताहै सोआजकालअंगरेजकेराज्यहोनेसे उनराजाओंकेराज्यसेसुखभयाहैक्योंकिअंगरेजलोगमतमतान्त- रकीबातमें हाथनहींडालते औरजोपुस्तक अच्छापातेहैं उसको अच्छी प्रकाररक्षाकरतेहैं औरजिसपुस्तकके सौरुपैएलगतेथे उस पुस्तकका छापाहोनेमेंपांचरुपैयोंपरमिलताहै परन्तु अङ्गरेजोंमें भोएककामअच्छानहींहुआ जोकिचित्रकूटपर्वतमहाराजअमृ- तरायजीका पुस्तकालयकोजलादियाउसमें करोड़होंरुपैएके ला- खहोंअच्छे२पुस्तकनष्टकरदिए जोआर्यावर्त्तवासीलोग इससमय सुधरजांयतोसुधरसक्ते हैं औरजोपाखण्डहीमेंरहेंगे तोअधिक२ होनाशहोगा इनकाइसमेंकुछसन्देहनहीं क्योंकिबड़े२आर्यावर्त देशकेराजाऔरधनाढ्यलोगब्रह्मचर्याश्रमविद्याके प्रचारधर्मसेसब व्यवहारोंकाकरना औरवेश्यातथापरस्त्रीगमनादिकोंकात्यागक- रैं तोदेशकेसुखकीउन्नतिहोसक्तीहै परन्तुजबतकपाषाणादिकमू- र्त्तिपूजन वैरागी,पुरोहित,भट्टाचार्य औरकथाकहनेवालोंकेजालों सेछूटैं तबउनकाअच्छा होसक्ताहै अन्यथानहीं प्रश्न मूर्त्ति पूजना- दिक सनातनसेचलेआएहैं उनकाखण्डनक्योंकरतेहो उत्तर यह मूर्त्ति पूजनसनातनसेनहीं किन्तु जैनोंकेराज्यहोमेआर्यावर्त्तमें चलाहै जैनोंनेपरश्वनाथ,महावीर,जैनेन्द्र,ऋषभदेव,गोतम०क- पिलआदिकमूर्त्तियोंकेनामरक्खेथें उनकेबहुत२चेलेभयेथें औ- रउनमें उनकीअत्यन्तप्रीतिभोथी इससे उनचेलोंनेअपनेगुरुओंकी मूर्त्ति बनाकेपूजनेलगे मन्दिरबनाके फिरजबउनको शंकराचार्य नेपराजयकरदिया इसकेपीछेउक्तप्रकारसेब्राह्मणोंनेमूर्त्तियांरची

औरउनकानाम महादेवआदिकरखदिए उनमूर्त्तियोंसेकुछवि-
लक्षणबनानेलगे औरपुजारीलोगजैन तथामुसल्मानोंकेमन्दिरों
कीनिन्दाकरनेलगे। नवदेद्यावनीभाषांप्राणैःकण्ठगतैरपि। ह-
स्तिनाताड्यमानोपि नगच्छेज्जैनमन्दिरम्॥१॥ इत्यादिकश्लोक
बनाएहैं किमुसल्मानोंकीभाषाबोलनीऔरसुननीभीनहीचाहिए
औरमत्तहस्ती अर्थात्पागलपीछेमारनेकोदौड़े सोजैनकेमन्दिर
मेंजानेसेबचसक्ताभीहोय तोभीजैनकेमन्दिरमेंनजाय किन्तु हाथी
केसन्मुखमरजाना उसे अच्छाऐसे२ निन्दाकेश्लोकबनाएहैं सो
पुजारीपण्डितऔरसम्प्रदायीलोगोंनेचाहाकि इनकेखण्डनकेवि-
ना हमारीआजीविकानबनेगी यहकेवलउनकामिथ्याचारहै कि
मुसल्मानकीभाषापढ़नेमें अथवाकोईदेशकीभाषापढ़नेमें कुछदो-
षनहीहोता किन्तुकुछगुणहीहोताहै। अपशब्दज्ञानपूर्वकेशब्द-
ज्ञानेधर्मः। यहव्याकरण महाभाष्यकावचनहै इसकायहअभि-
प्रायहै किअपशब्दज्ञानअवश्यकरनाचाहिए अर्थात्सबदेशदेशा-
न्तरकीभाषाकोपढ़नाचाहिए क्योंकिउनकेपढ़नेसेबहुतव्यवहारों
काउपकारहोताहै औरसंस्कृतशब्दकेज्ञानकाभीउनकोयथावत्
बोधहोताहै जितनेदेशोंकीभाषाजानैं उतनाहीपुरुषकोअधिक
ज्ञानहोताहै क्योंकिसंस्कृतकेशब्द बिगड़केदेशभाषा सबहोतीहै
इससेइनकेज्ञानोंसेपरस्परसंस्कृतऔरभाषाकेज्ञानमें उपकारही
होताहै इसीहेतुमहाभाष्यमेंलिखाकिअपशब्दज्ञानपूर्वकशब्दज्ञा-
नमें धर्महोताहै अन्यथानहीं क्योंकिजिसपदार्थका संस्कृतशब्द
जानेगा औरउसके भाषा शब्दकोनजानेगा तोउसके यथावत्प-
दार्थकाबोध औरव्यवहारभी नहींचलसकेगा तथामहाभारतमें
लिखाहै कियुधिष्ठिरऔरविदुरादिकअरबीआदिक देशभाषाको
जानतेथे सोईजबयुधिष्ठिरादिकलाक्षागृहकोचले तबविदुर
जीनेयुधिष्ठिरजीकोअरबीभाषामेंसमझायाऔरयुधिष्ठिरजीने अ-
बीभाषासेप्रत्युत्तरदिया यथावत्उसकोसमझलिया तथाराक्षसू-

य और अश्वमेधयज्ञमें देशदेशान्तर तथाद्वीप द्वीपान्तरके राजा और प्रजास्थआएथें उनकापरस्पर देशभाषाओंमें व्यवहारहोता था तथाद्वीपद्वीपान्तरमेंयहांके लोगजातेथे औरवेइस देशमें आतेथे फिरजोदेशदेशान्तर कीभाषा नजानते तोउनका व्यवहार सिद्धकैसेहोता इस्से क्याआयाकि देशदेशान्तरको भाषाकेपढनें औरजाननेमें कुछदोषनहीं किन्तु बड़ाउपकारहीहोताहै और जितनेपाषाणमूर्त्ति के मन्दिरहैंवेसबजैनोंहीकेहैं सोकिसीमन्दिर मेंकिसीकोजानाउचितनहीं क्योंकिसबमेंएकहीलीलाहै जैसीजैन मन्दिरोंमें पाषाणादिकमूर्त्तियांहैं वैसीआर्य्यावर्त्त वासिओंकेमन्दिरोंमें भी जड़मूर्त्तियां हैं कुछनाम विलक्षण२ इन लोगों ने रखलिएहैं औरकुछ विशेषनहीं केवल पक्षपातहीसे ऐसाकहते हैं किजैनमन्दिरोंमें नजाना औरअपनें मन्दिरोंमेंजाना यहसब लोगोंने अपना२मतलब सिधुबनालियाहै आजीविकाकेहेतु (प्रश्न) वेदशास्त्रमेंमूर्त्ति पूजनलिखाहै औरवेदमन्त्रोंसे प्राणप्रतिष्ठाहो तीहै उसमेंदेवकोशक्तिभीआजातीहै फिरआपखण्डन क्योंकरतेहैं (उत्तर) वेदशास्त्रमेंमूर्त्ति पूजनकहीं नहीलिखा औरनप्राणप्रतिष्ठा औरनकुछ उसमेंशक्तिआतीहै (प्रश्न) सहस्रशीर्षापुरुषःउद्बुध्यस्वाग्ने प्राणदाअपानदा ॥ इत्यादिकमन्त्रोंसे षोड़शोपचारपूजाऔर प्राणप्रतिष्ठाभीहोतीहै तथाप्रतिष्ठा मयूखग्रन्थऔर तंत्रग्रन्थोंमें आत्मेहागच्छतुसुखंचिरन्तिष्ठतुस्वाहा, ॥ प्राणाइहागच्छन्तु सुखंचिरन्तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ इन्द्रियाणिइहागच्छन्तु सुखंचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा ॥अन्तःकरणमिहागच्छतुसुखंचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा॥ इत्यादिकलिखेहैं फिरकैसे खण्डनहोसक्ताहै (उत्तर) इनमन्त्रोंकेअर्थनहीजाननेसेआपलोगोंकोभ्रमहोताहै क्योंकिपुरुषनामपूर्णईश्वरकाहै सहस्रशीर्षाइत्यादिक पुरुषकेविशेषणहैं/सोपुरुषकेनिराकारहोनेसे शिरादिकअवयव कभीनहींहोसक्ते औरजो साकार बनता तोव्यापकनहोबनसक्ता। तथाहिपूर्णत्वात्पुरुषः। इत्यादि-

कनिष्ठमेंअर्थकियाहै सोउसकासहस्रशीर्षा इत्यादिकविशेषणहैं उसकाअर्थइसप्रकारकाहोताहै। सहस्राणिशिरांसिसहस्राण्यक्षी-णितथा सहस्राणिपादाःअसंख्याताःयस्मिन्पूर्णेपुरुषेसः सहस्रशी-र्षासहस्राक्षः सहस्रपात्पुरुषः॥ जितनेशिर,जितनीआंख, और जितनेपग, असंख्यात वेसबपूर्णजो परमेश्वरउसीमें वासकरते हैं क्योंकिसबजगत् काअधिकरण परमेश्वरहीहै और बहुव्रीहि समासहो अन्यपदार्थकेहोनेसेहोताहै तथासहस्रपात्शब्दकेहोने से बहुव्रीहिनिश्चितहोताहै व्याकरणकीरीतिसे सोईअर्थ मन्त्रके उत्तरार्द्धमेंस्पष्टहै। सभूमिꣳसर्वतस्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्। पुरुषएवेदꣳसर्वं वेदाहमेतम्पुरुषम्॥ इत्यादिकउत्तरमन्त्रोंसेय-हीअर्थनिश्चितहोताहै औरसबजगतकीउत्पत्तिभीपुरुषमेंलिखीहै विनापरमेश्वरके किसीमेंनहोघटसक्ती इससे जोकोईकहेकिइनम-न्त्रोंसे षोड़शोपचारपूजाहोतीहै उसकीबातमिथ्याजाननी और प्राणप्रतिष्ठा शब्दकायहअर्थहै किप्राणकोस्थिति औरस्थापन का होना जोमूर्त्तिमें प्राणआते तोमूर्त्ति चेतनहोजाती सोजैसी पहिलेजड़थी वैसीहीसदारहतीहै क्योंकिचलना,फिरना,खाना, पीना,बैठना,देखनाऔरसुनना इत्यादिकव्यवहारवहमूर्त्ति नहीं करती इससे जोकोईकहेकिप्राणप्रतिष्ठाहोतीहै यहबातउसकीमि-थ्याजाननी। औरमूर्त्ति ठसहोतीहै उसमेंप्राणके जानेआनेकाछि-द्रअवकाशहीनहीं फिरप्राणउसमेंकैसेघुससकेगा औरजोकहेंकि हमप्राणप्रतिष्ठाकरतेहैं उनसेकहनाचाहिए किआपलोगमुरदेके शरीरमेंक्योंनहींप्राणप्रतिष्ठाकरतेहैं किसोराजा,बाबू औरसबज-गत्के मनुष्योंकोमुरदेमें प्राणप्रतिष्ठाकरके जिलादियाकरो तो तुमलोगोंकोबहुतधनमिलेगा औरबड़ीप्रतिष्ठाहोगी फिरक्योंन-हीं ऐसीबातकरतेहो। जोवेकहेंकिजैसापरमेश्वरनेनियमकरदिया है वैसाहीमरनेजीनेकाहोताहै उसकोमरेपीछे कोईनहींजिलास-क्ता तोउनसे हमलोगपूछतेहैं किजिनपदार्थोंको परमेश्वरने

प्राणऔरचेतनतारहितजड़बनाएहैं उनकोतुमचेतन औरप्राण
सहितकैसेबनासकोगे कभीनहीं औरजोकहैंकिदेवऔरसिद्धपुरु-
षहतककोजिलादेतेहैं उनसेपूछाजाताहै किवेदेवऔरसिद्ध क्यों
मरजातेहैं इससे प्राणप्रतिष्ठाकोसबबातझूठीहै प्राणदाअपानदा
इनकाअर्थपूर्वोक्त मेंकरदियाहै वहींदेखलेना औरउद्बुध्यस्वाग्ने।
इसकाभीअभिप्रायवहींदेखलेना। आत्मेहागच्छतुचिरंसुखंतिष्ठ-
तुस्वाहा। इत्यादिसंस्कृतमिथ्याही लोगोंनेरचलिया कोई सत्य
शास्त्रमें नहींहैं देखनाचाहिए कि । शन्नोदेवीरभिष्टयआपोभ-
वन्तुपीतए शंयोरभिस्रवन्तु नः १ ॥ अग्निर्मूर्द्धा० उद्बुध्यस्वाग्ने०
इत्यादिकमन्त्रोंमेंकहींशनैश्चर,मङ्गल औरबुधादिकग्रहोंकानाम
भीनहींहै परन्तुविद्याहीनहोनेसे आजीविकाकेलोभसे ब्राह्मणों
नेजालरचरक्खाहैकिएग्रहकोकांडोहैं सोकिसीनेऐसाविचाराकि
ग्रहोंकामन्त्रपृथक्निकालनाचाहिए सोमन्त्रोंकाअर्थतोनहींजा-
नता किन्तुअटकलसेउसनेयुक्तिरची किशनैश्चरशब्दके आदिमें
तालव्य शकार है । और शन्नोदेवी इस मन्त्र के आदि में भी
तालव्यशकार है इससे यहीशनैश्चरकामन्त्रहै तथापृथिव्याअयम्।
इससे परमेश्वरकाग्रहणहोताहै इसशब्दमेंमङ्गलकोलिया औरउ-
द्बुध्यस्वक्रियासेबुधकोलिया देखनाचाहिएकिशंहै सुखकानाम
उद्बुध्यस्वबुधअवगमनधातुकोक्रियाहै इससे बुधकोलियाइत्यादिक
भ्रमसेग्रहोंकोग्रहणकियाहै सोयहकथाकेलाललालबुझक्कड़कीनाईं
है जैसेकिकिसीगांवमें एकमूर्ख पुरुषरहताथा उसकानामलाल
बुझक्कड़था कभीकिसीराजाकाहाथी उसगांवकेपास सेचलागया
था औरकिसीनेदेखानहींथा फिरजबप्रातःकाल लोगउठके बा-
हरचले तबखेतऔरमार्गमें हाथीकेपगकचिन्हदेखके बड़े आश्च-
र्यभए औरलालबुझक्कड़को बुलाकेपूछा किएहक्याहै तबवहबड़ा
रोनेलगाफिररोकेकहा तबसबनेउससे पूंछाकितुमरोकेक्योंहंसेतब
उसनेउनसेकहा किजबमैंमरजाऊंगा तबऐसी२बातोंकाउत्तर

कौनदेगा इसहेतुमैं रोया औरहसाइसहेतु किइसकाउत्तरबड़ा
सुगमहै तोभीतुमनेनहींजाना इसहेतुमैं हसा तबउन्ने पूछा कि
इसकातोउत्तरदे तबवहबोलाकि लालबुझक्कड़बुझिया औरनबू-
झाकोइ। पगमेंचक्कीबांधके हिरणाकूदाहोइ॥ हिरनाअपनेपग
में चक्कीकेपाट बांधके कूदता२ चलागयाहै उसकेपगके एचिन्ह
हैं तबतोवेसुनके बड़ेप्रसन्नभए औरसबने कहाकि लालबुझक्कड़
बड़ेपण्डितऔरबुद्धिमान्हैं वैसेहीपाषाणमूर्त्तिकेपूजनविषय औ-
रवेदमन्त्रोंकेविषयमें इनपण्डितलोगोंने मिथ्याकोलाहल करर-
क्खाहै इस्से वेदकीनिन्दा औरअप्रतिष्ठाकररक्खीहै वेदोंमें ऐ-
सी२भूठबातहोती तोवेदहीसच्चेन होसक्ते इस्से यहीनिश्चयकरना
किअपने२मतलबकेहेतु मिथ्या२कल्पना लोगोंनेकरदियाहै और
वेदमें सच्चीबातहीहै इनबातोंका लेशभीनहींहै। प्रश्न।वेदअनन्तहैं।
क्योंकि यजुर्वेदकीशाखा १०१ सामवेदकी १००० ऋग्वेदकी २१
औरअथर्ववेदकी ६ शाखाहैं सोवहुतशाखा गुप्तहोगईहैं उनमें
पाषाणपूजनादिकलिखाहोगा तुमक्याजानतेहो। अनन्ता वैवे-
दाः यहब्राह्मणकीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहै किवेदअनन्तहैं
अर्थात्अनन्तशाखाहैं(उत्तर)शाखाजोहोतीहै सोस्वजातीय हो-
तीहैं क्योंकिजिसवृक्षकीशाखाहोतीहै उसवृक्षकेतुल्यपत्र,पुष्प,फ-
ल,मूलऔरस्वाद तथारूपऐसीही जो२शाखाप्रसिद्ध हैं उन२शा-
खाओंकीलुप्तशाखाभीअवश्यहोगी किजैसाइनमें सत्य२अर्थप्रति-
पादितहैं वैसाउनमें भीहोगा इस्से जाना जाताहै किइनप्रसिद्ध
शाखाओंमें मूर्त्तिपूजनकालेशनहींहै तोलुप्तशाखाओंमेंभीनहीं
होगा ऐसाजोकोईकहे किआपनेक्या वेशाखादेखीहैं फिरआप
लोगक्योंकहतेहो किउनलुप्तसाखाओंमें लिखाहोगा औरआप
लोगअनुमानभीनहींकरसक्ते क्योंकिइनशाखाओंमेंथोड़ासाभी
प्रतिपादनहोता तोउनशाखाओंमेंभी अनुमानहोसक्ता अन्यथा
नहीं औरजोहठसेमिथ्याकल्पनाकरतेहो तोहमभीकरसक्ते हैं कि

उनशाखाओंमेंचोरी,मिथ्याभाषण,विश्वासघातक,कन्या,माता,भगिनी,इनसेसमागमकरना वेश्यागमनपरस्त्रीगमनकरना और वर्णाश्रमव्यवस्थानहोगीइत्यादिकअनुमानमिथ्याकरसक्ते हैं और फिरतुमनेभी वेशाखादेखीनहीं वाकोईनहींदेखसक्ता फिरकैसे निश्चयहोगा कभीनहोगा क्योंकिकभीभ्रमकी निवृत्तिनहोगी न जानेउनशाखाओंमेंब्राह्मणकानामचांडालहोय औरचाण्डालका नामब्राह्मणहोय इससेऐसाआपलोग मिथ्याअनुमाननकरें और इनशाखाओंकामूलभीतोकोईहोगाऔरजोमूलनहोगा तोशाखा कैसी इससे जोवेद पुस्तकहैं वेईसब शाखाओंकेमूलहैं औरशाखा व्याख्यानोंकीनांई ब्रह्मादिकऋषिमुनिकेकिए हैं। जैसे, मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य:। ऐसापाठशुक्ल यजुर्वेदमें है और तैत्तिरीय शाखामें। मनोज्योतिर्जुषतामाज्यस्य। ऐसापाठहै। जूतिजोमनकाविशेषणथासोज्योतिः। शब्दसेस्पष्टार्थहोगया सोसर्वत्रविशेषणकायथायोग्यभेदहै जोविशेष्यका भेदहोगा तोपरस्परविरोध केहोनेसे मिथ्यात्वआजायगा इससे विशेष्यकाभेद कभीनहींहोता विशेष्यभेदसे पूर्वापरविरोधहोजायगा फिरकिसकोसत्यमानें किसकोमिथ्या इससे वेदोंमें ऐसादोषकहींनहीं इससे ऐसाभ्रमकभी नहीकरनाचाहिए औरजोवेदअनन्तहोंगे तोकोईपुरुषसबकोपढ़ना वादेखभीनसकैगा औरपूर्णविद्वानभीकोईनहोसकैगा फिर भीभ्रमहीरहेगा भ्रमकेरहनेसे किसीपदार्थका दृढनिश्चयनहोगा औरउत्साह भङ्गभीहोजायगा किवेदकाअन्ततोनहींहै हमलोग कैसेपढ़सकेंगे इससे सबलोगोंको भ्रमहोबनारहेगा इससे वेदशब्द कायहअर्थहै जिससेजानाजायपदार्थ उसकानामवेदहै और वेत्तिसोयवेदः। जोजाननेवालाहै उसकानामभीवेदहै सोअनन्तनाम असंख्यातजीवहैं वेहीजाननेवालेंकेहोनेसे उनकानामवेदहै और विदन्तिपैस्ते वेदाः। जिनसेपदार्थजानाजाय उनकानामवेदहै। सोसर्वशक्तिमत्वऔरसबजगत्का रचनादिकपरमेश्वरके अनन्त

गुणहै वेपरमेश्वरके जनानेवालेहैं इससे उनका नामवेदहै इससे अनन्तावैवेदाः। ऐसाब्राह्मणग्रन्थ तिसमेंअभिप्रायज्ञापनकियाहै(प्रश्न) पाषाणादिक मूर्त्तिपूजन वेदादिकोंमेंनहींहै फिरकैसेयहपरंपरा चलीआई औरइतनी बडीप्रवृत्तिभई आजतक किसीने नहीं खण्डनकिया जैसेकिआपखण्डनकरतेहैं(उत्तर)आपलोगसर्वज्ञनहींहै वाचिकालदर्शीभीकि परम्पराकाठीक२निश्चयकरैं देखना चाहिए किसत्यनारायण शीघ्रबोध,कौमुद्यादिकनए२ग्रन्थ नवीन२तीर्थ तथामन्दिरआदिकहोतेहीजातेहैं औरइनकोपरंपरा मानलेतेहैं औरवेअबकेबनेहैं सबऔरअपनापिता जैसाकर्मकरताहै वैसाहीउसकापुत्र परंपरामानलेताहै फिरकोईचौर्यादिक अन्यायमेंप्रवृत्तहोजाताहै औरकोईकुछअन्यायमेडरताभीहैसोलोककोपरंपराआपलोगमानेगें तोबहुतदोषआजांयगे औरकभीन होसकेगी क्योंकिकिसीकापितादरिद्रहोवै औरउसकेकुलमेंपुत्रादिकधनाढ्यहोतेहैं फिरपरंपरासेजोदरिद्रता उसकोक्योंछोडते हैं किसीकापिताअन्धाहोय उसकापुत्रआंखको क्योंनहींनिकाल डालताहै औरजिसकापितामूर्खहोताहै वापण्डितउसकापुत्रमूर्खवापण्डितनियमसेक्योंनहींहोता किसीकापिताचोरीकर्ताहोय औरजङ्गलखानेकोजाय उसकापुत्रचोरीवाजङ्गलखानेको क्योंनहींजाय जिसदिनउसकापितामरे उसीदिनअपनेभीक्योंनहींमर जाय प्रथमअंगरेजीइसदेशमें पढ़ाईनहींजातीथी अबक्यों पढ़ी जातीहै रेलपरपहिलेचढ़नानहींहोताथा औरतारपर खबरनहीआतीजातीथी फिररेलपरचढ़ते औरतारपरखबर भेजतेभेजातेक्योंहैं इत्यादिकबहुतदोषआतेहैं ऐसामाननेमें औरपरंपराकानिश्चयतो प्रत्यक्षादिकप्रमाण औरवेदसत्यशास्त्रोंहीसे होताहै अन्यथाकभीनहीं यहपाषाणादिकपूजनको मिथ्याप्रवृत्तिवडीभई है सोकेवलविद्या,धर्म,बिचार,ब्रह्मचर्याश्रम,सत्सङ्ग औरश्रेष्ठात्माओंकेनहींहोनेसेभईहै क्योंकिसत्यविद्या जबमनुष्योंमेंनहीहो-

तो तबअनेकभ्रमोंमेंबुद्धिनष्टहोतीहै तबबहुतमूर्ख, अधर्मी,पाखण्डी तथामतवालोंके उपदेशलोकमाननेलगतेहैं फिरबड़े भ्रमजालमेंपड़के वे जैसाउपदेशकरतेहैं वैसाहीमानलेतेहैं और लोगोंकीबुद्धि विपरीतहोजातीहै फिरबड़ाअन्धकारहोजाताहै। उनकोबुद्धिसेकुछनहींसूझता गतानुगतिकालोका नलोकाःपारमार्थिकाः। बालुकापिण्डदानेन गतंमेताम्रभाजनम्॥ इसमेंयह दृष्टान्तहैकिएककोईपण्डितताम्बेकाअर्घालेकेतर्पणऔरस्नानके हेतुगया उसघाटमें अन्यपुरुषभीबहुतजातेऔरआतेथे उसपण्डितकोशौचकीइच्छाभई तबतांबेकाअर्घाबालूमेंगाड़दिया औरउसकेऊपरगोलबालूकापिण्डधरके निशानकेहेतुशौचकोफिरचलागया अन्यस्नान करनेवालोंने यहचरित्रदेखा देखकेपण्डितसेतोकिसीनेनहींपूछा किन्तुजैसापण्डितने पिण्डबनाकेरक्खाथा वैसापिण्डसैकड़ों आदमीनेबनाके रखदिया उसकेपास२ उनकेहृदयमें ऐसाविचारथाकि पण्डितनेजोयहकामकियाहै सोपुण्यकेवास्तेहीकियाहोगाइसहेतुहमभीऐसाहीकरें तबतकपण्डितभी शौचहोकेआया औरउसनेदेखाकि बहुतपिण्ड वैसधरेहैं औरबहुतमनुष्यपिण्डबना२केरखतेभीजातेथे सोपण्डितनेउनसेपूछाकि आपयहकामक्योंकरतेहैं तबउननेपण्डितसेकहा किआपकादेखकेहमलोगभीकरतेहैं तबपण्डितनेपूछाकिइसकेकरनेकाक्याप्रयोजनहै तबउननेकहाकि जोआपकाप्रयोजनहोगा सोहमाराभीहै पण्डितनेविचाराकिमेरातोपात्रहीनष्टहोगया तबपण्डितनेकहाकिअपना२पिण्डसबबिगाड़डारो नहींतोतुमकोबड़ापापहोगा तबउननेपण्डितसेकहा किआपकोभीपिण्ड बनानेसेपापभयाहोगा तबपण्डितनेकहाकि तुमअपना२पिण्डबिगाड़डारो तबमैंभीअपनाबिगाड़डालूंगा तबतोसबअपने२ पिण्डतोड़डाले तबपण्डितकापिण्डरहगया पण्डितनेजाकेपिण्डतोड़ा औरनीचेसेअर्घानिकाललिया औरउनसेकहा किमैंनेइसहेतु निशानधराथा

तुमनेंपूछाभीनहीं औरपिण्डधरनेलगगए तबउननेकहाकि आप
काकामदेखके हमभीकरनेलगे वैसेहीपाषाणादिक मूर्त्तिपूजन
एककादेखकेदूसरेभीकरनेलगें ऐसेभेड़ोंकेप्रवाहकीनांई लोगग-
तानुगतिकहोतेहैं जैसेएकभेड़आगेचले उसकेपीछे सबभेड़चलने
लगतीहैं और जैसेएकसियार वाएककुत्ताबोलनेवाभूकनेलगें उ-
सकाशब्दसुनकेअन्यसियार वाकुत्ते बहुतबोलने वाभूकनेलगतेहैं
वैसीहीविद्याहीन मनुष्योंकीअन्धपरम्पराचलतीहै उसमेंबड़े२
आग्रहकरकेनष्टहोतेचलेजातेहैं औरपरमार्थविचारसत्य२कोई
नहींकर्ता इससे हमलोगभी मिथ्याव्यवहारकाखण्डनकर्तेहैं पक्ष-
पातछोड़के क्योंकिप्रत्यक्षादिप्रमाणोंसे औरवेदादिक सत्यशास्त्रों
सेदृढ़निश्चयकरकेजानागयाहै किमुक्तिकेहेतु वाव्यवहारसुखके
हेतुपरमेश्वरहीकीदृढ़उपासनाकरनीयोग्यहै पाषाणादिकजड़मू-
र्त्तियोंकीकभीनहीं प्रश्न आजतकबहुतपण्डितपहिलेभए औरब-
हुतपण्डितभीहैं फिरखण्डननहींकोईकरता औरमूर्त्तियोंकापू
जननहींकर्तेहैं सोआपएकबड़े पण्डितआए जोखण्डनकर्तेहैं सो
आपकाकहनाकौनमानताहै उत्तर प्रथममैंआपसेपूछताहूं कि
पण्डितकौनहोताहै जोआपकहैं किपञ्चाङ्ग,शीघ्रबोध,मुहूर्त्त चि-
न्तामणि, आदिक सारस्वतचन्द्रिका, कौमुद्यादिक, तर्कसंग्रह,
मुक्तावल्यादिक,भागवतादिक पुराणमन्त्र,महोदध्यादिक,तंत्रग्रंथ
औरतुलसीकृत रामायणादिक भाषापढ़नेसे क्यापण्डितहोताहै
किन्तु अविवेकीहोबनजाताहै क्योंकि(सदसद्विवेकवती बुद्धिःपण्डा
पण्डासंजातास्येतिसपण्डितः)॥ जोबुद्धिसदसद्विवेककरनेवाली
होय उसकानामपण्डाहै औरवहीपण्डानामविवेकयुक्त बुद्धिजि-
सकोहोय वहीपण्डितहोताहै सोआपलोगविचारकेदेखें किय-
थावत्धर्मऔरअधर्म तथासत्यऔरअसत्यकाविवेकइनपण्डितोंको
हैवानहीं जिनकोआपपण्डितकहतेहो औरजोमूर्खहैं वेतोआज
कालकोई२अधर्मसेडरतेभीहैं किन्तु पण्डितलोगप्रायःनहींडरते

किन्तु कोई पण्डित सैकड़ों में एक अच्छा भी है परन्तु उस एक की बे धूर्त लोग बात ही चलने नहीं देते और बहुत सच जानता भी है तो मन ही में सत्य बात रखता है क्योंकि वह सत्य कहै तो सब मिलके उसकी दुर्दशा कर देते हैं इस भय का मारा वह भी मौन कर लेता है परन्तु उन सत्यपण्डितों को मौन वा भय करना उचित नहीं क्योंकि मौन और भय करने से देश का अकल्याण धर्म का नाश और अधर्म की वृद्धि, और इन धूर्त्तों के बन पड़ेंगे इस से कभी मौन वा भय सत्य करने वा कहने में न करना चाहिए क्योंकि जो अच्छे पण्डित और बुद्धिमान् भय वा मौन करेंगे तो उस देश का नाश हो ही जायगा और वेदविद्यादिक नहीं पढ़ने में बहुतों को सत्य २ निश्चय भी नहीं है इस से वे खण्डन नहीं करते हैं लोक के भय के मारे कि हमारी आजीविका नष्ट हो जायगी जो हम खण्डन करेंगे तो हमारी निन्दा होगी और आजीविका भी नष्ट हो जायगी इस से ऐसा कहना वा करना न चाहिए जिस से कि संसार में विरोध हो जाय परन्तु मैं कहता हूं कि भय तो श्रेष्ठ पुरुषों को एक परमेश्वर और अधर्म के आचरण ही से करना चाहिए और जो मैं खण्डन करता हूं सो प्रत्यक्षादिक प्रमाण और वेदादिक सत्यशास्त्रों ही से करता हूं सो आजतक किसी ने वेदोक्त प्रमाण वा ठीक २ युक्ति नहीं दिया क्योंकि प्रमाण और युक्ति तो सत्य बात में ही मिलती है असत्य में कभी नहीं और इस में प्रमाण वा युक्ति कोई दे भी नहीं सकेगा इस में कुछ सन्देह नहीं। प्रश्न अनेक संन्यासी, उदासी बैरागी और गोसांई आदिक खण्डन नहीं करते हैं और पूजा करते हैं उत्तर वे भी वैसे ही संसार की निन्दा और आजीविका से डरते हैं इस से वे खण्डन नहीं करते वा पूजा नहीं छोड़ते। प्रश्न उन को क्या आजीविका का भय है और संसार का जिस से कि वे डरते हैं क्योंकि उन को विवाह मरने में द्वादशाह करना होता नहीं जिस में धन को चाहना हो और माता, पिता, स्त्री, पुत्रादिक, कुटुम्ब, और घर को छोड़ के स्वतन्त्र हैं इस से उन को भय नहीं है परन्तु वे भी खण्डन नहीं करते और पूजा करते हैं फिर आप ही बड़े विरक्त आ गए

कि इनबातोंका खण्डनकरतेहैं। उत्तर यहबाततोसत्यहै कि उनको सत्यभाषणादिककाछोड़ना और पाषाणादिकमूर्त्तिकापूजनकरना उचितनहीं परन्तुवेभीसैकड़ोंमें कोईएकधर्मात्माऔरपण्डित है अन्यजैसेगृहाश्रमसेथें वैसेहीवनेरहतेहैं और कितनेकगृहस्थोंसेभीनीचकर्मकरतेहैं क्योंकि उननेकेवलखानेपीने और विषयभोगकेहेतुविरक्तका वेषधारणकरलियाहै परन्तु विरक्तता उनमेंकुछ नहीमालूमपड़ती क्योंकि धर्मकीरक्षाऔरमुक्तिकरनेकेहेतु विरक्त नहोहोतेहैं किन्तु अपनेशरीर और इन्द्रियभोगकेहेतु विरक्तोंको नांईबनगएहैं कोईधर्मात्माराजाहोय और इनकोयथावत्परीक्षा करै तोहजारोंमेंएकविरक्तताकेयोग्यनिकलगा बहुतमजूरीऔर हलग्रहणकरनेकेयोग्यनिकलेंगे क्योंकि जबपूर्णविद्या, जितेन्द्रियता, छल, कपटादिकदोषरहितहों वे सत्य२ उपदेश तथासबकेऊपर कृपाकरके वैराग्य, ज्ञान, और परमेश्वरकाध्यानकरैं तथाकाम, क्रोध, लोभ, मोहादिकदोषोंकोछोड़ें औरसत्यधर्म, सत्यविद्या, सत्यउपदेशकीसदानिष्ठाहोनेसे विरक्तहोताहै अन्यथानहीं देखना चाहिए किगोकुलस्थगोसांईआदिककेसेधूर्त्ततासे धनहरणकरके धनाढ्यबनगएहैं बहुतसेचेलें औरचेलियांबनालेतेहैं उनसेसमर्पणकरालेतेहैं कितननामशरीर, धनऔरमनगोसांईजीकेअर्पण करो सोबड़े२मन्दिरउनोनेबनाएहैंऔरनानाप्रकारकीमूर्त्तियां रखलियाहै औरनानाप्रकारके कलावत्तू, सच्चे झूठेआभूषणोंसे ऐसाजालरचाहै कि देखतेहीमोहितहोके उसमेंफसजातेहैं प्रायःस्त्रीलोगउसमन्दिरमें बहुतजातीहैं जितनी व्यभिचारिणी स्त्री और व्यभिचारीपुरुष बहुधामन्दिरोंमेंजातेहैं क्योंकिवहांपरस्पर स्त्रीपुरुषोंकादर्शनहोताहै औरजिससे जोचाहै उससे समागमबिना परिश्रमसेकरले उसमेंशयनआती और मङ्गलातीबहुधाव्यभिचारकेमूलहैं क्योंकिउससमयप्रायःरात्रीहोरहतीहै इससे आनन्दपूर्वकनिर्भयहोकेक्रीड़ाकरतेहैं परस्परमिलकेऔरउसमेंपापभोग-

हीं गिनते क्योंकि एक श्लोक बना रक्खा है ॥ अहं कृष्णस्त्वं राधा च्छा-
वयोरस्तु संगमः ॥ परस्त्री और परपुरुष जब परस्पर गमन करा चाहैं
तो इसको पढ़ले तो कुछ परस्त्रीगमन वा परपुरुषगमन में कुछ पाप
नहीं होता है जब वे परस्पर सम्मुख होवैं तब पुरुष कहै कि मैं कृष्ण हूं
तू राधा है तब स्त्री बोली कि मैं राधा हूं आप कृष्ण हैं ऐसा कहके कु-
कर्म करने को लग जाते हैं उनके दो मन्त्र हैं श्रीकृष्णः शरणं मम। यह
उन्हों ने मिथ्या संस्कृत बना लिया है इसका यह अभिप्राय है कि जो कृष्ण
सोई मेरा शरण अर्थात् इष्ट है फिर भागवत की कथा में रासमण्डल की
लीला सुनके ऐसा निश्चय करते हैं कि हम लोग भी कृष्ण ने जैसी लीला
किया है वैसी हम भी करैं कुछ दोष नहीं और इसका ऐसा भी अर्थ बन
सक्ता है कि जो श्रीकृष्ण है सो मेरी शरण को प्राप्त हो। अर्थात् मेरा सेवक
श्रीकृष्ण बन जाय ऐसा अनर्थ भी भ्रष्ट संस्कृत से हो सक्ता है सो यह म-
न्त्र गोसांई लोग दरिद्र, कङ्गाल और साधारण पुरुषों को देते हैं और
जो बड़ा आदमी है उसके हेतु दूसरा मन्त्र बनाया है वही समर्पण का
मन्त्र है ॥ क्लीं कृष्णाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ॥ इस मन्त्र को उस
को देते हैं कि जो शरीर, मन, और धन गोसांई जी के अर्पण करदे और
गोसांई लोग अपने को कृष्ण मानते हैं और अपनी चेलियां वा जगत्
को सब स्त्रियां राधा है सो जिस स्त्री से चाहे उस स्त्री से समागम करलें उ-
नको पाप नहीं लगता और उनके समर्पण जो चेले होते हैं वे अपनी
प्रसन्नता से गोसांई जी को प्रसादी करा लेते हैं अर्थात् स्त्री वा पुत्र की स्त्री
तथा कन्या उनको गोसांई जी को खास सेवा में एकान्त में भेजते हैं जब
गोसांई जी एक वार अपनी सेवा में प्रथम रखलेते हैं तब वह स्त्री पवित्र
हो जाती है और वह स्त्री अपने को धन्य मानती हैं तथा उनके सेवक भी
अपने को धन्य मानते हैं जिनका गुरु इस प्रकार का व्यभिचारी होगा
उनका शिष्यवर्ग व्यभिचारी क्यों नहीं होगा सो बड़े २ अनर्थ होते हैं
अब के सम्प्रदाय में सो कहने योग्य नहीं वे पान बीड़ा खाके पात्र में पीक
डाल देते हैं सो उसको उनके चेले बड़ी प्रसन्नता से खा लेते हैं और अ-

पनेको बड़ा धन्य मान लेते हैं कि हमको गोसांई जी महाराज की प्रसादी मिल गई जब कोई धनाढ्य उनको अपने घर में ले जाता है उसका नाम पधरावनी कहते हैं जब वे वहां जाते हैं तब बड़ा एक पात्र ताम्बे वा लोहे का रख लेते हैं उसके बीच में स्नान के हेतु एक चौकी रख देते हैं फिर गोसांई जी एक धोती सहित उस पात्र के बीच में चौकी पै बैठ जाते हैं फिर अनेक सुगन्ध केसरादिक पदार्थों से उनके शरीर को स्त्री और पुरुष मलते हैं फिर अच्छे २ घड़े २ जल से उनको स्नान कराते हैं फिर जब स्नान हो जाता है तब सूखा पीताम्बर को धार लेते हैं और गीली धोती उस कड़ाही के जल में छोड़ देते हैं फिर गोसांई जी निकल आते हैं तब उनके सेवक लोग उस जल को पीते हैं और अपने को धन्य मानते हैं फिर गोसांई जी, बहू जी, बेटी जी, लाल जी, ठाकुर जी, पुजारी, गवैया जी, इन सात गालों से उस गृहस्थ का बहुत धन हर लेते हैं इससे उनके पास खूब धन हो गया है उससे रात दिन विषय सेवा और प्रमाद में रहते हैं उनके चेले मानते हैं कि हम मुक्ति को प्राप्त होंगे परन्तु इन कर्मों से मुक्ति तो नहीं होनी किन्तु नरक ही होना क्योंकि इन प्रमादों में जिनका धन जाता है उनका भला कभी न होगा और उन गुरुओं का भी और उनने एक कथा रच रक्खी है कि लक्ष्मण भट्ट एक ब्राह्मण तैलंग था उसने काशी में आके संन्यास लेने चाहा तब उससे पूछा कि आपके माता पिता वा विवाहित स्त्री तो घर में नहीं है तब उसने कहा मिथ्या कि मेरे घर में कोई नहीं है मुझको संन्यास दे दीजिए फिर उनने संन्यास दे दिया कुछ दिन के पीछे उसकी स्त्री काशी में खोजती २ आई और वह कहीं मार्ग में मिला सो उसके पीछे २ चली गई वह अपने गुरु के पास जाके बैठे स्त्री भी बैठी और उसके गुरु से बोने कहा कि महाराज मुझको भी आप संन्यास दे दीजिए क्योंकि मेरे पति को तो आपने संन्यास दे दिया अब मैं क्या करूंगी तब तो उस संन्यासी ने बहुत क्रोध करके उसका दण्ड और काषाय वस्त्र ले लिए और उससे कहा कि तूं झूठ क्यों बोला तैने बड़ा अनर्थ किया अब तुम यज्ञोपवीत पहर लेओ और अपनी

स्त्रीकेसाथरहा औरउनकेगुरूनेआशिर्वाददिया कितुम्हारापुत्रब- ड़ासिद्धहोगा सोउनकेभाषा ग्रन्थमेंऐसीबात लिखीहै सोमुझको अनुमानसेमालूमपड़ताहैकिजबउसनेकाशीमेंसंन्यासलिया फिर खूबखानेपीनेलगे तब कामातुरहोके किसीस्त्रीसे फसगए फिर जबकाशीमेंनिन्दाहोनेलगी तबकाशीछोड़केदक्षिणदेशमेंचलेगए परन्तुकोईउनकेस्वजाति ब्राह्मणनेपंक्तिमेंनहीलिया सोआजतक तैलंगब्राह्मणोंकोऔरगोकुलस्थोंकोएकपंक्तिवाएकविवाहनहीहो- ताजोकोईतैलंग,ब्राह्मण,गोसांईजीकोकन्यादेताहै वहभीजातिबा ह्यहोजाताहै फिरवेदोनों जहांतहां घूमनेलगे औरउनकाएक पुत्रभया उसकानामवल्लभरक्खा इसविषयमें वलोगऐसा कहतेंहैं किजन्मसमयमेंही उसबालककोवनमेंछोड़के चलेगए सोउसबा- लककी चारों ओर अग्नि जलतारहता था। इससे उस बालक कोकोईजानवरनहींमारसका जबवपांचवर्षकेभए तबदिग्विजय करनेलगे औरसबपृथिवीकेपंडितोंको उननेजीतलिया पांचवर- षकीउमरमें सोयहबातहमको झूटमालुमदेतीहै क्योंकिवे बनमें बालककोकभीनहींछोडेंगे तथाअग्निरक्षाभीनकरेंगे औरपांच वर्षकीउमरमें विद्याकभीनहीहोसक्ती फिरवेक्या पराजयकरेंगे यहबातअपनेसंप्रदायकीप्रतिष्ठाकेहेतुमिथ्यारचलीईहैक्योंकिसुबो धिनीतथाविद्वन्मंडनसंस्कृतमेंग्रन्थउनकेबनायेदेखनेमेंआतेहैंउन मेंउसकासाधारण पांडित्यहीदेखनेमेंआताहै इससेवक्यापंडितों कापराजयकरसकेंगे फिरवेऐसाकहतेहैं किश्रीकृष्णनेवल्लभजीसे कहाकिहमारे जितनेदैवोजीवहै उनकातुमउद्धारकरो फिरवल्ल भजीफिरतेघूमतेमथुरामे आकेरहेऔरवहांसंप्रदायका जालफै- लायाकितनेकपुरुष उनकेचेलेभए औरउननेबिवाहकिया उससे सातपुत्रभए सोआजतकगोकुलस्थोंकी सातगद्दीचलतीहै फिरऐ सीरकथाप्रसिद्धकरनेलगे किजोकोईगोसांई जीकाचेलाहोगाव- हीवैष्णवऔरदैवोजीवहै औरजोकोईउनकाचेला नहीहोतावह-

असुर नाम दैत्य और राक्षस संज्ञक जीव हैं ऐसीप्रसिद्धहोनेसे बहुतलोग चेलेहोगये औरबहुतव्यभिचार तथाविषयभोग केहेतु चेलेहोरहे हैं यहांतकउनने मिथ्याकथारचीहै किजब मथुरामें रहतेथेतबवल्लभजीने एकचेलेसेकहाकितूंदहीमेरेलिये बाजारसेले आवकहचेलादहीलेनेकेहेतु बजारमेगया वहांएकदहीलेके बूढीस्त्री बैठीथी उस्सेउसनेकहाको इसदहीकाक्यातूंमुल्यलेगी तबबुढियाने जानाकियह वल्लभजीका चेलाहै उस्सेबोलीकिमैं इसदहीकेबदले मुक्तिलेऊंगी तबउसनेदहीलेलिया औरबुढियासे कहाकितुमको मैनेमुक्तिदेदी सोउसबुढियाकोमुक्तिहीहोगई औरवल्लभजीकानाम रक्खाहैमहाप्रभुसोऐसीऐझूठकथाबनाकेजगतकोठगलेतेहैं एक घासकीकण्ठीदेदेतेहैं उसकानामरक्खाहै पवित्राऔररोरीकीटो रेखाष्टङ्ककेतुल्य ललाटमेबनवादेते हैं फिरकहते हैंकितुमगोसांई जीकेसमर्पणहोजा औरइस्से तुमारासबपापछूटजायगा तुमलोग दैवीजीवऔरवैष्णवकहाओगे इसलोकमेआनन्दसेभोगकरोऔर मरनेकेपीछेतुमलोगगोलोकस्वर्गमें जावोगेजहां राधादिकसखी औरश्रीकृष्णनित्य रासमण्डल और आनन्दभोग करतेहैं वैसेतुम भीअनकस्त्रीयोंकेसाथ आनन्दभोगकरोगे ऐसीकथाको सुनकेस्त्री औरपुरुषमोहित होकेचेलेहोजातेहैं फिरएकऐसी मिथ्याकथा रचीहैं कित्रिठ्ठलसाक्षात् श्रीकृष्णकाअवतारहुआहै औरहमलोगसाक्षात् कृष्णकेस्वरूपहैं सोबहुतर धनदेके धनाढ्यकीस्त्रीयां एकरात्रीं गोसांई जीकेसेआम रहआतीहैं तबउनकेचेले औरचेलियांउसस्त्रीसेकहतीहैं कितूंबडीभाग्यवतीहै किगोसांईजीनेंतुझकोअंगसेलगालिया क्योंकि समर्पणकायहीप्रयोजनहै किगोसांई जीगरीरधन औरउनके मनको चाहेंसोकरें उनचेलें औरचेलियोंकाजबमरणहोताहै तबउनका धनसब गोसांईजी लेलेतेहैं क्योंकोपहिलेही समर्पणकियागयाथाबडेआनन्दकासंप्रदायउनकाहै किचेलचेलीनोकरचाकरसबविषयभोगआनन्दकेंसमुद्रमेंडूब

केमग्नहोजातेहैं औरगोसाईंलोगखूबश्रृङ्गारसेबनेठनेसदारहते हैंजिसेदेखकेस्त्रीलोगमोहितहोजाय सोरातदिनस्त्रीलोगघेरकेर-हतीहैं औरस्त्रीयोंके अर्थातचेलियोंकेभुण्डकेभुण्ड२ क्रीडाकरते रहतेहैं क्योंकिगोसांईलोगअपनेकोकृष्णमानतेहैं औरउनकीचे-लियांअपनेकोराधारूपसखीमानतीहैंखूबस्त्रीलोगधनदेतीहैंऔर अपनोइच्छापूर्वकक्रीड़ाकरतीहैं केवलवेबड़ेपामरहोजातेहैं इ-स्से पशुकीनांई अर्थात्लालसुखकेआदरजैसेक्रीडाकरतेहैंवैसेवेभी पशुहैं इसमेंकुछसन्देहनहीं जितनेमन्दिरधारी,वैरागीहैं उन-काभोप्राय:ऐसाहोव्यवहारहै ऐकचक्रांकितलोग जोकिआचारी कहातेहैं उनकाऐसामतहैकि।तापःपुण्ड्रंतथानाम मालामन्त्र-स्तथैवच। अमीहिपञ्चसंस्कारा परमैकान्तहेतवः॥ यह उनका श्लोकहै शंख,चक्र,गदाऔरपद्मलोहेयांदीवासोनेके चारचिन्हब-नारखतेहैं जोकोईउनकाचेला वाचेलीहोतीहै जबवेस्नानकरके आतेहैं तबबरोबर पंक्तिउनकीवैठजातीहै औरउनचिन्होंकोअग्नि मेंतपाके उनकेहाथकेमूलमेंतप्त२लगादेतेहैं उससमयजिसअग्नि मेंतपायाजाताहै उसकानामवेदीरक्खाहै जबउनकेहाथमेंतप्त२ वेलगातेहैं तबबड़ादुःखउनकोहोताहै क्योंकिचमड़े,लोम और मांसकेजलनेसे उनकोबड़ी पोड़ाहोतोहै औरदुर्गन्धभोउठताहै फिरउनकेहाथमेंलगाके चमडा,मांस,उसमें कुछ२लगरहताहै औरएकपात्रमेंजलवादूधरखदेतेहैं उसमेंउनचिन्होंको बुझादेते हैं फिरकोई२उसजल वा दूधकोपीलेतेहैं देखनाचाहिएयहबात कौनधर्म औरकिसयुक्तिकोहोगी केवलमिथ्याहीजानना क्योंकि जीतेशरीरकोजलानेसे एकप्रथमसंस्कारमानतेहैं औरजितनसं-प्रदायवालेहैं वेउर्द्ध पुंड्रवात्रिपुण्ड्रका संस्कारसबमानतेहैं उनसे होशैव,वैष्णवादिक अपनेहृदयमेंअभिमानकतेहैं उर्द्ध पुण्ड्र वाले नारायणकेपगकीआकृतितिलककोमानतेहैं तथाशैवशाक्तादिक महादेवकेललाटमेंजोचन्द्रहै उसकीआकृतिमानतेहैं फिरचक्रां

कितादिक बीचमें रेखाकर्तेहैं उसकानामश्रीरखलियाहै इसमें बिचारनाचाहिए किजिनकेललाटमें हरिकेपगकाचिन्ह लक्ष्मी औरचन्द्रमाकाचिन्हहोवै तोवेदरिद्रदुःखीऔरज्वरादिकरोगउनकोक्योंहोवैंफिर वेकहतेहैं किबिनातिलकसेचाण्डालकेतुल्यवह मनुष्यहोताहै उनसेपूंछनाचाहिएकिचाण्डालजोतुम्हारातिलक लगाले तोतुम्हारेतुल्यहोसक्ताहैवानहीं जोवेकहैंकिहोसक्ताहै तो गधावाकुत्तेकेललाटमें तिलकलगानेसे वहमनुष्यभी होजाताहै वानहींसोतिलककाऐसासामर्थ्य नहींदेखपड़ताहैकिऔरकाऔ रहोजाय औरलक्ष्मीचन्द्रइनके ललाटमें बिराजमानतोभीउदर कापालनहोना कठिनदेखपड़ताहै इससे ऐसा निश्चयहोताहै कि यहलक्ष्मीऔरचन्द्रमानहीहै किन्तुदरिद्राऔरउष्णताजाननी चाहिए फिरवेतिलककेबिषयमें एकदृष्टान्तकहतेहैं किकोईमनुष्य एकवृक्षकेनीचेसोताथा बड़ारोगीसोमरणसमय उसकाआगया वृक्षकेऊपरएककौआबैठाथाउसनेविष्टाकियासोगिरीउसकेललाट केऊपर सोतिलककीनांईचिन्हहोगया फिरयमराजकेदूतउसको लेनेकोआए तबतकनारायणनेअपनेभीदूतभेजदिए यमराजकेदूतोंनेकहाकियहबड़ापापीहै सोअपनेस्वामीकीआज्ञासेहमइसको नरकमेंडालेंगे तबनारायणकेदूतबोले कि हमारेस्वामीकीआज्ञा है किइसकोवैकुण्ठमेंलेआओ देखोतुमअन्धे होगए इसकेललाट मेंतिलकहै तुमकैसेलेजासकोगे सोयमराजकेदूतोंकीबातनहींचली औरउसकोवैकुण्ठमेंलेगए नारायणनेबड़ीप्रीतिसेप्रतिष्ठाकिया औरउससे कहाकितूंआनन्दकर वैकुण्ठमें ऐसे२प्रमाणोंमेतिलक कोसिद्धकरतेहैं औरलोगमानतेहैं यहबड़ाआश्चर्यहै क्योंकिऐसी मिथ्याकथाकोलोगमानलेतेहैं गोकुलस्थलोगकेवलहरिपदाकृति हीकोतिलकमानतेहैंनिम्बार्कसम्प्रदायकेएककालाबिन्दु तिलकके बीचमेंदेतेहैं उसकोजैसेमन्दिरमेंश्रीकृष्णबैठाहोय ऐसामानतेहैं तथामाधवार्कसंप्रदायवाले एककालीरेखाखड़ीललाटमेंकर्ते

हैं उसकोभीऐसामानतेहैं तथाचैतन्यसंप्रदायमेंजोहैं वेकटारके ऐसाचिन्हको हरिपदाकृतिमानतेहैं औरराधावल्लभीभीबिन्दुको राधावतमानतेंहैं कबीरकेसम्प्रदायवाले दीपकीशिखावत् तिलकको मानतेंहैं औरपण्डितलोगपिप्पलकेपत्ते कीनाई कोई२ तिलककतेंहैं सोकेवलमिथ्याकल्पनालोगोंनेबनाईहै जोतिलकके बिना चाण्डालहोताहोतो वेभीचाण्डालहोजांय क्योंकिजबस्नान और मुखप्रक्षालन करतेहैं तबतोउनकेभीललाटमें तिलकनहीरहनेपाता फिरवेचाण्डाल क्योंनबनजांय औरजोफिरतिलकके करनेसे उत्तमबनजांय तोचाण्डालउत्तमबननेमेंक्याढेर परन्तु चक्रांकितोंकेग्रन्थमन्त्रार्थदिव्यसूर्य्य, रत्न, प्रभा और नाभानेबनाई भक्तमालादिकोंमेंयहप्रसिद्धलिखाहै किजोचक्रांकितोंकामूलआचार्य्यषठकोपजोसो कंजर और लावडाकेकुलमें उत्पन्नभएथें सोईउनग्रंथों मेंलिखाहैकिविक्रीयशूर्पंविचचारयोगी । यहवचनहैइसकाइस्से यहअभिप्रायहैकिसूपकोबेचकेयोगीजोषठकोपसोविचरतेभएइस्से क्याआयाकिवहसूपबनानेवालेकेकुलमेउत्पन्नभयाथाउनहीनेचक्रांकितसंप्रदायकाप्रारम्भकियाइस्सेउसकाटोपचक्रांकितआजतकपूजतेंहैंउनकेपीछेदूसराउनकाआचार्यमुनिवाहनभयाउसकोऐसो कथाउनग्रंथोंमेंहैकिदक्षिणमेंएकतोतादरोऔररङ्गजोदोस्थानहैं उनमेंबहुतसेउनके संप्रदायकेसाधूआजतकरहतेंहैं वहांएकचांडालथाउसकोऐसोइच्छाथोकिमैंभीकुछठाकुरजीकापरिचर्य्याकरूं परन्तुमन्दिरमेंभाड़ूबहारूदेनेकेहेतुपुजारीलोगउसकोनहींआनेदतेथे सोजबप्रातःकालकुछ्रराचिरहै तबपुजारीलोगस्नानकोदरवाजाखोलकेचलेंजांय तबवहचांडालछिपके मन्दिरमेंभाड़ूदेके निकलजाय कोईउसकोदेखेनहीं परन्तु पुजारियोंने बिचारकिया किझाड़ूकौनदेजाताहै रातमेंछिपके दोचारपुजारीबैठेरहे किउसको पकड़नाचाहिए जबप्रातःकाल औरपुजारी स्नान को चलेगयेतबवह चांडालमन्दिरमे घुसकेभाड़ूदेनेलगा जबउननेदे

खातथपकडके ऐसामारा कि मूर्छितहोगया तबउनवैरागियोंनेप
कडकेमंदिरकेबाहरउसको डालदियाजबवेसामकरकेपुजारीलो-
गआकेठाकुरका किवाडखोलनेलगे सोनखुलाक्योंकि ठाकुरजी
नेउसकोमारनेमे बडाक्रोधकिया तबबडेआश्चर्यभये सबकिकिवा-
डक्योंनहीखुलतेहैं फिरएक वैरागीको ठाकुरजीने स्वप्नदियाकि
किवाडोतबखुलेगे आपसबलोग उसचांडालको पालकोमे बैठाके
अपनेकंधेपर सबनगरमेंउसको फिरा ओरओरपालकीसहितमं-
दिरकीपरिक्रमाकरो फिरउस कोमंदिरमें लेआओ वहीमेरीपू-
जाकरै औरइस मंदिरका अधिष्ठाताओर सबकागुरु बनैजबवह
किवाडकोआके स्पर्शकरेगा तबकिवाड खुलेगा अन्यथानहीऐ-
साहीउननेकिया औरसबबातहोगई उसकानाम उसदिनसेमु-
निवाहन रक्खागया क्योंकिमुनिजोवैरागी उननेवाहननामपा-
लकीउठाई इस्सेउसकानाम मुनिवाहनपडा उनका चेलाएकमु-
सलमानभया उसकानाम यावनाचार्यइसकोअब चक्रांकितोंने-
तिकयामुनुचार्य्य नामरक्खाहै उनकेचेला रामानुजभये वहब्रा-
ह्मणथेरामानुजके विषयमेंयेलोगकहतेहैं किशेषजीकाअवतार-
हैशंकराचार्य शिवका निंबार्कभास्कर रामानन्द औरनित्यानन्द
येचारों सनकादिकके अवतारहैं नानकजनकजी काअवतारहै
कबीरब्रम्हका यहबातसब उनकीमिथ्याहै क्योंकिअपने२संप्रदाय
केहेतुमिथ्याकथा लोगोनेरचलिईहैं तोसराम स्कारमालाधार-
णकरनाउसमें रुद्राक्षतुलसी पासकमलगट्टे इत्यादिकजानलेना
इसविषयमेंसंप्रदायो लोगकहते हैंकिविनामाला कण्ठीऔररुद्रा
क्षकेधारणसेजल पीयेऔरभोजनकरै सोमद्यपान औरगोमांस-
केतुल्यहैइनसे पूछनाचाहिये किनशाक्यों नहीहोताऔरमांसका
स्वादक्यों नहीआता इस्सेयहबात केवलमिथ्या आजीविकाकेहे-
तुलोगोनेरचलिईहैं इनमें श्लोकभी बनारक्खे हैंयस्यांगेनास्तिरु-
द्राक्षएकोपि बहुपुण्यदः। तस्यजन्मनिरर्थं स्यात्त्रिपुंड्ररहितंयदि

इत्यादिकश्लोकशिवपुराण औरदेवीभागवतादिक ग्रन्थोंमेंशैवऔ-
रशाक्तोंमेंअपनेसंप्रदायोंकेबढ़नेकेहेतु लिखेहैं औरवैष्णवादिकोंके
खंडनकेहेतुव्यासादिकों केनाममें बहुतश्लोक रचरक्खे हैं काष्ठमा
लाधरश्चैवमद्यश्चांडालउच्यतेऊर्ध्वपुंड्रधरश्चैव विनाशंव्रजतिध्रुवम्
इनकेविरुद्धइत्यादिक वैष्णवोंनेबनायाहैरुद्राक्षधारणेनैवनरकंप्रा
प्नुयाद्ध्रुवम् शालग्रामसहस्राणांशिवलिंग शतस्यच द्वादशकोटिवि
प्राणांततफलंश्वपचवैष्णवे ॥ विप्राद्द्विषड्गुण युतादरविंदनाभपा-
दारविंदविमुखाच्छ्वपच। वरिष्ठम्अभाग्यतस्य देशस्यतुलसीयत्र
नास्तिवै। अभाग्यंतच्छरीरस्यतुलसीयत्रनास्तिहि॥ दोनोंकेवि-
रोधीवाममार्गीआएप्रवृत्तेभैरवीचक्रे सर्ववर्णाद्विजातयः। निवृत्ते-
भैरवीचक्रेसर्ववर्णाः पृथक्पृथक्॥ मद्यमांसंचमीनंचमुद्रामैथुनमेव
च। एतेपंचमकाराश्चमोक्षदाहियुगेयुगे। पीत्वापीत्वापुनःपीत्वा
यावत्पततिभूतले। उत्थायचपुनः पीत्वापुनर्जन्मनविद्यते। सहस्र-
भगदर्शनान्मुक्तिर्नात्रकार्याविचारणा। मातृयोनिंपरित्यज्यविहरेत्सर्व
योनिषु काश्यांहिमरणान्मुक्तिर्नात्रकार्याविचारणा। काश्यांमर-
णान्मुक्तिःयहस्तुतिशैवोंनेबनालिईहैसहस्रभगदर्शनान्मुक्तियहशा
क्तोंमेंस्तुतिबनालिईहै गंगागंगेतियोब्रूयाद्योजनानांशतैरपि। मु-
च्यतेसर्वपापेभ्योविष्णुलोकंसगच्छति॥ अश्वमेधसहस्राणांवाजपे
यशतस्यच। कन्याकोटिसहस्राणां फलंप्राप्नोतिमानवः। यहएकाद-
श्यादिकव्रतोंकामाहात्म्य बनालियाहैऐसेहीशालिग्रामनर्मदालिं
गआदिकामहात्म्यबनालियाहैसोइसप्रकारकेमिथ्या२जालअपने
मतलबकेहेतुलोगोंनेबनालियेहैंऔरपरस्परएककोएकदेखकेजल
तेहैंतथाअत्यन्तविरोधऔर परस्परनिन्दाहोतीहैक्योंकिजोमिथ्या
२कल्पनाहै उनकीएकताकभी नहींहोतीजो सत्यबातहैसोसबके
बीचमेंएकहीहै चक्रांकितादिकोंने अपनेसंप्रदायकेमन्त्रबनालिए
हैं। ओंनमोनारायणाय ओम्श्रीमन्नारायण चरणांशरणंप्रपद्ये
श्रीमतेनारायणायनमः येदोनोंचक्रांकितोंकेमन्त्रहैंओम्नमोभग

वतेवामुदेवाय ओम्कृष्णायनमः ओम्राधाकृष्णाभ्यांनमः ओम्
गोविन्दायनमः ओम्राधावल्लभायनमः येनिंबार्कादिकोंकेमन्त्रहैं
ओम्रामायनमः ओम्सीताराभाभ्यांनमः ओम्रामायनमः
येरामोपासकोंकेमन्त्रहैं ओम्नृसिंहायनमः ओम्हनुमतेनमः
येखाखोआदिकोंकेमन्त्रहैं ओम्नमः शिवाययहशैवोंकामन्त्र
हैऐंह्रींक्लींचामुंडायेविच्चे ओम्ह्रांह्रींह्रूंह्रैंह्रौंहः वगलामुखिफ
ट्स्वाहाइत्यादिकवाममार्गियोंकेमन्त्रहैं सत्यनाम जपयहीकवी-
रसंप्रदायकामन्त्रहै दादूरामयहदादूसंप्रदायकामन्त्रहै रामरा-
मयहरामसनेहीसम्प्रदायकामन्त्रहै वाहगुरु॥ एकओंकारसत्य
नामकर्त्तापुरुषनिर्भयनिर्वैर अकालमूर्त्तअयोनीसहभंगगुरुप्रसा-
दजप॥ यहनानकसंप्रदायकामन्त्रहैं इत्यादिक कहांतकहमजाल
गिनावैंकि लाखहां प्रकारके मिथ्याकल्पना लोगोनेकरलियेहैं
येमवगायत्री जोपरमेश्वरकामन्त्रइसके छोडानेकेवास्तेधूर्त्तलो
गोनेमवरचोहै औरजैसे गडेरियाअपने भेंडऔरछेरियोंकोचरा
ताहैउनमेजबचाहै तबदूधदुहलेताहै अपनामतलबसिद्धकरलेता
हैदूहकाउनमेंसे एकभेंडव छेरीकोईलले अथवा भागजायतबउस
गडरियेकोवडादुःखहोताहै सदिनभरचराकै एकस्थानमेंइक
ट्ठाकरदेताहैवहचाहताहैइसभुंडमेंसे एकभीपृथक्नहोजायकिन्तु
अन्यभेडवाछेरीमिलाकेबढायाचाहताहै क्योंकि उनसेहीउसका
आजीविकाचलतीहै वैसेहीआजकाल मूर्खमनुष्योंकोधूर्त्त गुरुलो
गजालमेंबांधकेअत्यन्त धनादिकलूटतेहैं औरवडे२ अनर्थकरतेहैं
क्योंकिचेले मूर्खहैंइसे जैसाचेकहदेतेहैंवैसाहीमानलेतेहैंजोउन-
गुरुओंकोविद्याऔर बुद्धिहोतीतो ऐसी अपनेवास्तेनरककीसाम-
ग्रीक्योंकरतेतथा चेलेलोगोंको विद्याऔरबुद्धिहोतीतो इनधूर्त्तों
केजालमेंफसकेक्यों नष्टहोतेदेखनाचाहिये किनानकजीकवीरजी
औरदादूजी इनकेसंप्रदायमें पाषाणादिकमूर्त्ति पूजनतोनहीहै
परन्तुउनमेंभीसंसारका धनादिकहरनेके वास्ते ग्रन्थसाहबकीउ

से भी अधिक पूजा करते हैं यह भी एक मूर्त्ति पूजन ही है पुस्तक भी जड़ होता है क्योंकि जैसी पाषाणादिकों की पूजा वैसी पुस्तकों की भी पूजा जाननी इसमें कुछ भेद नहीं यह केवल पर पदार्थ हरने के वास्ते ही लोगों ने युक्ति रच लिई है अपने २ संप्रदाय में ऐसा आग्रह है उनको कि वेदादिक सत्य पुस्तकों की ऐसी पूजा वा उनमें प्रीति कभी नहीं करते जैसी की अपने भाषा पुस्तकों में प्रीति करते हैं और संन्यासियों ने एक ग्रंथ करदिग्विजय रच लिया है उसमें बहुत २ मिथ्या कथा रक्खी है उसमें दण्डी लोग और गिरीपुरी आदिक गोसांई लोग अत्यन्त प्रीति करते हैं अर्थात् रामानुजदिग्विजय निंबार्कदिग्विजय माधवार्कदिग्विजय वल्लभदिग्विजय कबीर दिग्विजय और नानक दिग्विजयादिक अपनी २ बड़ाई के वास्ते लोगों ने मिथ्या २ जाल रच लिये हैं शंकराचार्य कोई संप्रदाय के पुरुष न होथे किन्तु वेदोक्त चार आश्रमों के बीच संन्यासाश्रम में थे परन्तु उनके विषय में लोगों ने संप्रदाय को नांई व्यवहार कर रक्खा है दशनाम लोगों ने पीछे से कल्पित कर लिये हैं जैसे कि किसी का नाम देवदत्त होय इसके अन्त में दश प्रकार के शब्द रखते हैं कि देवदत्ताश्रम एक १ देवदत्ततीर्थ २ देवदत्तानन्दसरस्वती और दूसरी का भेद दूसरा कि देवदत्तेन्द्रसरस्वती ३ देवदत्तगिरी ४ देवदत्तपुरी ५ देवदत्तपर्वत ६ देवदत्तसागर ७ देवदत्तारण्य ८ देवदत्तवन ९ देवदत्तभारती १० ये दशनाम रच लिये हैं फिर इन में शृंगेरी शारदा भूगोवर्द्धन और ज्योतिमठ ये चार प्रकार के मठ मानते हैं और दण्डियों ने दामोदर नृसिंह नारायण इत्यादि कई दण्डों के नाम रख लिये हैं उसमें यज्ञोपवीत बांधते हैं उसका नाम शंखमुद्रादीक रक्खा है ऐसे २ बहुत कल्पना दण्डियों ने भी किई है किन्तु जो बाल्यावस्था में नाम रहता था सोई सब आश्रमों में रहता था जैसे कि जैगीषव्य आसुरि पंचशिखा और बोध्य ऐसे २ नाम संन्यासियों के महाभारत में लिखे हैं इससे जाना जाता है कि यह पीछे से मिथ्या कल्पना दण्डी लोगों ने कर लिया है परन्तु दण्डी लोग सनातन संन्यासाश्रमी हैं क्यों-

किमनुस्मृत्यादिकमेंइनका व्याख्यानदेख में आताहै औरगोसांई लोगोंने भोटुगोंनाथ इत्यादिकमहो शब्दकल्पित करलियाहैजैसे किबैरागीआदिकोंने नारायणदासइसे बड़ा भारीबिगाड़भया। कि नीचऔर उत्तमकी परीक्षाहीनहीहोती क्योंकिसब काएकमा- हीनामदेखपड़ताहैतापः पुंड्रनाममाला औरमन्त्रयेपंचसंस्का- रचक्रांकितादिकमानतेहैं औरमोक्षहोना भीइनसे मानतेहैंपर- न्तुइसमेंबिचार करनाचाहिए किसंस्कारनामहै पवित्रताकासो पवित्रतादोप्रकार कीहोतीहैएकमन कोदूसरीबाह्यपदार्थोंकोइ- नमेंसे मनकीपवित्रताहोनेसे वाह्यपवित्रता भीहोतीहै जिनका मनअधर्मकरने मेंरहताहैउनकोबाह्यपवित्र ताव्यर्थहैसोउन- संस्कारोंसेमनकोपवित्रताकुछनहीं होसक्तीदेखनाचाहिएकिगो- कुलस्थोंकेमन्दिरोंमें रोटीऔरदालतकलागबेचतेहैं औरबाहर सेप्रसिद्धरखतेहैं किठाकुरकोइतनाबड़ा भोगलगताहै सोजितने नौकरचाकरमन्दिरोंमेंरहतेहैं उनकोमासिकधननहींदेतेकिन्तु इसकेबदलेपक्वान्न रोटीदालतकदेतेहैं उनके हाथगोसांईजीअ- न्नबेचतेहैं औरबेप्रजाके हाथबेचतेहैं जैसेहलवाईकी दुकानमें बेचाजाताहै औरप्रसादभी उनकेयहां भेजतेहैं सबमन्दिरधारी किजिससे कुछप्राप्तिहोतीहो मन्दिरोंमेंजब दर्शनकेहेतुजातेहैं तब जोउनकेस्त्रीवापुरुष,सेवक तथाधनदेनेवाले उनकाबड़ासत्कारक- तेहैं अन्यकानहीं इनमिथ्याव्यवहारोंकेहोनेसेदेशकाबड़ाअनुपका- रहोताहै क्योंकिबाहरसेतोमहात्माकीनांईबनेरहतेहैंछलऔरहृ- दयमेंकपट,काम,क्रोध,लोभादिकदोषबढ़तेचलेजातेहैंदेखनाचा- हिएकिबड़े२मन्दिर,मठ,गांव,राज्यदुकानदारीकरतेहैंऔरनामर खतेहैंवैष्णव,आचारी,उदासी,निर्मलगोसाईंजटाजूटबने रहते हैंतिलक,छापा,माला, ऊपरसेधाररखतेहैं औरउनकाहृदयका व्यवहारहमलोगदेखतेहैंबिद्याकालेशनहींबातभीयथावत्कहना वासुननानहींजानें इससे सबमनुष्योंकोएकसत्य,धर्मबिद्यादिकगु-

ग्रहण करना चाहिए और दूषित व्यवहारों को छोड़ना चाहिए
तभी सब मनुष्यों का परस्पर उपकार हो सकता है अन्यथा नहीं वाम-
मार्गी लोग एक भैरवीचक्र रचते हैं उसमें एक नङ्गी स्त्री को करके उसके
हाथ में छूरी वा तलवार दे देते हैं और बीच में एक आसन के ऊपर बैठा
देते हैं फिर उस स्त्री की पूजा करते हैं यहां तक कि गुप्त अंग की भी फिर उस
जल को सब लोग पीते हैं और उस स्त्री को मानते हैं कि यह साक्षात् दे-
वी है और ब्राह्मण से लेके और चमार तक उस स्थान में सब बैठते हैं फि
र एक पात्र में मद्य को पूजा करके मद्य रखते हैं उसी एक पात्र में वह स्त्री
पीती है फिर उसी जूठे पात्र में सब लोग मद्य पीते हैं और मांस भी खा-
ते जाते हैं रोटी और बड़े खाते जाते हैं फिर जब मद्य पीके मस्त हो जाते
हैं तब उसी स्त्री से भोग करते हैं जिसको कि पहिले देवी मानी थी और
नमस्कार किया था और मनुष्य का बलिदान भी करते हैं कोई २ उस-
का भी मांस खाते हैं मुरदे के ऊपर बैठके जप करते हैं और स्त्री के समाग-
म के समय जप करते हैं। योन्यां लिंगं समास्थाप्य जपेन्मन्त्रमतन्द्रि-
तः। और यह भी उनका मन्त्र है कि एक माता को छोड़ के कोई स्त्री अगम्य
नहीं फिर उनमें एक मातङ्गी विद्या वाला है वह ऐसा कहता है कि
मातरमपि न त्यजेत् माता को भी नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि मा-
तङ्ग ऋषि का नाम है सो माता को भी नहीं छोड़ता वैसे वे भी मानते
हैं ऐसी दुष्ट महाविद्या उन लोगों ने बना रक्खी है उनमें से एक चोली
मार्ग है उसका ऐसा मत है कि स्त्री और पुरुष सब एक स्थान में रात्रि
को इकट्ठे होते हैं एक बड़ा भारी मृत्तिका का घड़ा वहां रखते हैं उसमें
सब स्त्री लोग अपने हृदय का वस्त्र अर्थात् जिसका नाम चोली है उसका उ-
स घड़े में डाल देती हैं फिर उन वस्त्रों को घड़े के नीचे में मिला देते हैं फिर
खूब मद्य पीते हैं और मांस खाते हैं जब वे बड़े उन्मत्त हो जाते हैं फिर उ-
स घड़े में हाथ डालते हैं जिसके हाथ में जिसका वस्त्र आवै वह उसकी
स्त्री होती है वह माता, कन्या, भगिनी वा पुत्र की भी हो स्त्री ये ऐसे २ मि-
थ्याव्यवहार करते हैं और मानते हैं कि मुक्ति होय यह बड़ा आश्चर्य है ऐ-

सेकर्मोंमेंभीनहींमुक्तिहोसो परन्तु विद्याहीनजोपुरुषहैं वेऐसे
२ जालोंमेंफसजातेहैं औरइनलोगोंनेअपने२ मतकेपुष्टिकेहेतुअ-
नेकपाराशर्यादिकस्मृतिब्रह्मवैवर्त्तादिकपुराणतन्त्र उपपुराणपर-
स्परविरुद्ध ऋषिऔरमुनियोंके नामोंसे रचलिएहैं एककादूसरा
अपमानकर्ताहै अपनी२पुष्टिकेहेतु क्योंकिअसत्यबातऔरभ्रमजो
होताहै सोपरस्पर विरुद्धसेहीहोताहै औरजो सत्यबातहै सोसब
केहेतु एकहीहैजोसज्जनहोतेहैं वेसदाश्रेष्ठ कर्महीकरतेहैं क्योंकि
वेसत्यासत्यबिचारसे असत्यकोछोड़तेहैं औरसत्यको ग्रहणकरते-
हैंऔरकिसीकेजालमें विचारवान्पुरुष नहींफसतासबकेउपकार
मेंहीउसकाचित्त रहताहैऐसेजोमनुष्यहैंवेधन्यहैं इससे क्याआया
किश्रेष्ठगृहस्थवाविरक्तजोहैं वेसदाश्रेष्ठकर्मही करतेहैंअश्रेष्ठन-
हींइसवास्ते वेविरक्तलोग अपनेमतरूपमेंफसके सत्यासत्यनहींजा
नसकेहैं क्योंकिउनकोभ्रम अंधकारमेंकुछनहीं सूझता प्र० जगन्ना-
थादिकमेंबहुतचमत्कारदेखपड़ताहैतथानानाप्रकारकेतीर्थजोगं
गादिकवेपापनाशकऔर मुक्तिप्रदहैंवानहीं उत्तर नहींक्योंकिज-
गन्नाथकीमूर्तिचंदनवा निंबकाष्ठकीबनातेहैंउसकोनाभिमेंपोलर-
खतेहैंउसमें सोनेकेसंपुटमें एकशालग्रामरखकेधरदेतेहैंउसको
ब्रह्मतत्वमानतेहैंफिरआभूषणवस्त्र पहिरादेतेहैं उसमेंकुछचमत
कारनहीहै किन्तुपुजारियोंनेआजीविका केवास्तेबातऔरमहा-
त्मकापुस्तकबनालियाहैवेएकतोयह चमत्कारकहतेहैंकिछत्तीस
वर्षमेंचोलाबदलताहै सोबात हमको झूठमालूमदेतीहै क्योंकि
३६ वर्षमेंमूर्तिपुरानीहोजाताहै फिरदूसरीबनाकेरखदेतेहैंऔर
कृष्णतथाबलदेवको मूर्तिकेबीचमेंसुभद्राकी मूर्तिबनारखीहैइसमें
विचारनाचाहिये किएककेवामभाग दूसरेकेदहिने भागमेंमूर्ति
रखनाधर्मशास्त्रऔरयुक्तिसे विरुद्धहैऔरदूसरा चमत्कारयहकह
तेहैंकिएकराजाबहुतहोऔर पकड़ायेतोभीउसीसमयमरजातेहैंयह
बातउनकीमिथ्याहै क्योंकिअकस्मात्कोईउसदिन मरगयाहोगा

अथवा शत्रु लोगों ने विष देकर भी मार डाले होंगे सो महात्मा
की ऐसी बात लोगों ने मिथ्या बना लिया है दूसरा चमत्कार यह कहते
हैं कि आपसे आप ही रथ चलता है यह भी उनकी बात मिथ्या है क्यों-
कि हजारों मनुष्य मिलके रथ को खींचते हैं और कारीगर लोगों ने
इस रथ में कला बनाई है उसके उलट घुमाने से वह रथ खड़ा हो जा
ता होगा और सूध घुमाने से कुछ चलता होगा जैसे कि घड़ी आदिक
के यन्त्र घूमते हैं ऐसे बहुत पदार्थविद्या से होते हैं चौथा चमत्कार य-
ह कहते हैं कि एक चूल्हे के ऊपर सात पात्र धर देते हैं उनमें से ऊपर के
पात्रों का चावल पहिले चुर जाते हैं यह भी उनकी बात मिथ्या है क्यों-
कि उन पात्रों में चावल पहिले डालते हैं फिर उसके पेंदे को मांज दे-
ते हैं फिर ऊपर २ पात्र रख देते हैं और नीचे के चूल्हे में थोड़ीसी आंच
लगा देते हैं फिर दरवाजा बंद कर देते हैं और अच्छे २ धनाढ्य तथा रा-
जा लोगों को दूर से कर छुला के निकाल के दिखा देते हैं और कहते हैं कि
देखिए महाराज कैसा चमत्कार है कि नीचे का अबतक चावल कच्चा
है क्योंकि उस पात्र में चावल अग्नि पर पीछे धरे हैं उस को देखके वि-
चार रहित पुरुष मोहित हो के बड़ा आश्चर्य गिनते हैं और हजारों
रुपया देते हैं यह केवल उन मनुष्यों की धूर्तता है और चमत्कार कु-
छ नहीं है पांचवां चमत्कार यह कहते हैं कि जो पापी होय उसको उस
मूर्ति का दर्शन नहीं होता यह भी उनकी बात मिथ्या है क्योंकि किसी के
नेत्र में दोष होने से आंख के सामने तिमिर आ जाते हैं और वे पुजारी लो-
ग ऐसी युक्ति रचते हैं कि वस्त्र के अन्यथा रूपकर के पर्दे बना रक्खे हैं
उनके दोनों ओर पुजारी लोग खड़े रहते हैं और फिरते भी रहते हैं
सो किसी प्रकार से उस मूर्ति को आड़ कर देते हैं फिर नहीं देख पड़ती उ-
स बखत ऐसे भी कहते हैं कि तुम लोग पापी हो जब तुम्हारा पाप घट जाय
गा तब तुम को दर्शन होगा तब वे बुद्धिहीन पुरुष झट २ रुपैये धर देते हैं फि
र उन को दर्शन करा देते हैं यह सब मनुष्यों की धूर्तता है चमत्कार कुछ
नहीं है छठवां यह चमत्कार कहते हैं कि अन्धा वा कुष्ठी होजाता है जो कि

वहांकाप्रसादनहींखातायहभीउनकीबातमिथ्याहैक्योंकिइसबात
सेकभीकोईकुष्टीवा अंधानहीं होसक्ताहै विनारोगसेऔर अनेक
दिनकासडासड़ाया अन्न तथापचावलौ और हंडियों केखपरे जिन
कोकौवेकुत्ते चमारऔर चांडालादिकस्पर्श करतेहैं औरधूरभीलग
जातीहै सबकाउच्छिष्टखानेसे कुष्टरोगभीहोसक्ताहै औरपरस्पर
सबकाजूठसबखातेहैं औरफिरअन्यजाकेकिसीकाजलवाअन्न-
होखातेयह देखनाचाहियेकि इनकाआश्चर्यव्यवहारकिसबकास-
बजूठखातेभीहैं फिरकहतेहैंकिहमकिसीकानहींखातेयहकेवलइ-
नकाअविचारहीहै सोजिनकीवहां आजीविकाहै वेऐसी२ मिथ्या
बातसदा रचतेरहतेहैं कलिकत्तामें एकमृत्तिकाकीमूर्त्ति बनार-
क्खीहैउसकानामरक्खाहै कालीयहांभीऐसी २मिथ्या २ जालर-
चरक्खीहैं किकालीमद्यपीतीहै औरमांसखातीहैसोवहजडमूर्त्ति
क्यापीयेगीऔर क्याखावेगी परन्तु उनपुजारियोंका खूबमद्यपीने
औरमांसखानेमें आताहै वेलोगस्वादकेहेतुऔर धनहरणकेहेतु
नाना प्रकारकीझूठ २ बातबनालेतेहैं वहांएकमंदिर में पाषाण
कालिंग स्थापन कररक्खाहै उसकानामतारकेश्वर रक्खाहै इस-
विषयमेंउन्होंने बातबनारक्खीहै किरोगियोंकोस्वप्नावस्थामें महादे-
वऔषधबताजातेहैं उस औषधसे उनकारोगछूटजाताहै यहबात
उनकीमिथ्याहैक्योंकिउनकाजोपुजारीहै वहीवैद्यऔरडाकतरों-
की औषधीकियाकर्त्ताहै औरऐसीऔषधि क्योंनहो स्वप्नावस्था
मेंमहादेवकहदेताहै किजिसकेखानेसेकिसीकोकभी रोगहीनहो-
इसयहबात झूठहै किवहपाषाण क्याकहवा सुनसक्ताहैकभीन-
हो सेतारकेश्वरकेविषयमें ऐसालोगकहतेहैं कि जबगंगाजल
चढातेहैंतबवहलिंगबढजाताहै यहबातमिथ्याहै क्योंकिउसमंदि-
रमेंदिवसकोभीअंधकाररहताहै उसीसेचारकोनेमें चारदीपसदा
जलतेरहतेहैंउसमंदिरमें किसीकोघुसनेदेतेनहीं उनकेहाथसेगंगा
जललेके उसमूर्त्तिकेऊपर जलचढाताहै जबवह पुजारीनीचेसे-

ऊपर हाथ करता है तब मूर्त्ति में लेकर हाथ तक गंगाजी की एक धारा बनजाती है उस धारा में चारों दीपक प्रकाशके पड़ने से जलविजली की नांई चमकता है तब उन यात्रियों को पुजारी लोग कहते हैं कि तुमलोगों के ऊपर महादेव की बड़ी कृपा है देखो महादेव का लिंग बढ़गया सो तुमरुपैये चढ़ाओ ऐसे बहुकार के खूब धन हरण करते हैं और कहते हैं कि रामने यह मूर्ति स्थापन किई है सो यह बात मिथ्याही है क्योंकि वाल्मीकीय रामायण में उसका नाम भी नहीं है केवल तुलसीदासके झूठलिखने से लोग कहते हैं क्योंकि तुलसीदास की मिथ्या २ बातविचारना चाहिये नारी नाम स्त्रीका रूप देख के स्त्री मोहित नहीं होती फिर सीताके स्वयंवर में लिखा है कि जब स्वयंवर में सीताजी आई तब नर और नारी सब मोहित होगये सीताजी को देखके यह बात पूर्वापर उसकी विरुद्ध है और अपने ग्रंथ में उनने लिखा है (कि अठारह पद्म यथपवानर थे सो एक२ का चार२ कोसका शरीर लिखा तथा कुंभकर्ण की मोंछ चार २ कोसकी लंबी लिखी है १६ सोलह कोसकी नांक ६४ कोसका हाथ लम्बा ८६ कोसका उदर ऐसा जो कुंभकर्ण होता तो लंका में एक भी नहीं समाता/ और अठारह पद्म वानर पृथिवी भरमें नहीं समाते तथा बांदर मनुष्य की भाषा नहीं बोल सके फिर सुग्रीवादिक राम से कैसे बोल सकेंगे राज्य का करना और विवाह पशुओं में कभी नहीं हो सक्ता ऐसी २ बहुत तुलसीकृत रामायण में झूठबात लिखी है सो इसके कहनेका क्या प्रमाण फिर पाषाण के ऊपर रामनाम लिखदिये उस पाषाण समुद्र के ऊपर तरे हैं यह बात उसकी मिथ्या है क्योंकि ऐसा होता तो हमलोग भी पाषाण के ऊपर रामनाम लिखके उसका तरना देखते सो नहीं देखने में आता इस झूठबात को माननान चाहिये जैसी यह बात झूंठ है उसका वैसी रामेश्वर की लिखी भी झूठ है कि सो दक्षिण के धनाढ्यने मंदिर बनाया है उसका नाम है रामेश्वर उसको चार ४०० बरस भये होंगे और एक दक्षिण में कालियाकंतका मंदिर है इस विषय में लोगों ने ऐसी बात बनाली है कि वह मू-

र्ति दुग्धापीती है सो झूठ है क्योंकि पाषाणकी मूर्ति दुग्धा कैसे पीवैगी इ-
समें लोगों ने मूर्ति के मुखमें छिद्र बना रक्खा है उसछिद्र में नाली लगा
के कोई मनुष्य छिपके खेंचता है फिर वे पुजारी कहते हैं देखो सा-
क्षात् मूर्ति दुग्धा पीती है ऐसा बहका के धन हर लेते हैं ऐसे ही जयपुर-
के राज्य में एक जीनदेवी वजती है वह मद्य पीती है सो भी बात झूठ है
क्योंकि वह मूर्ति पोली बना रक्खी है उसके मुखमें छिद्र है मद्यके पात्र-
को मुखमें लगाके ढरका देते हैं वह मद्य अन्यस्थान में चला जाता है
फिर उसको लेके बेचते हैं तथा द्वारिका के विषय में लोग कहते हैं कि
द्वारिका में नेकी बनी है उसमें एक पीपा भक्त समुद्र में डूबके चला गया-
था उनको श्रीकृष्ण जी मिले उनसे बात चीत भई पीपा ने कहा कि मैं
तो आपके पास रहूंगा तब श्रीकृष्ण ने कहा कि मर्त्यलोक का आदमी य-
हां नहीं रह सक्ता सो तुम हमारा शंख चक्र गदा पद्म के चिन्ह द्वारका में
लजाओ और सबसे कह देओ कि इन चिन्हों का दाग तप्त करके जो ल-
गवालेगा सो वैकुंठ में चला आवेगा ऐसे ही चक्रांकित लोग भी कहते हैं
सो यह बात मिथ्या है क्योंकि जीते शरीर को जलाने से कोई वैकुंठ में न-
हीं जासक्ता है और जो जा सक्ता तो मरे भये शरीर को भस्म कर देते हैं
इससे वैकुंठके आगे भी जायगा फिर जीते शरीर को जो जलाना यह
बात केवल मिथ्या है एक पंजाब में ज्वाला जी का मंदिर है उसमें अग्नि
निकलता रहता है इसको कहते हैं कि साक्षात् भगवती है इनसे
पूंछना चाहिये कि तुम्हारे घर में जब रसोई करते हैं तब चूले में भी
ज्वाला निकलती रहती है प्रश्न चूले में तो लकडी लगाने से निकल-
ती है और वहां आपसे आप ही निकलती रहती है उत्तर ऐसे ही
अनेक स्थानों में अग्नि निकलती है सो पृथिवी में अथवा पर्वत में गंध
कादिक धातु हैं उनमें किसी प्रकार से अग्नि उत्पन्न हो के लग जाता है सो
पृथिवी को फोडके ऊपर निकल आता है जब तक वे गन्धकादिक धातु र-
हती हैं तब तक अग्नि जलता ही रहता है यही पृथिवी के हिलने का कार-
ण है क्योंकि जब भीतर से बाहर पर्वत में अग्नि निकलता है तभी पृथिवी

मेंकंपहोजाता है सोयहबातकेवलमनुष्योंनेअपनीआजीविकाकेवा-स्ते मिथ्यावनालिई है एकउत्तराखण्डमें केदारऔरबद्रीनारायणये दोस्थानप्रसिद्ध हैं इसविषयमेंलोगऐसाकहतेहैं किबद्रीनारायणकी मूर्तिपारसपत्थरकीहै और शङ्कराचार्य नेस्थापितकिई है सोयहबा तमिथ्याहै क्योंकिजोवहपारसपत्थरकीरहती तो पुजारीलोगद-रिद्रक्योंरहते औरयहबातझूठमालूमदेतीहै किपारसपत्थरसेलो हाकुआनेसेसोनाबनजाताहै इसकोकिसीनेदेखातोहैनहीं सुनतेसु नातचलेआते हैं इसबातकाक्याप्रमाण औरशङ्कराचार्यतोमूर्ति-योंकेतोडनेवालेथे वेस्थापनक्योंकरते केदारकेविषयमें ऐसीबात-लोगकहतेहैं किजबपांडवलोग हिमालयमेंगलनेकोगये तबमहा देवकादर्शनकियाचाहतेथे सोमहादेवने दर्शननहीदिया क्योंकि-वेगोत्रनामअपनेकुटुंबके पुरुषोंकोमारकेयुद्धमेंआये थे सोमहादें-वपार्वती औरसबउनकेगणोंने भैंसेकारूपधारणकरलियाथा सो-नारदजीनेंकहाकिमहादेवादिकोंनेंभैंसाकारूपधारणकरलियाहै तुमकोबहकानेकेवास्तेइसकोयहपरीक्षाहैकिमहादेवकिसीकीटां-गकेनीचेसेनहीनिकलतेसोभी मनेतीनकोसकेछोटेदोपर्वतथेउनके ऊपरटांगरखदिई एक२के ऊपर फिरसबभैंसेतोउनकेनीचेसे-निकलगये परन्तुएकभैंसानहीनिकला तबभीमनेनिश्चयकरलिया कियहीभैंसाहैउसकोपकडनेकोभीमदौडा तबवहभैंसापृथिवीमेंगु-प्तहोगया उसकासिरनैपालमेंनिकलाजिसका नामपशुपतिरक्खा है तथाउसकापगकाखोरमेंनिकला उसकानामअमरनाथरक्खा औरचूतडवहींनिकला जिसकानामकेदारहै औरजंघाजहांनिक लीउसकानामतुंगनाथादिकरक्खाहैऐसेपंचकेदारलोगोंनेरचलि येहैं इसमेंविचारनाचाहियेकिनैपालमेंभैंसेकाअंगनांककानकुछ नहीदेखपडताहै तथाकाश्मीरमेंखुरभीनहीदेखपडते ऐसेअन्यत्र कुछभीनहीभैंसेका चिन्हदेखपडताकिन्तुसर्वत्र पाषाणहीदेखप-डताहैपरन्तुऐसी २ मिथ्याबातकोमनुष्यलोग मानलेतेहैंयहके-

वल अविद्या और मूर्खताका गुण है क्योंकि भीमइतना लंबा चौड़ा होता तो उसका घर कितना लंबा चौड़ा होता और नगर मे वा ग्राम में कैसे चलसक्ता तथा द्रौपद्यादिक उनको स्त्री कैसे वनसक्ती और महादेवको क्या डर पड़ाथा कि भैसा होजाय फिर इतना लंबा चौड़ा क्यों वनजाता और क्या अपराध वा पापमहादेवने कियाथा कि चतनमें जड़ वनजाय इसलिये यह वातसव मिथ्या है एकका माच्चा स्थानरचरक्खा है उसमें एक कुंड वनारक्खा है उसका नाम योनि रक्खा है और वह रजस्वला होतीहै यहसव बात उनपुजारियोंने आजीविकाके हेतु मिथ्या वनालिई है एक बौद्धगयास्थान है उसमें बौद्धकी मूर्ति वनारक्खीहै उसकी पूजा और दर्शन आज तक करते हैं वहमूर्ति केवल जैनोंकी ही है मो ऐसा जानना चाहिये कि जितना पाषाणपूजन है और जो जड़पदार्थों का पूजन सो सब जैनोंका ही है एकगयास्थान वनारक्खा है उसमें वड़ा संसार का धन लूटा जाता है गयाके पण्डाओंको मुफ्तका बहुत धन मिलता है सो वेश्यागमन मद्यपान और मांसाहार में होजाता है केवल प्रमाद में अच्छे काममें कुछ नहीं फिर यजमान लोग मानते हैं कि गयाके श्राद्धमें ही पितरोंका उद्धार होजाता है सो ऐसेकर्मोंसे उद्धार तो किसीका होता नहीं परन्तु नरक होनेका संभव होता है फिर इस विषयमे ऐसा कहते हैं कि रामचन्द्रने गयामे श्राद्ध कियाथा सो साक्षात् दशरथजी उनके पिताउनने हाथ निकालके गयामे पिण्ड लेलियाथा उस दिनसे गया का माहात्म्य चला है और वह स्थान गयासुरका था सो यह बात सब मिथ्या है क्योंकि वे लोग आजकाल भी हाथ निकालके क्यों नही पिण्ड लेलेते कि सो समय कोई पुरुष फलगूनदी मे भूमिमे गुहा बनाके भीतर बैठरहा होगा और उनोंने मंकेत बनारक्खाथा ऐसे ही उसने भूमिमेसे हाथ निकालके पिण्डलेलिया होगा फिर झूंठवात प्रसिद्ध करदिई कि साक्षात् पितृलोग हाथ निकालके पिण्ड लेलेते हैं उस स्थान का पण्डितोंने माहात्म्य वनालिया फिर प्रसिद्ध होगई और सब मानने लगे सो गया ना-

मनिसस्थानमेंस्थापनकरें और अपनेपुत्रपौत्र तथा राज्यभिसदेशमें अपनेरहताहोयउनका नामगयावेदीकेनिवणटमें लिखाहैउसका अर्थ अभिप्राय तोजानानहो फिरयहपाखण्डरचतियाकाशिराजनेमहाभारतमेंलिखाहै किउसनेनगर बसायाथा इससेउसका नामकाशीपडा औरवरुणा तथा असीनालाके बीचमेंहोनेसे वाराणसीनामरक्खागया इसकाऐसा झूंठ माहात्म्य बनालिया है किसाक्षात महादेव कीपुरीहैऔर महादेव नेमुक्तिका सदावर्त्त बांधरक्खा हैतथाजरुरभूमिहैइससेपापपुण्यलगताहोनहींएबदेवतापंदरह२कलामेंकाशीमेंरहतेहैं औरएक२कलासेअपने२स्थान मेंरहतेहैं एकमणिकर्णिकाकुंडरच रक्खाहैकियहांपार्वतीकेकान कामणिगिरपडाथा तथाकालभैरव यहांकाकोटपालहै सोसबको दण्डदेताहैपापपुण्य कीव्यवस्थासेइसकाशीका महाप्रलयमें भीप्रलयनहीहोता क्योंकिकालभैरव त्रिशूलकेउपरकाशीकोरखलेताहै औरभूचालमेंहलतीभीनहोपंच काशीकेबीचमें कोईकीटपतंग तकभीमरैतोउसको महादेव मुक्तिदेतेहैं अन्नपूर्णा सबकोअन्न देतीहैअन्तर्गृहीऔरपंचक्रोशीके करनेसेसबपापछूटजातेहैंइत्यादिकमिथ्या२जालरचकेकाशीरहस्य औरकाशीखण्डादिकग्रंथबनालियेहैं औरकहतेहैंकिबारहज्योतिलिंगहोतेहैंउनमेंसेएकयह विश्वनाथहैउनसे पूंछना चाहियेकिज्योति लिंगहोतेतोमंदिरमें कभीअन्धकारनहोता औरवहपाषाण मुक्तिवान्कभी नहोकर सक्ताक्योंकिउसीको कारीगरोंने मंदिरकेबीच गढेमेंचिपकाकेबंधकररक्खाहैफिर अपनेहीबंधनसेनहींछूटसक्ता फिरअन्यकोमुक्तिक्याकरसकेगा सोयहकेवलपण्डितोंने बातबनालिईहै किकाशीमेंमरनेसे मुक्तिहोतीहैक्योंकिइसबातको सुनकेसबलोगकाशी मेंमरनेकेहेतुआवेंगे उनसेहमारी आजीविका सदाहुआकरेगी इससेऐसी २ जाल रचाकरतेहैंप्रयागमें गंगायमुनाके संगममेंएकतोसरीभूंठसरस्वती मानलेतेहैंकि तीसरीसरस्वती भीयहांहै

और दूर स्थान में मुंडानेसे सिद्ध होजाताहै सो ऐसा अनुमान किया जाताहै कि पहिले कोई नौवाथा उसने अपने कुलको आजीविकाकर लिई है और संगममें स्नानकरनेसे मुक्तिहोजातीहै यहकेवल आजीविकाकेवास्ते झूठ२ बात और झूंठ२ पुस्तक लोगोंने बनालिए हैं कि प्रयागतीर्थ राजहै ऐसेही अयोध्या में हनुमानजीको रामजीगद्दीदे गये हैं और अयोध्यामें निवासमेंभी मुक्तिहोतीहै यहभी उनकी बात मिथ्याही है तथा मथुरा और वृन्दावनमें बड़ी२ मिथ्याबातबनालिई हैं कियमद्वितीयाके स्नानसे यमके बंधनसेजीव छूटजाताहै क्योंकियमुनायमराजकी बहिनहै और वृन्दावनके विषयमें भक्तिभोरोतीहै कि मेरी मुक्तिकैसे होयगी मुक्तिमुक्तिकेवास्ते वृन्दावनकीगलियोंमें झाडूदेतीहै और मंदिरोंमेंनानाप्रकारकेप्रमादोंमें व्यभिचारादिककरतेहैं तथा अनेकप्रकारके जालोंसे लोगोंकाधन हरणकरलेतेहैं एकचक्रांकितोंने मंदिररचवायाहै उनके दरवाजोंकानाम वैकुंठद्वारइत्यादिक रक्खे हैं और सकल पुंगवसबमनुष्य मिलके इकट्ठे खातेहैं सकलपुंगव उसकानामहै कि कच्चीपक्की सबप्रकारका पक्काकच्चा अन्नवनताहै फिर ब्राह्मणसेलेके अंत्यजपर्यन्त उनकेजितने शिष्यहैं उनकी पंक्तिलगजातीहै उनके हाथकेबीचमेंथोड़ा२ सबपदार्थ सबकोदेदेतेहैं और वेखालेतेहैं उनमेंसेकोई जलसेहाथभोडालताहै और कोई वस्त्र से पोंछलेताहै और ठकुरजीको झुलावदेतेहैं उसमेंभीबड़े२ अनर्थसुननेमेंआतेहैं और एकराचवेश्याके घर ठाकुरजीजातेहैं फिर उनकोप्रायश्चित्त करातेहैं और यमुनाजीमें डुबाकेस्नानकरातेहैं यहकेवलउनका मिथ्याप्रपंचहै परधनहरनेकेवास्ते और मूर्खोंको बहकानेकेवास्ते फिर उसमंदिरमेंबहुतलोगोंको शंखचक्रादिक तपाकेदागदेदेतेहैं ऐसे२मिथ्याछलप्रपंचसे अपनी आजीविकाकरतेहैं इनमेंकुछसत्यवा चमत्कारनहीं तथागंगादिकतीर्थोंके विषयमें सबपापकाछूटना वैकुंठमें जाना मुक्तिका होना और ब्रह्मद्रव तथा साक्षात्भगवती कामानना यह बातमि-

ध्या है क्योंकि हिमवतः प्रभवति गंगा यह व्याकरणमहाभाष्यकाव-
चन है इसका यह अभिप्राय है कि हिमालय से गंगा उत्पन्न होती है
तथा यमुनादिक नदियां बहुत हिमालय से उत्पन्न भई हैं और वि-
न्ध्याचल में तथा तडागों से भी बहुत नदियां उत्पन्न होती हैं केवल जल
सब में है उस जल में उत्तम मध्यम और नीचता भूमि के संयोगगुण से
है इससे अधिक कुछ नहीं सो जल होता है वह जल क्या पाप को छोडास-
केगा और मुक्ति को भी दे सकेगा कुछ भी नहीं जैसा जिस जल में गुण है
शीत उष्णादि स्निग्ध निर्मलता वैसा ही उस में होता है इन में अधिक गुण
नहीं वे जल रस मिष्टादिक गुण सब भूमि के संयोग से हैं अन्यथा नहीं गंगे-
त्वद्दर्शनान्मुक्तिर्जाने स्नानं फलम् इत्यादिक नारदादिकों के-
नामों से मिथ्या २ श्लोक लोगों ने बनालिए हैं जो दर्शन से मुक्ति हो-
ती तो सब संसार की हो मुक्ति हो जाती और मुक्ति में कोई अधिक फ-
ल नहीं है कि संसार में स्नान से कुछ अधिक होवै यह केवल मिथ्याक-
ल्पना उनकी है कि काश्यां मरणान्मुक्तिः गंगे त्वद्दर्शनान्मुक्तिः सह-
स्रभगदर्शनान्मुक्तिः हरिस्मरणान्मुक्तिः ॥ इत्यादिक मिथ्या श्रुति
लोगों ने बनालिई हैं किन्तु ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः यह सत्य श्रुति है कि
विना ज्ञान से किसी की मुक्ति नहीं होती क्योंकि सत्यासत्य विवेक के विना
असत्य के दोषों का ज्ञान नहीं होता दोषज्ञान के विना मिथ्या व्यवहार
और मिथ्या पदार्थों से कभी नहीं जीव छूटता इससे मुक्ति के वास्ते सत्या
सत्य का विवेक परमेश्वर में प्रीति धर्म का अनुष्ठान अधर्म का त्याग स-
त्सङ्ग सद्विद्या जितेन्द्रियतादिक गुण इन से अत्यन्त पुरुषार्थ से मुक्ति-
हो सक्ती है अन्यथा नहीं और जिसको इस बात का निश्चय करना होवै
वह इस बात को करै कि जितने तीर्थों के पुरोहित और मंदिर स्थान के
पुरोहित उनके प्राचीन पुस्तकों के देखने से सत्य २ निश्चय होता है-
क्योंकि वह यजमान देश गांव जाति दिन मास और संवत्सर इन का
यथावत् पुस्तक जो बही खाता उस में लिखे रखते हैं उनके देखने से ठो
क २ दिन मास और संवत्सर का निश्चय होता है कि इस तीर्थ वा इस मं-

दिरकाप्रारंभ इससंवत्सरमेंभयाहै क्योंकि जब जिसकाप्रारंभहोता हैतबउसकेपण्डे और पुजारी तथापुरोहित उसीसमयबनजातेहैं देखनाचाहियेकि विंध्याचलमूर्ति केविषयमें लोगकहतेहैंकिएक दिनमें देवीतोनरूप धारणकर्त्तीहै अर्थात्प्रातः कालमेंकन्या म-ध्यानमेंजवान औरसंध्याकालमेंबुड्ढोबनजातीहै इनसेपूछनाचा-हियेकि रातमेंउसमूर्तिकी कौनअवस्थाहोतीहै सोकेवलपुजारी-लोगोंकोधूर्त्तताहै क्योंकिजैसावस्त्रआभूषणधारणकरेंवैसाहो स्व-रूपदेखपडताहैऔरकहतेहैंकिइसमंदिरमेंमक्खीनहोंहोतीपरंतु असंख्यातमक्खीहोतीहैं सोकेवलझूठ बकातेहैंआजीविकाकेवा-स्ते तथाबैजनाथकेविषयमेंकहतेहैंकिकैलाससेरावणलेआयाहैय-हसबमिथ्याकल्पना लोगोंकीहै क्योंकिआजतक नये २ मंदिरन-ये२ मूर्त्तियोंकेनामधरतेहैं औरसंप्रदायीलोगोंनेअपने२ संप्रदाय केपुष्टिकेवास्ते बनालियेहैं उनकानाम रखदियापुराणऔरऐसा भीवेकहतेहैं कि अष्टादशपुराणानांकर्त्तासत्यवतीसुतः इसकायह अभिप्रायहैकिअठारहपुराणोंकेकर्त्ताव्यासजीहैं जोकिसत्यवतीके पुत्रहैं यहबातमिथ्याहै क्योंकिव्यासजीबडेपंडितथे और सत्यवादी सबपदार्थविद्या यथावत्जानतेथे उनका कथनयथावत्प्रमाणयुक्त-हीहोताहै क्योंकिउनकेबनायेशारीरकसूत्रहैं और महाभारतमें- जो२श्लोकहैं वेभीयथावत्सत्यहीहैं परमहाभारतमेंअन्यभीश्लोक-हैं अथवासबव्यासजीकेबनायेहैं उनमें कईहजारश्लोकसंप्रदायीलो-गोंनेमहाभारतमें मिलादियेहैं अपने२ संप्रदायकेप्रमाणकेवास्ते क्योंकिशांतिपर्वमें विष्णुकीबडाईलिखीहैऔरसबकोन्यून तथाऔ-रउसीमें सहस्रनामलिखेहैं इससे विरुद्धउसीपर्वमे शिवसहस्रना-मजहांलिखेहैं वहांविष्णुकोतुच्छकरदियाहै तथाजहां विष्णुकी बडाईहै वहांमहादेवको तुच्छकरदियाहैऔरजहांगणेशऔरका-र्त्तिकस्वामीकीस्तुतिकिईहै वहांअन्यसबकोतुच्छबनादियेहैं तथा-भीष्मपर्व औरविराटपर्वमें जहांदेवीकीकथालिखीहै वहांअन्यसब

तुच्छगिनेहैं एकभीमऔरधृतराष्ट्रकी कथालिखीहै किधृतराष्ट्रकेश-रीरमें ६००० हाथीकाबलथा तथाभीमकेशरीरमे दसहजारहा-थीकाबलथा औरएकगरुड़पक्षीकाबल ऐसावर्णनकियाकि जिस-कातोलन नहींहोसक्ता उसगरुड़काबलविष्णु केआगेतुच्छगिना-तथाउसविष्णु काबल वीरभद्रकेआगे तुच्छकरदियाहै वीरभद्रका रुद्रकेआगे औररुद्रकाविष्णु के विष्णु का वीरभद्रकेआगेऐसेप-रस्परमिथ्याकथा व्यासजीकी बनाई महाभारत मेंनहीबनसक्ती-औरभीऐसी २ कथालिखीहैं किभीमकोदुर्योधननेविषदानदिया-जबवहमूर्छितहोगया तबउसकोबांधकेगंगा जीमेंगिरादियासोब-हपाताल कोचलागया वहांसर्पोंनेबहुतकाटा फिरजबउसकावि-षउतरगया तबसर्पोंकोमारनेलगा उससेसर्पभागगयेवासुकीराजा सेजाकेफिरकहा किएकमनुष्यका लड़काआयाहै सोबड़ा पराक्र-मीहै तबवासुकी भीमकेपासगया औरपूंछाकि तूंकौनहै कहांसे-आयाहै तबभीमनेकहा किमैंपाण्डुकापुत्रहूं औरयुधिष्ठिरकाभाई-तबतोवासुकी बड़ेप्रसन्नभये औरभीमसेकहा किजितनातुझसेइ-नकुण्डोंमेंसेजल पीयाजाय उतनापी क्योंकियेनवकुण्डअमृतसेभ-रेहैंऐसासुनकेउठा औरनवकुण्डोंका सबजलपीगया सोनवहजा-रहाथीकाबलबढ़गया इसमेंविचारनाचाहियेकि विषकेदेनेसे वह भीम मरक्योंनगया औरजलमें एकघड़ीभरनहीजीसक्ता औरपा-तालकामार्ग वहांकहांहोसक्ताहै औरजोहो सक्तातोगंगाकाजल सब पातालमें चलाजाता ऐसी २ मिथ्याकथा व्यासजीकी कभी नहीहोसक्ती औरजितनी सत्यकथाहै वसवमहा भारतमें व्यास जीकीहोकहीहैं औरजितने पुराणहैं उनमेंव्यास जीकाकियाएक श्लोकभीनही क्योंकिशिव पुराणा दिक सबधूर्त्र लोगोंके बनायेहैं उनमेंकेवल शिवकोही ईश्वरवर्णन कियाहै औरनारायणादिक शिवकेदासहैं फिर रुद्राक्षभस्म नर्मदाकालिंग औरमृत्तिका का लिंग बनाकेपूजने बिनाकिसीकी मुक्तिनही होतीयहवेदल धो-

वोंकी मिथ्या कल्पना है और इन बातों मे कभी नही मुक्ति होती बिना धर्मानुष्ठान विद्या और ज्ञानसे फिर वहांशिव जिसको कि ईश्वर वर्णन किया था पार्वतीके मरनेमें सर्वत्र रोता फिरा ऐसी कथा श्रेष्ठ पुरुषोंकी कभी नही होती किन्तु यह केवल शैवसंप्रदाय-वालोंकी बनाई है तथा शाक्तलोगोंने देवीभागवत तथा मार्कण्डेय पुराणादिक बनाए हैं उनमें ऐसी२ कथा झूठ लिखी है कि श्रीपूर्वमेंए-क भगवती परब्रह्मरूप थी उसनेंसंसार रचनेकी इच्छा किई तब प्रथ-म ब्रह्माको उत्पन्न किया और कहा कि तूं मेरेसे भोग कर तब ब्रह्मानेक-हा कि तूं मेरी माता है तुझसे मैं समागम नही करसक्ता तब कोपसे भ-गवतीने ब्रह्माको भस्म करदिया और दूसरा पुत्र उत्पन्न किया जि-सका नाम विष्णु है उस्से भी वैसा ही कहा फिर विष्णु नेभी समागम न-ही किया इस्से उसको भी भस्म करदिया फिर तीसरा पुत्र उत्पन्न कि-या जिसका नाम शिव है उस्से भी कहा कि तूं मुझसे समागम कर तब महादेवने कहा कि तूं तो मेरी माता है तेरेसे मैं समागम नहीकरस-क्ता परन्तु तूं अपने अंगसे एक स्त्रीको पैदा कर उस्से मैं समागम करूंगा फिर उसने पैदा किई और दोनोंका विवाह भी किया फिर महादेव नेदेखा कि ये दो भस्म क्या पडी हैं तब देवीने कहा कि तेरे भाई हैं इन दो-नोंने मेरी आज्ञा नही मानी इस्से इनको मैंने भस्म करदिया फिर महादेवने कहा कि मेरे भाई हैं इनको जिलादेओ तब भगवतीने जि-लादिये और फिर कहा कि और दो कन्या उत्पन्न करो कि मेरे भाई काभी विवाह होजाय भगवतीने उत्पन्न किई विवाह होगया एकका नाम उमा दूसरीका नाम लक्ष्मी तीसरी साविची इनके विषयमे ब्रह्मा नारायणकी नाभिसे उत्पन्न भया कहीं लिखा कि ब्रह्मासे रुद्र और नारायण उत्पन्न भये कहीं लिखा कि उमा दक्षकी कन्या कहीं लिखा हिमालय की कन्या है लक्ष्मी समुद्र कि कन्या है कहीं लिखा कि वरुणकी कन्या कहीं लिखा कि साविची सूर्यकी कन्या है कहीं लि-खा कि ब्रह्मासे जगत उत्पन्न भया कहीं नारायणसे कहीं महादेवसे

कहींगणेशसे कहीस्कंदसे ऐसे झूंठ २ कथापुराणोंमेंवनारक्खीहै
प्रश्न इसमेविरोधनही क्योंकियेसबकथाकल्पकल्पान्तरकोहैंउत्तर-
र यहबातमिथ्याहै क्योंकि सूर्याचन्द्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत्
जैसोसूर्योदिकसृष्टिपूर्वकल्पमेंभईथींवैसीसबकल्पमेंहोतीहै ऐसा
जोकहोगेतोकिसीकल्पमे पगसेभोखातेहोंगेऔरमुखसेचलतेहों-
गेनेत्रसेबोलतेहोंगे जीभसेनबोलतेहोंगे इत्यादिकसबअज्ञानलना
लोगोंनेमार्कण्डेयपुराणान्तर्गतजोदुर्गास्तोत्रहैजिसकानामरक्खा
हैसप्तशती उसमऐसी २ झूंठकथालिखीहै किरुधिरौघमहानद्यः
सद्यस्तत्रप्रसुस्रुवुः रक्तबीजऔर देवीकेयुद्धमें रुधिरकीबडी २ न-
दियांचलीं इनसेपूंछना चाहिएकि रुधिरवायुकेंस्पर्शसेजमजा-
ताहै उसकीनदीकभीनहीचलसक्ती रक्तबीजइतनेवढेकिसबजग-
त्पूर्णहोगया उनकेशरीरसे उनसेपूंछनाचाहिएकिइतनगरगां-
व पर्वतभगवती भगवतीकासिंह कहांरहेंथे यस्याःप्रभावमतुलंभ-
गवाननन्तो ब्रह्माहरश्चनहिवक्तुमलंबलंचसा चंडिकाखिलजगत्प-
रिपालनाय नाशायचाशुभभयस्यमतिंकरोतु इसश्लोकमेंब्रह्मा वि-
ष्णुऔरमहादेव कोतोमूर्खबनाया क्योंकिचंडिकाकाअतुलप्रभाव
और बलकोवेनहीं जानतेहैं अर्थात् मूर्खहींभयेचडिकोपेइसधा
तुसे चण्डिकाशब्द सिद्धहोताहै जोकोपरूपहै वहअधर्मकास्वरू-
पहीहै विष्णुःशरीरग्रहण महमोशानएवच कारितास्तेयतोऽत-
स्त्वांकः स्तोतुंशक्तिमान्भवेत् ब्रह्माविष्णु औरमहादेवतैनेहोश-
रीरधारण वालेकियेहैं फिरतेरीस्तुतिकरनेकोसमर्थकौनहोस-
क्ताहै ऐसाकहके त्वंस्वाहा त्वंस्वधा त्वंहि इत्यादिक स्तुतिकरने
भीलगा यहबडीभारी प्रमादकीबातहै किजिसकानिषेधकरैउसी
कोअपनेकरनेलगजाय सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः
मनुष्योमत्प्रसादेन भविष्यतिनसंशयः पुछनाचाहिये उसभगवती
कीप्रतिज्ञाहैकिमेराइसस्तोत्रका पाठऔरमेरीभक्तिकरेगाअर्था-
त्सबदुःखोंसेछूटजायगा औरधान्यधनपुत्रोंसे युक्तहेताहैसो यह

प्रतिष्ठा नजानकर्भांगई किइसपाठककरने औरकरानेवाले अनेक दुःखोंमेंपीडित देखनेमेंआते हैं धनधान्यपुत्रोंको इच्छाभी अत्यन्त होतीहै औरमिलताकुछनहीं यहांतककिपेटभीनहींभरताऐसीर मिथ्याकथाओंमें विद्याहीनपुरुषोंको विश्वासहोजाताहै यहबडा एकआश्चर्यहै ऐसेहीविष्णु पुराण ब्रह्मवैवर्तऔर पद्मपुराणादिकों मेंअनेक २ झूंठकथा लिखीहैं तथाभागवतमें बहुतमिथ्या कथा लिखीहैं किशुकाचार्य व्यासजीकेपुत्र परीक्षितके जन्मसेसौ१०० बरसपहिलेमरगयाथा परीक्षितका जन्मपीछे भयाहैसोमोक्षधर्म में महाभारतकेलिखाहै फिरजोमनुष्य कहतेहैंकि शुकाचार्यने सप्ताहसुनाया सोकेवलमिथ्याबातहै क्योंकिउससमयशुकाचार्यका शरीरहीनहीथाऔर ऋषिकाशापथा कियमलोककोपरीक्षितजा य फिरभागवतमेंलिखा किपरीक्षितपरमधाम कोगयायहउनकी बातपूर्वापरविरुद्ध औरमिथ्याहै औरचतुःश्लोकीसबभागवतकामू-लमानतेहैंसोनारायणनेब्रह्मासे ब्रह्माननारदसेनारदने व्यासजी से व्यासजीनेशुकसे शुकनेपरीक्षितसे फिर भागवत संसारमेचल-निकला सो यहबडाजाल रचलियाहैक्योंकि ज्ञानंपरमगुह्यं मे य-द्विज्ञानसमन्वितम् सरहस्यंतदंगंचगृहाणगदितंमया इत्यादिक चारश्लोक बनालियेहैं क्योंकिपरम और गुह्ययेदोनोंज्ञानकेविशे-षणहोनेसे बडो विज्ञानहोजाता है फिर यद्विज्ञानसमन्वित यह जोउसकाकहना सोमिथ्याहोजाताहै औरगुह्य विशेषणसेसरह-स्यमिथ्याहोताहै क्योंकि रहस्यनामएकान्त और गुह्यकाहोहैप-रमज्ञानकेकहनेसेतदंग अर्थात मुक्तिकाअंगहै यहउसकाकहना मिथ्याहीहैक्योंकि परमज्ञानजोहोताहै सोमुक्तिकाअंगहीहोता-हैऐसायह श्लोकमिथ्याहै वैसासब भागवतभी मिथ्याहै क्योंकिजय-विजयकी कथाभागवतमें लिखीहै सनकादिकचारवैकुंठ कोगयेथे उससमयनारायण लक्ष्मीजीकेपासथे जयऔर विजययेदोनोंवैकुंठ केद्वारपालोंने उनकोरोकदिया तबउनको क्रोधभयाऔरशापज-

यविजयको दियाकितुम जाओभूमिमेगिरपडोतबतोउनकोबड़ाभय भया औरउनकोप्रार्थनाकिई किमहाराजमेरे आपकाउद्धारकैसेहोगा तबसनकादिकोंनेकहाकि जोतुमप्रीतिसे नारायणकीभक्तिकरोगेतोसातवें जन्ममेंतुमाराउद्धारहोगा औरजोवैरसेभक्तिकरोगे तो तीसरेजन्ममेंतुमारा उद्धारहोगा इसमेंविचारनाचाहिये किसनकादिकमिद्धथे वेवायुवत् आकाशमार्गमे जहांचाहेंवहांजातेथे उनकानिरोधकैसेहोसक्ताहै तथाजयविजयनेवालकरूपथेआगे कोक्योंरोका क्योंकिवेक्यादोनोंमूर्खथे औरवेसाक्षात्ब्रह्मज्ञानीथे उनकोक्रोध क्योंहोता और कोईकिसीको प्रीतिसेसेवाकरै औरदूसराउसकोदण्ड सेमारै उनमेसेकिसकेऊपरवहप्रसन्नहोगाजोकिसेवाकर्त्ताहैऔरजोदण्डामारताहैउसकेऊपरकभी किसीकोप्रसन्नतानहीहोसक्तीफिरवहिरण्याक्षऔरहिरण्यकश्यपदोनोंभयेएककोवराहनेमारा औरदूसरेकोनृसिंहनेउसकापुत्रथाप्रल्हादउसकेविषयमेंबहुतझूंठकथाभागवतमेंलिखीहैकिउसकोकूएमेगिरायाऔरपर्वतमेगिरायापरन्तुवहनमराफिरलोहेकाखंभअग्निसेतपाया औरप्रल्हादसेकहा कितूंइसकोपकड नहीतोतेरासिरमैंकाटडालूंगाफिरप्रल्हादखंभकेसामनेचला औरचित्तमे डराभीकुछ किमैंजलनजाऊं सोनारायणने चिवटीउसकेऊपरचलाई उनकोदेखके प्रल्हादनिडरहोके खंबेकोपकडा तब खंभाफटगया औरबीचमेसेनृसिंह निकलेसोउसकेपिताकोपकडके पेटचीरडालाऔरनृसिंहकोबडाक्रोधआयासोब्रह्मामहादेवलक्ष्मीतथाइन्द्रादिकदेवोंसे नृसिंहकेकोपकोशांतिहीनहोभई फिरप्रल्हादसे सबने कहाकि तूंहीशान्तिकर सोप्रल्हाद नृसिंहकेपासगया औरनृसिंहशांतहोगया सोप्रल्हादको जीभसेचाटनेलगा औरकहाकि वरमांग तबप्रल्हादनेकहा किमेरेपिताका मोक्षहोयतबनृसिंहबोले किमेरेवरसे २१ पुरुषोंकामोक्ष होगयातेरेपितादिकोंकाइनसेपूछनाचाहियेकिनारायणने शूकरऔरपशुकाशरीरक्योंधारणकि-

या और कैसे भारणकरमक्को हिरण्याक्षपृथिवीको चटाईकीनाईं घरकेसिराने सोगया सोकिसके ऊपर सोआ और पृथिवीको उठाई सोकिसके ऊपर खडाहोके और पृथिवीको कोईउठा भीसकताहै और कोई नारायणकेभक्तको पर्वतसेगिरा देवाकूएमेंडालदेवतो मरजायगा अथवाहाथगोडटूटजायगा इसकोकोईनहीकरेगा खंभमें सेनृसिंहकानिकलना यहबातबडीमिथ्याहै और नृसिंहजोनारायणकाअवतार और रूपवंतहोतातो पहिली बातकोक्योंभूलजाता जोमनकादिकोंने मातवातोनजन्ममेंसद्गतिकहीथी उननेपहिलेही जन्ममेंसद्गतिक्योंदेदिई और प्रथमही उनकाजन्मथा उसकी २१पीढीनहीरनसक्ो और जोकश्यप मरीचिब्रह्मातकविचारें तोभीचारपीढीहोसक्तीहैं २१ तककभीनहो फिरउसनेलिखाकि हिरण्याक्षहिरण्यकश्यपही रावणकुंभकर्ण शिशुपाल और दन्तवक्रहोतेभये फिरसद्गतिकिनकोभई यहबडीमिथ्याकथाहै अजामीलकीकथा मेलिखाहै किअपनेपुत्रको मरणसमयमें बोलायाउसकाभी नामनारायणथा सोनारायणने इतनाजानाभीनही किमेरेकोपुकारताहै वाअपनेपुत्रको औरवहबडापापीथापरन्तुएकसमयनारायणकेनामसे उसकोवैकुंठकावासदेदिया सोबडाभारीअन्यायकियापकरै और दण्डनहोय ऐसीकथासुनके लोगोंकीभ्रष्टबुद्धिहोजाती है क्योंकिएकबारनारायणके नामसे सबपापछुटजाने हैंफिरकोई पापकरनेमेंभयकभीनहीकरेगा व्यासजीनेसब्वेदवेदांग विद्याओं कोपढलियाऔरपरमेश्वर पर्यन्तयथावत्पदार्थोंकासाक्षात्कारकियाथा तथाअणिमादिकसिद्धिभीभईथी फिरभी सरस्वतीनदीके तटमे एकवृक्षकेनीचे शोकातुरहोके जैसेरोताहोवै वैसेवैठेथे उससमयमें वहांनारदआये औरव्यासजीसेपूछा किआपऐसीव्यवस्थामेंक्योंबैठेहैं तबव्यासजीबोले किमैनेंसबविद्यापढी औरसबप्रकारकाज्ञानभी मुझकोभया परन्तुमेरेचित्तकी शांतिनहीभई तब नारदजीबोले कितुमने भगवतकथानहीकिई और ऐसाग्रन्थभीको

ईनहीबनायाजिसमेंभगवतकथाहोवै सोआपभागवतबनावैंकृष्ण
जीकेगुणयुक्त तबआपकाचित्त शान्तहोगा इसमेंविचारनाचाहि-
येकिव्यासजी जोनारायणका अवतारहोते तोउनकोअज्ञानशो-
क औरमोह क्योंहोता और जोउनकोअज्ञानादिकथेतोअज्ञानी-
काबनाया जोभागवतउसकाप्रमाणनहींहोसक्ता फिरइसकथामें
वेदादिकोंकोकेवलनिन्दाआतीहै क्योंकिवेदादिकोंकेपढनेसेव्या-
सजीकोज्ञान नहींभया तोहमलोगोंकाकैसेहोगा फिरभीनिग-
मकल्पतरोर्गलितंफलं इत्यादिकश्लोकोंसे केवलवेदोंकीनिन्दाकी-
किईहै क्योंकिवेदादिक सत्यशास्त्रोंका यहनिन्दानकरतातोइसम
हामिथ्याजालरूपजोभागवतग्रन्थउसकी प्रवृत्तिहीनहींहोतीफि-
रउसनेनृगराजकीकथालिखीकि यावत्यः सिकताभूमौयावन्तोदि
वितारकाः यावत्योवर्षधाराश्च तावतीरददंस्मगाः॥ नृगराजाने इ-
तनीगायदीईकिजितनेभूमिमेकणिकाहैं इसमेंपूछनाचाहियेकिइ-
तनीगायकहां खडीरहतीथीं क्योंकिएकगायतीनचारहाथके
जगहमेंखडीरहतीहैं उसभूमिकेकणोंको सबभूमिकेमनुष्यकरो-
डहांलाखहां वर्षतकगिने तोभीपारावार नहींहोवै फिरभीउस
मिथ्यावादीको संतोषनहींभया मिथ्याकहनेसेकि जितनेआकाश
मेंतारे औरजितने वृष्टिकेबिंदु उतनेगोदान नृगराजनेकियेफि-
रभीवह दुर्गतिकोप्राप्तभया क्योंकिएकगाय एकब्राह्मणकोपहिले
दिईथी फिरभूलके दूसरेकोदेदिई फिरदोनोंब्राह्मण लडनेलगे-
किएक कहेयहमेरीगायहै दूसराकहेकिमेरी तबनृगराजनेकहा
किदोनोंतुम समझकेएकतो इसगायकोलेलेओ दूसराएककबद-
लेमे सौहजारलाख करोडऔर सबराज्य लेलेओ परन्तुलडोमत
वेदोनोऐसेमूर्खकिलडनेहीरहे किन्तुशान्तनभयेऔरफिर राजा
कोआपदेदियाकितूदुर्गतिकोजा इसमेंविचारनाचाहिये किएक-
तोइसनेकर्मकांडकीनिन्दाकिईकीथोडीसीभीभूलपडजायतोदुर्ग-
तिकोजाय इसमेंकर्मकांडमेंकुछफलनहीं ऐसाउसकीमिथ्याबुद्धि

थोकि इसप्रकारकी मिथ्याकथा उसनेलिखी और ब्राह्मणोंकीनिन्दा लिखीकिसदाहठीहोतेहैं औरराजाने उनकोदण्डभी नहींदिया ऐसेपुरुषोंको दण्डदेनाचाहिये राजाकोफिरकभी हठदुराग्रहन करैं औरराजाका अपराधक्याभयाथा किउसकोंआपलगा एक गोदानके व्यतिक्रमसेदुर्गतीकोवहगया और असंख्यातगोदानका पुन्यउसका कहांगयायह अन्धकारकीबात उनकीकिइतने उसने गोदानकिये परन्तु सबउसकेनष्टहोगये बहुतगोदानोंके पुन्यनेकुछसहायनहींकिया फिरउसनेएककथालिखीकि रथलवायुवेगेन जगामगोकुलंप्रतिजबकंसनेअक्रूरजीकोश्रीकृष्णकेलेनेकेवास्तेभेजा तबमथुरासे सूर्योदयसमयमें बायुवेगरथके ऊपरबैठ केचलेदोकोस दूरगोकुलथासोचारप्रहरमेंअर्थात् सूर्यास्तसमयमेंगोकुल कोआपहुंचे इससेपूंछनाचाहियेकि रथकावायुवेगकहांनष्टहोगया जोकोईकहेकि अक्रूरजीकोप्रेमहुआ सोदेरमेंपहुंचेपरन्तु घोड़ेकोऔर सहीसको प्रेमकहांसेआया और उसका वायुवेग उसने क्योंमिथ्यालिखा फिरपूतनाको श्रीकृष्णने मारके गोकुलमथुरा केबीचमें उसकाशरीर डालदिया सोछः कोसतकउसशरीर कीस्थूलतालिखी फिरकंसको मालूम भीनहीं भयाकि पूतनामारी गई बानहीं जोछःकोसको स्थूलताहोतीतो दोकोसकेबीचमें कैसे समाताकिन्तु गोकुलमथुरा येदोनोंचूर्णहोजाते औरगोकुलमथुराके पारकोस २ तकशरीरगिरतासो ऐसी २ झूठकथा लिखीहैं परन्तु कथाकरनेऔरकरानेवाले सबभांगपानकरकेमस्तहोगये-हैं किऐसेझूठकोभीनहीं जानसक्ते ब्रह्माजीको नारायणजीनेवर दियाकि। भवानकल्पविकल्पेषु न विमुह्यतिकर्हिचित्जबतकसृष्टि है इसकानामहै कल्पऔरजबतक प्रलयबनारहै उसकानामहैविकल्पसोनरायणने ब्रह्माजीसेकहाकितुमको कभीमोहनहोगाफिरवत्सहरणकथामेंलिखा किब्रह्मामोहितहोगये और बछड़ेकोहरलियाऔरउनीब्रह्मानेतोकहाथा किआपवासुदेवऔदेवकीकेघर

मेंजन्मलीजियेफिर कैसोगाढी भांगपीलिईकिझटभूलगयेकि यह गोपहैवाविष्णुकाअवतारहै औरभागवतबनानेवालेने ऐसानशा कियाहै किबड़ाअंधकारइसकेहृदयमेंहैकि ऐसाबड़ापूर्वापरविरुद्ध लिखताहै औरजानताभीनहींप्रियव्रतकोकथाउसनेलिखोकिसा-तदिनतक सूर्योदयनहींभया तबप्रियव्रत रथपैबैठकेसूर्यकीनांईप्र-काशितहोकेघूमनेलगासोउसकेरथकेपहियेकेलीकसेसातदिनतक घूमनेससातसमुद्रसप्तद्वीपबनगये इस्सेपूंछनाचाहियेकिरथकेचक्र कोइतनोबड़ी स्थूललीकभईतो उसरथ केचक्रका क्याप्रमाणरथ अश्वऔर प्रियव्रतकेशरीरका क्याप्रमाणहोगा एकरथइसकथासे इतनास्थूलहोगाकि पृथ्वीकेऊपर अवकाश नहींहोसक्ताऔरसूर्य आकाशमेंभ्रमणकर्त्ताहै प्रियव्रतनेपृथ्वीकेऊपर भ्रमणकियाफिर जितनासूर्यकाप्रकाश उतनाउस्सेकभीनहीं होसक्ता औरसूर्य लोककेइतनास्थूलभी कभीनहींहोसक्ता भूगोलकेविषयमें जैसा उननेलिखाहै वैसा उन्मत्तभी नलिखतथा सुमेरुपर्वतकेविषयमें जैसालिखाहैवैसाबालकभीनहींलिखेगा सोऐसीअसंभवऔरमि-थ्याकथाभागवतका करनेबालालिखताहै श्रीकृष्णविद्वानधर्मात्मा औरजितेन्द्रियथे ऐसामहाभारतकी कथासे यथावत् निश्चयहोता हैसो श्रीकृष्णकी जैसीनिन्दा इसनेकराई ऐसीकिसीकोनहोगी क्योंकि उसनेरासमंडलकीकथालिखी उसमेंऐसो २ बातलिखी जिस्से यथावत् श्रीकृष्णकीनिन्दाहोय जैसेकिवृन्दावनसे महावन छः कोसहै वृन्दावनमें बंसीबजाई उसकाशब्दनिकट २ गांवऔर मथुरामेंकिसीनेनहींसुनाकिन्तुजैसाबांदर उड़केजायवैसाशब्दउ-ड़केमहावनमें कैसेगयाहोगा फिरउसशब्दकोसुनके महावनकी स्त्रियांव्याकुलहोगई फिरउनकेपतियोंनेनिरोधभीकियातोभीकि-सीनेनमानाफिरउलटाआभूषणऔरवस्त्रधारणकरकेवहांसेचली सोछःकोसवृन्दावनमेंनजानेपवनोकीनांईउड़गईहोंगीपगकाआ-भूषणनाकमेंनाककाआभूषणपगमें कैसेधारणकरलेगीफिरश्रीकृ-

प्यानेगोपियोंसेकहाकितुमनेबड़ाबुराकामकियाइससे तुमअपने२घरकोचलीजाओ औरअपनो २ पतिकीसेवाकरो पतियोंकीआज्ञा भंगमतकरो फिरगोपियांबोलीं कियेभूठपतिहैं सत्यपतितोआपहीहैं हमउनकेपासक्योंजाय आपकोछोड़केतबतोश्रीकृष्णभीप्रसन्नहोगये औरहाथसेहाथ पकड़केभटक्रोड़ा करनेलगेसोछः मासकोरात्रिकरदिई क्योंकिस्त्रियांबहुतथीं औरकामातुरथोफिरश्रीकृष्णने भीविचाराकि इनमेंथोड़ेकालमें तृप्तिनहोगीइससेछः मासकाक्रीड़ाकेवास्ते कालबनायाफिर क्रीड़ाकरते२ अन्तर्ध्यान होगए फिरगोपियांबहुतव्याकुलहोनेलगींऔररोनेलगीं तबश्रीकृष्णफिरप्रसिद्धहोगये तबफिरगोपीप्रसन्नहोगईं फिरभीसबमिलके क्रीड़ाकरनेलगे फिरएकबारएकगोपोकोश्रीकृष्णकंधेपरलेकेबनमेंभागगए उसस्त्रीकावीर्यस्रावहोगयाइसमेंविचारनाचाहिएकि श्रीकृष्णकभीऐसी बातनकरेंगेइससे बहुतजगत्काअनुपकारहोताहै क्योंकिस्त्रीलोगगोपियोंका दृष्टान्तसुनके व्यभिचारिणी होजांयगीतथापुरुषभीश्रीकृष्णकादृष्टान्त सुनकेव्यभिचारीहोजांयगेऐसीकथासे बहुतजगतका अनुपकारहोताहै फिरवहांपरीक्षितने प्रश्नकियाकियहधर्मकाउल्लंघनश्रीकृष्णने क्योंकियाउसका शुकनेउत्तरदिया॥ धर्मव्यतिक्रमोदृष्ट ईश्वराणांचसाहसम्तेजीयसांनदोषायवन्हेः सर्वभुजोयथा इसकायहअभिप्रायहै किजोईश्वरहोताहै सोधर्मकाउल्लंघनकर्त्ताहीहै किन्तु जैसाचाहेवैसा करें परस्त्रीगमनकरले वाचोरीभीकरले उनकोदोषनहीं जैसे तेजस्वीपुरुष जोचाहेसोकरले जैसेअग्निसबकोजलादेतीहै औरदोषनहीलगताहै वैसेकृष्णादिक समर्थथेउनकोभी दोषनहीलगताइनमेंविचारनाचाहिये किश्रीकृष्णधर्मात्माथेऐसाकामकभीनहीकरेंगे(औरजोश्रीकृष्ण ऐसाकर्त्ते तो कुंभीपाकसेकभी ननिकलते)इससे श्रीकृष्णनेकभीऐसा कामनहीकियाथा क्योंकिवे बड़ेधर्मात्माथे ईश्वराणांवच सत्यं तथैवाचरितंक्वचित् इसकायह

अभिप्रायहै किईश्वरकावचनकहीं २ जैसेसत्यहोताहै वैसेआचरणभीसत्यकहीं२होताहैसर्वथाईश्वर असत्यबोलताहैऔरअधर्मको होकतेहैंकिन्तुकदाचित् सत्यवचनबोलताहै ईश्वरऔरसत्यआचरणइनसेपूंछनाचाहिये कोयहईश्वरकोबातहै वाउन्मत्तकी जैसेकहतेहैंकि जिसकेकण्ठमेंरुद्राक्ष वातुलसोकीमालानहोय वाललाट मेंतिलकउनकेमुख देखनेसेपापहोताहै उनसेकहोकि उनकीपीठ देखनेसेतोपुण्यहोताहोगा औरवेकहतेहैंकिउनकेहाथसे जललेनेमें पापहोताहै तोउनसेकहोकी वहपगसेजलदेदे फिरतोकुछपाप नहीहोगा ऐसी २ बातेंलोगोंनेमिथ्या बनालिईहैं औरभागवत केविषयमेंहमनेथोडेसे दोषदेखाहै परन्तुभागवतसबदोषरूपहो है वैसेहीअठारहपुराण अठारहउपपुराण औरसबतन्त्रग्रन्थवनेहहीहैं इससेकुछजगत्‌काउपकार नहीहोतासिवाय अनुपकारके प्रश्नब्रह्माविष्णु महादेवादिक देवउनकानिवासस्थानकहांहैउत्तरमहाभारतकोरीतिसे औरयुक्तिसेभीयहनिश्चयहोताहैकिब्रह्मादिकसबहिमालयमें रहतेथेक्योंकि इसभूमिमें उनकेचिन्हपाये जातेहैंखाण्डववन इन्द्रका बागथा पुष्करमेंब्रह्माने यज्ञकियाकुरुक्षेत्रमेंदेवोंने यज्ञकियाअर्जुन और श्रीकृष्णसे इन्द्रादिकोंकायुद्ध होनातथापाण्डवोंसेगान्धर्वोंका युद्धहोनादमयन्तीकेस्वयंवरमेंइन्द्रादिकोंकाआना अर्जुनकामहादेवसे पाशुपतास्त्रकासीखनातथादेवलोकमें जाकेविद्या कापढना भीमका कुबेर पुरीमे जाना तथादशरथऔर केकैयीका रथकेऊपर चढके देवासुरसंग्राम में जानासर्वयुद्धदेखनेकेवास्ते विमानोंपरचढकेदेवोंका आनाइस देशवासियोंका अनेकबार समागमका होनामहोदधि औरगंगा काब्रह्मलोकसे आनास्वर्गारोहिणीका कैलाससेनिकलनाअलकनन्दाकाकुबेरपुरीसेआना वसुधाराकावसुपुरीसे गिरनानरऔर नारायणकाबदरिकाश्रममेंतपकाकरना युधिष्ठिरकाशरीर सहितस्वर्गमेंजाना नारदका देवलोकसे इसलोकमें आना यज्ञोंमें

देवोंकोनिमन्त्रणदेना औरउनोंका यज्ञोंमेंआना नहुषकेइन्द्रका होना युधिष्ठिरऔरयमराजका समागमकाहोना इसवक्तनकब्रह्मलोककैलासवैकुंठ इन्द्रवरुणकुबेर वसुअग्न्यादिक आठवसुपुरियोंकाइनसबकेआजतक उत्तरखण्डमेंप्रसिद्धविद्यमानोंका होना महभारतऔर केदारखण्डादिकोंमें सबकेजो२ चिन्हलिखेहैं उनकेप्रत्यक्षकाहोनाहिमालयकीकन्यापार्वतीसेमहादेवकाविवाहहोनावरुणकीकन्यासे नारायणका विवाहहोना इत्यादिकहेतुओंमेहिमालयमेंहोदेवलोक निश्चित था इसमेंकुछसंदेहनहीसोप्रथमजबसृष्टिभईथी इसमेंक्याआयाकि प्रथमसृष्टिमनुष्योंकी हिमालयमेंभईथीफिरधीरे२ बढतेचलेवैसे २ सबभूगोलमेंमनुष्यवासकरतेचले औरफैलतेभीचले सोजितनेपुरुषहैं मनुष्यसृष्टिमें वसबहिमालयउत्तराखण्ड सेहीबढेहैं सोउत्तराखण्डमें ३३ करोडमनुष्यप्रथमथे सबपर्वतोंमें मिलके फिरजबबहुतबढे तबचारोंओरमनुष्यफैलगएउनमेंसेविद्याबल बुद्धिपराक्रमादिक गुणोंसेजोयुक्तथेवेब्रह्मादिकदेव कहातेथेऔर उनकीगद्दीपर जोबैठताथा उनकानामब्रह्मापडताथा वैसेहीमहादेवविष्णु इन्द्रकुबेरऔरवरुणादिकनामपडतेथे जैसेमिथिलापुरीमें जोगद्दीपरबैठताथाउसकानामजनकपडताथा तथाजोकोईराज्याभिषेकहोके राजपरबैठेहैंउसकानाम पदवीकेयोग्य अबतकपडताजाताहै जैसेअमात्योंकानामदीवानलाटजजकलकटरइत्यादिकनामप्रत्यक्ष पडतेहीहैं परन्तु वहिमालयवासीदेव पदार्थविद्याकोहस्तक्रियासहितअच्छीप्रकारसेजानतेथे उनमेंसेविश्वकर्मा बडेपदार्थविद्यायुक्तथे अनेकप्रकार केयन्त्रअग्नि जलवायु इत्यादिककेयोगसे विमानादिकरथचलतेथे धर्मात्मातथा जितेन्द्रियादिकश्रेष्ठगुणवालेहोतेथेऔर बडेशूरवीरथेनाना प्रकारके आकाशपृथिवी औरजलमेंफिर नेकेवास्तेबनालेतेथेआकाशमें जोयानरचतेथे उसकानामविमान रखतेथे सो उनमनुष्योंमेंसे बहुतदुष्टकर्मकरनेवालेथे उनको हिमालयसेनि-

कालदिएथे सोहिमालयसे दक्षिणदेशमें आकररहतेथेफिरवेडकु-
कर्मकरनेको लगगएथे उनकानाम राक्षसपड़ाथा और कुछउन
डाकुओंमेंसेअच्छेथे उनकानामदैत्यपड़गयाथा इनदैत्यऔररा-
क्षसोंसेहिमालयवासी देवोंकावैरबनगयाथा जबउनदेवोंकाबल
होताथातबइनको मारतेथेऔरउनकाराज्य छीनलेतेथे जबदैत्या
दिकोंकाबलहोताथा तबदेवोंकाराज्यछीनलेतेथे औरमारतेभी-
थेएकशुक्राचार्यदैत्योंका गुरुथाऔरबृहस्पति देवोंकाथादोनोंअ-
पने२ चेलोंकोविद्यापढ़ातेथे जबजिसकाबलबुद्धि पराक्रमबढ़ता
थाउनकाविजय होताथापरन्तु देवविद्याओंमें सदाश्रेष्ठहोतेथे
औरहिमालयमें देवोंकेराज्यस्थानथे इससेदैत्योंकाअधिक बलन-
हींचलताथा सोअबउसहिमालय देवलोकमें कोईनहींहै किन्तु
सबजोपर्वतवासीहैं देवोंकापरीवारवहीहै आर्यावर्त्तादिक देशोंमें
जितने उत्तमआचारवालेमनुष्यहैं वेदेवोंकेपरीवारहैंऔरजित-
नेहबशीआदिक आजतकभी जोमनुष्योंकेमांसको खालेतेहैं वे
राक्षसऔरदैत्यके कुलकेहैंसोमहाभारतादिक इतिहासोंसेस्पष्ट-
निश्चयहोताहै इसमेंकुछसंदेहनहीं एकजयपुरमेंनाभाडोमजा-
तिकाथाजिसकागुरुअग्रदासथा सोउसकोंउननेचेलाकरलियाथा
उनकानाम नाभादासरक्खाथा सोवैरागियोंकाजूठखाताथाऔ-
रजहांवैरागीलोगमुखहाथधोतेथे उसकाजलपीताथा सोवैरा-
गियोंकेजूंठअन्न औरजूंठजलखानेपीनेसे सिद्धहोगया इसप्रमाण
सेआजतकवैरागीलोक परस्परजूंठखातेहैं क्योंकिजैसेनाभासिद्ध
होगयावैसेहमलोगभी सिद्धहोजांयगे परन्तु आजतककोईजूंठके
खानेऔरपीनेसे सिद्धनहोभया इससे यहभीनिश्चितभया किनाभा
भीसिद्धनहीथा उननेएकग्रंथबनायाहै उसकानामभक्तमालरक्खा
हैउसमेंवैरागियोंकानामसन्तरक्खाहैसोपीपाकीकथाउसनेलि-
खीहै उसकोस्त्रीकानाम सीताथासोउनकेपास वैरागीदसपांचआए
उनकेखानेपीनेकेवास्ते पीपाकेपासकुछ नहीथासोउसकी स्त्रीके

पासकहाकि इनसाधुओंके खानेकेवास्ते कुछ लेआना चाहिये क्योंकिउसकोकोई उधारवामांगनेसे नहीदेताथा और उसकोस्त्री सीतारूपवतीथी सोएकदुकानदारके पासगईऔरकहाकिहमको अन्नऔरघीतुमदेओतबवैश्यनेउसकोदेखके कहाकितूंएकरातभर मेरेपासरहैतो तुझकोमैंदेऊं तबसीतानेकहाकि कुछचिन्तानहीसाधुओंकिसेवाकेवास्ते मेराशरीरहै तबवैश्यनेअन्नादिकदिये औरउनवैरागियोंको भोजनउनने करायाफिरजब पहररात्रि गईतबपीपासेकहाको ऐसीबातकहके मैंपदार्थलेआईहूं तबतोपीपानेधन्यवाददिया कितूंबडोसाधुओंकी सेवकहै परन्तुउसवक्तकुछ २ वृष्टिहोतीथीसोसीताको कंधेपरलेजाकेउसबनियेकेपासपहुंचादियातब बनियेनेकहाकि वृष्टिहोतीहैवृष्टिमेंतेरापगभीनहीभीजाफिरतूं कैसेआईतबसीतानेकहाकितुझको इसबातकाक्या प्रयोजनहै तुझकोजोकरनाहोय सोकरतबवैश्यनेकहाकि तूंसचबोलसीतानेकहाकिमेरा पतिकांधेपरचढाकेतेरेदुकानपैपहुंचादिया तबतोवहवैश्य सीताकेचरणमें गिरपडाऔरकहाकितूं औरतेरापतिधन्यहै क्योंकितुमने संतोकेवास्ते अपनाशरीरभीबेचडालायहसब बातउनकोअधर्मयुक्त औरझूंठहैक्योंकि यहश्रेष्ठ पुरुषोंकाकामनही जोकिवेश्याऔर भडुओंकाकामकरैं ऐसेहीधन्नाभगतकाबिनाबीजसे खेतजमगयानामदेवको पाषाणकीमूर्त्तिनेदूधपीलिया मीराबाईपाषाण कोमूर्त्तिमेंसमागई औरकोईभगतकेरासमेनारायण वृन्दाबनकेरोटी उठाकेभागे औरमीरा विषपीनेसेभीनहीमरी इत्यादिकभगत मालकीबातझूंठहैऔरएकपरिकालउनसाधुओंकीसेवाकरताथा जोकिचक्रांकितथेवहभीचक्रांकितथा परन्तुवहपरिकाल डांकूपनेसेधनहरणकरकेसाधुओंकोदेताथा सोएकदिनचोरी सेवाडांकूपनसे धननहीपायाफिरबडाब्याकुलभया औरघोडे परचढके जहांतहांघूमताथा सोनारायणएकधनाढ्यके वेशसेरथपैबैठके परिकालकोमिले सोझटप-

रिकालने उनको घेरलिया और कहाकितुमको मारडालूंगानहीं तोतुमसबकुछरखदेओ परन्तुउनकेरखनेमें कुछदेरभई सोझटउ-तरकेनारायणके अंगुलोमें सोनेकी अंगुठियांथीं सो अंगूठोमहित अंगुलीकोकाटलिईतबनारायण बड़ेप्रसन्नभये औरदर्शनदियाकि तूंबड़ाभक्तहै देखनाचाहिये किनारायणभीकैसेअन्यायकारीहैं डाकूओंके ऊपर कृपाकर देतेहैं अर्थात् डांकूऔर चोरोंके संगीहैं फिरवेचक्रांकितलोगनित्य उपदेशसबकर्त्ते हैं किचोरीकरकेभोप-दार्थलेआवै औरनारायण तथावैष्णवोंकी सेवामेंलगावैतोभीव-हबड़ाभक्तहोताहै औरबैकुंठकोजाताहै फिरवहपरीकालकोईब-नियेकेजहाजपर बैठकेसमुद्रपार बनियोंकेसाथ चलागया वहां बनियोंनेजहाजमें सुपारोभरीसो एकसुपारीका आधाखण्डपरि-कालनेजहाजमेंधरदिया औरवैश्योंसे कहदिया किमैंआधीसुपा-रीपारजाकेलेलेऊंगा तबवैश्योंने कहाकिएकक्या दशतुमलेलेना तबपरीकालने कहाकिनहीं मैंतोआधोहीलेऊंगाफिरजहाजपा-रकोआगया जबसुपारीजहाजसे उतारनेलगे तबपरिकालनेक-हाकिआधोसुपारी हमकोदेदेओ तबवैश्यलोग सुपारोका आधा खण्डदेनेलगेसोपरीकाल बड़ाक्रोधकरके सबसेकहनेलगाकियेवै-श्यमिथ्यावादीहैं क्योंकिदेखोइसपत्रमें आधीसुपारीमेरोलिखीहै सोयेदेतेनहीं सोअत्यन्तभर्त्सना करनेलगाऔर लड़नेकोतैयार भया।फिरजालसाजी करके आधीसुपारी नांवमेंसे बटवालिई उ-नवैरागियोंकेसेवामें सबधनलगादिया सोऐसीपरीकालकीच-क्रांकितके संप्रदायमें बड़ी प्रतिष्ठाहैसोचक्रांकितके मन्त्रार्थग्रंथ में ऐसीबातलिखीहै सोजितनेसंप्रदाईहैं वेअपनेचेलकोऐसे २ उपदेशकरकेऔर ऐसेग्रन्थोंको सुनाके पापोंमेंलगादेतेहैंफिरभ-गतमालामें एक कथालिखीहै किएकसाधूएक ब्राह्मण केघरमें ठहरगयाऔर ब्राह्मणउसकी सेवाकरताथा उसकोएककुमारीक-न्याथीउसमें वहसाधू मोहितहोगया सोउसकन्याको लेकेरात्रिमें

कुकर्मकियाऔरखटियाकेउपरदोनोंनंगेसोगएथे सोजबउसकन्या कापिताप्रातःकालउठातबदोनोंकोनंगे देखकेअपनीचादरदोनों परओढादीई औसिपाहियोंसे कहाकियहसाधू भागनजाय फिरवहबाहरचलागया तबवेदोनोंउठे उठकेदेखा किवस्त्रकिननडालासोकन्याने पहिचानलिया किमेरेपिताकायहवस्त्रहै फिरवहकन्याडरकेभागगई भागकेछिपगई औरसाधूभीवहांसे निकलके जानेलगा तबसिपाहियोंनेउसको रोकलिया तबतोसाधूबहुतडरा जबतक कन्याकापिता बाहरसेआया सोसाधू केपासआकेसाष्टांगनमस्कारकिया किमेराधन्यभाग्यहै जोकिआपनेमेरीकन्याकाग्रहणकिया इससेमेराभी उद्धारहोजायगा सोआपआनन्दसेमेरेघरमेंरहिये औरकन्याकोभी मैंनेआपकोसमर्पण करदिया तबसाधूबडा प्रसन्नहोकेरहा औरविषय भोगकरनेलगा इसकोबिचारना चाहिये किबड़े अनर्थकीबातहै क्योंकिऐसीकथा कोसुनकेसाधू औरगृहस्थलोग भ्रष्टहोजाते हैं इसमेंकुछसंदेहनहीं फिरभक्तमालमेंएक कथालिखीहै किएकभक्तथा उसकेघरमें साधूपाहुनेआये फिरउनको सेवाकेवास्ते पितापुत्रदोनों चोरीकरनेकेवास्तेगये सोएकबनिये कीदुकान कोभींतमें सुरंगदेकपुत्रभीतर घुसा औरपिताबाहरखडारहा सोभीतरसे घीचीनीअन्ननिकालकेदेताथा औरवहलेताथा जबभीतरसेबाहर निकलनेलगा तबतक दुकानवालेजागउठे सोउसकेपगतो भीतरथे औरसिरबाहरनिकलाथा तबतकउसनेउसके पग पकडलिये औरसिरपकड लियापिताने दोनोंतर्फ खींचनेलगे सोउसकेपिताने बिचारकियाकि हमपकडजांयगेतो साधूओंकी सेवामेंहरकतहोगी सोपुत्रकासिरकाटके औरघृतादिक पदार्थोंकोलेके भागगयातबतकराजपुरुषआये और उनकाशरीर राजघरमेंलेगये औरखोजहोनेलगा कियहकिसकाहै फिरवहअपनेघरमेंचलागया और साधुओंकेवास्ते भोजनबनाया औरउन कीपंक्तीभई उस समयमेंसाधु

ओंनेपूंछाकि कहांहैतुमारालड़का उसकोजलदीबोलाओ तबउसकेमाता और पिता जोचोर उन्नेंकहाकि कहींचलागयाहोगा आजायगा आपतबतकभोजनकीजिये तबसाधुओंनेकहाकि वहजबआवेगा तबहमलोग भोजनकरेंगे अन्यथानहीं तब उसकोमातानेरोकेकहा किवहतोमारागया तबसाधुओंनेपूंछा कैसेमारागया किहमारेघरमेंआपकेसत्कारकेहेतु पदार्थनहोथा इस्से बेटोनेंचोरीकरनेकोगयेथे वहांवह मारागया तबसाधुओंनेकहाकि उसकाशरीरकहांहै तब उन्ने कहाकि सिरहमारेघरमे हैऔरशरीर राजघरमेंहै वेसाधूलोग राजघरमें जाके शरीरलेआयेशरीरऔरसिर कासन्धान करकेबीचमेंरखदिया फिरवेसाधूनाचनेकूदनेऔरगानेलगे फिरवहजीउठा और साधूओंनेआनन्दसेभोजनकिया औरउनसेकहासाधुओंने कितुमबडेभक्तहो और स्वर्गमेंतुह्मारावासहोगा इससेंविचारनाचाहिये किसाधुओंकीआज्ञाहोनाऔरचोरीकाकरना फिरनरकमेंनजाना किन्तु स्वर्गमेंजाना यहबडोमिथ्याकथाहै ऐसीकथाकोसुनके लोगसब भ्रष्टबुद्धिहोजातेहैं ऐसी२ कथासबभ्रष्ट भक्तमालमेंलिखींहैं फिरभोलोगोंकोऐसीमूर्खताहैकिसुनतेहैं औरकतेहैं शिवपुराणमें त्रयोदशीप्रदोषव्रत जोकोईनकरै वेनरकमेंजांयगे तन्त्र औरदेवीभागवतादिकोंमेंलिखाहै नवरात्र काव्रत नकरैं वेनरकमेंजांयगे तथापद्मपुराणादिकमेंलिखाहै किदशमी दिग्पालोंका एकादशी विष्णुका द्वादशीवामनका चतुर्दशीनृसिंह औरअनन्तका अमावस्यापितृओंका पौर्णमासीचन्द्रका सो मतमतान्तरोंसे औरपुराणतथा उपपुराणोंसे यहआयाकि किसीतिथिमेंभोजननकरना औरजलभीनपीना औरजोकोईखाया वा पीयावहनरककोजायगा इसमेंवकहतेहैं किजिसकाबिवाह उसकोगीत इस्से ऐसीकथामेंविरोधनहीआता उनसेपूछनाचाहियेकि जिसकाबिवाह होताहै उसकेगीतगायेजातेहैं परन्तु पहिलेजिनके बिवाहभयेथे औरजिनके

होनेवाले हैं उनका खण्डन तो न होहोता कि यह ठीक समय है वा पहि
ले जिसके विवाह भये और जिनके होंगे उनको नीचतो नहीं
बनाते इससे ऐसे२ मूर्खताके दृष्टान्तसे कुछ नहीं होता ऐसे२ श्लोक
लोगोंने बना लिये हैं कि शीतलेत्वंजगन्माता शीतलेत्वंजगत्पिताशी
तलेत्वंजगद्धात्री शीतलायैनमोनमः एक विस्फोटरोग है उसका
नाम शीतला रक्खा याद्दशीशीतलादेवी ताद्दशोवाहनःखरः शीत
लाअष्टमीको गधेकी पूजाकर्ते हैं और हनुमान् का रूपमानके बानर
की पूजाकर्त्ते हैं भैरवका वाहन कुत्ताको मानके पूजाकर्त्ते हैं तथा पाषा-
णपिप्पलादिक वृक्ष तुलस्यादिक औषधी दूब और कुशादिक घास-
पित्तलादिक धातु चन्दनादिक काष्ठ, पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, जूता,
और विष्टातक आर्यावर्त्त देशवाले पूजाकर्त्ते हैं इनको सुख वा कल्याण
कभी नहीं होसक्ता जबतक इन पाखण्डोंको आर्यावर्त्त बासीलोग न
छोडेंगे तबतक इनका अच्छा कुछ नहीं होसक्ता फिर एक शालिग्राम
पाषाण और तुलसीघास दोनोंका विवाह करते हैं तथा तडाग बाग
कूपादिकोंका विवाह करते हैं और नाना प्रकारकी मूर्तियां बनाके मं-
दिर में रखते हैं उनके नाम शिव और पार्वती नारायण और लक्ष्मी
दुर्गा काली भैरव, बटुक ऋषिमुनि राधा और कृष्ण सीता और रा-
म जगन्नाथ विश्वनाथ गणेश और ऋद्धिसिद्धि इत्यादिक रखलिये-
हैं फिर इनके पुजारी बहुत दरिद्र देखनेमें आते हैं और सब संसारसे
धनलेनेके हेतु उपदेश करते हैं कि आओ यजमान धन चढ़ाओ दे-
वताओंको नहीं तो तुमको दर्शनका फल नहोगा आम नियाले ओ
ठाकुरजीके हेतु बालभोग लेआओ तथा राजभोगके वास्ते देओ औ-
र गहना चढ़ाओ तथा वस्त्र और नारायण तथा महादेवके वास्ते
मंदिर बनवाओ और खूब आजीविका लगवाओ हमकहते हैं कि ऐ-
से दरिद्र देवता और महंत तथा पुजारीलोग आर्यावर्त्तके नाशके
वास्ते कहांसे आगये और कौनसा इस देशका अभाग्य और पापथा
कि ऐसे२ पाखण्ड इस देशमें चलगये फिर इनको लज्जाभी नहीं आ-

तोकिअपनेपुरुषोंका उपहासकर्त्ते हैं कियहसीतारामहैं इत्यादि
कनामलेलेकेदर्शनकरातेहैं इसमेंबड़ाउपहासहै परन्तुसमझते
नहीं देखनाचाहियेकि कृष्णतोधर्मात्माथे उनकेऊपर झूठजाल
भागवतमेंलिखाहैं फिरउसीलीला कोरासमण्डल बनाकेकहते
हैंउसमेंकिसीलड़केको कृष्णबनातेहैं किसीकोराधाऔर गोपियां
बनालेतेहैं तथासीतारामऔर रावणादिक लड़कोंकोबनाकेली-
लाकरतेहैं सोकेवलबड़े लोगोंकाउपहासइसमेंहोताहै और कुछ
नहींक्योंकि श्रीकृष्णऔररामादिकोंकेजोसत्यभाषणादिकव्यवहा-
र तथाराजनीतिका यथावत्पालना औरजितेन्द्रियादिक सबवि-
द्याओंकापढ़ना इनसत्यव्यवहारोंका आचरणतोकुछ नहीं करते
किन्तुकेवलउपहासकीबातें तथापापोंकोप्रसिद्धकर्त्ते हैं अपनेकुग-
तिकेवास्ते-दशसूनासमंचक्रं दशचक्रसमोध्वजः दशध्वजसमोवे-
षो दशवेषसमोनृपः॥ यहमनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै कि
सूना नामहत्यासोदशहत्याकेतुल्य जीवोंकोपीड़ा औरहननचक्र-
सेहोताहै सो तेलीवाकुम्हारकेव्यवहारसेजीवोंकोदशगुणपीड़ा वा
हननहोताहै इससे दशगुणधोबी वामद्यकेनिकालनेवाले के व्यव
हारमें सौगुणहत्याहोतीहै तथाइससे दशगुणहत्यावेषमेंहोती है अ
र्थात् वेषकिसकोकहतेहैंकिकिसीकास्वरूपबनाना औरनकल कर
ना अर्थात् मूर्तिपूजन रामलीलाऔररास मण्डलादिकजितने-
व्यवहार हैंवेसबवेषमेंहोगिनेजातेहैंक्योंकिउनकावेषधारणहोकि-
याजाताहै इससेवेषमेंहजारहत्या काअपराधहैतथा जोराजान्या-
यसेपालननहींकरता औरअन्यायकर्त्ताहै वहदसहजार हत्याका
स्वरूपहै इससे वेषबनानावाबनवाना तथादेखनाभी सज्जनोंकोन
चाहिये औरइनसबव्यवहारोंकोछोड़नाचाहियेऔर अच्छेव्यव-
हारोंकोकरनाचाहिये ऐसेहीइसदेशमें नष्टप्रवृत्तिभई है किकोईऐ
सा कहताहै मारणमोहनउच्चाटन वशीकरणऔर विद्वेषणादिक
मैंजानताहूं इनसेपूछनाचाहिये कितूंजीवन मरेभयकाभी करा-

सक्ता है वा नहीं सो कोई दैवयोग से मर जाता है वा कपटछल से विषादि दे के मार डालते हैं फिर कहते हैं कि मेरा पुरश्चरण सिद्ध हो गया यह बात सब झूंठ है कोई रोगी होता है उसको बतलाता है कि भूत चढ़गया है फिर दूसरा बतलाता है कि इसके ऊपर शनैश्चरादिक ग्रह चढ़े हैं तीसरा कहता है कि सो देवता की खोर है चौथा कहता है कि किसी का आप लगा है ये सब बात मिथ्या हैं कोई कहता है कि मैं रसायन बनाता हूं और दूसरा कहता है कि मैं पारे को भस्म बनाता हूं उसको कोई खालेतो बुड्ढे का जवान होजाता है यह भी मिथ्या होजानना और बहुत से पाखण्डी लोग बहुत पुरुष और स्त्रियों से कहते हैं कि जाओ तुमको पुत्र होजायगा सो सब तो बन्ध्या होती ही नहीं हैं जो किसी को पुत्र होजाता है तब वह पाखण्डी कहता है कि देख मेरे वर से पुत्र होगया और ऐसे भी कहता है कि मेरे वर से पुत्र होगया वह स्त्री और उसका पति भी बकते रहते हैं कि बाबाजी के वर से मुझको पुत्र भया उनकी बात सुनके बहुत मूर्ख लोग मोहित होके बाबाजी को पूजा में लगजाते हैं फिर वह पाखण्डी धन पाके बड़े २ अनर्थ करते हैं यह सब बात झूंठ है मुहूर्त्त और सुहृद इन दोनों से धूर्त्त लोग कह देते हैं कि तुम्हारा विजय होगा सो दोनों का पराजय तो होता नहीं जिसका विजय होता है उससे खूब धन लेते हैं कि हमारे पुरश्चरण और वर से तेरा विजय भया है अन्यथा कभी न होता फिर बहुत बुद्धिहीन पुरुष इस बात से भी धननाश करते हैं कोई कहता है कि जो कुछ होता है सो ईश्वर की इच्छा से ही होता है जैसा चाहता है वैसा करा लेता है और किसी के कुछ करने से होता नहीं सबको नचावै राम गोसांई ऐसे २ झूंठ वचन बनालिये हैं इनसे पूंछना चाहिये कि जो वह मिथ्याभाषण चोरी परस्त्रीगमनादिक कराता है तो वह बहुत बुरा है वह कभी ईश्वर वा श्रेष्ठ नहीं हो सक्ता कोई कहता है कि जो कुछ होता है सो प्रारब्ध से ही होता है इनसे पूंछना चाहिये कि तुम अन्य व्यवहार चेष्टा क्यों करते हो सो पुरुषार्थ में ही सदा चित्त देना चाहिये अन्य-

चनहीबहुतऐसे २ बालकोंको और स्त्रियोंको बहकाते हैं कि वे जन्म तक नहीं सुधर सकें ऐसा कहते हैं कि वह माता पिता तो झूठे हैं तुम आजाओ नारायण के शरण और एक २ साधू हजार २ को मूंड लेता है और बहकाके पतित करदेते हैं उनका मरण तक कुछ सुकर्म नहीं होता क्योंकि सुधरे तो तब जो कुछ विद्या पढ़े और बुद्धि होतौ फिर एक घर को छोड़देते हैं और माता पिता की सेवा भी छोड़देते हैं फिर कुटी मठ और मंदिरों को बनाके हजारहां प्रकार के जाल में फस जाते हैं उनसे पूछना चाहिये कि तुम लोगोंने घर और माता पितादिकक्यों छोड़े थे तब वे कहते हैं कि ऐसा सुखघर में नहीं है ठीक है कि घर में छप्पर के नीचे रहना पड़ता था मजूरों में रहना तसे चना और जब का आटा भी पेटभर नहीं मिलता था सो आर्यावर्त्त में अन्धकार पड़ा है नित्य मोहनभोग मिलता है और नित्य नये भोग ऐसा सुख सोकाभी गृहाश्रम में हीहोता इस गृहाश्रम में कुछ है नहीं देखिये कि एक रुपैया कोई मंदिर में चढ़ाता है उसको एक आनेका प्रसाद देते हैं कभी नहीं देते हैं परन्तु हमलोगोंने इसको विचार लिया है कि सोलह पचास सौ और हजार गुना तक भी इस मंदिर के दुकानदारों में तथा तीर्थ में होता है अन्यत्र कैसो हो दुकानदारी करो तो भी ऐसा लाभ नहीं होता क्योंकि खाना नित्य नयी स्त्रियां और नित्य नाना प्रकार के पदार्थों की प्राप्ति अन्यत्र कहीं नहीं होती सिवाय मंदिर पुराणादिकों की कथा और चेलों के मूड़ने से इससे आप हजार कहो हम लोग इस आनन्द को छोड़ने वाले हैं नहीं अच्छा हमने भी जान लिया है कि जब तक यजमान विद्या और बुद्धियुक्त न होंगे तब तक तुम लोग कभी न हीं छोड़ोगे परन्तु कभी दैवयोग से विद्या और बुद्धि आर्यावर्त्त में होगी फिर तुमको और तुमारे पाखण्डों को वे सेवक और यजमान ही छोड़ेंगे तब पीछे भक मारके तुमलोग भी छोड़ देओगे ऐसे २ मिथ्या मत चल गये हैं कि कान को फाड़ के मुद्रा को पहिरने से योगी और मुक्ति होती है सो इनके मत में मत्स्येन्द्रनाथ और गोरखनाथ दो आचार्य

भयेहैं उननेयहमतचलाया उनकोशिवकाअवतारऔर सिद्धमानतेहैं नमःशिवाय उनकामन्त्रहै औरअपने मतकादिग्विजयभीबनालियाहै औरजलंधर पुराण हठप्रदीपिका गोरक्षशतकादिक बनालियेहैं फिरकहतेहैं येग्रन्थमहादेवनेबनायेहैं उनकाअनाचारवाममार्गियोंकीनांईहै क्योंकिजैसेवाममार्गी लोग श्मशानमे पुरश्चरणकर्त्ते हैं तथामनुष्यकपाल खानेपीनेकेवास्ते रखतेहैं तथारजस्वलास्त्रीका वस्त्रशिखावाबाहुमें बांधरखतेहैंइससे अपनेको धन्यमानतेहैं औरऐसे २ प्रमाण मानलेतेहैं रजस्वलास्तिपुष्करंचाण्डालीतुस्वयं काशीव्यभिचारिणीतुज्ञास्यात्पुंश्चलीतुकुरुक्षेत्रं यमुनाचर्म कारिणी इत्यादिकवचनोंमे वर्णसामानतेहैं किइनस्त्रियोंकेसाथ समागम करनेसे इनतीर्थों काफलप्राप्त होताहै फिरवेऐसे २ श्लोककहतेहैं किहालांपिबतिदीक्षितस्यमंदिरेसुप्तो निशायांगणिका गृहेषुदिक्षितनाम रक्खाहै मद्यबेचनेवालेका उसकेघरमे जोपुरुषनिर्भयऔर निर्लज्ज होकेमद्यपीताहै फिरवेश्याकेघरमेजाके उससे समागमकरै औरवहींसोजाय उसका नामसिद्ध औरमहावीर रखतेहैं औरलज्जादिक आठपाशोंकोछोडदे तबवहशिवहोताहै इसमेंऐसा प्रमाणकहतेहैं॥ पाशबद्धोभवज्जीवः पाशमुक्तःसदाशिवः अर्थात जितनेव्यभिचारादिकपापकर्म हैंउनकेकरनेमें लज्जादिकजबतककर्त्ताहै तबतकवहजीवहै जबनिर्लज्जादिक दोषोंसेयुक्तहोताहै तबसदाशिवहोजाताहै देखनाचाहियेकि यहकैसीमिथ्याबातउनकीहै फिरउनने मद्यकानामतीर्थरक्खाहै मांसकानामशुद्धि मत्स्यकानामतृतीया रोटीकानामचतुर्थीऔरमैथुनकानामपंचमो जबवेआपसमेंबातकर्त्तेहैं किलेआओतीर्थऔरपीयो इसवास्तेइननेऐसेनाम रखलियेहैं किकोईऔरनजाने औरजितनेवाममार्गीहैं उनकेकौलवीर भैरवआदिऔरगणयेपांच नामरखलियेहैं स्त्रियोंकेनाम भगवती देवीदुर्गाकाली इत्यादिकरखलियेहैं औरजोउनकेमतमेंनहींहैंउनकानामप-

शु कराटकशुष्क औरविमुखादिक नामरखलियेहैं सोकेवलमिथ्या जालउनकाहै इसकोसज्जनलोग कभीनमानै वैसेहीकानफटेनाथोंकाव्यवहारहै क्योंकिवभीश्मशान मेंरहतेहैं मनुष्योंका कपाल रखतेहैं वाममार्गियोंसेवमिलतेहैं इत्यादिकबहुत नष्टव्यवहार-आर्यावर्त्त मेंचलजानेसे देशकासेष्ट व्यवहार नष्टहोगया औरसब देशखराबहोगया परन्तुआजकलअंगरेजके राज्यमेंकुछ२ सुधरना औरसुखभयाहै जोअबअच्छे२ ब्रह्मचर्याश्रमादिकव्यवहार-वेदादिक विद्याऔरपाखण्ड पाषाणपूजनादिकोंका त्यागकरें तो इनकोबहुतसुखहोजाय क्योंकिराज्यका आजकालबहुतसुखहैध-र्मविषयमें जोजैसाचाहै वैसाकरैऔरनानाप्रकारके पुस्तकभीय-न्त्रालयोंकेस्थापनसेसुगम तासेमिलतीहैंअच्छे२ मार्गशुद्धबनगये हैं तथाराजाऔरदरिद्रकोभी बातराजघरमेंसुनीजातीहै कोई किसीकाजबरदस्तीसेपदार्थनहींछीनसक्ता अनेकप्रकारकीपाठशालाविद्यापढनेकेवास्ते राजप्रबन्धासेबनतीहैं औरबनीभीहैं उनमेंबालकोंकी यथावत्शिक्षाहोतीहै औरपढनेसे आजीविका भी-राजघरमें पढनेवालेकोहोतीहै किसीकाबन्धनवादण्डराजघरमें नहींहोता जिसमेंजिसकोगुणीहोय उसकोवहकरै अपनेप्रसन्नतासें अत्यन्तदेशमेंमनुष्योंकी वृद्धिभईहै औरपृथिवीभी खेतआदिकोंसेबहुतहोगईहै वनादिकनहींरहेहैं लडाईबखेडा गदरकुछइसवक्तनहींहोतेहैं औरव्यवस्था राजप्रबन्धसे सबप्रकारसे अच्छीबनीहै परन्तुकितनीबात हमकोअपनीबुद्धिसेअच्छीमालूमनहीं देतीहैं उनकोप्रकाशकर्त्ते हैं नजानेवबडेबुद्धिमानहैं उननेइनबातोंमेंगुणसमझाहोगा परन्तुमेरीबुद्धिमें गुणइनबातोंमें नहींदेखपडतेहैं इससे इनबातोंकोमैंलिखताहूं एकतोयहबातहै किनोनऔरपौनरोटीमें जोकरलियाजाताहै वहमुझको अच्छानहींमालूमदेता क्योंकिनोनकेबिना दरिद्रकाभीनिर्वाह नहींहोता किन्तुसबकोनोनका आवश्यकहोता है औरवेमजूरी मेंहनतसेजैसेतैसे

निर्वाहकरतेहैं उनकेऊपरभीयहनोन कादण्डतुल्यरहताहै इससे
दरिद्रोंको क्लेशपहुंचताहै इससेऐसाहोय किमद्य अफीम गांजा-
भांग इनकेऊपर चौगुना करस्थापनहोय तोअच्छीबातहै क्योंकि
नशादिकों काछूटनाहीअच्छाहै औरजोमद्यादिक बिलकुल छूट-
जांय तोमनुष्योंका बडाभाग्यहै क्योंकिनशासेकिसीकोकुछउपका
रनहीहोता परन्तु रोगनिवृत्तिकेवास्ते औषधार्थतो मद्यादिकों
कीप्रवृत्तिरहनाचाहिये क्योंकिबहुतसे ऐसेरोगहैंकिजिनकेमद्या
दिकही निवृत्तिकारक औषधहैं सोवैद्यकशास्त्रकीरीतिसे उनरो-
गोंकीनिवृत्तिहोसकतीहै तोउनकोग्रहणकरैं जबतकरोगनछूटे फि-
र रोगकेछूटनेसेपीछे मद्यादिकोंकोकभीग्रहणनकरैं क्योंकि जित-
नेनशाकरनेवालेपदार्थहैं वेसबबुद्ध्यादिकोंकेनाशकहैं इससेइनके
ऊपरही करलगानाचाहिये औरलवणादिकोंकेऊपरनचाहिये
पौनरोटीसेभी गरीबलोगोंकोबहुतक्लेशहोताहै क्योंकिगरीबलो-
गकहींसे घासछेदन करकेलेआये वालकडीकाभार उनकेऊपर
कौडियोंके लगनेसे उनकोअवश्यक्लेशहोताहोगा इससे पौनरोटी
काजो करस्थापनकरना सोभीहमारीसमझसे अच्छानही तथा
चोरडाकू परस्त्रीगामी औरजूआकेकरनेवालेइनकेऊपरऐसाद-
ण्डहोना चाहिये किजिसकोदेख वासुनके सबलोगोंको भयहो-
जायऔर उनकामोंकोछोडदें क्योंकिजितनेअनर्थहोतेहैं वेसबउ-
नसेंहीहोतेहैं सोजैसामनुस्मृति राजधर्ममें दण्डलिखाहैवैसाही
करनाचाहिये जबकोई चोरीकरैतबयथावत् निश्चयकरकेकिइस
नेअवश्यचोरीकिईहै कुत्तेकेपंजेकीनाईं लोहेकाचिन्ह राजाबना
रखे उसकोअग्निमें तपाकेललाटके भौंकेबीचमेंलगादे कुछबेत
भीउसकोमारदे औरगधेपैचढाके नगरकेबीचमें बजारमेंजूतियां
भीलगतींजाय और[illegible]पायाकरै फिरउसके कुछधनदण्डले अथवा
थोडे दिन जहलखानेमेंरक्खे जहांसूखेचने पावभरतक खानेकोदे
औररातभर पिसवावै नपीसेतोवहांभी उसकोजूतेबैठें औरदिव-

समेंभीकठिनकाम उससे करावे जबतकवह निर्बलनहोजाय परन्तु ऐसाबहुतदिनरक्खे जिस्से कि मरनजायफिरउसको दोतीनदिनतक शिक्षाकरै कितुनभाई तैंनेमनुष्यहोके ऐसाबुराकामकिया कि तेरेऊपर ऐसादण्डहुआ हमकोभीतेरा दण्डदेखकेबड़ाहृदयमेंदुःखभया औरआपभलेआदमी होकेव्यवहारकरना फिरऐसाकाम कभीनकरनाचाहिये अच्छे२कामकरनाचाहिये जिस्से राजघरमें औरसभामेंतथाप्रजामेंतुमलोगोंको प्रतिष्ठाहोय और आपलोगोंके ऊपरऐसाकठिन जोदण्ड दियागया सोकेवलआपलोगोंकेऊपरनहीं किन्तुसबसंसारकेऊपर यहदण्डभयाहै जिस्से इसदण्डकोदेखवासुनके सबलोगभयकरैं औरफिर ऐसा काम कोईनकरै ऐसे शिक्षा जितनेबुरे कर्मकरनेवालेहैं उनको दण्डके पीछे अवश्यकरनीचाहिये क्योंकि दण्डजातोसदाउसकोस्मरणरहै और हठी वा विराधीनबनजाय इसवास्ते शिक्षा अवश्यकरनाचाहिये केवलशिक्षा वा केवलअत्यन्तदण्डमें दोनोंसुधरनहीं सक्ते किन्तु दोनोंसे मनुष्यसुधरसक्ते हैं फिरभीवहचोरीकरै तोउसकाहाथकाटडालनाचाहिये फिरभी वहनमानैतोउसको बुरीहवालसे मारडालना चाहिये किसीदिनउसकी आंखनिकालडालै किसीदिनकान किसीदिननाक औरसबजगह घुमानाचाहिये किजिसकोसबदेखैं फिरबहुतमनुष्योंके सामनेउसकोकुत्तेसेचिथवाडालें ऐसादण्ड एकपुरुषकोहोयतो उसके राजभरमें कोई चोरीकीइच्छाभीनकरेगा और राजाकोभी इनकेप्रबन्धमेंबड़ाआनन्दहोगा नहींतो बड़ेप्रबन्धमेंलगेरहतेहैं साधारण दण्डसे वेकभीसुधरेंगे नहीं डाकुओंकोभी चोरकोनाईदण्ड देनाचाहियेऔर जुआकरनेवालोंको एकबारकरनेसेही बुरीहवालसे जैसाकोचोरीकालिखा गधेपरचढानादिकसब करकेफिरकुत्ते सेचिथवाडालनाचाहिये क्योंकि रोगीपरस्त्रीगमन औरजितनेबुरेकर्महैं वजुआरीसे होतेहैं इस्से उनकेसहाय करनेवालेकोभी ऐसादण्ड देनाचा-

हिये क्योंकि जितने लड़ाई दंगा चोरी परस्त्रीगमनादिक इनसे हो उ-
त्पन्न होते हैं इससे इनके ऊपर राजा दण्ड देने में कुछ थोड़ा भी आल-
स्य न करै सदा तत्पर रहै महाभारत में एक दृष्टान्त लिखा है कि सो-
ने चांदी और अच्छे २ पदार्थ धरे रहैं उसको कोई न स्पर्श करै तब जा-
नना कि राजा है और धनाढ्य लोग जहां रुपैयों की दुकान का कि-
वाड़ कभी न हो लगावै और रात दिन कोई किसी का पदार्थ न उठावै
तब जानना कि राजा है धर्मात्मा इसवास्ते ऐसा उग्र दण्ड चाहिये कि
सब मनुष्य न्याय में चलैं अन्याय में कोई न हो जब स्त्री वा पुरुष व्यभिचार
करैं अर्थात पर पुरुष से स्त्री गमन करै परस्त्री से पुरुष जब उनका ठी-
क २ निश्चय हो जाय तब स्त्री के ललाट में अर्थात् भौं के बीच में पुरुष के
लिंगेन्द्रिय का चिन्ह लोहे का अग्नि में तपा के लगा दे तथा पुरुष के ल-
लाट में स्त्री के इन्द्रिय का चिन्ह लगा दे फिर जिसको सब देखा करैं फि-
र उनको भी खूब फजीहत करैं और कुछ धन दण्ड भी करैं पीछे उसी प्र-
कार से भिक्षा मांग करैं सब को फिर भी विन मानैं और ऐसा काम करैं त-
ब बहुत स्त्रियों के सामने उस स्त्री को कुत्तों से चिथवा डाल और पुरुष को
बहुत पुरुषों के सामने लोहे के तख्त को अग्नि में तपा के सुवा दे उसके
ऊपर फिर उसके ऊपर घुमावै उसी पर्यंक के ऊपर उसका मरण हो
जाय फिर कोई पुरुष व्यभिचार कभी न करेगा ऐसा दण्ड देख के वा सु-
न के और सर्कार कागद को बेचती है और बहुत सा कागजों पर धन
बढ़ा दिया है इससे गरीब लोगों को बहुत क्लेश पहुंचता है सो यह बात
राजा को करनी उचित नहीं क्योंकि इसके होने से बहुत गरीब लोग
दुःख पा के बैठे रहते हैं कचहरी में बिना धन से कुछ बात होती नहीं इ-
स से कागजों के ऊपर जो बहुत धन लगाना है सो मुझको अच्छा मालू-
म नहीं देता इसको छोड़ने से ही प्रजा में आनन्द होता है क्योंकि था-
ने से लेके आगे २ धन का ही खर्च देख पड़ता है न्याय होना तो पीछे फि-
र नाना प्रकार के लोग साक्षी झूंठ सब बना लेते हैं यहां तक कि सत्य
खाने को देदेओ और झूंठ गवाही हजार बना देवा देओ जो जैसा मनु

मेंदण्डलिखाहै वैसादण्डचलेतो खानेपीनेके वास्तेझूंठीसाक्षीदे-
नेको कोई तैयारनहींहोय अवाङ्नरकमभ्येति प्रेत्यस्वर्गाच्चहीय-
ते इसकायहअभिप्रायहै कि जबयहनिश्चयहोजायकिइसनेझूंठसा-
क्षीदिई तबउसकोजीभ कचहरीकेबीचमें काटलेवहीअवाक् नाम
जीभरहित होनरकभोगउस कोप्रत्यक्षहोय क्योंकिराजा प्रत्यक्ष-
न्यायकर्त्ताहै उसीवक्तउसकोप्रत्यक्ष हीफलहोनाचाहियेऔर जि-
तने अमात्यविचारपति राजघरमेंहोवेंउनके ऊपरभीकुछदण्डव्य-
वस्था रखनीचाहिये क्योंकिवेभीअत्यन्तसच झूंठकेविचारमें तत्पर
होके न्यायहीकरनेलगे देखनाचाहियेकि एककेयहांअर्जीपचदि-
याउसकेऊपर विचारपतिने विचारकरकेअपनीबुद्धि औरकानून
कीरीतिसे एककोजीतदिई और दूसरेकापराजय जिसकापराज-
यभयाउसनेउसकेऊपर जोहाकिमहोताहै उसके पासफिरअपी-
लकरी सोप्राय:जिसकाप्रथम विजयभयाथा उसकोदूसरेस्थानमें
पराजयहोताहै औरजिसका पराजयहोताहै उसकाविजय फिर
ऐसेही जबतकधननहींचुकता दोनोंका तबतकबिलायततकलडते
हीचलेजातेहैं प्राय:रईसलोग इसबातमें हठकेमारे बिगडजाते
हैं इसमें क्याचाहियेकि बिचारकरनेवालेके ऊपरभीदण्डकी व्यव-
स्थाहोनीचाहिये जिससे वे अत्यन्त बिचारकरकेन्यायहीकरैं ऐसा
आलस्यनकरैं किजैसाहमारीबुद्धिमें आया वैसाकरदिया तुमको
इच्छाहोयतो तुमजाओ अपीलकरदेओ ऐसीबातोंसेबिचारपति
भीआलस्यमेंआजातेहैं औरबिचारपतिको अत्यन्तपरीक्षा करनी
चाहिये किअधर्मसेडरतेहोंय औरविद्याबुद्धिमें युक्तहोय कामक्रो-
ध लोभ मोहभय शोकादिकदोषजिनमेंनहोय और अन्तर्यामीजो
सबका परमेश्वर उससे हीजिनकोभयहोय औरसेनहींसोपक्षपात
कभीनकरैं किसीप्रकारसे तबउसराजाकीप्रजाको सुखहोसक्ताहै
अन्यथानहीं और पुलिसका जोदरजाहै उसमें अत्यन्तभद्रपुरुषों
कोरखनाचाहिये क्योंकिप्रथमस्थानन्यायकायहीहैइससे ही आगे

प्राय: वादविवादके व्यवहार चलते हैं इस स्थानमें जो पक्षपातसे अ-
नर्थ लिखा पढ़ा जायगा सो आगेभी अन्यथा प्राय: लिखा पढ़ा जावेगा
और अन्यथा व्यवहारभी प्राय: होजायगा इससे पुलीसमें अत्यन्त श्रे-
ष्ठ पुरुषोंको रखना चाहिये अथवा पहिले जैसे चौकीदार महल्ले २
में एक २ रहता था उससे बहुधा अन्याय नहीं होता था जबसे पुलिस
का प्रबन्ध भया है तबसे बहुधा अन्यथा व्यवहार ही सुननेमें आता है
और गाय बैल भैंसो छेरी और भेंडी आदिक मारे जाते हैं इससे प्र-
जाको बहुत सा शाप प्राप्त होता है और अनेक पदार्थोंकी हानिभी होती
है क्योंकि एक गैया दस १० सेर दूध देती है कोई ८ सेर छ: ६ सेर पांच ५ से-
र और दो २ सेर तक उनके मध्य छ: ६ सेर नित्य दूध गिना जाय कोई
दस १० मासतक दूध देती है कोई छ: ६ मासतक उसका मध्यस्थ आ-
ठ मासतक गिना जाता है सो एक मास भरमें सवा चार मन दूध हो-
ता है उसमें चावल डालके चीनीभी डाल देंतो सै पुरुष तृप्त होसक्ते
हैं जो ऐसे होपोये तो ८० पुरुष तृप्त होजांयगे और ८०० वा ६४०
पुरुष तृप्त होसक्ते हैं कोई गाय १५ दफे बियाती है कोई दस दफे उस
का हम ने १२ बच्चा रख लिये सो ९६०० सै पुरुष तृप्त होसक्ते हैं फिर
उसके बछड़े और बछियां बढ़ेंगे उनसे बहुत बैल और गाय बढ़ेंगे ए-
क गायसे लाख मनुष्योंका पालन होसक्ता है उसको मारके मां-
ससे ८० पुरुष तृप्त होसक्ते हैं फिर दूध और पशुओंकी उत्पत्तिका मूल
ही नष्ट होजाता है जो बैल आर्यावर्त्त में पांच रुपैयोंसे आता था सो अब
३० से भी नहीं आता और कुछ गांव और नगरके पास पशुओंके चर-
नेके वास्ते उसकी सीमामें भूमि रखनी चाहिये जिसमें कि वे पशु चरें जै-
से दुग्धादिकसे मनुष्यके शरीरकी पुष्टि होती है वैसे सूखे अन्नादि-
कोंसे नहीं होती और बुद्धिभी नहीं बढ़ती इससे राजाको यह बात अव-
श्य करनी चाहिये कि जिन पशुओंसे मनुष्यके व्यवहार सिद्ध होते हैं
और उपकार होता है वे कभी न मारे जांय ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये
जिससे सब मनुष्योंको सुख होय वैसाही प्रजास्थ पुरुषोंको भी करना उ-

चितहै सोराजासेप्रजाजिस्से प्रसन्नरहे औरप्रजासेराजा प्रसन्न-
रहै यहीबातकरनी सबकोउचितहै देखनाचाहियेकि महाभार-
तमेंसगरराजाकी एककथालिखीहै उसकाएकपुत्र असमंजानाम
थाउसको अत्यन्त शिक्षाकिईगई परन्तु उसने अच्छाआचारवावि-
द्याग्रहणनहीं किई औरप्रमादमेंहीचित्तदेताथा सोउसकीयुवाव-
स्थाभीहोगई परन्तु उसकोशिक्षा कुछनलगी राजादिकश्रेष्ठपुरु-
षोंकोउसकेऊपर प्रसन्नतानहीभई फिरउसका विवाहभीकरादि-
याएकदिनसर्जूमें असमंजास्नानकेलिये गयाथा वहांप्रजाके बाल-
कआठ २ दश २ बरसके जलमें स्नानकरतेथे औरक्रीडाभीकरतेथे
सोउनमेंसेएक बालकबाहरनिकला उसकोपकडके असमंजानेग-
हिरेजलमें फेंकदिया सोबालकडूबनेलगा तबतककोईप्रजास्थपु-
रुषने बालककोपकडलिया उसकेशरीरमें जल प्रविष्टहोनेसे वह
मूर्छितहोगया उसकीदशादेखके असमंजाबहुत प्रसन्नभया औ-
रहसकेघरकोचलागया कोईबालकउसकेपिताके पासगया और
कहाकितुमारे बालककीयहदशाहै राजाकेपुत्रनें करदिई सुनके
उसकीमातापिता औरसब कुटुंबकेलोग दुःखीभये उसको देखके
फिरउसबालककी उठाके जहांसगरराजाकीसभालगीथी वहांको
चलेराजासभाकेबीचमें सिंहासनपैबैठेथेसोउनकोआतेदूरसेदेख
केझटउठकेउनकेपासचलेगयेऔरपूंछाकिइसबालककी क्याभया
तबउनकीमातारोंनेलगी राजानेदेखके बहुतउनकोधैर्यदियाकि
तुमरोओमत बातकहदेओकिक्याभयातबबालककापिताबोलाकि
हमारेबडेभाग्यहैंकिआपकेजैसेराजाहमलोगकेऊपरहैं दूरसेदेख
केप्रजाकेऊपरकृपाकरकेपूंछना औरदौडकेआनायहबडाप्रजाका
भाग्यहैइसप्रकारकाराजाहोना फिरराजानेपूंछाकितुमअपनीबा-
तकहो तबउसनेराजाकोकहाकोएकतोआपहैं औरएकआपकापु-
त्रहै जोकिअपनेहाथसेहीप्रजाकोमारनेलगा औरजैसाभयाथावै-
साबरण २ हालराजासेकहदियातबराजानेवैद्योंकोबोलाकेउसका

जलनिकलवाडाला औरऔषधोंसे उसीवक्तस्वस्थ बालकहोगया
फिरसभाकेबीचमेंबालकउसकोमातपिता औरजिसनेबालकनि-
कालाथावहभीवहांथाफिरराजानेसिपाहियोंकोआज्ञादिई कि अ-
समंजाकिसुसकेचढाकेलेआओ सिपाहीलोगगयेऔरवैसेहीउसको
बांधकेलेआयेअसमंजाकीस्त्रीभी संग२ चलीआईऔरसभामेंखडे-
करदियेराजानेपुत्रकीस्त्रीसे पूछाकितूइसकेसाथजानेमेंप्रसन्नहैवा-
नहीतबउसनेकहाकिअबजोदु:खवासुखहोसोहोयपरन्तुमेरेअभा-
ग्यसेऐसापतिमिलासोमैंसाथहीरहूंगीपृथकनहो तबराजानेअस-
मंजासेकहाकितेरा कुछभाग्यअच्छाथा कियहबालकमरानहीजो
यहमरजातातोतुझको बुरेहवालसेचोरकीनाईं मैंमारडालतापर-
न्तुतुझको मैंमरणतकवनवासदेताहूं सोतूकभीगांवमें वानगरमें
अथवा मनुष्योंकेपासखडारहा वा गयातोतुझको चोरकीनाईं
मारडालेंगे इसलिये तूऐसेवनमें जाकेरहकि जहांमनुष्य कादर्शनभीन
होय सिपाहियोंसे हुकुमदेदिया किजाओतुमघोरवनमेंइनदोनों
कोछोडआओ उसकोनवस्त्रदिये अच्छे२ नखानेदिये नधनदिये
किन्तुजैसेसभामेदोनोंखडेथे वैसेहीछोडआये फिरवेवनमेंरहे
और उनदोनोंसे वनमेंहीपुत्रभया उसकीस्त्रीअच्छीथीसोअपनेपा-
सहीबालककोरक्खा और शिक्षाभीकिई जबपांचवर्षकाभया तब
ऋषियोंकेपास पुत्रकोवहरखआई औरऋषियोंसेकहाकिम-
हाराज यहआपकाहीबालकहै जैसेयहअच्छाबने वैसाकीजियेतब
वऋषिलोग बहुतप्रसन्नहोके उसकोरक्खा किइसकोअच्छीप्रका-
रसेशिक्षाकिईजायगी क्योंकियहसगरकापौत्रहै फिरस्त्रीचलीगई
अपनेस्थानपर औरऋषिलोगोंने उसबालकके यथावत्संस्कारकि
येविद्यापढाई औरसबप्रकारकी शिक्षाभीकिई औरउसनेयथावत्
ग्रहणकिई जबवह ३६ बरसकाहोगया तबउसकोलेके सगरराजा
केपासऋषिलोगगये औरकहाकियह आपकापौत्रहै इसकीपरी-
क्षाकीजियेसोराजानेउसकी परीक्षाकिई औरप्रजास्थश्रेष्ठपुरु-

षोंनेभी सोसबगुणऔरविद्यामें योग्यहोहुआ। तबप्रजास्थपुरुषों-
नेंराजासेकहा कियमनंजा नजो आपकापौत्र सोराजाहोनेंकेंयो-
ग्यहै तबराजानेकहाकि सब बुद्धिमानप्रजास्थजोश्रेष्ठपुरुष उनको
प्रसन्नता औरसम्मतिहोयतो इसकाराज्याभिषेकहोजायफिरसब
श्रेष्ठलोगोंने सम्मतिदिईऔर उसकाराज्याभिषेकभीहोगया।क्योंं-
किसगरराजा अत्यन्तवृद्धहोगयथे राज्यकार्यमें बहुतपरिश्रमपड-
ताथा सोसबअधिकार उसकेऊपरदेदिये परन्तुअपनभी जितना
होसकाथा उतनाकर्त्तव्यं राजाऐसाहोहोनाचाहिये किएकभर्त्त
राजाथा जिसकेनामसे इसदेशकाभरतखण्डनामरक्खागया।हैउ-
सकेभीनवपुत्रथे सो २५ वर्षकेऊपरसब होगयेथेपरन्तुमूर्खऔरप्र-
मादीथे राजानेऔर प्रजास्थपुरुषोंने विचारकियाकि इनमेंसे एक
भीराजाहोनेके योग्यनहींसो भरतराजाने इश्तिहार करकेपुरुष-
औरस्त्रीलोगोंको बोलाया जोप्रतिष्ठितराजाऔरप्रजास्थथे सोंएक
मैदानमें समाजस्थानबनाया उसकेबीचमें एकमंचानभीगाडदि-
या साजबसबलोग एकट्ठिनइकट्ठे भये परन्तु किसीकोंविदितनभ-
याकिराजाक्याकरेगा औरक्याकहेगा फिरमंचानके ऊपरराजा
चढ़केसबसे कहाकिजिनराजा अथवाप्रजास्थ रहीसलोगोंका पुत्र
इसप्रकारकादुष्टहोय उसकाऐसाही दण्डदेना उचितहै जोकिइ-
सबक्षण अपनपुत्रोंकोदेंगे मासदा सबसज्जन लोगइस नीतिको
मानें औरकरैं फिर मंचानभेउतरे औरनवपुत्रभीबीचमेंखड़ेथे
सब समाजवालेदेखभीरहेथे औरउनकीमाताभी सोसबकेसाम-
नेखड्गहाथमेंलेके नवोंकासिरकाटके औरमंचानके ऊपरबांधदि-
ये फिरभीसबसेकहाकि जोकिसीकापुत्रऐसादुष्टहोय उसकोऐसा
होदण्डदेनाचाहिये क्योंकि जोहमइनका सिर नकाटते तोयेह-
मारपोछेआपसमें लड़ते राज्यकानाशकरतेऔरधर्मकीमर्यादा-
कोतोडडालते इससे राजपुत्र वाप्रजास्थजोश्रेष्ठ धनाढ्यलोग उन
कोऐसाहीकरना उचितहै अन्यथाराज्यधन औरधर्मसबनष्टहो-

जांयगे इसमें कुछसन्देह नहीं देखनाचाहिये किआर्यावर्त्त देशमें
ऐसे २ राजाऔर प्रजास्थश्रेष्ठपुरुषहोतेथे सोइसवक्त आर्यावर्त्त
देशमें ऐसेभ्रष्टाचारहोगयेहैं कोजिनको संख्याभीनहीं होसक्तीऐ-
सासर्वत्र भूगोलमें देशकोईनहीं ऐसाश्रेष्ठआचारभीकिसीदेशमें
नहोथा परन्तु इसवक्त पाषाणादिक मूर्तिपूजनादिक पाखण्डोंसे
चक्रांकितादिक संप्रदायोंके वादविवादोंसे भागवतादिक ग्रन्थोंके
प्रचारसे ब्रह्मचर्याश्रम औरविद्याके छोडनेसेऐसादेशबिगडाहैकि
भूगोलमें किसीदेशकीनहीं जैसीकिदुर्दशा महाभारतकेयुद्धकेपी-
छेआर्यावर्त्तदेशकीभईहै सोआजकालअंगरेजकेराज्यमेंकुछ २ सु-
खआर्यावर्त्त देशमेंभयाहै जोइसवक्तवेदादिक पढनेलगें ब्रह्मचर्या-
श्रमआश्रम चालीसवर्षतककरें कन्याऔर बालकसबश्रेष्ठशिक्षा
औरविद्यावालेहोवैं इनमत मतान्तरोंके वादविवाद आग्रहोंको
छोडैंसत्यधर्म औरपरमेश्वरकी उपासनामें तत्परहोवैं तोइसदेश
कीउन्नति औरसुखहोसक्ताहै अन्यथानहीं क्योंकिबिनाश्रेष्ठव्यव
हारविद्यादिकगुणोंसे सुखनहींहोता आजकालजोकोई राजा ज
मींदार वाधनाढ्यहोताहै उनकेपास मतमतान्तरके पुरुष और
खुशामदीलोग बहुतरहतेहैंवबुद्धिधनऔरधर्मनष्टकरदेतेहैंइससे
सज्जनलोग इनबातोंको विचारकेसमझलें और करनेकेव्यवहा-
रोंकोकरैं अन्यथानहीं।एकब्रह्मसमाज मतचलाहै वेऐसामानते
हैं नित्यपरमेश्वर सृष्टिकर्त्ताहै अर्थात् जीवादिकनये २ नित्यउत्प
न्नकर्त्ताहै जीवपदार्थऐसाहै किजड औरचेतनमिलाभया उसका
ईश्वरकर्त्ताहै जबवह शरीर धारणकर्त्ताहै तबजडांशसे शरीरबन
ताहै और चेतनांशजोहै सोआत्मारहताहैजबशरीरछूटताहैतब
केवलचेतन औरमनआदिक पदार्थरहतेहैं फिरजन्मदूसरा नहीं
होता किन्तुपापोंकाभोग पश्चात्तापसेकरलेताहै ऐसेहीक्रमसे अ-
नन्तउन्नतिकोप्राप्तहोताहै यहबातउनकीयुक्ति औरविचारसेवि-
रुद्धहै क्योंकिजोनित्य २ नईसृष्टि ईश्वरकर्त्ताहो तो सूर्य चन्द्रपृथिव्या-

दिकपदार्थोंकोभी सृष्टिनई२ देखनेमेंआतीजैसे पृथिव्यादिककीसृ-
ष्टिनई २ देखनेमें नहीआती ऐसेजीवको सृष्टीभोईश्वरने एकावे
रकिईहै सोकेवल कल्पनामाचसे ऐसाकथनवेलोगकरतेहैं किन्तु
सिद्धान्तबातयहनहीहै इससे ईश्वरमें नित्यउत्पत्तिका विश्वेपदोष
आवेगा औरसर्वशक्तिमत्वादिकगुणभीईश्वरमेंनहीरहेंगे क्योंकि
जैसेजीव क्रमसेशिल्पविद्यासे पदार्थोंकोरचनाकर्त्ताहै वैसाईश्वर
भोहोजायगा इससे यहबात सज्जनोंकेमाननेके योग्य नहीं और
एकजन्मवादजोहै सोभी विचारविरुद्धहै क्योंकि अनेकजन्महोतेहैं
सोप्रथमपूर्वार्द्धमेंविचारकियाहैवहोदेखलेना औरपश्चात्तापसेपा-
पोंकोनिवृत्तिमानना यहभोयुक्तिविरुद्धहै सोप्रथम लिखदियाहैकि
पश्चात्तापजो होताहैसो कियेभयेपापोंका निवर्त्तक नहीहोताकि-
न्तुआगेकर्त्तव्य पापोंकानिवर्त्तकहोताहै विनाशरीरसेपापपुण्योंं
काफलभोग कभीनहीहोसक्ता औरविना शरीरके जीवरहताही
नहीं जोमनमेंपश्चात्तापसे पापोंकाफल जीवभोक्ता तोजिस २ दे
श कालऔर जिनजीवोंकेसाथ पापऔरपुण्यकियेथे उनकाभीम
नमेंस्मरणहोता औरजोस्मरणहोतातो फिरभीजीव मोक्षकेहो
नेसेवहीं अपनेपुत्र स्त्रियादिकसंबन्धियों के पासआजाता सोकोई
आतानहीं इससे यहबातभी उनकोप्रमाणविरुद्धहै और वर्णाश्रम
कोजोसत्यव्यवस्था शास्त्रकोरीतिसे उसकाछेदनकरताहै सोसवम
नुष्योंके अनुपकारकाकर्महै यहदशमसमुल्लासमें विस्तारसेलिख
दियाहै वहांदेखलेना यज्ञोपवीत केवलविद्यादिक गुणोंका और
अधिकार काचिन्हहै उसकातोडनासाहससे इससेभी अत्यन्तमनु
ष्योंका उपकारनहीहोता किन्तु विद्यादिक गुणोंसेवर्णाश्रम का
स्थापनकरना शास्त्रकीरीतिसे इससेजोमनुष्योंका उपकारहोसक्ता
है संसाराचारकी रीतिसे नहीं वेब्राह्मणादिकवर्णवाचकशब्द
हैंउनकोजातिवाचि ब्राह्मलोगजानके निषेधकरतेहैं सोकेवल उन
कोभ्रमहै किन्तुशास्त्रकीरीतिसे मनुष्यादिक जातिवाचकशब्द हैं

सोमनुष्यपशुहस्त्यादिककी एकताकोई नहीकरसक्ता सोईमनुष्या-
दिकशब्दजातिवाचकशास्त्रमेंलिखेहैं सोसत्यहीहैऔरखानपीन मे
धर्मकिसीका बढतानही औरनकिसीकाघटता इसमेंभीअत्यन्तजो
आग्रहकरनाकिसबके साथखानाअथवाकिसीके साथनहीखानाव
हीधर्ममानलेनायहभी अनुचितबातहै किन्तु नष्टभ्रष्टसंस्कार ही
नपदार्थोंकखाने औरपीनेसे मनुष्यकाअनुपकार होताहै अन्यच
नहीऔरवार्षिकउत्सवादिकोंमेमलाकरनाइसमेंभी हमकोअत्यन्त
श्रेष्ठगुणमालूमनहीदेता क्योंकिइसमें मनुष्यकी बुद्धिबहिर्मुखहो
जातीहै औरधनभीअत्यन्तखर्चहोताहै केवलअंगरेजीपढने मेसं-
तोषकरलेनायहभी अच्छीबातउनकीनहीहै किन्तु सबप्रकारकीपु
स्तकपढनाचाहिये परन्तुजबतकवेदादिक सनातन सत्यसंस्कृतपु-
स्तकोंकोंनपढेंगे तबतकपरमेश्वरधर्म अधर्मकर्त्तव्य औरअकर्त्त-
व्यविषयोंको यथावत् नहीजानेंगेइससे सबपुरुषार्थसेइन वेदादि-
कोंकोपढनाऔरपढानाचाहिये इससेसबविघ्ननष्टहोजायंगेअन्यथा
नहीऔर हमकोऐसा मालूमदेताहैकि थोडेहीदिनोंमे ब्राह्मस-
माजकेदोतीनभेदचलगयेहैं औरउनकाचित्तभी परस्परप्रसन्नन-
हीहै किन्तु ईर्ष्याहीएकसे दूसरेकीहोतीहै सोजैसेवैराग्यादिकों-
मेंअनेकभेदोंकेहोनेसे अनेकप्रमादऔरविरुद्ध व्यवहारहोगयेहैंऐ-
साउनकाभी कुछकालमेंहोजायगा क्योंकिविरोधसेही विरुद्धव्यव-
हारमनुष्योंकेहोतेहैं अन्यथानहीसोवेदादिक सत्यशास्त्रोंको ऋ-
षिमुनियोंकेव्याख्यान सनातनरीतिसे अर्थसहितपढेंतोअत्यन्तउ-
पकारहोजाय अन्यथानहीतो आगे २ व्यवहारहोजायगा ईसा
मूसामहम्मदनानक चैतन्यप्रभृतियोंकोही साधुमानना औरजै-
गीषव्यपंचशिखा आसुरिऋषिऔर मुनियोंकोनही गिननायह
भीउनकोभूलहै अन्यबातजेपरमेश्वरकी उपासनादिक वेसबउन-
कीअच्छीहैं इसके आगे जैनमतके विषय मेंलिखा जायगा ॥

इतिश्री मद्दयानन्द सरस्वतिस्वामि कृते स

त्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते एकादशः समुल्लासः संपूर्णः ॥ ११ ॥

अथ जैनमतविषयाव्याख्यास्यामः॥ सब संप्रदायोंसे जैनकामत प्रथम चलाहै उसकोसाढेतीन हजार वर्ष अनुमानसे भयेहैं सो उनके २४ तिर्थङ्कर अर्थात् आचार्य भयेहैं जैनेन्द्र पार्श्वनाथ ऋषभदेव गौतम और बौधादिक उनके नामहैं उन्ने अहिंसाधर्मपरममानाहै इसविषयमें वेऐसा कहतेहैं कि एक बिन्दु जलमें अथवा एक अन्नके कणमें असंख्यातजीवहैं उनजीवोंके पांख आजायतो एक बिन्दु और एक कणके जीव ब्रह्माण्डमें नसमावें इतनेहैं इससे मुखके ऊपर कपड़ा बांध रखतेहैं जलकोबहुत छानतेहैं और सब पदार्थोंको शुद्धरखतेहैं और ईश्वरकोनहीमानते ऐसा कहतेहैं कि जगत् स्वभावसे सनातनहै इसका कर्त्ता कोई नहीं जब जीव कर्मबन्धनसे छूटजाताहै और सिद्धहोताहै तब उसकानाम केवली रखतेहैं और उसीको ईश्वर मानतेहैं अनादि ईश्वर कोई नहीहै किन्तु तपोबलसे जीव ईश्वररूपहोजाताहै जगत्का कर्त्ता कोई नही/जगत् अनादिहै जैसे घास वृक्ष पाषाणादिक पर्वत वनादिकोंमें आपसे आपही होजातेहैं ऐसे पृथिव्यादिक भूतभी आपसे आप बनजातेहैं/परमाणुका नाम पुद्गल रक्खाहै सो पृथिव्यादिकोंको पुद्गल मानतेहैं जब प्रलय होताहै तब पुद्गल जुदे २ होजातेहैं और जब वे मिलतेहैं तब पृथिव्यादिक स्थूलभूतबन जातेहैं। और जीव कर्मयोगसे अपना २ शरीरधारणकरलेतेहैं जैसा जोकर्म करताहै उसको वैसा फलमिलताहै। आकाशमें चौदहराज्य मानतेहैं उनके ऊपर शीपद्मशिला उसको मोक्ष स्थान मानतेहैं जब शुभकर्म जीव कर्ताहै तब उनकर्मोंके वेगसे चौदह राज्योंको उल्लंघन करके पद्मशिलाके ऊपर विराजमान होतेहैं चराचरको अपनी ज्ञानदृष्टिसे देखतेहैं फिर संसार दुःख जन्ममरणमें नहीआते वहीआनन्द करतेहैं ऐसी मुक्ति जैनलोग मानतेहैं। और ऐसाभीकहतेहैं कि धर्म जो है सो जैनकाहीहै और

सबहिंसकहैं तथा अधर्मी क्योंकि जो हिंसाकरतेहैं वेधर्मात्मा नहीं
जो यज्ञमेंपशुमारतेहैं और ऐसे २ बातेंकहतेहैं कियज्ञमें जोपशु
माराजाताहै सोस्वर्गको जाताहोय तो अपनापुत्रवा पिता को
नमारडालें स्वर्गको जानेकेवास्ते ऐसे २ श्लोकउनने बनारक्खे हैं।
(त्रयोवेदस्य कर्त्तारो धूर्त्तभण्ड निशाचराः) इसकायह अभिप्रायहै
किईश्वर विषयकि जितनी बातवेदमेंहैं वहधूर्त्तोंकीबनाईहै जित-
नीफलस्तुति अर्थात् इसयज्ञकोकरैंतो स्वर्गमेंजाय यह बातभा-
ण्डोंनेबनारक्खीहै औरजितना मांसभक्षण पशुमारनेकाविधि-
हैवेदमें सोराक्षसोंबनानयाहै क्योंकि मांसभोजनराक्षसोंकोबड़ा
प्रियहै सबबातअपने खानेपीनेऔरजीविका केवास्तेलोगोंनेबना-
ईहै औरजैनमतहै सोसनातनहै औरयहीधर्महै इसकेविनाकि
सीकोमुक्ति वासुखकभीनहींहोसक्ता ऐसी २ वेबातेंकहतेहैं (उत्तर)
ऐसेपूछनाचाहिये किहिंसातुमलोग किसको कहतेहो जोवेकहैंकि
किसीजीवकोपीडादेना, सोतोबिनापीडाके किसीप्राणिका कुछव्य
वहारसिद्धनहींहोता क्योंकिआपलोगोंकेमतमेंहीलिखाहै किए-
कबिन्दुमेंअसंख्यात जीवहैं उसकोलाखवक्तछानै तोभीवेजीवपृथ-
कनहींहोसक्ते फिरजलपान अवश्यकियाजाताहै तथा भोजनादि-
कव्यवहार औरनेत्रादिकोंकी चेष्टाअवश्यकिईजातीहै फिरतुम्हा-
राअहिंसाधर्मतोनहीबना (प्रश्न) जितनेजीव बचायेजातेहैं उतनेब-
चातेहैं जिसकोहमलोग देखतेहीनहीं उनकोपीड़ामें हमलोगों
कोअपराधनहीं (उत्तर) ऐसाव्यवहार सबमनुष्योंकाहै जेमांसाहा-
रीहैंवेभीअश्वादिक पशुओंकोबचालेतेहैं वैसेतुमलोगभी जिनजी-
वोंसेकुछव्यवहारका प्रयोजननहींहै जहांअपनाप्रयोजनहैवहांम-
नुष्यादिकोंको नहीबचातेहो फिर तुमारो अहिंसानहीरही (प्रश्न)
मनुष्यादिकोंकोज्ञानहै ज्ञानसेवेअपराधकर्त्ते हैं इससेउनकोपीड़ा
देनेमेंकुछअपराधनहीं वेपश्वादिकजीव बिनाअपराधहैंउनकोपी-
ड़ादेनाउचितनहीं (उत्तर) यहबात तुमलोगोंकोविरुद्धहै क्योंकिज्ञा-

नवालोंको पीडा देना और ज्ञानहीन पशुओंको पीडा न देना यह ज्ञा-
नविचारशून्य पुरुषोंको है क्योंकि जितने प्राणी देहधारी हैं उनमेंसे
मनुष्य अत्यन्त श्रेष्ठ है सो मनुष्योंका उपकार करना और पीडाका
न करना सबको आवश्यक है हिंसा नाम वैरकाहै सो योगशास्त्र व्या
सजीके भाष्यमें लिखा है (सर्वथा सर्वदा सर्वभूतेष्वनभिद्रोहः अहिं-
सा) यह अहिंसाधर्म का लक्षण है इसका यह अभिप्राय है कि सब प्र-
कारसे सब कालमें सब भूतोंमें अनभिद्रोह अर्थात् वैरका जो त्याग
सो कहाता है अहिंसा सो आपलोग अपने संप्रदायमें तो प्रीति करते
हो और अन्यसंप्रदायोंमें द्वेष तथा वेदादिक सत्यशास्त्र तथा ईश्वर
पर्यन्त आपलोगोंको वैर और द्वेष है फिर अहिंसाधर्म आपलोगों
का कहनेमात्र है अपने संप्रदायोंके पुस्तक तथा बात भी अन्यपुरुषोंके
पास प्रकाशित नहीं करते हो यह भी आपलोगोंमें हिंसा सिद्ध है ईश्वर
को आपलोग नहीं मानते हैं यह आपलोगोंकी बडी भूल है और स्व
भावसे जगत्की उत्पत्तिका मानना यह भी तुम लोगोंको झूंठ बात है इ-
सका उत्तर ईश्वर और जगत्की उत्पत्तिके विषयमें देखलेना प्रथम
जीवका होना और साधनोंका करना पश्चात् वह सिद्ध होगा जब जी-
वादिक जगत् विना कर्त्ताके उत्पन्न होने नहीं होता और प्रत्यक्ष जगत्में
नियमोंके जगत्में देखनेसे सनातन जगत्का नियन्ता ईश्वर अवश्य
है फिर उसको ईश्वर न हो मानना और साधनोंसे सिद्ध जो भया उ-
सीको ही ईश्वर मानना यह बात आपलोगोंको नष्ट भ्रष्ट है आपसे जो
पत्नी विशरीर धारण करलेते हैं तो शरीर धारणमें जीव स्वतन्त्र रह-
ते फिर छोड क्यों देते हैं क्योंकि स्वाधीनतासे शरीर धारण करलेते
हैं फिर कभी उस शरीरको जीव छोडगा ही नहीं जो आप कहें कि क-
र्मोंके प्रभावसे शरीरका होना और छोडना भी होता है तो पापोंके
फल जीव कभी नहीं ग्रहण कर्त्ता क्योंकि दुःखकी इच्छा किसीको नहीं
होती सदा सुखकी इच्छा होरहती है जब सनातन न्यायकारी ईश्वर
कर्मफलकी व्यवस्थाका करनेवाला न होगा तो यह बात कभी न बनेगी

आकाशमें चौदहराज्य तथा पद्मशिलामुक्तिकास्थानमानना यह
बातप्रमाण और युक्तिसेविरुद्धहै केवलकपोलकल्पनामात्रहै और
उसके ऊपरबैठकेचराचर कादेखना औरकर्मबंधसेवहांचलाजा
नायहभीबात आपलोगोंकीअसत्यहै(यज्ञोंकेविषयोंमें आपकुतर्क
करतेहैं सोपदार्थविद्याकेनहोनेसे क्योंकिघृतदूध औरमांसादि
कोंकेयथावत् गुणजानते और यज्ञकाउपकारकि पशुओंकोमार-
नेमेंथोड़ासादुःखहोताहै परन्तुयज्ञमें चराचरकाअत्यन्त उपका-
रहोताहै।इनको जोजानते तोकभीयज्ञविषयमें तर्ककरते। वेदोंका
यथावतअर्थकेनहीं जाननेसेऐसीबात तुमलोगकहतेहो। किधूर्त
भाण्डऔर निशाचरोंनेलिखाहै यहबातकेवल अपनेअज्ञानऔ-
रसंप्रदायोंके दुराग्रहसेकहतेहो। और वेदजोहै सोसबकेवास्तेहित-
कारीहै किसीसंप्रदायकाग्रन्थ वेदनहीहै किन्तु केवलपदार्थविद्या
और सबमनुष्योंके हितकेवास्ते वेदपुस्तकहै पक्षपातउसमेंकुछन-
हीं इनबातोंकोजानतेतो वेदोंकात्याग और खण्डनकभीनकरते
सोवेदविषयमें सबलिखदियाहै वहींदेखलेना और(यज्ञमेंपशुको
मारनेसे स्वर्गमेंजाताहै यहबातकिसीमूर्खके मुखसेसुनलिईहोगी
ऐसीबात वेदमेंकहींनहींलिखी।जीवोंकेविषयमें वेऐसाकहतेहैंकि
जीवजितने शरीरधारीहैं उनकेपांचभेदहैं एकइन्द्रिय द्वीन्द्रियत्री-
न्द्रिय चतुरिन्द्रिय औरपंचेन्द्रिय जडमेंएक इन्द्रियमानतेहैं अर्थात्
वृक्षादिकोंमें सोयहबात जैनोंकीविचारशून्यहै क्योंकिइन्द्रिय सू-
क्ष्मकेहोनेसे कभीनहीं देखपड़ती परन्तुइन्द्रियका कामदेखनेसेअ-
नुमानहोताहै किइन्द्रियअवश्यहै सोजितनेवृक्षादिकोंकेबीजहैंउ-
नकोपृथिवीमें जबबोतेहैं तब अङ्कुरऊपरआताहै औरमूल नीचे
जाताहै जोनेत्रेन्द्रिय उनकीनहोतीतो ऊपरनीचेको कैसेदेखता
इसकाममें निश्चितजानाजाताहै किनेत्रेन्द्रियजड़वृक्षादिकोंमेंभी
है तथाबहुतलताहोतीहै सोवृक्षऔर भित्तीके ऊपर चढ़जातीहै
जोनेत्रेन्द्रियनहोती तोउसकोकैसेदेखता तथास्पर्शेन्द्रियतो वेभी

मानते हैं जो भइन्द्रिय भी इच्छादिकों में हैं क्योंकि मधुर जल में बागादिकों में जितने इच्छ होते हैं उनमें खारा जल देने से सूख जाते हैं जो मइन्द्रिय न होता तो स्वाद खारे वा मीठे का कैसे जानते तथा श्रोत्रेन्द्रिय भी इच्छादिकों में है क्योंकि जैसे कोई मनुष्य सोता होय उसको अत्यन्त शब्द करने से सुनता है तथा तोप आदिक शब्द से भी इच्छों में कम्प होता है जो श्रोत्रेन्द्रिय न होता तो कम्प क्यों होता क्योंकि अकस्मात् भयङ्कर शब्द के सुनने से मनुष्य पशु पक्षी अधिक कम्प जाते हैं वैसे इच्छादिक भी कम्प जाते हैं जो ऐसा कहें कि वायु के कम्प से इच्छ में चेष्टा होजाती है अच्छा तो मनुष्यादिकों को भी वायु की चेष्टा से शब्द सुन पड़ता है इससे इच्छादिकों में भी श्रोत्रेन्द्रिय है तथा नासिका इन्द्रिय भी है क्योंकि इच्छों को रोग धूप के देने से छूट जाता है जो नासिकेन्द्रिय न होता तो गन्ध का ग्रहण कैसे करता इससे नासिका इन्द्रिय भी इच्छादिकों में है तथा त्वक् इन्द्रिय भी है क्योंकि कुमोदिनि कमल लज्जावती अर्थात् छुई मुई आषधि और सूर्य मुखी आदिक पुष्पों में और शीत तथा उष्ण इच्छादिकों में भी जान पड़ते हैं क्योंकि शीत तथा अत्यन्त उष्णता से इच्छादिक कुमला जाते हैं और सूख भी जाते हैं इससे त्वक् इन्द्रियों का कर्म देखने से त्वक् इन्द्रिय इच्छादिकों में अवश्य मानना चाहिये (यह जैन सम्प्रदाय वालों को स्थूल गोलक इन्द्रियों के नहीं देखने से भ्रम है) सो इस जैन लोग इन्द्रियों को नहीं जान सके पर कार्य द्वारा सब बुद्धिमान लोग इच्छादिकों में भी इन्द्रिय जानते हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं और जहां जीव होगा वहां इन्द्रिय अवश्य होंगी क्योंकि इन सब क्रियों का जो सम्बात इसी को जीव कहते हैं जहां जीव होगा वहां इन्द्रियां अवश्य होंगी (जैनों का ऐसा भी कहना है कि तालाब नाला कुआं न खोदना न बनाना क्योंकि उनमें बहुत जीव मरते हैं जैसे तालाब के रचने से भी सो उसमें बैठेगा उसके ऊपर मेघा बैठेगा उसको कौआ ले जायगा और मार भी डालेगा उसका पाप तालाब बनाने वाले को होगा क्योंकि वह तालाब न बनाता तो यह हत्या न होती इसमें उन्हें कुछ

नहींसमझा क्योंकिजमतालावकेजलसे असंख्यातजीवसुखी होंगे उसकापुण्य कहांजायगा सोपापके वास्तेतालावकोई नहींबनाता किन्तु जीवोंकेसुखके वास्तेबनातेहैं इससे पाप नहींहोसक्ता परन्तु जिस देशमेंजल नहींमिलताहोय उसदेशमें बनानेसे पुण्यहोता-है जिसदेशमें बहुत जल मिलताहोवै उसदेशमें तड़ागादिकोंका बनानाव्यर्थहै और येबड़े २ मंदिरऔरबड़े २ घरबनातेहैं उनमें क्याजीवनहींमरतेहोंगे सोलाखहांरुपैये मन्दिरादिकोंमें मिथ्या लगादेतेहैं जिनसेकुछसंसारका उपकारनहींहोता और जोउप-कारकोबातहै उसमेंदोषलगातेहैं फिरकहतेहैं किजैनकाधर्मश्रे-ष्ठहै औरइसकेबिनामुक्तिभी किसीकोनहींहोती सोयहबातउन-कीमिथ्याहै क्योंकिकर्मोंबात औरऐसेकर्मोंसेमुक्तिकभीनहींहोस-क्ती मुक्तितो मुक्तिकेकर्मोंसेसर्वत्रहोतीहै अन्यथानहीं जितनामूर्ति पूजनचलाहै सोजैनोंसेहीचलाहै यहभीअनुपकार काकर्महै इससे कुछउपकारनहीं संसारमेंबिनाअनुपकारके सोजैनोंको बड़ाभा रीआग्रहहै जोकोईकुछपुण्य कियाचाहताहै धनाढ्य सोमन्दिर-हीबनादेताहै औरप्रकारका दानपुण्यनहींकर्त्ते हैं उनने जैनगा-यत्रीभी एकबनालिईहै औरएकयतीहोतेहैं उनकोश्वेताम्बर कह-तेहैं दूसराहोताहै दिगम्बर जिसकोमुनिऔर स्रावककहतेहैं उ-नमेंसेढूंढिये लोगमूर्तिपूजन कोनहींमानते औरलोग मानतेहैं उनमें एकश्रीपूज्यहोताहै उसका ऐसा नियमहोताहै किइतना धन जबसेवकलोगदें तबउसकेघरमेंजाय और मुनिदिगम्बरहोते हैं वेभी उनकेघरमें जबजातेहैं तबआगे २थानबिछातेचलेजाते-हैं औरउनकेमतमें नहोय वहश्रेष्ठभीहोयतो भीउसकोमिक्षा अ-र्थात् जलतकभीनहींदेते यहउनका पक्षपातसेअनर्थहै किन्तु जो श्रेष्ठहोय उसकीसेवा करनीचाहिये दुष्टकीकभीनहीं यहसबम-नुष्योंकेवास्ते उचितहै जोढूंढियेहोतेहैं उसकेकेशमें जूआंपड़जां-यतो भीनहींनिकालते औरइनकामत नहींमनवाते किन्तुउनका

साधु जब आता है तब जैनी लोग उसकी दाढ़ी मूंछ और सिर के बा-
ल सब नोंच लेते हैं जो उस वक्त वह शरीर कम्पावै अथवा नेत्र से जल
गिरावै तब सब कहते हैं कि यह साधु नहीं भया है क्योंकि इसको श-
रीर के ऊपर मोह है विचार करना चाहिये कि ऐसी २ पीडा और
साधुओं को दुःख देना और उनके हृदय में दया का लेश भी न होआ-
ना यह उनकी बात बहुत मिथ्या है क्योंकि बालों के नोंचने में कुछ
नहीं होता जब तक काम क्रोध लोभ मोह भय शोकादिक दोष हृद-
य से नहीं नोंचे जांयगे यह ऊपर का सब ढोंग है उनमें जितने आ-
चार्य भये हैं उनके बनाये ग्रन्थों को वेद मानते हैं सो अठारह ग्रन्थ वे-
हैं तथा महाभारत रामायण पुराण स्मृतियां भी उन लोगों ने अ-
पने मत के अनुकूल ग्रन्थ बना लिये हैं अन्य भगवती गोता स्नानचरि-
त्रादिक भी ग्रन्थ नाना प्रकार के बना लिये हैं बहुत संस्कृत में ग्रन्थ हैं
और बहुत प्राकृत भाषा में रच लिये हैं उनमें अपने संप्रदाय की पुष्टि
और अन्य संप्रदायों का खण्डन कपोलकल्पना से अनेक प्रकार लि-
खा है जैसे कि जैन मार्ग सनातन है प्रथम सब संसार जैनमा
र्ग में था परन्तु कुछ दिनों से जैनमार्ग को छोड़ दिया है लोगों ने सो ब
ड़ा अन्याय है क्योंकि जैनमार्ग छोड़ना किसी को उचित नहीं ऐसी २
कथा अपने ग्रन्थों में जैनों ने लिखी हैं सो सब संप्रदायवाले अपनी २
कथा ऐसी ही लिखते हैं और कहते हैं इसमें प्रायः अपने मतलब के
लिये बातें मिथ्या २ बना लिई हैं। यावज्जीवं सुखं जीवेन्नास्ति मृत्यो
रगोचरः। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः॥ यावज्जीवेत्सु-
खं जीवेद् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्॥ अग्निहोत्रं त्रयो वेदा त्रिदण्डं भस्मगु-
ण्ठनम्॥ बुद्धिपौरुषहीनानां जीविकेति बृहस्पतिः॥ अग्निरुष्णो ज
लं शीतं शीतस्पर्शस्तथानिलः॥ केनेदं चित्रितं तस्मात् स्वभावात्तद्व्य
वस्थितिः॥ न स्वर्गो नापवर्गो वा नैवात्मा पारलौकिकः। नैव वर्णाश्र
मादीनां क्रियाश्च फलदायकाः॥ अग्निहोत्रं त्रयो वेदा त्रिदण्डं भ-
स्मगुण्ठनम्॥ बुद्धिपौरुषहीनानां जीविका धातृनिर्मिता॥ पशु श्च

निहत:स्वर्गं ज्योतिष्टोमेगमिष्यति ॥ स्वपितायजमानेन तचक-स्मान्नहिंस्यते ।। मृतानामपिजंतूनां श्राद्धं चेत्तृप्तिकारणम्॥ गच्छतामिहजंतूनां व्यर्थंपाथेयकल्पनम्।। स्वर्गस्थितायदातृप्तिं गच्छेयुस्तत्रदानत: ॥ प्रासादस्योपरिस्थाना मचकस्मान्नदीयते।। यदि-गच्छत्परंलोकं देहादेषविनिर्गत:॥ कस्माद्भूयोनचायाति बन्धुस्ने-हसमाकुल:॥ ततश्चजीवनोपायो ब्राह्मणैर्विहितस्त्विह ॥ मृतानांप्रेतकार्याणि नत्वन्यद्विद्यतेक्वचित्।। त्रयोवेदस्यकर्तारो भण्डधूर्त्त-निशाचरा: ॥ जर्फरीतुर्फरीत्यादि पंडितानां वच:स्मृतम्।। अश्व-स्यात्रहिशिश्नन्तु पत्नीग्राह्यंप्रकीर्त्तितम् ॥ भण्डैस्तद्वत्परंचैव ग्रा-ह्यजातिंप्रकीर्त्तितम् । मांसानांखादनंतद्वन्निशाचरसमीरितम्। इत्यादिकश्लोक जैनीनवनारक्खे हैं और अर्थ तथा काम दोनोंप-दार्थमानतेहैं लोकसिद्ध जोराजासोईपरमेश्वर औरईश्वरनहींपृ-थिवी जल अग्नि वायु इन केसंयोगसे चेतनउत्पन्नहोके इनमेंलो नहोजाता है और चेतनपृथकपदार्थनहो ऐसे २ प्राकृतदृष्टान्तदे-केनिर्बुद्धि पुरुषोंकोबहकादेतेहैं जोचारभूतोंकेयोगसे चेतनउत्प-न्नहोता तो अबभीकोई चारभूतोंकोमिलाके चेतनदेखलादे सो कभीनहीदेखपडेगा इनस्वभावसे जगतकोउत्पत्तिआदिकका उ-त्तर ईश्वर और सृष्टिकेविषयमें लिखदियाहै वहींदेखलेना। भूत-भ्योमूर्त्युपादानवत्तदुपादानम् इत्यादिक गोतममुनिजीके कियसू-त्र नास्तिकोंकेमतदेखाने केवास्तेलिखेजातेहैं औरउनकाखण्ड-नभी सोजानलेना जैसेपृथिव्यादिक भूतोंसेबालु पाषाण गेरूअ-ञ्जनादिक स्वभावसेकर्त्ताकेबिना उत्पन्नहोतेहैं वैसेमनुष्यादिक-भीस्वभावसे उत्पन्नहोतेहैं नपूर्वापरजन्म नकर्म औरनउनकेसं-स्कार किन्तु जैसे जलमेंफेन तरंग और बुद्बुदादिक अपने आपसे उत्पन्नहोतेहैं वैसेभूतोंसे शरीरभीउत्पन्नहोताहै उसमें जीवभी स्वभावसेउत्पन्नहोताहै उत्तर नसाध्यसमत्वात् २ गो० जैसेशरीरकीउत्पत्ति कर्मसंस्कारकेबिना सिद्धमानतेहो वैसेबालकादिक

को उत्पत्ति हि कुकरी वालुकादिकोंके पृथिव्यादिकप्रत्यक्ष निमित्त और कारणहै वैसे पृथिव्यादिक स्थूलभूतोंका कारणभी सूक्ष्ममानना होगा ऐसे अनवस्था दोषभी आजायगा और साध्यसमहेत्वाभासके नाई यह कथन होगा और इससे देहोत्पत्तिमें निमित्तान्तर अवश्य तुमको मानना चाहिये नोत्पत्तिनिमित्तत्वान्माता पित्रोः ३ गो० यह नास्तिकका अपने पक्षका समाधान है कि शरीरकी उत्पत्तिका निमित्त माता और पिता हैं जिनसे कि शरीर उत्पन्न होता है और बालुकादिक निर्बीज उत्पन्न होते हैं इससे साध्यसम दोष हमारे पक्षमे नहीं आता क्योंकि मातापिता खानापीनाकर्त्ते हैं उससे वीर्य बीजशरीरका हो जायगा उत्तर प्राप्तौ चानियमात् ४ गो० ऐसा तुम मत कहो क्योंकि इसका नियम नहीं माता और पिताका संयोग होता है और वीर्यभी होता है तोभी सर्वत्र पुत्रोत्पत्ति नहीं देखनेमें आती इससे यह जो आपका कहा नियम सो भङ्ग होगया इत्यादि नास्तिक के खण्डनमें न्यायदर्शनमें लिखा है जो देखा चाहै सो देखले दूसरे नास्तिकका ऐसा मत है कि अभावाद्भावोत्पत्तिर्नानुपमृद्य प्रादुर्भावात् ५ गो० अभाव अर्थात् असत्य से जगत् की उत्पत्ति होती है क्योंकि जैसे बीजका नाश करके अङ्कुर उत्पन्न होता है वैसे जगत् की उत्पत्ति होती है उत्तर व्याघातादप्रयोगः ६ गो० यह तुम्हारा कहना अयुक्त है क्योंकि व्याघातके होनेसे जिसका मर्द्दन है-ता है बीजके ऊपर भागका यह प्रकट नहीं होता और जो अङ्कुर प्रकट होता है उसका मर्द्दन नहीं होता इससे यह कहना आपका मिथ्या है तीसरा नास्तिक का मत ऐसा है ईश्वरः कारणं पुरुषकर्माफल्यदर्शनात् ७ गो० जीव जितना कर्म कर्ता है उसका फल ईश्वर देता है जो ईश्वर कर्मफल न देता तो कर्मका फल कभी न होता क्योंकि जिस कर्मका फल ईश्वर देता है उसका तो होता है और जिसका नहीं देता उसका नहीं होता इससे ईश्वर कर्मका फल देनेमें कारण है उत्तर पुरुषकर्माभावे फलानिष्पत्तेः ८ गो० जो कर्मफल देनेमें ईश्व-

र कारणहोता तो पृथक्कर्मकर्त्ता तोभोईश्वर फलदेता सो बि-
नाकर्म करनेमे जीवकोफलनहि देता इस्से क्याजानाजाताहै कि
जोजीव कर्मजैसाकर्त्ताहै वैसा फल आपहोप्राप्तहोताहै इस्से ऐ-
साकहनाव्यर्थहै फिरभीवह अपनेपक्षको स्थापनकरने केवास्ते क
हताहै कि तत कारितत्व'दहेतुः (२१) गो ० ईश्वरही कर्मका फल
औरकर्मकरानेमें कारणहै जैसा कर्मकराताहै वैसा जीवकर्त्ताहै
अन्यथानहीं उत्तर जोईश्वकराता तोपापक्योंकराता और ईश्व-
रके सत्यसंकल्पके होनेसे जोजिव जैसा चाहता वैसाहीहोजाता।
और ईश्वर पापकर्मकराके फिर जीवकोदण्डदेता तोईश्वरकोभो
जीवसेअधिक अपराधहोता उसअपराधका फलजो दुःखहो ईश्व
रकोभोहोनाचाहिये और केवल छली कपटी औरपापोंके करा-
नेमे पपोहोजाता इस्से ऐसा कभी कहनाचाहिये किईश्वर करा
ताहै चौथे नास्तिकका ऐसामतहै कि अनिमित्ततो भावोत्प
त्तः कण्टकतैक्ष्ण्यादिदर्शनात् (२२) १० गो ० निमित्तके बिनापदार्थों
की उत्पत्तिहोतीहै क्योंकिवृक्षमें कांटहोतेहैं वेभोनिमित्तकेबि
ही तीक्ष्णहोतेहैं कण्टोंकी तीक्ष्णता पर्वतधातुओंकी चित्र, ।
पाषाणोंकोचिक्कनता जैसे निमित्त देखनेमेंआतीहै वैसेहोशरीरा
दिकसंसारको उत्पत्तिकर्त्ता केबिनाहोतोहै इसका कर्त्ताकोईनहीं
उत्तर अनिमित्त अनिमित्तत्वान्ना निमित्ततः (२३) ११ गो ० बिननि-
मित्तके सृष्टिहोतीहै ऐसामतकहो क्योंकि जिस्से जो उत्पन्नहोता
है वहीउसका निमित्तहै वृक्षपर्वत पृथिव्यादिक उनके निमित्त
माननाचाहिये वैसेही पृथिव्यादिककी उत्पत्तिकानिमित्तपरमे
श्वरहीहै इस्से तुमारा कहनामिथ्याहै।पांचवे नास्तिकका ऐसा
है कि सर्वमनित्य मुत्पत्ति विनाशधर्मकत्वात् (२४) १२ गो ० सबजगत्
अनित्यहै क्योंकि सबकीउत्पत्ति और बिनाशदेखनेमें आताहैजो
उत्पत्ति धर्मवालाहै सो अनुत्पन्न नहीहोता जो अविनाशधर्मवा
लाहै सो विनाशी [illegible]